वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 271

गणिनी ज्ञानमती माताजी के
स्वर्णिम पचास वर्ष

–लेखक–
पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर जी महाराज

तेरहद्वीप रचना जिनबिम्ब पंचकल्याणक एवं परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती वर्ष (अप्रैल 2006-अप्रैल 2007) के समापन अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280236

प्रथम संस्करण	वैशाख शु. एकादशी से पूर्णिमा	मूल्य
1100 प्रतियाँ	वीर निर्वाण संवत् 2533	60/-रु.
	27 अप्रैल से 2 मई 2007	

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

-: निर्देशन :-

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

-: सम्पादक :-

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

—— सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन ——

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

बीसवीं सदी का हम सभी पर महान उपकार है कि जिसने हमें चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज जैसे आचार्य प्रदान किए। आज वर्तमान में हमें जितने भी साधु-साध्वियों के दर्शन हो रहे हैं, यह सब उन्हीं आचार्यश्री की ही कृपा का प्रतिफल है। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी भी उन्हीं आचार्यश्री के प्रथम पट्टशिष्य आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा लेकर जैनधर्म की दिग्दिगन्तव्यापी प्रभावना करने में संतत तत्पर हैं।

सन् 1934 में जन्म लेकर सन् 1952 में मात्र 18 वर्ष की अल्पवय में गृहत्यागकर पूज्य माताजी ने सन् 1953 में आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज से श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र में क्षुल्लिका दीक्षा धारण की, इनकी वीरता देखकर आचार्यश्री ने इन्हें क्षुल्लिका वीरमती नाम प्रदान किया पुनः सन् 1956 में माधोराजपुरा (राज.) में आर्यिका दीक्षा ग्रहण करके अपने ज्ञान के आधार पर "ज्ञानमती" नाम प्राप्त किया। सन् 1953 से लेकर अब तक पूज्य माताजी द्वारा किए गए चतुर्मुखी कार्यकलापों का इस पुस्तक में पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज ने वर्णन किया है। अपने अनुभवों के आधार पर भी क्षुल्लक जी ने इसमें कई घटनाओं का सजीवता से प्रस्तुतीकरण किया है।

वास्तव में यह सच है कि ज्ञानमती माताजी ने बीसवीं शताब्दी में जन्म लेकर कई सदियों तक के लिए अपने नाम को अमरत्व प्रदान कर दिया है। उनके द्वारा लिखे गए ढाई सौ ग्रंथ, उनकी पावन प्रेरणा से निर्मित अनेक तीर्थ, उनके आशीर्वाद से अनेक नगरों-शहरों में निर्मित अद्भुत रचनाएँ, ये सभी दीर्घकाल तक उनकी कीर्तिध्वजा को फहराती रहेंगी।

क्षुल्लिका दीक्षा के 3 एवं आर्यिका दीक्षा के 51 स्वर्णिम चातुर्मासों का उल्लेख करने के पश्चात् इसी पुस्तक में पूज्य माताजी द्वारा लिखित समस्त साहित्य का भी वर्णन किया है। साहित्य के बारे में किसी ने ठीक ही कहा है–

अंधकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है।
निर्बल है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं है।।

साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है जिसके द्वारा व्यक्ति को धर्म, देश और समाज की वास्तविक स्थितियों का समीचीन ज्ञान प्राप्त होता है। विभिन्न प्रकार के साहित्य को लिखने की, पढ़ने की परम्परा प्राचीनकाल से चली आ रही है। अनेकों

महान कवियों/लेखकों की शृँखला में जैन जगत में गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का नाम वर्तमान में सर्वोपरि है, जिन्होंने अपनी लेखनी से 1-2 नहीं अपितु 250 ग्रंथों की रचना करके एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

भगवान महावीर के पश्चात् इन ढाई हजार वर्षों में यद्यपि साहित्य तो लिखा गया परन्तु किन्हीं महिला के द्वारा साहित्य लेखन की बात सुनने-पढ़ने में नहीं आई थी, इसकी शुरूआत करके पूज्य ज्ञानमती माताजी ने एक प्रशस्त परम्परा का सूत्रपात किया है।

इस पुस्तक में पूज्य ज्ञानमती माताजी द्वारा प्रारंभ से लेकर अब तक लिखे गये सम्पूर्ण प्रकाशित साहित्य का वर्णन तो है ही, यहाँ तक कि जो ग्रंथ पूज्य माताजी की लेखनी से लिखे जा चुके हैं परन्तु अभी अप्रकाशित हैं, उनका भी उल्लेख किया गया है।

मैंने प्रारंभ से ही पूज्य माताजी के अन्दर एक विशेषता देखी है कि वे न तो स्वयं कभी खाली बैठती हैं और न ही किसी शिष्य को खाली बैठने देती हैं। उनका हमेशा यही कहना रहता है कि इतनी दुर्लभता से प्राप्त मनुष्य पर्याय के एक-एक क्षण का सदुपयोग करना चाहिए।

पूज्य माताजी का जीवन वास्तव में सभी के लिए प्रेरणास्पद है। इतने दीर्घकालिक दीक्षित जीवन में उन्होंने बहुत अनुभव ज्ञान प्राप्त किया है जिसका सुपरिणाम यह है कि उनके द्वारा कही गई प्रत्येक बात को शिरोधार्य करने में लोग अपना अहोभाग्य समझते हैं।

इस प्रकार अनेकानेक गुणों से समन्वित पूज्य माताजी के स्वस्थ एवं दीर्घजीवन हेतु वीरप्रभू से बारम्बार प्रार्थना है तथा पूज्य पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज द्वारा परिश्रमपूर्वक लिखी गई यह पुस्तक आप सभी के लिए उपयोगी सिद्ध हो, यही मंगल कामना है।

C C C

COURTESY - JAIN BOOK DEPOT

C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

कैसे बीते पचास वर्ष?

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जिनके जीवन का प्रत्येक क्षण नवीन प्रेरणा प्रदान करता है, जिनका प्रत्येक चरण नवीन तीर्थ के निर्माण हेतु ही आगे बढ़ता है, जिनका प्रत्येक चिन्तन देश के उज्ज्वल भविष्य का द्योतक होता है तथा जिनके मुख से निकले प्रत्येक शब्द में जिनवाणी का रहस्य छिपा रहता है ऐसी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के समस्त कार्यकलापों को अक्षरशः लिखने में तो कई मोटे-मोटे ग्रंथ तैयार हो जायेंगे परन्तु गुरुभक्ति की उत्कट भावना को हृदय में धारण करके उनके गुणों का किञ्चित् उल्लेख करने की इच्छा तो होती ही है।

पूज्य माताजी ने सन् 1952 में गृहत्याग करने से लेकर अब तक अपने इस दीर्घकालिक तपस्वी जीवन में ऐसे-ऐसे कठिनतम कार्य किए हैं जिनके बारे में तो सोचना भी शायद हर किसी के वश की बात नहीं है। उन्होंने हर क्षेत्र में अपने कार्यकौशल के द्वारा कीर्तिमान स्थापित किया है चाहे वह साहित्यिक क्षेत्र हो या निर्माणात्मक क्षेत्र हो, प्रभावनात्मक क्षेत्र हो अथवा सृजनात्मक क्षेत्र हो, हर कार्य को सरलता एवं सहजता के साथ करना मानो उनका जन्मसिद्ध अधिकार ही है।

प्रस्तुत पुस्तक में पूज्य माताजी के परमशिष्य क्षुल्लक मोतीसागर जी ने काफी परिश्रम करके पूज्य माताजी द्वारा किए गए समस्त चातुर्मासों का वर्णन किया है। सर्वप्रथम क्षुल्लिका अवस्था के तीन चातुर्मास (सन् 1953 से 1955) पुनः सन् 1956 से सन् 2006 तक उनके 51 स्वर्णिम एवं ऐतिहासिक चातुर्मासों को सुन्दर शैली में लेखनीबद्ध किया है।

पिछले 35-36 वर्षों से पूज्य माताजी के निकट रहकर मैंने भी अच्छी तरह से अनुभव किया है कि पूज्य माताजी को आगम के विरुद्ध एक शब्द भी बोलना या सुनना स्वीकार नहीं है। कैसी भी शारीरिक अस्वस्थता में अपनी क्रियाओं के प्रति पूर्ण सावधान रहना उनके असीमित आत्मबल का परिचायक है।

ऐसी पूज्य माताजी के स्वर्णिम चातुर्मासों का उल्लेख करने वाली इस पुस्तक के माध्यम से आप भी प्रेरणा प्राप्त करें तथा पुस्तक के लेखक क्षुल्लक मोतीसागर महाराज इसी प्रकार साहित्य लेखन के द्वारा अपने उपयोग को स्थिरता प्रदान करते रहें, यही उनके स्वस्थ एवं दीर्घजीवन हेतु मंगल कामना है।

C C C

प्रस्तावना

—ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

जब कोई संस्था अपने कार्यकाल के पचास वर्ष पूर्ण कर लेती है तब उसका स्वर्ण-जयंती महोत्सव खूब धूमधाम से मनाया जाता है तथा उस संस्था को बहुत सक्रिय संस्था के रूप में जाना जाता है, कोई व्यक्ति जब अपने जीवन के पचास वर्ष पूर्ण कर लेता है तो लोग उसकी स्वर्णजयंती मनाकर उसके सुखद भविष्य के लिए मंगल कामनाएँ करते हैं तथा जब कोई दम्पत्ति अपने वैवाहिक जीवन के पचास वर्ष पूर्ण कर लेते हैं तो घर-परिवार के लोग, रिश्तेदार आदि सभी लोग उनके विवाह की गोल्डन जुबली मनाकर उन्हें खूब उपहार भेंट करते हैं तथा अनेकों शुभकामनाओं के द्वारा उनके शेष सुखी जीवन की कामना करते हैं आदि.....ये सब तो सांसारिक खुशियों की बातें हैं।

विगत वर्ष पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जब अपनी आर्यिका दीक्षा के पचास वर्ष पूर्ण किए, तब सम्पूर्ण देश के भक्तों ने उनकी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती मनाकर अपनी अद्भुत भक्ति का प्रदर्शन किया जो कि उनका परम कर्तव्य भी था। दिगम्बर जैन समाज में यह प्रथम अवसर था कि जब किसी साधु की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण हुए हों।

पूज्य माताजी ने सन् 1956 में आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज से माधोराजपुरा (राज.) में वैशाख वदी दूज को आर्यिका दीक्षा लेकर अब तक के इन वर्षों में अपने ज्ञान और चारित्र के बल पर जो ऐतिहासिक कार्य किए हैं, वे युग-युगों तक उनकी कीर्ति को द्विगुणित करते रहेंगे।

पूज्य माताजी के जीवन की सर्वाधिक विशेषता यह है कि इन्होंने तीर्थ निर्माण, ग्रन्थ लेखन, शिष्य संग्रह आदि जितने भी कार्य किए, वे सब आगम की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए ही किए। इन्होंने कभी भी लोक प्रभावना में न पड़कर सदा-सर्वदा आत्म प्रभावना को ही मुख्यता प्रदान की। वे हमेशा आचार्यश्री कुन्दकुन्द स्वामी की इन पंक्तियों का स्मरण किया करती हैं—

आदहिदं कादव्वं, जइ सक्कइ परहिदं च कादव्वं।
आदहिदपरहिदादो, आदहिदं सुट्ठु कादव्वं।।

अर्थात् प्रत्येक मानव को सर्वप्रथम अपनी आत्मा का हित करना चाहिए, यदि शक्य हो तो पर का हित भी करना चाहिए। आत्महित और परहित दोनों में अपनी आत्मा का हित अच्छी तरह करना चाहिए।

प्रस्तुत पुस्तक "गणिनी ज्ञानमती माताजी के स्वर्णिम पचास वर्ष" में पूज्य पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज ने इन स्वर्णिम वर्षों में पूज्य माताजी द्वारा किए गए अनोखे कार्यकलापों का सुन्दर वर्णन किया है। इस पुस्तक में विशेषकर चातुर्मास के अन्तर्गत सम्पन्न गतिविधियों का वर्णन है। सर्वप्रथम क्षुल्लिका अवस्था के तीन चातुर्मासों का उल्लेख है पुनः आर्यिका दीक्षा के सन् 1956 से लेकर 2006 तक का वर्णन किया गया है। सन् 1953 से लेकर अब तक पूज्य माताजी ने जो कार्य किए हैं यद्यपि उनका अक्षरशः वर्णन करना किसी के वश की बात नहीं है फिर भी क्षुल्लक जी ने इन वर्षों की कुछ स्मृतियों का इस पुस्तक में सजीवता से वर्णन करके एक महान कार्य किया है। वैसे समय-समय पर प्रकाशित सम्यग्ज्ञान पत्रिका तथा अन्य लेखों आदि के माध्यम से प्रतिवर्ष चातुर्मास से संबंधित जानकारी तो सभी को प्राप्त होती रहती है कि ज्ञानमती माताजी का किस सन् का चातुर्मास कहाँ हुआ? और चातुर्मास के अन्तर्गत पूज्य माताजी ने क्या नया कार्य किया? परन्तु एक ही पुस्तक में सभी चातुमासों का उल्लेख होने से किसी को भी पूज्य माताजी द्वारा किए गए समस्त चातुर्मासों की जानकारी प्राप्त करने में सहजता होने के साथ ही साथ एक ही स्थान पर उनके जीवन की अधिकांश उपलब्धियों को जानने का अवसर प्राप्त होगा। इन पचास वर्षों के विवरण के पश्चात् पूज्य क्षुल्लक जी ने ज्ञानमती माताजी की साहित्य साधना के विषय में भी प्रकाश डाला है।

वास्तव में यह सच है कि इस अनादिनिधन संसार में अनन्तानन्त प्राणी जन्म धारण करते हैं तथा आयु के अंत में मृत्यु को प्राप्त करके परलोक हेतु गमन कर जाते हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जितने भी प्राणी इस संसार में रहते हैं, सभी के जीवन जीने की शैली एक-दूसरे से प्रायः भिन्न होती है, सभी के शौक आदि अलग-अलग होते हैं। जैसे – किसी की संगीत में रुचि होती है, किसी की नृत्यकला में, कोई खाने-पीने के शौकीन होते हैं, कोई खेलने के, किसी को घूमना-फिरना अच्छा लगता है, किसी को खाना बनाने में रुचि होती है, कोई चित्रकारी करना पसंद करते हैं तो कोई भिन्न-भिन्न पोशाक पहनने के शौकीन होते हैं, कोई साज-सज्जा में रुचि रखते हैं, कोई लिखना-पढ़ना पसंद करते हैं, किन्हीं को विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ संग्रहीत करने का बड़ा शौक होता है आदि-आदि..।

यहाँ प्रसंगानुसार आपको लेखन में रुचि रखने वालों के विषय में जानना है। लेखन अर्थात् लिखना भी एक कला है और इस कला के अनेक प्रकार हैं। भिन्न-भिन्न लेखकों/कवियों द्वारा लिखित साहित्य को भिन्न-भिन्न वर्गों में विभक्त किया गया है। जैसे – बाल साहित्य, युवा साहित्य, नारी साहित्य, वृद्ध साहित्य तथा कविताओं में हास्य कविताएँ, वीररस की कविताएँ, करुणरस से ओत-प्रोत रचनाएँ, श्रृंगाररस से समन्वित कविताएँ आदि....। इन सभी वर्गों के साहित्य को लिखने वाले अलग-अलग

लेखक, अलग-अलग कवि होते हैं अर्थात् जो बाल साहित्य के लेखक हैं, वे नारी साहित्य को लिखने में कठिनाई महसूस करते हैं, बुजुर्गों के लिए प्रेरणादायी साहित्य लिखने वाले लेखक नई पीढ़ी के लिए रुचिकर साहित्य नहीं लिख सकते हैं ऐसे ही हास्य कवि अपनी हास्य कविताओं के द्वारा तो घंटों सबका मनोरंजन कर लेते हैं परन्तु वे वीररस की कविताएँ नहीं लिख सकते, श्रृंगाररस के कवि करुणरस की कविताओं से श्रोताओं/पाठकों को संतुष्ट नहीं कर सकते लेकिन हम सभी के बीच में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी एक ऐसी सिद्धहस्त लेखिका हैं जिन्होंने बच्चों के लिए बाल विकास जैसी छोटी पुस्तकें लिखीं, युवकों के लिए जीवनदान, प्रतिज्ञा, परीक्षा आदि अनेक रोचक एवं शिक्षास्पद उपन्यास लिखे, नारियों के लिए नारी-आलोक आदि अनेक पुस्तकें लिखीं, स्वाध्यायप्रेमियों के लिए ज्ञानामृत, जैन भारती, त्रिलोकभास्कर आदि अनेक ग्रंथ लिखे, विद्वानों के लिए अष्टसहस्री आदि क्लिष्ट ग्रंथों की सरल हिन्दी टीका की तथा काव्यलेखन में भी अनेकों हिन्दी स्तुतियाँ, अनेकों संस्कृत स्तोत्रों के साथ ही संगीत प्रेमियों के लिए अनेकानेक पूजा-विधानों की रचना की, जिनमें भक्तिरस के साथ ही सभी रसों का व्यापक समावेश है, जिन्हें पढ़ते-पढ़ते व्यक्ति आनन्दमग्न होकर अपने अनेकों अशुभ कर्मों की निर्जरा कर लेता है।

इन सब रचनाओं को देखकर कई बार यह विचार आता है कि आज हम और आप सभी अपने सामने पूज्य ज्ञानमती माताजी को देख रहे हैं तो हमें इस बात को स्वीकार करने में जरा भी संशय नहीं रहता है कि इन सब भिन्न-भिन्न प्रकार के साहित्य की लेखिका एक ही ज्ञानमती माताजी हैं परन्तु आगामी दो-चार सौ वर्षों में शायद लोग सहजता से इस बात को स्वीकार नहीं कर पाएंगे कि जिन ज्ञानमती माताजी ने बाल विकास जैसी छोटी पुस्तक लिखी, उन्हीं ज्ञानमती माताजी नेअष्टसहस्री जैसे क्लिष्टतम ग्रंथ का सरल हिन्दी अनुवाद किया है तथा आधुनिक शैली में पूजा-विधानों की रचना करने वाली ज्ञानमती माताजी भी एक ही हैं, लेकिन जो सच है, उसे स्वीकार तो करना ही पड़ेगा।

पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज ने पूज्य माताजी द्वारा लिखित समस्त साहित्य को चारों अनुयोगों में विभक्त करके बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य कियाहै, इससे अनुयोगों के क्रम से किसी को भी पूज्य माताजी के साहित्य को जाननें मेंबहुत सरलता रहेगी। इसमें प्रत्येक साहित्य का संक्षिप्त विवरण भी है कि कब, कहाँ, किस पुस्तक का लेखन प्रारंभ किया, कब पुस्तक लिखकर पूर्ण की, पुस्तक में कितने पृष्ठ हैंइसमें किस विषय का वर्णन है तथा प्रथम बार यह पुस्तक कब प्रकाशित हुई आदि-आदि.....।

इससे पूर्व भी क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज द्वारा लिखित अनेक पुस्तकों का आपने रसास्वादन किया है।

मध्यप्रदेश के सनावद नगर में पिता अमोलकचंद जैन एवं माता रूपाबाई के ज्येष्ठ पुत्र मोतीचंद जी (पूर्व अवस्था का नाम) आज अपने ज्ञान और अपनी योग्यता के आधार पर जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के पीठाधीश पद पर आसीन हैं। इन्होंने सन् 1967 में जब से पूज्य माताजी की प्रेरणा से संघ में प्रवेश किया, तब से लेकर आज तक इनके अंदर संघ के प्रति, गुरु के प्रति, शिष्यों के प्रति जो समर्पणभाव एवं वात्सल्य भाव हैं, वह सभी के लिए अनुकरणीय है।

पूज्य माताजी की प्रत्येक योजनाओं में, चाहे वह जम्बूद्वीप रचना हो, ज्ञानज्योति रथ का भारत भ्रमण हो, प्रयाग तीर्थ, कुण्डलपुर तीर्थ का निर्माण हो, सभी बड़े-छोटे कार्यक्रमों में पूज्य क्षुल्लक जी की अहम भूमिका रहती है, वे पूज्य माताजी की आज्ञा को शिरोधार्य करके प्रत्येक कार्य में अपना पूरा मनोयोग लगाते हैं जिसका प्रतिफल आप सभी के सामने है कि पूज्य माताजी के द्वारा घोषित प्रत्येक आयोजन, प्रत्येक निर्माणात्मक कार्य आशातीत सफलता के साथ सम्पन्न हो जाते हैं। कम शब्दों में यदि हम यह कहें कि पूज्य क्षुल्लक मोतीसागर जी महाराज इस दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के आधार स्तंभ हैं तो शायद इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

इस प्रकार पूज्य माताजी के विविध कार्यकलापों एवं साहित्य साधना का वर्णनकरने वाली इस पुस्तक के माध्यम से आप अवश्य लाभान्वित हों, यही मंगलकामना है तथा पुस्तक के लेखक क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज आगे भी इसी प्रकार पुस्तकों के लेखन आदि के द्वारा समाज का मार्गदर्शन करते रहें, यही वीरप्रभू से प्रार्थना है।

C C C

राष्ट्रगौरव परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

कुन्दकुन्दान्वयो जीयात्, जीयात् श्री शांतिसागरः।
जीयात् पट्टाधिपस्तस्य, सूरिः श्री वीरसागरः।।
श्री ब्राह्मी गणिनी जीयात्, जीयादन्तिमचन्दना।
जीयात् ज्ञानमती माता, गणिन्यां प्रमुखा कलौ।।

जैनशासन के वर्तमान व्योम पर छिटके नक्षत्रों में दैदीप्यमान सूर्य की भाँति अपनी प्रकाश-रश्मियों को प्रकीर्णित कर रहीं पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर उठी लेखनी की अपूर्णता यद्यपि अवश्यंभावी है, तथापि आत्मकल्याण की भावना से पूज्य माताजी के श्रीचरणों में उनके दीर्घकालीन त्यागमयी जीवन के प्रति विनम्र विनयांजलिरूप मेरा यह विनीत प्रयास है।

1. जन्म, वैराग्य और दीक्षा–

22 अक्टूबर सन् 1934, शरदपूर्णिमा के दिन टिकैतनगर ग्राम (जि. बाराबंकी, उ.प्र.) के श्रेष्ठी श्री छोटेलाल जैन की धर्मपत्नी श्रीमती मोहिनी देवी के दांपत्य जीवन के प्रथम पुष्प के रूप में "मैना" का जन्म परिवार में नवीन खुशियाँ लेकर आया था। माँ को दहेज में प्राप्त 'पद्मनंदिपंचविंशतिका' ग्रन्थ के नियमित स्वाध्याय एवं पूर्वजन्म से प्राप्त दृढ़ वैराग्य संस्कारों के बल पर मात्र 18 वर्ष की अल्प आयु में ही शरद पूर्णिमा के दिन मैना ने आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से सन् 1952 में आजन्म ब्रह्मचर्यव्रतरूप सप्तम प्रतिमा एवं गृहत्याग के नियमों को धारण कर लिया।

जैनेश्वरी दीक्षा की कामना को अपनी हर साँस में संजोये ब्र. मैना सन् 1953 में आचार्य श्री देशभूषण जी से ही चैत्र कृष्णा एकम् को श्री महावीरजी अतिशय क्षेत्र में 'क्षुल्लिका वीरमती' के रूप में दीक्षित हो गईं। सन् 1955 में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की समाधि के समय कुंथलगिरी पर एक माह तक प्राप्त उनके सान्निध्य एवं आज्ञा द्वारा 'क्षुल्लिका वीरमती' ने आचार्य श्री के प्रथम पट्टाचार्य शिष्य-वीरसागर जी महाराज से सन् 1956 में 'वैशाख कृष्णा दूज' को माधोराजपुरा (जयपुर-राज.) में आर्यिका दीक्षा धारण करके **"आर्यिका ज्ञानमती"** नाम प्राप्त किया।

2. अध्ययन और अध्यापन–

ज्ञानप्राप्ति की पिपासा माता ज्ञानमती जी के रोम-रोम में प्रारंभ से ही कूट-कूट कर भरी थी। दीक्षा लेते ही स्वाध्याय-मनन-चिंतन की धारा में ही उन्होंने स्वयं को

निबद्ध कर लिया। ज्ञान प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ स्रोत बना-संघस्थ मुनियों, आर्यिकाओं एवं संघस्थ शिष्य-शिष्याओं को जैनागम का तलस्पर्शी अध्यापन। 'कातंत्र रूपमाला' रूपी बीज से पूज्य माताजी की ज्ञानसाधनारूप वृक्ष प्रस्फुटित हुआ, जिस पर जो पत्ते, फूल-फल इत्यादि लगे, उन्होंने समस्त संसार को सुवासित कर दिया। गोम्मटसार, परीक्षामुख, न्यायदीपिका, प्रमेयकमलमार्तण्ड, अष्टसहस्री, तत्त्वार्थराजवार्तिक, सर्वार्थसिद्धि, अनगारधर्मामृत, मूलाचार, त्रिलोकसार आदि अनेक ग्रंथों को अपनी शिष्याओं और संघस्थ साधुओं को पढ़ा-पढ़ाकर आपने अल्प समय में ही विस्तृत ज्ञानार्जन कर लिया। हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, मराठी इत्यादि भाषाओं पर आपका पूर्ण अधिकार हो गया।

3. लेखनी का प्रारंभीकरण संस्कृत भाषा से–

भगवान महावीर के पश्चात् 2500 वर्ष के जिस इतिहास में जैन साध्वियों के द्वारा शास्त्र लेखन की कोई मिसाल दृष्टिगोचर नहीं होती थी, वह इतिहास जागृत हो उठा जब क्षुल्लिका वीरमती जी ने सन् 1954 में सहस्रनाम के 1008 मंत्रों से अपनी लेखनी का प्रारंभ किया। यही मंत्र सरस्वती माता का वरदहस्त बनकर पूज्य माताजी की लेखनी को ऊँचाइयों की सीमा तक ले गये। सन् 1969-70 में न्याय के सर्वोच्च ग्रंथ 'अष्टसहस्री' के हिन्दी अनुवाद ने उनकी अद्वितीय विद्वत्ता को संसार के सामने उजागर कर दिया। कितने ही ग्रंथों की संस्कृत टीका, कितनी ही टीकाओं के हिंदी अनुवाद, संस्कृत एवं हिन्दी में अनेक मौलिक ग्रंथों की रचना मिलकर आज 200 की संख्या को पार कर चुके हैं। पूज्य माताजी द्वारा लिखित समयसार, नियमसार इत्यादि की हिन्दी-संस्कृत टीकाएँ, जैनभारती, ज्ञानामृत, कातंत्र व्याकरण, त्रिलोक भास्कर, प्रवचन निर्देशिका इत्यादि स्वाध्याय ग्रंथ, प्रतिज्ञा, संस्कार, भक्ति, आदिब्रह्मा, आटे का मुर्गा, जीवनदान इत्यादि जैन उपन्यास, द्रव्यसंग्रह-रत्नकरण्डश्रावकाचार इत्यादि के हिन्दी पद्यानुवाद व अर्थ, बाल विकास, बालभारती, नारी आलोक आदि का अध्ययन किसी को भी वर्तमान में उपलब्ध जैन वाङ्मय की विविध विधाओं का विस्तृत ज्ञान कराने में सक्षम है।

अध्यात्म, व्याकरण, न्याय, सिद्धांत, बाल साहित्य, उपन्यास चारों अनुयोगों रूप विविध विधाओं के अतिरिक्त पूज्य माताजी की लेखनी से विपुल भक्ति साहित्य उद्भूत हुआ है। इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीन लोक, सिद्धचक्र, विश्वशांति महावीर विधान इत्यादि भक्ति विधानों ने देश के कोने-कोने में जिनेन्द्र भक्ति की जो धारा प्रवाहित की है, वह अतुलनीय है। पूज्य माताजी का चिंतन एवं लेखन पूर्णतया जैन आगम से संबद्ध है, यह उनकी महान विशेषता है।

धन्य है ऐसी महान प्रतिभावान् सरस्वती माता!

4. सिद्धांत चक्रेश्वरी–

वर्तमान में पूज्य माताजी जैनशासन के सर्वप्रथम सिद्धांत ग्रंथ 'षट्खण्डागम' के सूत्रों की संस्कृत टीका 'सिद्धांत चिंतामणि' के लेखन में संलग्न हैं। 15 पुस्तकों की टीका लिख चुकी हैं, जिसमें से प्रथम एवं द्वितीय पुस्तक हिन्दी टीका सहित प्रकाशित भी हो चुकी हैं। 16वीं पुस्तक का लेखन भी पूर्णता की ओर है। आज से लगभग 1000 वर्ष पूर्व आचार्य श्री नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती ने जिस प्रकार छह खण्डरूप द्वादशांगरूप जिनवाणी को परिपूर्ण आत्मसात करके साररूप में द्रव्य-संग्रह, गोम्मटसार, लब्धिसार इत्यादि ग्रंथ अपनी लेखनी से प्रसवित किये थे, उसी प्रकार इस बीसवीं सदी की माता ज्ञानमती जी ने समस्त उपलब्ध जैनागम का गहन अध्ययन-मनन-चिंतन करके इस सिद्धांतचिंतामणिरूप संस्कृत टीका लेखन के महत्तम कार्य से 'सिद्धांत चक्रेश्वरी' के पद को साकार कर दिया है। 1000 वर्ष पूर्व आचार्य श्री वीरसेन स्वामी द्वारा लिखित 'धवलाटीका' के पश्चात् इस महान ग्रंथ की सरल टीका लेखन का कार्य प्रथम बार हो रहा है।

5. शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर–

जैन सिद्धांतों का मर्म विद्वत्वर्ग समझ सके, इस भावना से कितने ही शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन पूज्य माताजी की प्रेरणास्वरूप किया गया। सन् 1969 में जयपुर चातुर्मास के मध्य 'जैन ज्योतिर्लोक' पर प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें पूज्य माताजी द्वारा 'जैन भूगोल एवं खगोल' का विशेष ज्ञान विद्वत्वर्ग को कराया गया। अक्टूबर सन् 1978 में हस्तिनापुर में पं. मक्खनलाल जी शास्त्री, पं. मोतीचंद जी कोठारी, डा. लाल बहादुर शास्त्री सहित जैन समाज के उच्चकोटि के लगभग 100 विद्वानों का विद्वत् प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें पूज्य माताजी ने विद्वत्समुदाय को यथेष्ट मार्गदर्शन प्रदान किया। समय-समय पर आज तक यह श्रृंखला चल रही है।

6. राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार–

सन् 1985 में 'जैन गणित एवं त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में सम्पन्न हुआ पुनः अनेक संगोष्ठियां सम्पन्न होती रहीं और सन् 1998 में 'भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन' के भव्य आयोजन द्वारा देशभर के विश्वविद्यालयों से पधारे कुलपतियों को भगवान ऋषभदेव को भारतीय संस्कृति एवं जैनधर्म के वर्तमानयुगीन प्रणेता पुरुष के रूप में जानने का अवसर प्राप्त हुआ। 11 जून 2000 को 'जैनधर्म की प्राचीनता' विषय पर आयोजित इतिहासकारों के सम्मेलन द्वारा पाठ्य पुस्तकों में जैनधर्म संबंधी भ्रांतियों के सुधार के लिए विशेष दिशा-निर्देश 'राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद' (NCERT) तक पहुंचाये गये।

इनके अतिरिक्त अनेक अन्य सेमिनार भी समय-समय पर सम्पन्न हुए हैं, जिनके प्रतिफल में देश के समक्ष समय-समय पर साहित्यिक कृतियाँ प्रस्तुत हो चुकी हैं।

7. दिगम्बर समाज की साध्वी को प्रथम बार डी.लिट्. की उपाधि प्रदान कर विश्वविद्यालय भी गौरवान्वित हुआ—

किसी महाविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि में पारम्परिक डिग्रियों को प्राप्त किये बिना मात्र स्वयं के धार्मिक अध्ययन के बल पर विदुषी माताजी ने अध्ययन, अध्यापन, साहित्य निर्माण की जिन ऊँचाइयों को स्पर्श किया, उस अगाध विद्वत्ता के सम्मान हेतु अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद द्वारा 5 फरवरी 1995 को डी.लिट्. की मानद् उपाधि से पूज्य माताजी को सम्मानित करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया गया तथा दिगम्बर साधु-साध्वी परम्परा में पूज्य माताजी यह उपाधि प्राप्त करने वाली प्रथम व्यक्तित्व बन गईं।

इसी प्रकार से समय-समय पर विभिन्न आचार्यों एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा पूज्य माताजी को न्याय प्रभाकर, आर्यिकारत्न, आर्यिकाशिरोमणि, गणिनीप्रमुख, वात्सल्यमूर्ति, तीर्थोद्धारिका, युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, राष्ट्रगौरव, वाग्देवी इत्यादि अनेक उपाधियों से अलंकृत किया गया है, किन्तु पूज्य माताजी इन सभी उपाधियों से निस्पृह होकर अपनी आत्म साधना को प्रमुखता देते हुए निर्दोष आर्यिका चर्या में निमग्न रहने का ही अपना मुख्य लक्ष्य रखती हैं।

8. इतिहास भी परिवर्तन के लिए बाध्य हुआ—

सन् 1992 से पूज्य माताजी की दृष्टि आधुनिक शिक्षाजगत में पढ़ायी जाने वाली पाठ्य पुस्तकों में जैनधर्म संबंधी भ्रान्त विषयवस्तु पर गयी, तो 'भगवान महावीर जैनधर्म के संस्थापक हैं' इत्यादि भ्रांतियों को वहाँ देखकर उनका हृदय अत्यंत उद्वेलित हो उठा। फलस्वरूप प्रधानमंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्री, निदेशक-NCERT इत्यादि से उनकी प्रत्यक्ष वार्ता द्वारा शिक्षाजगत तक यह संदेश पहुँचा और दस वर्षों के अथक प्रयास द्वारा पाठ्य पुस्तकों में संशोधन का क्रम प्रारंभ हो सका।

9. तीर्थ विकास की भावना—

तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक भूमियों एवं विशेष रूप से जन्मभूमियों के विकास की ओर पूज्य माताजी की विशेष आंतरिक रुचि सदा से रही है। पूज्य माताजी का कहना है कि हमारी संस्कृति का परिचय प्रदान करने वाली ये कल्याणक भूमियाँ हमारी महान संस्कृति की धरोहर हैं अतः इनका संरक्षण-संवर्धन-विकास अत्यंत आवश्यक है।

सर्वप्रथम भगवान शांतिनाथ, कुन्थुनाथ, अरहनाथ की जन्मभूमि 'हस्तिनापुर' में पूज्य माताजी की प्रेरणा से निर्मित जैन भूगोल की अद्वितीय रचना 'जम्बूद्वीप' आज

विश्व के मानस पटल पर अंकित हो गयी है, उ.प्र. सरकार के पर्यटन विभाग ने जम्बूद्वीप से हस्तिनापुर की पहचान बताते हुए उसे एक अतुलनीय 'मानव निर्मित स्वर्ग' (A Man Made Heaven of Unparallel Superlatives And Natural Wonders) की संज्ञा प्रदान की है। सन् 1993 से 1995 तक शाश्वत जन्मभूमि 'अयोध्या' में 'समवसरण मंदिर' और 'त्रिकाल चौबीसी मंदिर' का निर्माण करवाकर उसका विश्वव्यापी प्रचार, अकलूज (महाराष्ट्र) में नवदेवता मंदिर निर्माण की प्रेरणा, सनावद (म.प्र.) में णमोकार धाम, प्रीत विहार-दिल्ली में कमलमंदिर, मांगीतुंगी (महाराष्ट्र) में सहस्रकूट कमल मंदिर, अहिच्छत्र में ग्यारह शिखर वाला तीस चौबीसी मंदिर और भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि-प्रयाग में 'श्री ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ' का भव्य निर्माण पूज्य माताजी की ही प्रेरणा के सुफल हैं।

कितने ही अन्य स्थानों पर भी अनेकानेक निर्माण पूज्य माताजी के निर्देशन द्वारा सम्पन्न हुए और हो रहे हैं। भगवान महावीर स्वामी की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) के विकास हेतु भगवान महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ, भगवान महावीर की विशाल खड्गासन प्रतिमा सहित विश्वशांति महावीर मंदिर, नवग्रह शांति जिनमंदिर, त्रिकाल चौबीसी मंदिर एवं नंद्यावर्त महल आदि अनेक निर्माण आपकी प्रेरणा से इस क्षेत्र पर हुए हैं तथा कुण्डलपुर तीर्थ विश्वभर के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया है।

भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि 'राजगृही' में 'मुनिसुव्रतनाथजिनमंदिर' एवं विपुलाचल पर्वत की तलहटी में मानस्तंभ रचना, भगवान महावीर की निर्वाणस्थली पावापुरी में जलमंदिर के समक्ष पाण्डुकशिला परिसर में भगवान की खड्गासन प्रतिमा सहित 'भगवान महावीर जिनमंदिर', गौतम गणधर स्वामी की निर्वाणस्थली गुणावां जी में गौतम स्वामी की खड्गासन प्रतिमा सहित जिनमंदिर, श्री सम्मेदशिखर जी में भगवान ऋषभदेव मंदिर इत्यादि समस्त निर्माण भी पूज्य माताजी की संप्रेरणा से ही सम्पन्न हुए हैं।

वर्तमान में तीर्थंकर जन्मभूमि विकास की शृँखला में भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकंदी में 'पुष्पदंतनाथ जिनमंदिर' के निर्माण हेतु शिलान्यास सम्पन्न किया जा चुका है तथा शीघ्र ही निर्माणकार्य पूर्ण करके इस विस्मृत जन्मभूमि का परिचय भी विश्व को प्रदान किया जा सकेगा।

10. विश्व में अनोखी 108 फुट मूर्ति निर्माण की प्रेरणा—

विश्व के अप्रतिम आश्चर्य के रूप में 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की खड्गासन प्रतिमा के निर्माण का कार्य मांगीतुंगी (महा.) के पर्वत पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से प्रारंभ हो चुका है। युगों-युगों तक जिनशासन की महिमा को विकसित करने वाली यह प्रतिमा जैन संस्कृति के विशाल व्यक्तित्व का परिचय भी जनमानस को प्रदान करेगी।

11. शिरडी (महाराष्ट्र) में ज्ञानतीर्थ—

शिरडी (महाराष्ट्र) को जैन संस्कृति केन्द्र के रूप में स्थापित करने हेतु महाराष्ट्र के कार्यकर्ताओं द्वारा वहाँ पर 'ज्ञानतीर्थ' के निर्माण की योजना मूर्तरूप ले रही है, जिसमें पूज्य माताजी के निर्देशानुसार भगवान पार्श्वनाथ की विशाल प्रतिमा विराजमान करके विशेष निर्माण सम्पन्न किया जायेगा।

12. धर्मप्रभावना के विविध आयाम—

जम्बूद्वीप रचना के निर्माण का प्रमुख लक्ष्य लेकर 'दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान' नामक संस्था का राजधानी दिल्ली में पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में गठन किया गया। इसी संस्थान ने विविध धर्मप्रभावना के कार्यों का निष्पादन किया है। संस्थान स्थित 'वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला' द्वारा लाखों की संख्या में ग्रंथ प्रकाशन, चारों अनुयोगों के ज्ञान से समन्वित 'सम्यग्ज्ञान' मासिक पत्रिका का प्रकाशन,णमोकार महामंत्र बैंक इत्यादि कितनी ही कार्ययोजनाएँ जिनशासन की कीर्ति को निरंतर प्रसारित कर रही हैं।

पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् 1982 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा राजधानी दिल्ली में उद्घाटित 'जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति' ने तीन वर्ष तक सम्पूर्ण भारतवर्ष में जैनधर्म के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार किया और अंत में यह ज्योति अखण्ड रूप से तत्कालीन केन्द्रीय रक्षामंत्री-श्री पी.वी. नरसिंहाराव द्वारा जम्बूद्वीप स्थल पर स्थापित कर दी गयी। इसी प्रकार अप्रैल सन् 1998 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 'भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार' का राजधानी दिल्ली से प्रवर्तन किया, जो समस्त प्रांतों में प्रवर्तन के पश्चात् दीक्षास्थली-प्रयाग तीर्थ पर निर्मित 'केवलज्ञान कल्याणक मंदिर' में स्थापित होकर युगों-युगों तक भगवान ऋषभदेव के वास्तविक समवसरण की याद दिलाता रहेगा। भगवान महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) से सन् 2003 में 'भगवान महावीर ज्योति' का विविध प्रांतों में सफल प्रवर्तन भी इसी शृँखला की विशिष्ट कड़ी है।

जैनधर्म की प्राचीनता तथा भगवान ऋषभदेव के नाम एवं सिद्धांतों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए पूज्य माताजी ने राजधानी दिल्ली में विशाल 'चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान' आयोजित कराया, साथ ही 'भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती वर्ष' तथा 'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष' (तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल जी द्वारा उद्घाटित) भी उनकी प्रेरणा द्वारा विविध धर्मप्रभावना के कार्यक्रमों सहित सम्पन्न हुए। आस्था टी.वी. चैनल द्वारा पूज्य माताजी के 'तीर्थंकर जीवन दर्शन (सचित्र)' एवं अन्य विषयों पर प्रभावक प्रवचन लम्बे समय तक प्रसारित किये गये एवं किये जा रहे हैं। पूज्य माताजी की प्रेरणा से स्थापित 'अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला संगठन' अपनी सैकड़ों इकाईयों द्वारा दिगम्बर जैन समाज की नारी शक्ति को सृजनात्मक कार्यों हेतु संगठित किये हुए है।

इसके अतिरिक्त कितने ही अन्य धर्मप्रभावना के कार्य इन 51 वर्षों में पूज्य माताजी ने सम्पन्न किये हैं जिनका यहाँ लेखन तो संभव नहीं है, किन्तु आज पूरा समाज उनके कार्यकलापों से परिचित होकर उन्हें कर्मठता की मूर्ति के रूप में पहचानता है।

13. संघर्ष विजेत्री—

पूज्य माताजी ने प्रारंभ से अपना प्रमुख लक्ष्य बनाया- प्रत्येक कार्य आगमानुकूल ही करना। पुनः उन कार्यों के निष्पादन में जो भी विघ्न आते हैं, उन्हें बहुत ही शांतिपूर्वक झेलकर पूरी तन्मयता के साथ उस कार्य को परिपूर्ण करना उनकी विशेषता रही है। उनका पूरा जीवन आर्षपरम्परा का संरक्षण करते हुए अपने मूलगुणों में बाधा न आने देकर जिनधर्म की अधिकाधिक प्रभावना के साथ व्यतीत हुआ है। किसी भी संस्था, तीर्थ, चंदे आदि की दानराशि को अपनी संघ व्यवस्था में समाहित न करने का उनका नियम है। 51 वर्षों से इस नियम का पालन करते हुए अपने कर्तव्य पथ पर वे अडिग हैं। यही कारण है कि उन्हें लम्बी-लम्बी यात्राएं कराने में अपना कर्तव्यपालन करने वाले संघपति श्रावक भी अपना सौभाग्य समझते हैं।

14. भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव का आयोजन—

23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि वाराणसी में 6 जनवरी 2005 को पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं ससंघ सानिध्य में 'भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव' का उद्घाटन किया गया। भगवान की केवलज्ञान कल्याणक भूमि 'अहिच्छत्र', निर्वाणभूमि 'श्री सम्मेदशिखर जी' इत्यादि अनेकानेक तीर्थों पर विविध आयोजनों के साथ यह वर्ष मनाया गया। पुनः वर्ष 2006 को ''सम्मेदशिखर वर्ष'' के रूप में मनाने की प्रेरणा पूज्य माताजी ने प्रदान की, ताकि तन-मन-धन से दिगम्बर जैन समाज अपने महान तीर्थराज 'श्री सम्मेदशिखर जी' के प्रति समर्पित हो सके।

भगवान नेमिनाथ की निर्वाणभूमि 'श्री गिरनार जी सिद्धक्षेत्र' की सुरक्षा हेतु भी पूज्य माताजी ने जनजागरण का शंखनाद किया है।

15. शताब्दी का अभूतपूर्व अवसर : दीक्षा स्वर्ण जयंती —

वैशाख कृष्णा दूज, वी.नि.सं. 2532 अर्थात् 15 अप्रैल 2006 को अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण करने वाली पूज्य माताजी वर्तमान दिगम्बर जैन साधु परम्परा में सर्वाधिक प्राचीन दीक्षित होने के गौरव से युक्त होकर हम सभी के लिए अतिशयकारी प्राचीन प्रतिमा के सदृश बन गई हैं। 14 से 16 अप्रैल 2006 तक **'गणिनीप्रमुख**

श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव' का आयोजन करके समस्त समाज ने पूज्य माताजी के श्रीचरणों में अपनी विनम्र विनयांजलि अर्पित की।

इस महोत्सव के साथ ही दीक्षा स्वर्ण जयंती वर्ष भी धूमधाम से पूरे देश के विभिन्न दिगम्बर जैन संगठनों द्वारा मनाया गया।

16. अमृतमय हों वर्ष तुम्हारे–

जिनकी दीर्घकालिक तपस्या के वर्षों की गिनती जानकर अनेक आचार्य, मुनि, आर्यिकाएँ इत्यादि भी इस बात को कहते हुए गौरव का अनुभव करते हैं कि आज जितनी मेरी उम्र भी नहीं है उससे अधिक तो पूज्य माताजी की दीक्षा आयु है, अर्थात् 18 वर्ष की उम्र से त्याग मार्ग पर जिन्होंने कदम रखा, उन्होंने अपनी जन्मतिथि-शरदपूर्णिमा को भी त्याग से सार्थक कर लिया तथा उस त्यागमयी जीवन के 55 वर्ष भी उन्होंने निर्विघ्नतापूर्वक पूर्ण किये हैं।

महान चतुर्मुखी प्रतिभा की धनी पूज्य माताजी के चरणों में भावभीना कोटिशः नमन है तथा भगवान जिनेन्द्र से यही प्रार्थना है कि उनके इस पवित्र त्यागमयी जीवन का हमें अमृत महोत्सव भी मनाने का लाभ प्राप्त हो तथा आपके द्वारा नया-नया साहित्य जनता को प्राप्त होता रहे, यही मंगलकामना है।

C C C

एक अद्वितीय जैन केन्द्र
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन (अध्यक्ष)

संक्षिप्त परिचय :

पिछले तीन दशकों में राजधानी दिल्ली की उत्तर दिशा में उत्तरप्रदेश के जिला मेरठ स्थित पौराणिक तीर्थ **हस्तिनापुर** में एक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय आकर्षण का केन्द्र उभर कर आया है। 200 फुट के व्यास में सफेद और रंगीन पत्थरों से निर्मित जैन भूगोल की अद्वितीय वृत्ताकार रचना **'जम्बूद्वीप'** द्वारा अपने आधार पर वेष्टित हल्के गुलाबी संगमरमर से निर्मित 101 फुट ऊँचे **सुमेरु पर्वत** की शोभा आज किसके मन को आकर्षित नहीं करती है?

प्राचीन जैन साहित्य एवं भूगोल के परिचायक, वैज्ञानिकों के लिए शोध केन्द्र, आध्यात्मिक उन्नयन के लिए पवित्र स्थान, मानसिक शांति एवं जिनेन्द्र भगवान की पूजन-भक्ति के सम्पूर्ण साधनों तथा समस्त आधुनिक सुविधाओं की उपलब्धता सहित इस अनुपम तीर्थ की जनक संस्था का नाम है **दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान (रजि.)।** जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से 1972 में इस संस्थान का सूत्रपात किया गया। दिगम्बर जैन इंस्टीट्यूट ऑफ कास्मोग्राफिक रिसर्च (**Digambar Jain Institute of Cosmographic Research**) के नाम से प्रसिद्ध इस संस्थान का आधारभूत लक्ष्य था-जम्बूद्वीप का निर्माण और यह जम्बूद्वीप ही अंततः संस्थान का मुख्य कार्यालय बन गया।

जंबूद्वीप की 30 एकड़ पवित्र भूमि पर संस्थान के द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं/रचनाओं का संक्षिप्त विवरण निम्नांकित है–

1. जंबूद्वीप रचना-जिनेन्द्र भगवान की 207 प्रतिमाओं से पावन भारतीय शिल्प और जैन भूगोल का अद्वितीय उदाहरण, आधुनिक आकर्षणों-बिजली के फौव्वारे, नौका-विहार इत्यादि सहित।

2. कमल मंदिर-भगवान महावीर की अतिशयकारी खड्गासन प्रतिमा इस मंदिर में विराजमान हैं।

3. ध्यान मंदिर-24 तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमाओं सहित **'ह्रीं'** रचना इस मंदिर में विराजमान हैं, जो कि 'ध्यान' (Meditation) करने हेतु उत्तमोत्तम माध्यम हैं।

4. त्रिमूर्ति मंदिर-भगवान आदिनाथ, भरत एवं बाहुबली की खड्गासन प्रतिमाओं से इस मंदिर का नाम सार्थक है। कमल पर विराजमान भगवान नेमिनाथ एवं पार्श्वनाथ से इस मंदिर की शोभा द्विगुणित हो गयी है।

5. वासुपूज्य मंदिर-इस मंदिर में 12वें तीर्थंकर-वासुपूज्य स्वामी की खड्गासन प्रतिमा विराजमान हैं।

6. शांति-कुंथु-अरहनाथ मंदिर-जिन भगवन्तों के गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान कल्याणकों से हस्तिनापुर की भूमि परम-पावन हुई है, उन शांति-कुंथु और अरहनाथ भगवंतों की खड्गासन प्रतिमाएं इस मंदिर में विराजमान हैं।

7. ॐ मंदिर-अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठियों की प्रतिमाओं सहित **ॐ** (ओम) रचना इस मंदिर में विराजित है।

8. विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर-इस मंदिर में विदेह क्षेत्र के विद्यमान 20 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ बीस कमलों पर विराजमान हैं।

9. सहस्रकूट मंदिर-जिनेन्द्र भगवान की 1008 प्रतिमाओं सहित।

10. भगवान ऋषभदेव मंदिर-धातु निर्मित भगवान ऋषभदेव की मूलनायक प्रतिमा एवं अन्य जिन प्रतिमाओं सहित।

11. भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ-'भगवान ऋषभदेव अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष' में निर्मित, भगवान के जीवन चरित्र को प्रदर्शित करने वाला, 8 प्रतिमाओं से समन्वित 31 फुट ऊँचा कीर्तिस्तंभ।

12. तेरहद्वीप जिनालय-इस मंदिर के अंदर मध्यलोक के तेरहद्वीपों की अकृत्रिम रचना का अति सुन्दरता के साथ दिग्दर्शन कराया गया है।

13. अष्टापद दिगम्बर जैन मंदिर-इस मंदिर के अंदर प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की निर्वाणभूमि अष्टापद – कैलाशपर्वत की आकर्षक प्रतिकृति विराजमान है। कैलाशपर्वत का ही दूसरा नाम अष्टापद है। 4 फरवरी 2000 को लाल किला मैदान, दिल्ली में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा इस प्रतिकृति के समक्ष निर्वाणलाडू चढ़ाकर इसका उद्घाटन किया गया।

14. जम्बूद्वीप पुस्तकालय-प्राचीन हस्तलिखित एवं प्रकाशित लगभग 15000 ग्रंथों एवं पुस्तकों के संग्रह सहित।

15. जम्बूद्वीप औषधालय

16. ज्ञानमती कला मंदिरम्-हस्तिनापुर के पौराणिक इतिहास को प्रदर्शित करने वाली झांकियों सहित।

17. वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला-1972 में संस्थापित इस ग्रंथमाला द्वारा अब तक लाखों की संख्या में 200 से अधिक ग्रंथों एवं पुस्तकों के संस्करणों का प्रकाशन होचुका है।

18. सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका-यह पत्रिका सन् 1974 से लगातार प्रकाशित हो रही है, जिसमें जैन शास्त्रों के साररूप लेखों एवं अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का संकलन एक स्थान पर प्राप्त होता है।

19. राजा श्रेयांस भोजनशाला-आने वाले दर्शनार्थियों को प्रतिदिन निःशुल्क शुद्ध (जैनचर्या के अनुरूप) भोजन उपलब्ध कराने वाला यह दिगम्बर जैन समाज का प्रथम भोजनालय है, जहाँ एक साथ 500 लोग बैठकर भोजन कर सकते हैं।

20. धर्मशालाएं-200 से अधिक फ्लैट, बंगले इत्यादि, जिनमें ठहरने संबंधी सभी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं।

21. मनोरंजन के साधन-तरह-तरह के झूले, बच्चों की रेल, नौका विहार, फौव्वारे, हरे-भरे लॉन, पूरे कैम्पस में घूमने के लिए ऐरावत हाथी (मोटर से संचालित), बिजली की आकर्षक व्यवस्था, सुन्दर प्राकृतिक दृश्य इत्यादि बरबस ही दर्शनार्थियों को इस भव्य रचना की तुलना 'स्वर्ग' से करने के लिए प्रेरित करते हैं।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा आयोजित सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यक्रम

अक्टूबर 1981-जम्बूद्वीप (हस्तिनापुर) स्थल पर **'जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति सेमिनार'**।

31 अक्टूबर 1982-फिक्की ऑडिटोरियम-दिल्ली में **'जम्बूद्वीप सेमिनार'** जिसका उद्घाटन श्री राजीव गांधी, तत्कालीन संसद सदस्य द्वारा किया गया।

अप्रैल 1985-जम्बूद्वीप (हस्तिनापुर) स्थल पर **'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान'** विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार, जिसका उद्घाटन उ.प्र. के तत्कालीन मंत्री प्रोफेसर वासुदेव सिंह द्वारा किया गया।

जून 1982 से अप्रैल 1985-लालकिला मैदान, दिल्ली से तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरागांधी द्वारा 4 जून, 1982 को पूरे देश में भ्रमण करने हेतु **'जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति'** रथ का उद्घाटन किया गया। जनसाधारण में अहिंसा, चारित्र-निर्माण तथा विश्व बन्धुत्व के संदेश का प्रचार-प्रसार करते हुए 1045 दिन तक देश भर में भ्रमण करने के पश्चात् यह ज्ञान ज्योति तत्कालीन रक्षामंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हा राव (भूतपूर्व प्रधानमंत्री) द्वारा जम्बूद्वीप के मुख्य द्वार के समक्ष सदैव के लिए स्थापित कर दी गई।

1992-'अंतर्राज्यीय चरित्र निर्माण संगोष्ठी' का जंबूद्वीप स्थल पर श्री नेमीचंद जैन, विधायक (मध्यप्रदेश) की अध्यक्षता में आयोजन किया गया।

'जैन गणित' एवं **'चारित्र निर्माण'** आदि विषयों पर हुई संगोष्ठियाँ **मेरठ विश्वविद्यालय एवं दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में** आयोजित की गईं।

1993-अयोध्या में अवध विश्वविद्यालय-फैजाबाद के संयुक्त तत्वावधान में **'भारतीय संस्कृति के आद्य प्रणेता भगवान ऋषभदेव'** विषय पर संगोष्ठी।

अक्टूबर 1995-मेरठ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में पंचदिवसीय **'गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती साहित्य संगोष्ठी-95'**।

मार्च-अप्रैल 1998-तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा 9 अप्रैल 1998 को तालकटोरा स्टेडियम, दिल्ली से देश भर में भ्रमण करने हेतु **'भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ'** का उद्घाटन। 3 वर्ष तक देशभर में तीर्थंकर भगवन्तों के सर्वोदयी सिद्धांतों एवं जैनधर्म की प्राचीनता का प्रचार-प्रसार करने के पश्चात् यह समवसरण इलाहाबाद उच्च न्यायालय के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश द्वारा तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली-प्रयाग तीर्थ (इलाहाबाद) में स्थापित कर दिया गया।

अक्टूबर 1998-जम्बूद्वीप स्थल पर **'राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन'**, जिसका उद्घाटन किया गया-स्वर्गीय श्री राजेश पायलट (तत्कालीन संसद सदस्य द्वारा)।

फरवरी 2000-तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा 4 फरवरी 2000 को लाल किला मैदान, दिल्ली में एक वर्ष तक चलने वाले **'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष'** का उद्घाटन किया गया।

इस युग में जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव पर 1008 संगोष्ठियों की श्रृंखला, भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभों का निर्माण तथा अन्य अनेक सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यक्रम राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस वर्ष के अंतर्गत आयोजित किये गये।

टोरण्टो, कनाडा, न्यूजर्सी आदि विदेश की भूमियों पर भी इन्हीं प्रेरणाओं के माध्यम से 4 फरवरी 2000 को निर्वाण महामहोत्सव मनाया गया।

जून 2000-जम्बूद्वीप स्थल पर 11 जून 2000 को **'जैनधर्म की प्राचीनता'** विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया।

फरवरी 2001-भगवान ऋषभदेव की दीक्षाभूमि-प्रयाग (इलाहाबाद) में **'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ'** का नवनिर्माण। इस तीर्थ पर भगवान के दीक्षा कल्याणक के प्रतीकस्वरूप धातु के वटवृक्ष के नीचे ध्यान में लीन महायोगी ऋषभदेव की सवा पांच फुट उत्तुंग पिच्छी-कमण्डलु सहित खड्गासन प्रतिमा, केवलज्ञान कल्याणक के प्रतीकस्वरूप भगवान की चतुर्मुखी प्रतिमा सहित दिव्य समवसरण रचना तथा निर्वाण कल्याणक के प्रतीक स्वरूप 51 फुट उत्तुंग 'कैलाशपर्वत' की भव्य रचना पर भगवान ऋषभदेव की 14 फुट उत्तुंग अत्यंत मनोहारी लालवर्णी पद्मासन प्रतिमा तथा तीन चौबीसी के प्रतीक स्वरूप 72 जिन प्रतिमाएँ विराजमान हैं। 'ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ' भी स्थापित है। 4 से 8 फरवरी 2001 तक 'भगवान ऋषभदेव पंचकल्याणक प्रतिष्ठा' एवं 1008 महाकुंभों से कैलाशपर्वत पर प्रतिष्ठित भगवान ऋषभदेव का 'महाकुंभमस्तकाभिषेक' कार्यक्रम।

सन् 2003-2004-भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में **'नंद्यावर्त महल तीर्थ'** का निर्माण। भगवान महावीर मंदिर, भगवान ऋषभदेव मंदिर, नवग्रहशांति जिनमंदिर, त्रिकाल चौबीसी मंदिर और नंद्यावर्त महल (भगवान महावीर का जन्म महल) एवं इसमें स्थापित भगवान शांतिनाथ जिनालय इस तीर्थ के मुख्य आकर्षण हैं। महावीर की जन्मभूमि के प्रचार-प्रसार हेतु **भगवान महावीर ज्योति रथ** सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रवर्तन कर चुका है।

भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव-6 जनवरी 2005 को जन्मभूमि वाराणसी से इसका भव्य उद्घाटन होकर पूरे एक वर्ष तक (27 दिसम्बर 2005 तक) इसे विभिन्न आयोजनों के साथ मनाया गया।

पुनः सन् 2006 में पूज्य माताजी ने भगवान पार्श्वनाथ निर्वाणभूमि "सम्मेदशिखर वर्ष" घोषित किया तथा आगामी दिसम्बर 2007 में केवलज्ञान भूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर भगवान पार्श्वनाथ सहस्राब्दि महोत्सव का राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित हो रहा है।

इस संस्थान के द्वारा समय-समय पर विविध पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं एवं धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न होते रहते हैं। संस्थान के अद्भुत कार्यकलाप की श्रेणी में है-**णमोकार महामंत्र बैंक**, जहाँ प्रतिवर्ष श्रद्धालु भक्तों द्वारा लाखों की संख्या में णमोकार मंत्र लिखकर जमा कराए जाते हैं, तुमकूर (कर्नाटक) से एक करोड़ मंत्र एवं उदयपुर (राज.) से एक करोड़ मंत्र सन् 2006 में इस बैंक में जमा हुए अतः उन्हें विशेष रूप से सम्मानित किया गया। करोड़ों महामंत्र विश्वशांति की किरणें प्रसारित करने में अतिशय धरोहरस्वरूप हैं।

संस्थान द्वारा दिये जाने वाले पुरस्कार

गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार-सन् 1995 से प्रत्येक पाँच वर्ष में यह पुरस्कार जैन धर्म पर उच्चस्तरीय शोध तथा संस्थान की शैक्षणिक गतिविधियों में सहयोग हेतु किसी भी जैन विद्वान या समर्पित कार्यकर्ता को 1,00,000/- रुपये की नगद राशि, प्रशस्ति-पत्र इत्यादि के साथ प्रदान किया जाता है। अप्रैल 2006 में "गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव" के अवसर पर संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष इस पुरस्कार को देने का निर्णय लिया गया है।

जम्बूद्वीप पुरस्कार-सन् 2000 में स्थापित 25,000/- रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

आर्यिका रत्नमती पुरस्कार-सन् 1999 में स्थापित 11,000/- रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

कुण्डलपुर पुरस्कार-सन् 2004 में स्थापित 25,000/-रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

श्री छोटेलाल जैन पुरस्कार-सन् 2003 में स्थापित 11,000/-रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

नंद्यावर्त पुरस्कार-सन् 2004 से प्रारंभ 25000/-रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

उपरोक्त पुरस्कारों के अतिरिक्त 'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव वर्ष' के अवसर पर घोषित 2,50,000/- रुपये की नगद राशि का **'भगवान ऋषभदेव नेशनल अवार्ड'** एवं 11,000/-रुपये की नगद राशि का **'ब्राह्मी पुरस्कार'** भी संस्थान

द्वारा प्रदान किया गया। भगवान ऋषभदेव नेशनल अवार्ड सन् 2003 में 'कुण्डलपुर महोत्सव' के अवसर पर तत्कालीन सांसद एवं पूर्व वित्त राज्य मंत्री श्री वी.धनंजय कुमार जैन को भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में प्रदान किया गया।

इलाहाबाद-उ.प्र. में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग तीर्थ का निर्माण

सन् 2001 में संस्थान के अन्तर्गत भगवान ऋषभदेव दीक्षा एवं केवलज्ञानकल्याणक भूमि प्रयाग (उ.प्र.) में इस तीर्थ का निर्माण इलाहाबाद-बनारस हाइवे पर किया गय है। इस तीर्थ परिसर में ''ऋषभदेव दीक्षाकल्याणक तपोवन'' एवं समवसरण रचना मंदिर के साथ-साथ भगवान की निर्वाणभूमि के प्रतीक में विशाल कैलाशपर्वत का भीनिर्माण हुआ। इसमें 72 चैत्यालय हैं तथा पर्वत के नीचे गुफा मंदिर में भगवान ऋषभदेव कीअतिशयकारी धातु प्रतिमा (सवा तीन फुट पद्मासन) विराजमान है। पर्वत के ईशान कोण मेंनिर्मित 31 फुट ऊँचे कीर्तिस्तंभ में ऋषभदेव-महावीर स्वामी की 8 प्रतिमाएँ हैं। क्षेत्र पर यात्रियों के आवास-भोजन आदि की सम्पूर्ण आधुनिक व्यवस्था उपलब्ध है। इस तीर्थ का संचालन संस्थान के अंतर्गत गठित उपसमिति के द्वारा किया जा रहा है।

महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर तीर्थ का विकास

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) का विकास करने हेतु संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति नाम से एक उपसमिति बनाई गई, जिसके माध्यम से वहाँ 'नंद्यावर्त महल' तीर्थ परिसर कानिर्माण किया गया। वहाँ नंद्यावर्त महल तीर्थ परिसर में भगवान शांतिनाथ चैत्यालय के अतिरिक्त विश्वशांति महावीर मंदिर, भगवान ऋषभदेव मंदिर, नवग्रहशांति मंदिर तथा तीनमंजिल का त्रिकाल चौबीसी मंदिर है। वहाँ यात्रियों के लिए आधुनिक सुविधायुक्तआवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था है।

उपरोक्त सभी निर्माण योजनाएं, सामाजिक, धार्मिक तथा शैक्षणिक कार्यक्रम **पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी** की पावन प्रेरणा से उनके ससंघ सानिध्य में इस संस्थान द्वारा आयोजित किये गये हैं। संघस्थ **प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी** का मार्गदर्शन एवं **पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज** का निर्देशन इन समस्त कार्यों में अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है।

इस प्रकार यह संस्थान अपनी विभिन्न समर्पित कार्य योजनाओं द्वारा समाज की सेवा में प्रतिक्षण संलग्न है।

मानसिक शांति, आध्यात्मिक विकास, प्राकृतिक सौन्दर्य एवं अन्य अनेक लाभ-एक साथ प्राप्त करने हेतु यह संस्थान जंबूद्वीप दर्शन के लिए आपको सादर आमंत्रितकरता है।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के सहयोगी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत ''वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला'' की स्थापना सन् 1974 में हुई। तब से अब तक लाखों की संख्या में ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है और निरन्तर हो रहा है। ग्रंथमाला से पाठकों को ग्रन्थ कम कीमत में प्राप्त हो सकें, इस दृष्टि से ग्रन्थमाला में एक संरक्षक योजना अगस्त सन् 1990 से प्रारंभ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत निम्न महानुभाव अब तक संरक्षक बनकर अपना सहयोग प्रदान कर चुके हैं।

शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारीबावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी 19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली

परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।

11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली

संरक्षक

1. श्रीमती आदर्श जैन ध.प. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
2. श्रीमती राजूबाई मातेश्वरी श्री शिखर चन्द भाई देवेन्द्र कुमार लखमी चन्द जैन, सनावद (म.प्र.)।
3. श्री चिमनलाल चुन्नीलाल दोशी, कीका स्ट्रीट, मुम्बई।
4. श्रीमती अरुणाबेन मन्नूभाई कोटड़िया, सी.पी. टैंक रोड, मुम्बई।
5. श्रीमती ताराबेन चन्दूलाल दोशी, फ्रेन्च ब्रिज, मुम्बई।
6. श्री रतिलाल चुन्नीलाल दोशी, मुम्बई।
7. स्व. श्रीमती मथुराबाई खुशाल चन्द्र जैन, द्वारा-श्री रतन चन्द खुशाल चन्द्र गाँधी के सुपुत्र श्री धन्य कुमार, अशोक कुमार, शिरीश कुमार, धर्मराज गाँधी फलटन (महा.)।
8. श्री शांतिलाल खुशाल चन्द गाँधी, फलटन (सातारा) महा.।
9. श्री अनन्त लाल फूलचन्द फड़े, अकलूज (सोलापुर) महा.।
10. श्री हीरालाल माणिकलाल गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
11. श्री जयकुमार खुशालचंद गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
12. श्रीमती बदामी देवी मातेश्वरी श्री पदम कुमार जैन गंगवाल, कानपुर (उ.प्र.)।
13. श्रीमती कमलादेवी ध.प. स्व. श्री महेन्द्र कुमार जैन, घण्टे वाले हलवाई, दरियागंज, नई दिल्ली।
14. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री श्रवण कुमार जैन, चावड़ी बाजार, दिल्ली।
15. श्री मुकेश कुमार जैन, कटरा शहंशाही, चाँदनी चौक, दिल्ली।
16. श्री हुकमीचंद मांगीलाल शाह, धानमंडी, उदयपुर (राज.)
17. श्री किरण चन्द्र जैन, कटरा धूलियान, चाँदनी चौक, दिल्ली।
18. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री महावीर प्रसाद जैन इंजी. विवेक विहार, दिल्ली
19. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री अशोक कुमार जैन (खेकड़ा निवासी), बहराइच (उ.प्र.)।

20. श्रीमती लीलावती ध.प. श्री हरीश चन्द्र जैन, शकरपुर, दिल्ली।
21. श्री दुलीचन्द जैन, बाहुबली एन्कलेव, दिल्ली।
22. श्री रतिलाल केवलचन्द गाँधी की पुण्य स्मृति में, पापुलर परिवार, सूरत (गुज)।
23. श्रीमती भंवरीदेवी ध.प. श्री सदासुख जैन पांड्या की समृति में इन्दर चन्द सुमेरमल जैन पांड्या शिलांग (मेघालय)।
24. श्रीमती सोहनीदेवी ध.प. श्री तनसुखराय सेठी, फैन्सी बाजार, गौहाटी (आसाम)।
25. श्रीमती धापूबाई ध.प. श्री कस्तूर चन्द जैन, रामगंज मण्डी (राज.)।
26. श्री मिट्ठनलाल चन्द्रभान जैन, कविनगर गाजियाबाद (उ.प्र.)।
27. श्रीमती शकुन्तलादेवी ध.प. श्री सुरेशचंद जैन (बर्तन वाले), खुड़बुड़ा मोहल्लका, देहरादून (उ.प्र.)।
28. श्री देवेन्द्र कुमार गुणवन्त कुमार टोंग्या, बड़नगर (म.प्र.)।
29. श्री दिगम्बर जैन समाज, तहसील फतेहपुर (बाराबंकी) उ.प्र.।
30. श्री मन्नालाल रामलाल जैन डूंगरवाला, भानपुरा (मन्दसौर) म.प्र.।
31. श्री इन्दर चन्द कैलाश चंद चौधरी, सनावद (म.प्र.)।
32. श्री प्रकाश चन्द अमोलक चन्द जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
33. स्व. श्री विमल चन्द जैन, रखबचन्द दसरथ सा, सनावद (म.प्र.)।
34. श्री आजाद कुमार जैन शाह (सनावद वाले), इन्दौर (म.प्र.)।
35. श्रीमती सुषमा देवी ध.प. श्री राकेश कुमार जैन, मवाना (मेरठ) उ.प्र.।
36. श्रीमती कुसुम जैन ध.प. श्री रमेशचन्द जैन, किशनपुरी, बागपत रोड, मेरठ।
37. श्रीमती किरण जैन ध.प. श्री पदम प्रसाद जैन एडवोकेट, मेरठ (उ.प्र.)।
38. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री जिनेन्द्रप्रसाद जैन ठेकेदार, टोडरमल रोड, नई दिल्ली।
39. श्रीमती क्षमादेवी जैन, मधुबन, दिल्ली।
40. श्रीमती कमलादेवी ध.प. श्री राजेन्द्र कुमार जैन टोडरका, ठाणे (महा.)।
41. श्री अजित प्रसाद जैन बब्बेजी, श्री राजकुमार श्रवण कुमार जैन, लखनऊ।
42. श्री प्रभा चन्द गोधा, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर-6 (राज.)।
43. श्री गोपीचन्द विपिन कुमार जैन, सरधना टैन्ट हाउस, गंजमंडी, सरधना।
44. श्रीमती रतनसुन्दरी देवी ध.प. श्री वीरचन्द जैन (चिकन वाले), चूड़ीवाली गली, चौक बाजार, लखनऊ।
45. डॉ. सुभाषचन्द जैन, रातानाड़ा क्लीनिक, रातानाड़ा बाजार, जोधपुर (राज.)।
46. श्री प्रमोद कुमार जैन (मुजफ्फरनगर वाले) 35 एच.वी.रोड, न्यू मार्केट, थरपकना, रांची (बिहार)।
47. श्री विजेन्द्र कुमार जैन, के.-1/20 मॉडल टाउन, दिल्ली।

48. श्री कैलाश चंद जैन, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर (राज.)।
49. श्री सुभाषचंद जैन, श्री दि. जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय, 405 डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली।
50. श्री सुभाष चन्द जैन सर्राफ, टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.।
51. श्री चन्द्रसेन जैन, द्वारा-सुमेरचन्द, चन्द्रसेन जैन, सब्जी मण्डी, नहटौर (बिजनौर)।
52. श्री सुधीर कुमार जैन जे.ई., नन्द किशोर जैन, शारदा नहर खण्ड, शाहजहाँपुर।
53. श्री सुकुमालचंद जैन, मोती ट्रेडिंग कम्पनी, टी.आर. फुकन रोड, फैन्सी बाजार, गौहाटी।
54. श्री अनिल पुलकित सेठी, बी 1/122, फेज-2, अशोक विहार, दिल्ली-110052।
55. श्री चन्द्रमोहन बंसल, 11, पूसा रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-5।
56. श्री गिरधर प्रसाद आमोद प्रसाद जैन, जैन वस्त्रालय, काली मार्केट, सिवान (बिहार)।
57. श्री सतीश चन्द जैन, 31 सिविल लाइन, म.नं.-10, सेक्टर-2, टाइप-5 झांसी।
58. श्री स्वरूप चन्द कासलीवाल, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
59. श्री हुलास चन्द सेठी, अयोध्या शुगर मिल्स, राजा का सहसपुर, बिलारी (उ.प्र.)।
60. श्रीमती किरण देवी जैन ध.प. श्री नरेन्द्र कुमार जैन, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
61. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री प्रवीण कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
62. श्री सूरजमल पुत्र श्री विनीत कुमार जैन, मोहल्ला गंजकटरा पूरणटरा पूरणजाट, जैन विला, मुरादाबाद (उ.प्र.)।
63. स्व. श्री शिखर चन्द जैन, 'टिम्बर कमीशन एजेन्ट', शंकरगंज, हापुड़ (उ.प्र.)।
64. श्रीमती राजेश्वरी जैन मातेश्वरी श्री राकेश जैन 31, सिविल लाईन, सीतापुर।
65. श्री राजकुमार जैन, मैसर्स रविदत्त प्रेमचन्द जैन बारदाने वाले, श्यामगंज, बरेली।
66. श्री बलवीर जैन, द्वारा-जानकी एक्सटेंशन रिफाइनरी, गाँधीगंज, शाहजहाँपुर।
67. श्री पन्नालाल सेठी, डीमापुर (नागालैंड)।
68. श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, ईदगाह कालोनी, आगरा (उ.प्र.)।
69. श्री पोखपाल जैन, द्वारा-नावेल्टी मेटल इंडिया, मानसिंह गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)।
70. श्रीमती रश्मि जैन ध.प. श्री विजय कुमार जैन, दरियागंज, नई दिल्ली।
71. श्रीमती विमला देवी ध.प. श्री प्रमोद कुमार जैन इंजी., शाहजहाँपुर (उ.प्र.)।
72. स्व. श्रीमती कैलाशवती जैन ध.प. श्री कैलाश चन्द जैन इंजी., तोपखाना बाजार, मेरठ।
73. श्रीमती अरुण कुमार नांद्रेकर ध.प. भाऊ साहेब नांद्रेकर, मुलुन्ड (वेस्ट) मुम्बई।
74. श्री भागचन्द मनीष कुमार ठोलिया, द्वारा-किरन एजेंसी, पो. बुरहानपुर, (म.प्र.)।
75. श्री कैलाशचन्द राजकुमार जैन रावंका, पो. बिसवां (सीतापुर) उ.प्र.।
76. श्रीमती विद्यावती जैन, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली।

77. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) एवं सुपुत्र श्री मदन कुमार, प्रदीप कुमार एवं प्रवीण कुमार जैन, धर्मपुरा, गाँधीनगर, दिल्ली।
78. श्रीमती अरुणा जैन, ध.प. प्रवीन्द्र कुमार जैन, प्रीतमपुरा, दिल्ली।
79. श्रीमती पुष्पादेवी, ध.प. महेन्द्र कुमार जैन, पुष्पांजली एन्क्लेव, दिल्ली।
80. श्री बाबूलाल तोताराम जैन, भुसावल (महा.)।
81. डॉ. अनुपम जैन, सुदामा नगर, इंदौर (म.प्र.)।
82. श्री विनय कुमार जैन, ज्वैलर्स, दरीबाकलां, दिल्ली।
83. स्व. श्री आनन्द प्रकाश जैन 'शान्तिप्रिय', जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.।
84. श्रीमती राजुलबाई ध.प. श्री नेमीचन्द जैन लोहाड़े, पो. कोपरगाँव (महा.)।
85. श्री धन्नालाल गोधा, मल्हारगंज, इंदौर (म.प्र.)।
86. श्री सुनील कुमार मनोज कुमार जैन, झिलमिल कालोनी, दिल्ली।
87. श्रीमती आशा जैन ध.प. श्री राजेश कुमार जैन बरुआ सागर (उ.प्र.)।
88. श्री पारसमल डूंगरमल जी पाटनी पो. मेड़तासिटी, नागौर (राजस्थान)।
89. श्री अनिल कुमार जैन (गुड़गांव वाले) प्रियदर्शनी विहार, दिल्ली-92।
90. श्रीमती कृष्णा बाई नेमीनाथ जैन, पी. वाले, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
91. श्रीमती मंजूलता जैन ध.प. श्री प्रभात चन्द गोधा, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
92. श्री प्रमोद कुमार जैन, पारस प्रिन्टर्स, शाहदरा-दिल्ली।
93. श्री चांदमल अनिल कुमार सरावगी, किशनगंज (बिहार)।
94. कुमारी अदिति सुपुत्री श्री अपोलो जी जैन सौगानी, इंदौर।
95. श्रीमती मंजूलता ध.प. प्रभाचन्द गोधा-नया बाजार, अजमेर।
96. श्री सुचेद्र कुमार शैलेन्द्र कुमार जैन, डाल्टनगंज (झारखंड)।
97. श्रीमती जतनदेवी लक्ष्मीचंद जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)।
98. श्रीमती सखाई जैन ध.प. श्री जीतमल जैन, मड़ाना (कोटा) राज.।
99. श्री मोहित जैन पुत्र मुकेश जैन, जगन्नाथ जैन पहाड़िया, फतेहपुर (शेखावटी) राज.।
100. श्री नरेश जैन बंसल, गुड़गाँवा (हरि.)।
101. श्रीमती रतनबाई ध.प. राजेन्द्र प्रकाश कोठिया, कोटा (राज.)।
102. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री अजीत कुमार जैन, भिवाड़ी (राज.)।
103. श्रीमती प्रेमलता जैन ध.प. श्री सुशील कुमार जैन, मलाड़ (मुम्बई)।
104. श्री राजेन्द्र कुमार पचौलिया, इंदौर (म.प्र.)।
105. स्व. श्री मोहनलाल हेमचंद गांधी, सतारा (महा.)।

C C C

गणिनी ज्ञानमती माताजी के स्वर्णिम पचास वर्ष

मनुष्य जन्म की शोभा सम्यग्दर्शन के साथ संयम परिपालन में है। स्वर्ग के देवेन्द्र भी मनुष्य पर्याय को प्राप्त करने की सदा कामना किया करते हैं, उसका कारण यही है कि संयम, रत्नत्रयरूप धर्म, वीतराग मोक्षमार्ग मात्र मनुष्य पर्याय से ही प्राप्त हो सकता है। किसी भी भव्य जीव को सम्यग्दर्शन की प्राप्ति तो नरक, स्वर्ग और तिर्यंच गति में हो सकती है लेकिन सकल संयमरूप चारित्र की प्राप्ति मनुष्य पर्याय के अतिरिक्त कहीं सुलभ नहीं है।

आचार्य श्री कुंदकुंद देव ने समयसार की गाथा नं. 4 में क्या अद्भुत बात लिखी है–

सुदपरिचिदाणुभूदा सव्वस्स वि कामभोगबंधकहा।
एयत्तस्सुवलंभो णवरि ण सुलहो विहत्तस्स ।।

देखे, सुने और अनुभव में आए हुए ऐसे काम भोग और बंध की कथा तो अनादिकाल से सुनते आ रहे हैं। लेकिन वीतराग शुद्ध आत्मा का कथन करने वाले ऐसे जिनधर्म की प्राप्ति बड़ी ही दुर्लभ है।

वास्तव में रत्नत्रय रूप वीतराग धर्म का कुतूहल मात्र से ग्रहण करने वाले भी अनेक प्राणी इस संसार समुद्र से पार हो गये, तो जो साक्षात् रत्नत्रय की मूर्ति हैं, ऐसे

महान वंदनीय वर्तमान आचार्य, उपाध्याय एवं साधु परमेष्ठी निश्चित ही मोक्षमार्ग के दर्पण हैं। लेकिन खेद है कि करोड़ों अरबों की आबादी में मात्र 1100 के लगभग संयमी दिगम्बर जैन साधु-साध्वी रत्नत्रय धर्म का पालन करने वाले हैं। इन सभी रत्नत्रय मूर्तियों में कुछ संयमी जो विशिष्ट प्रतिभा सम्पन्न हैं, जिनसे स्वकल्याण के साथ समाज को भी कुछ उपलब्धि हुई है उनमें परमश्रद्धेय पूज्य आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के नाम को भुलाया नहीं जा सकेगा। पूज्य माताजी ने वैशाख कृ. 2, 15 अप्रैल 2006 को अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण किए हैं। इस आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत हम पूज्य माताजी के पावन चरण कमलों में यही कामना करते हैं कि माताजी दीर्घायु होकर हम सभी को इसी प्रकार रत्नत्रय मार्ग को दिखाती रहें।

पूज्य माताजी ने 18 वर्ष की लघुवय में आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत (सप्तम प्रतिमा) एवं चैत्र कृष्णा 1, सन् 1953 में श्री महावीर जी क्षेत्र पर 108 आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज से क्षुल्लिका दीक्षा ग्रहण की। 3 वर्ष बाद वैशाख कृ. 2, सन् 1956 में माधोराजपुरा (राज.) में आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा लेकर भारतवर्ष के विभिन्न अंचलों में मंगल विहार एवं चातुर्मास करके जो ज्ञान गंगा प्रवाहित की है, उनका संक्षिप्त वर्णन इस पुस्तक में प्रस्तुत किया जा रहा है–

क्षुल्लिका दीक्षा के तीन चातुर्मास

पहला चातुर्मास (सन् 1953-टिकैतनगर-उ.प्र.)

आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज ने सन् 1952 का चातुर्मास बाराबंकी शहर में किया था, वहाँ से मात्र 60 कि.मी. दूर टिकैतनगर है। कु. मैना को आचार्यश्री के प्रथम दर्शन का सौभाग्य इससे पूर्व टिकैतनगर में ही हुआ था, किन्तु आजीवन ब्रह्मचर्य तथा सप्तम प्रतिमा के व्रत आचार्यश्री से बाराबंकी में अंगीकार किये। छोटी उम्र थी-बाराबंकी नगर के अनेक लोगों ने तथा पारिवारिक माता-पिता, भाई-बहनों ने बड़ा व्यवधान उपस्थित किया। आचार्यश्री भी उस व्यवधान के समक्ष ढीले पढ़ गये थे। लेकिन कु. मैना का संकल्प दृढ़ ही रहा। बाराबंकी चातुर्मास के बाद आचार्यश्री का विहार लखनऊ हुआ। लखनऊ में परम गुरुभक्त सेठ सीमंधर दास जी एवं जुग्गामल जी ने आचार्यसंघ को श्री महावीर जी की यात्रा कराने का इरादा किया। आचार्यश्री की स्वीकृति मिलते ही आपने संघ सहित पूरे ठाठ-बाट से श्री महावीर जी के लिए प्रस्थान कर दिया। मार्ग में लश्कर, ग्वालियर, सोनागिरि आदि क्षेत्रों की यात्राएं भी सम्पन्न कीं।

श्री महावीर जी में ही कु. मैना ने आचार्यश्री से पुनः कर्मबंधन से छूटने रूप ऐसी दीक्षा प्रदान करने की याचना की। परिणाम स्वरूप वहीं श्री महावीर जी में चैत्र कृष्णा 1,

सन् 1953 में आचार्यश्री ने आपको क्षुल्लिका दीक्षा देकर **वीरमती** नाम प्रदान किया।

महावीर जी से संघ का पदार्पण आगरा, फिरोजाबाद, मैनपुरी, कानपुर आदि होते हुए पुनः लखनऊ होता है और दैवयोग से आपका प्रथम चातुर्मास आचार्यश्री देशभूषण जी के साथ ही टिकैतनगर (अपनी जन्मभूमि) में हो गया।

टिकैतनगर में सर्वप्रथम आपने जीवकाण्ड आदि ग्रंथों का अध्ययन-स्वाध्याय किया।

टिकैतनगर चातुर्मास के पश्चात् आचार्यसंघ का विहार होता है और 6 कि.मी. दूर ही दरियाबाद में संघ पहुँचता है। संघ में एक क्षुल्लिका श्री विशालमती माताजी और थीं। यहाँ से आचार्य महाराज की आज्ञा पाकर आपने क्षुल्लिका वीरमती जी, क्षुल्लिका विशालमती जी के साथ सम्मेदशिखर जी, पावापुरी आदि तीर्थों की यात्रा के लिए प्रस्थान किया और कुछ ही दिनों में यात्रा करके पुनः दरियाबाद आचार्यश्री के संघ में वापस आ गईं।

आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज वहाँ से विहार करते-करते एक बार पुनः श्री महावीर जी क्षेत्र पर पधारे और चांदनपुर के भगवान महावीर की तीर्थ वंदना के पश्चात् जयपुर, टोंक, निवाई आदि राजस्थान के ग्रामों में संघ का विहार होता हुआ अगला चातुर्मास जयपुर होता है।

दूसरा चातुर्मास (सन् 1954, जयपुर-राजस्थान)

आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज के संघ में अत्यन्त अल्पवय वाली इस क्षुल्लिका वीरमती को देखकर अनेक श्रावकगण आचार्य महाराज से यही प्रश्न करते कि आपने इतनी छोटी वय में इन्हें दीक्षा कैसे प्रदान कर दी? लेकिन क्षुल्लिका 'वीरमती' के ज्ञान के क्षयोपशम को देखकर साधारणजन ही नहीं बल्कि पं. श्री भंवरलाल जी न्यायतीर्थ आदि विशिष्टजन भी पूज्य माताजी के सन्निकट में आये। उस समय पूज्य माताजी ने संस्कृत का विशेष अभ्यास करने हेतु व्याकरण पढ़ने का निश्चय किया। कुछ विद्वान व्याकरण पढ़ाने के लिए पधारे भी, लेकिन माताजी 1 दिन में जितने व्याकरणसूत्र पढ़ना चाहती थीं, वे उतने सूत्र 1 माह में पढ़ाना चाहते थे अतः कई विद्वान वापस चले गये। पुनः एक ब्राह्मण विद्वान पं. दामोदराचार्य को पं. भंवरलाल जी ने बुलाकर पूज्य माताजी को व्याकरण पढ़ाने हेतु नियत किया। उन्होंने माताजी की जिज्ञासा अनुसार ही 25-50 सूत्र प्रतिदिन माताजी को पढ़ाये, जिन्हें तुरंत माताजी सुना दिया करती थीं। पं. दामोदराचार्य जी ने स्वयं कहा कि आज तक व्याकरण को इस प्रकार इतना अधिक हृदयंगम करने वाला कोई दूसरा विद्यार्थी हमारी नजर में नहीं आया। यह तो पूर्व प्रदत्त विशेष क्षयोपशम की बात है कि पूज्य माताजी ने पूरी 'कातंत्र व्याकरण' का 2 माह में अध्ययन समाप्त कर लिया और वहीं से जैन ग्रंथों का मूल संस्कृत से अभ्यास प्रारंभ कर दिया।

कातंत्र व्याकरण का 2 माह में अध्ययन ही जयपुर चातुर्मास की विशिष्ट

उपलब्धि माताजी के प्रारंभिक जीवन की थी।

जयपुर चातुर्मास समापन के बाद—जयपुर चातुर्मास के मध्य ही आपको ज्ञात हुआ कि परमपूज्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज दक्षिण में हैं और उन्होंने सल्लेखना ले रखी है। अतः शीघ्र ही उन महातपस्वी के दर्शन कर लेना चाहिए, ऐसी एक भावना मन में उत्पन्न हुई। प्रथम दीक्षा एवं शिक्षा गुरु आचार्य श्री देशभूषण जी के समक्ष आपने निवेदन किया। आचार्यश्री ने इस शुभ कार्य हेतु तुरंत आज्ञा प्रदान कर दी।

आचार्यश्री की आज्ञा प्राप्त होते ही आपने क्षुल्लिका विशालमती जी को साथ लेकर आचार्यप्रवर शांतिसागर जी महाराज के दर्शनार्थ प्रस्थान कर दिया और दक्षिण के 'नीरा' नामक गांव में आचार्यश्री के प्रथम दर्शन कर अपने जीवन को धन्य माना और उनसे आज्ञा लेकर आप और क्षुल्लिका विशालमती जी ने आस-पास फलटण, दहीगांव, सोलापुर, कोल्हापुर आदि नगरों का भ्रमण करके तीर्थ यात्राएँ भी कीं और समाज को भी ज्ञान से लाभान्वित किया।

चातुर्मास का समय निकट आने पर म्हसवड़ (सातारा) महाराष्ट्र समाज की प्रार्थना को स्वीकार करके आपने म्हसवड़ के चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान कर दी।

तीसरा चातुर्मास (सन् 1955, म्हसवड़-महाराष्ट्र)

इस चातुर्मास में वहाँ की कुमारी बालिकाओं को आपने द्रव्यसंग्रह, तत्त्वार्थसूत्र आदि विषयों का अध्ययन कराना प्रारंभ कर दिया और उस अध्यापन के निमित्त से स्वयं में क्षयोपशम की वृद्धि होती गई। माताजी के ज्ञान का क्षयोपशम देखकर वहाँ कुमारी प्रभावती (स्व. आर्यिका जिनमती जी) और सौभाग्यवती सोनूबाई (स्व. आर्यिका पद्मावती जी) ने पूज्य माताजी के चरण सानिध्य में रहकर ज्ञानार्जन का निर्णय किया।

इसी चातुर्मास के समय आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज ने कुंथलगिरि में समाधि ग्रहण कर ली और अन्त में सब कुछ त्याग करके मात्र जल व जल का भी त्याग करके लाखों की समाज को बिलखता छोड़कर अपने इस नश्वर शरीर का त्याग कर दिया। आचार्यश्री की समाधि दर्शन हेतु पूज्य माताजी ने समाधि से 1 माह पूर्व म्हसवड़ चातुर्मास के मध्य ही कुंथलगिरि जाकर आचार्यश्री का आशीर्वाद एवं उनके त्याग वैराग्य को देखने का अवसर प्राप्त किया। यहीं पर पूज्य माताजी ने आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा प्रदान करने की याचना की लेकिन आचार्यप्रवर ने कहा कि मैंने तो समाधि ले ली है और दीक्षा देने का त्याग कर दिया है अतः तुम अब मेरे शिष्य आचार्य वीरसागर जी से जाकर दीक्षा ग्रहण कर लेना। मैंने अपना आचार्यपट्ट उन्हें प्रदान कर दिया है, ऐसा शुभ आशीर्वाद प्रदान कर दिया। आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की भादों सुदी 2 को समाधि सम्पन्न हो जाती है। उसके बाद पूज्य माताजी

पुनः म्हसवड़ आकर चातुर्मास पूर्ण करती हैं।

म्हसवड़ चातुर्मास के बाद–कु. प्रभावती एवं श्रीमती सोनूबाई की विशेष जिज्ञासा देखकर आपने क्रमशः 10वीं तथा सप्तम प्रतिमा के व्रत देकर अपने संघ में रख लिया। इसके बाद आपने अपनी शिष्याओं सहित आचार्यश्री वीरसागर जी के साथ ही रहने का निर्णय किया। आचार्य संघ का विहार होता हुआ संघ माधोराजपुरा पहुँचता है। पुनः-पुनः याचना करने पर क्षुल्लिका वीरमती जी को वि.सं. 2013, सन् 1956, वैशाख कृष्णा 2 को वीरसागर जी ने माधोराजपुरा (राज.) में आर्यिका दीक्षा प्रदान करके ज्ञान के क्षयोपशम को देखकर गुणानुरूप ही 'ज्ञानमती' यह नामकरण कर दिया। वहीं पर कु. प्रभावती को भी क्षुल्लिका दीक्षा दिलाकर उनका नाम श्री जिनमती जी रखा गया। माधोराजपुरा एवं आसपास की हजारों की जनता ने पूज्य माताजी के वैराग्यपरक दृश्य को देखकर अपने को धन्य माना। संघ का आसपास विहार होता हुआ चातुर्मास खानिया (जयपुर) होने का निर्णय हो जाता है। पश्चात् ब्र. सोनू बाई को दीक्षा देकर क्षुल्लिका पद्मावती नाम रखा गया।

आर्यिका दीक्षा के 51 चातुर्मास
(सन् 1956-2006)

सन् 1956 में वैशाख कृष्णा 2 को आर्यिका दीक्षा लेने के बाद पूज्य ज्ञानमती माताजी अपने गुरुसंघ के साथ माधोराजपुरा से जयपुर आ गईं पुनः वहीं खानिया जी में चातुर्मास का संयोग प्राप्त हो गया। सन् 1956 से लेकर 2006 तक 51चातुर्मासों की पवित्र श्रृँखला का परिचय यहाँ संक्षिप्तरूप में प्रस्तुत है–

प्रथम चातुर्मास (सन् 1956, जयपुर खानिया-राजस्थान)

आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज अत्यन्त मृदुभाषी थे। जब भी आर्यिका ज्ञानमती जी आचार्यश्री के पास जातीं, तो आचार्यश्री माताजी के ज्ञान के क्षयोपशम एवं पठन-पाठन की शैली से बहुत ही प्रसन्नचित्त होते थे।

यहाँ पर पूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने अपनी शिष्या क्षुल्लिका जिनमती जी को सागार धर्मामृत, गोम्मट्टसार, परीक्षामुख और न्यायदीपिका का अध्ययन करादिया।

चातुर्मास के बाद–आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज के संघ का विहार जयपुर में ही प्रमुख मंदिर एवं कॉलोनियों में चलता रहा। जयपुरवासियों ने आचार्यश्री को जयपुर से आगे प्रस्थान ही नहीं करने दिया। समाज की असीम भक्ति देखकर अगला चातुर्मास पुनः खानिया ही करने का आचार्यश्री ने निर्णय करके घोषणा कर दी। फिर तो जयपुर समाज के हर्ष का ठिकाना ही न रहा।

दूसरा चातुर्मास (सन् 1957, जयपुर खानिया-राजस्थान)

खानिया में इस वर्ष आचार्य श्री वीरसागर महाराज संघ सहित एवं आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज संघ सहित ऐसे 2 संघों का एक साथ चातुर्मास होने से बहुत ही आनन्द की वर्षा हुई।

चातुर्मास के मध्य ही आश्विन वदी अमावस्या को आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज की समाधि हो गई और समाधि के अनन्तर मुनि श्री शिवसागर महाराज को इस महान संघ के नेतृत्व को संभालने के लिए आचार्यपट्ट प्रदान किया गया।

चातुर्मास के अनन्तर आचार्यश्री शिवसागर जी महाराज के संघ का विहार गिरनार जी की यात्रा के लिए हो जाता है।

खानिया चातुर्मास के बाद गिरनार यात्रा–आचार्यश्री शिवसागर महाराज के संघ की गिरनार यात्रा कराने के लिए परम गुरुभक्त संघपति सेठ हीरालालजी पाटनी-निवाई (राज.) वालों ने कदम उठाया। मार्ग में ब्यावर, अजमेर, आबू, सिरोही, सोनगढ़ आदि अनेक स्थानों से विहार करता हुआ संघ गिरनार जी पहुँच जाता है और कुछ दिन गिरनार जी की तीर्थ वंदना में रहकर पश्चात् तारंगा, पालीताना आदि तीर्थों की वंदना करता हुआ संघ का पदार्पण वापस ब्यावर होता है तथा अगला चातुर्मास भी ब्यावर ही करने का निर्णय हो जाता है।

गिरनार यात्रा के मध्य मार्ग के विहार में ही देवागमस्तोत्र, समाधिशतक, आत्मानुशासन आदि का अध्ययन पूज्य माताजी ने क्षुल्लिका जिनमती जी को कराया और स्वयं तथा जिनमती जी ने इन सभी ग्रंथों के श्लोकों को कण्ठस्थ कर लिया।

तीसरा चातुर्मास (सन् 1958, ब्यावर-राजस्थान)

ब्यावर का चातुर्मास भी अपना कुछ महत्व रखता है क्योंकि जिन ग्रंथों का अध्ययन पूज्य माताजी ने किसी गुरुमुख से नहीं किया, उनका अध्यापन स्वयं ही क्षुल्लिका जिनमती जी एवं कई आर्यिकाओं को तथा ब्र. राजमल जी को कराया। ग्रंथों में प्रमुख हैं-राजवार्तिक अध्याय 2 से 10 तक एवं गोम्मटसार कर्मकांड आदि। वास्तव में अध्यापन से स्वयं में अध्ययन हो जाता है।

इस चातुर्मास के मध्य पं. पन्नालाल जी सोनी एवं पं. श्री खूबचंद जी आदि विद्वानों को पूज्य माताजी से तत्त्वचर्चा आदि का अवसर प्राप्त हुआ। यह चातुर्मास सेठ चम्पालाल जी की नसिया ब्यावर में हुआ था।

ब्यावर चातुर्मास के बाद–ब्यावर में चातुर्मास पूर्ण करके संघ का विहार जयपुर के लिए होता है और आचार्यश्री के सानिध्य में ही जयपुर में श्री दीवान जी की नसिया के मानस्तंभ की प्रतिष्ठा विविध कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न होती है। पश्चात् संघ आसपास नगरों में विहार करता हुआ अजमेर समाज के विशेष आग्रह को न टाल सका और अगला चातुर्मास अजमेर (राज.) करने का निर्णय हुआ।

चौथा चातुर्मास (सन् 1959, अजमेर-राजस्थान)

पूज्य माताजी को अध्ययन-अध्यापन एवं शिष्यानुग्रह में रुचि थी, सो वह कार्य यहाँ भी चालू रहा और पंचाध्यायी का स्वाध्याय चला। सबको माताजी ने पात्रकेसरी स्तोत्र का अध्ययन कराया। ब्र. विद्यावती बाई को सर्वार्थसिद्धि का अध्ययन कराया। अजमेर में अंगूरीबाई (वर्तमान आर्यिका आदिमती) को अध्ययन कराना प्रारंभ किया और बाद में ज्ञान एवं त्याग की वृद्धि की भावना से अपने साथ में ही रख लिया।

इस चातुर्मास में एक दुर्भाग्य की बात यह रही कि पूज्य माताजी को शारीरिककष्ट 'संग्रहणी' का प्रकोप प्रारंभ हो गया, जो आज तक विद्यमान है। परन्तु धन्य हैं ऐसी माता, जिन्होंने भेद-विज्ञान के बल से आत्मज्ञान को प्राप्त कर शारीरिक वेदना को कुछ नहीं गिना। इसीलिए पठन-पाठन में निरत रहकर अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग प्राप्तकिया।

पाँचवाँ चातुर्मास (सन् 1960, सुजानगढ़-राजस्थान)

आचार्यश्री शिवसागर जी महाराज के विशाल संघ का चातुर्मास पूर्ण होकर संघ सहित अजमेर से विहार होता है और अनेक नगरों में विहार करते हुए संघ का मंगल आगमन सुजानगढ़ होकर यहीं चातुर्मास होता है। यहाँ पर क्षुल्लिका जिनमती जी को जैनेन्द्र प्रक्रिया व्याकरण और मूलाचार आदि ग्रंथों का अध्ययन कराया।

सुजानगढ़ चातुर्मास के बाद—सुजानगढ़ से संघ लाडनू (राज.) पहुँचा। वहाँ पर श्री चंद्रसागर स्मारक की विशाल पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हुई और आचार्यश्री के सानिध्य में ही मानस्तंभ निर्माण के लिए शिलान्यास कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। पश्चात् संघ का विहार सीकर होता है और बाद में संघ सानिध्य में ही फतेपुर शेखावाटी में वेदी प्रतिष्ठा सम्पन्न होती है। वहाँ से पुनः संघ सीकर आता है और समाज के विशेष आग्रह पर विशाल संघ का अगला चातुर्मास कराने का सौभाग्य सीकर नगरवासियों को ही प्राप्त हो जाता है।

छठा चातुर्मास (सन् 1961, सीकर-राजस्थान)

जिस नगर में इतने विशाल संघ का चातुर्मास हो जाये, वास्तव में वहाँ की धरती धन्य हो जाती है, वहाँ का हर नागरिक कुछ न कुछ रूप में धार्मिक-आत्मिक क्रियाओं से आबद्ध हो ही जाता है। फिर जहाँ पर श्रद्धा, ज्ञान और त्याग इन तीनों की त्रिवेणी बह रही हो, वहाँ का क्या कहना! सीकर में विशाल 'दीक्षा समारोह' का आयोजन हो गया। ब्र. राजमल जी की मुनि दीक्षा हुई, उनका नाम अजितसागर रखा गया और क्षुल्लिका जिनमती जी की आर्यिका दीक्षा हुई तथा ब्र. अंगूरीबाई की आर्यिका दीक्षा तथा ब्र. रतनीबाई की क्षुल्लिका दीक्षा पूज्य माताजी की प्रेरणा से सम्पन्न हुई और

क्रमशः नामकरण आर्यिका आदिमती जी एवं क्षुल्लिका श्रेयांसमती जी इस प्रकार किया गया।

सीकर नगर में ही पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ने अपनी प्रमुख शिष्या आर्यिका जिनमती जी को प्रमेयकमल मार्तण्ड, लब्धिसार आदि ग्रंथों का अध्ययन कराया। आज प्रमेयकमलमार्तण्ड का अनुवाद होकर प्रकाशित हो चुका है।

सीकर चातुर्मास के बाद—जिस प्रकार से किसी को अनुपम निधि (कोई रत्नों का खजाना) प्राप्त हो जाये, तो वह उसे छोड़ना नहीं चाहता है और बार-बार उसे संभालकर रखता है, उसी प्रकार लाडनू नगर निवासियों का संघ सानिध्य से अभी मन संतुष्ट नहीं हुआ था। परिणामस्वरूप सीकर जाकर पुनः संघ को लाडनू लाते हैं और आचार्यश्री के सानिध्य में पुनः मानस्तंभ का विशाल पंचकल्याणक महोत्सव करके भी संतुष्टि प्राप्त नहीं करते हैं, अगला चातुर्मास करने की भी स्वीकृति प्राप्त कर लेते हैं-

सातवाँ चातुर्मास (सन् 1962, लाडनू-राजस्थान)

इस चातुर्मास के मध्य पूज्य ज्ञानमती माताजी ने जिनमती जी को शब्दार्णव चंद्रिका, गद्य चिंतामणि, धर्म शर्माभ्युदय आदि ग्रंथों का अध्ययन कराया। यहीं पर टिकैतनगर से आपकी अनुजा कुमारी मनोवती माँ के साथ यात्रार्थ आईं थीं। उन्हें आचार्य शिवसागर जी महाराज से 1 वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत दिलाकर अध्ययन कराने के निमित्त से कुछ दिन के लिए साथ में रख लिया। पश्चात् कुछ वर्षों बाद तो वह आर्यिका अभयमती बन गईं।

लाडनू चातुर्मास के बाद—लाडनू चातुर्मास के बाद पूज्य माताजी की प्रबल भावना सम्मेदशिखर तीर्थराज की यात्रा की होती है। आचार्यश्री शिवसागर जी से आप आज्ञा मांगती हैं, लेकिन आचार्यश्री शिवसागर महाराज एक ज्ञानपुंज को संघ से जाने नहीं देना चाहते, इस कारण आज्ञा देने में विचार करते हैं। फिर भी आपके ऊपर आचार्यश्री का विशेष अनुग्रह होने के कारण आज्ञा प्राप्त हो जाती है और आप अपनी शिष्याएं (1) जिनमती जी (2) आदिमती जी (3) पद्मावती जी (4) श्रेयांसमती जी को साथ लेकर यात्रार्थ प्रस्थान कर देती हैं। संघ संचालन का भार ब्र. सुगनचंद जी एवं ब्र. मनोवती जी द्वारा सहर्ष स्वीकार करने के पश्चात् अनंतानंत मोक्षगामियों की पवित्र भूमि के लिए संघ जयपुर-आगरा-मथुरा-फिरोजाबाद-मैनपुरी-कानपुर-लखनऊ-टिकैतनगर-अयोध्या-वाराणसी-पावापुरी-राजगृही-कुण्डलपुर-गुणावां-नवादा-चम्पापुर आदि तीर्थों की वंदना करता हुआ सम्मेदशिखर पहुँच जाता है। सम्मेदशिखर में इस आर्यिका संघ का अवस्थान 1 माह तक रहा। कुछ दिन संघ ईसरी भी रहता है। कलकत्ता समाज का विशेष आग्रह होने पर अत्यन्त अल्प समय—मात्र 10 दिन में ईसरी से कलकत्ता पहुँचकर पूज्य माताजी का अगला मंगल चातुर्मास कलकत्ता में होता है।

आठवाँ चातुर्मास (सन् 1963, कलकत्ता-प. बंगाल)

कलकत्ता नगरी को कई वर्षों से किसी भी साधु के चातुर्मास कराने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था। पूज्य माताजी जैसे विशिष्ट ज्ञानी साधु को पाकर कलकत्ता के श्रावकगण खुशी में नाच रहे थे और दिन-रात पूज्य संघ से लाभान्वित होने की चेष्टा करते रहते थे। यहाँ पर पूज्य माताजी के प्रतिदिन प्रवचन हुए। ब्र. प्यारेलाल भगत जी की पूज्य माताजी के प्रति अगाढ़ श्रद्धा एवं भक्ति रही। प्रवचनों में पूज्य माताजी ने हर जिज्ञासु की शंकाओं का समाधान करने का समय दिया और शास्त्राधार से हर प्रश्न का समाधान करके आर्षपरम्परा को दृढ़ किया। यहाँ पर आचार्यकल्प श्री श्रुतसागर जी की सुपुत्री कु. सुशीला ने पूज्य माताजी के ज्ञान से प्रभावित होकर माताजी से ही 5 वर्ष के लिए ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कर लिया और भाइयों के अत्यन्त मना करने पर पर भी संघ में रहने का दृढ़ निश्चय कर लिया। पूज्य माताजी ने कलकत्ता चातुर्मास में शिष्याओं को पंचसंग्रह, न्यायकुमुदचन्द्र आदि ग्रंथों का अध्ययन कराया।

कलकत्ता चातुर्मास के बाद–कलकत्ता से विहार करके संघ का सम्मेदशिखर पुनः आगमन होता है। नंदीश्वर पंचकल्याणक के समय संघ सम्मेदशिखर ही रहा। पश्चात् विहार करते हुए पुरलिया, चाईबासा, कटक आदि होते हुए खण्डगिरि- उदयगिरि की यात्रा करके विशाखापट्टनम् आदि होते हुए संघ का अगला चातुर्मास आंध्रप्रदेश की राजधानी हैदराबाद में होता है।

नवमाँ चातुर्मास (सन् 1964, हैदराबाद-आंध्रप्रदेश)

हैदराबाद में पूज्य माताजी का स्वास्थ्य बहुत ही प्रतिकूल रहा। फिर भी प्रवचन एवं धर्मप्रभावना, पूजन-विधान आदि समय-समय पर होते रहे। चातुर्मास के मध्य पूजन-विधान 50-60 की संख्या में हुए।

विशेष–हैदराबाद मुसलमानी रियासत होने के कारण यहाँ पर जैन मंदिर पर शिखर बनाने पर प्रतिबंध था, लेकिन अब धर्मनिरपेक्ष जनतंत्र शासन होने केकारण ऐसा प्रतिबंध तो होना नहीं चाहिए अतः 1 दिन पूज्य माताजी ने अपने प्रवचन में श्रीमंदिर जी के ऊपर शिखर बनाने के महत्व पर प्रकाश डालते हुए शिखर बनवाने की प्रेरणा की। तत्काल ही श्री जयचंद जी लुहाड़े ने केशरबाग के मंदिर में शिखर के निर्माणका निर्णय लिया और अतिशीघ्र शिखर का निर्माण भी कराकर उसमें भगवान शांतिनाथ स्वामी की प्रतिमा विराजमान कराके उसकी वेदी प्रतिष्ठा भी धूमधाम से सम्पन्न करा दी।

हैदराबाद से ब्र. सुरेश कुमार जी की दीक्षा के भाव देखकर पूज्य माताजी ने उन्हें आचार्यश्री शिवसागर महाराज के संघ में भेजकर क्षुल्लक दीक्षा दिला दी, जिनका नाम संभवसागर रखा। कालान्तर में यह मुनि बने और अब उनकी समाधि भी हो चुकी है।

आचार्यश्री की आज्ञा मंगाकर माताजी ने ब्र.मनोवती को स्वयं ही हैदराबाद में क्षुल्लिका दीक्षा प्रदान की। अब यहाँ से संघ में 5+1=6 साध्वी हो गयीं।

हैदराबाद चातुर्मास के बाद–यहाँ से पूज्य आर्यिका संघ का विहार अनंतपुरी होते हुए मैसूर की ओर होता है और अगला चातुर्मास भगवान बाहुबली के पावन चरणों में श्रवणबेलगोला होने का निर्णय हो जाता है।

दसवाँ चातुर्मास (सन् 1965, श्रवणबेलगोला-कर्नाटक)

यहाँ पर पूज्य माताजी ने कन्नड़ भाषा का 15 दिवस में अभ्यास करके अपनी शिष्याओं को भी कन्नड़ लेखन-वाचन में कुशल बना दिया। चातुर्मास के मध्य 15 दिन मौन साधना से पहाड़ पर ही भगवान बाहुबली स्वामी के चरण सानिध्य में रहकर पूज्य माताजी ने ध्यानाभ्यास किया। यहीं पर ध्यान में मध्यलोक के तेरहद्वीपों के 458 अकृत्रिम चैत्यालयों का दृश्य झलकने के बाद उसकी रचना मस्तिष्क में आई, जो कि अब हस्तिनापुर में साकार हुई है। श्रवणबेलगोला में ही भगवान बाहुबली की अत्यन्त मधुर काव्य में संस्कृत स्तोत्र की रचना की और हिन्दी पद्य में भगवान बाहुबली चरित्र का निर्माण किया और भी कई गुरु स्तुतियाँ संस्कृत व कन्नड़ भाषा में निर्मित कीं। यहाँ से कु. शीला ने (वर्तमान आर्यिका शिवमती जी) भी साथ में रहकर पूज्य माताजी से ज्ञानाभ्यास प्रारंभ किया।

श्रवणबेलगोला का रम्य स्थान, भगवान बाहुबली की विशाल प्रतिमा एवं अन्य प्रभावशील जिनचैत्य के आकर्षण से पूज्य माताजी संघ सहित यहाँ पर 1 वर्ष तक रहीं और ग्रंथ, स्तुति रचना तथा ध्यान आदि का विशेष क्षयोपशम भी भगवान बाहुबली के चरण-प्रसाद से प्राप्त किया।

श्रवणबेलगोला चातुर्मास के बाद–यहाँ से विहार करके पूज्य माताजी ने मूडबिद्री, हुबली, बीजापुर, सहस्रफणा पारसनाथ आदि की यात्राएं कीं और अगला चातुर्मास सोलापुर करने का निर्णय कर दिया।

ग्यारहवाँ चातुर्मास (सन् 1966, सोलापुर-महाराष्ट्र)

सोलापुर श्राविका संस्थान की संस्थापिका पद्मश्री ब्र. सुमतिबाई जी शाह, सुश्री बाल ब्र. विद्युल्लता जी शाह एवं पं. वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री आदि विद्वान व श्रीमानों के विशेष आग्रह पर पूज्य माताजी ने सोलापुर के श्राविकाश्रम में चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान की तथा सोलापुर शहर में आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज के संघ का चातुर्मास होने से बहुत ही प्रभावना हुई।

सोलापुर चातुर्मास में प्रतिदिन पूज्य माताजी के विभिन्न विषयों पर प्रवचन होते रहे। 1 दिन प्रवचन में पूज्य माताजी अकृत्रिम चैत्यालयों का विस्तृत वर्णन कर रही

थीं। प्रवचन के मध्य ही ब्र. सुमतिबाई जी इतनी आनन्द विभोर हो गईं कि सभा के मध्य ही बोलीं कि जिस प्रकार आज हमारे देश में नंदीश्वर द्वीप की रचनाएं, समवसरण की रचनाएं आदि बनी हुई हैं, उसी प्रकार यह मध्यलोक की रचना भी निर्मित होवे, तो कितना अच्छा लगेगा! बाद में सुमतिबाई जी की बहुत प्रेरणा रही कि यह रचना सोलापुर आश्रम में ही बना दी जाये, लेकिन पूज्य माताजी का वहाँ से शीघ्र विहार का निर्णय श्रवण कर उन्हें बहुत ही खेद रहा। वही रचना आज हस्तिनापुर में साकार हो चुकी है।

सोलापुर में द्रव्यसंग्रह-सामायिक विधि आदि विषयों पर एक शिक्षण शिविर का पूज्य माताजी ने आयोजन किया। यहाँ पर कई पुस्तकों का प्रकाशन भी पण्डित वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री के सम्पादकत्व में हुआ।

सोलापुर चातुर्मास के बाद—चातुर्मास समाप्त करके पूज्य माताजी ने संघ सहित विहार करके कुंथलगिरि, तेर, पैठण आदि की यात्राएं करते हुए औरंगाबाद, एलोरा की यात्राएं की और नांदगांव, मांगीतुंगी, गजपंथा आदि की यात्रा करते हुए बड़वानी-ऊन होकर मध्यप्रदेश के सनावद नगर में पदार्पण किया।

सनावद से पूज्य माताजी का विहार सिद्धवरकूट से होते हुए इंदौर हुआ। इंदौर में एक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक प्रौढ़ पुरुष- महिलाओं ने भाग लिया। आलाप पद्धति का संक्षिप्त अनुवाद सहित प्रकाशन हुआ और पात्रकेशरी स्तोत्र का पद्यानुवाद भी प्रकाशित हुआ।

यहाँ पर इंदौर निवासी पूज्य माताजी के चातुर्मास हेतु बहुत ही दृढ़ता से लगे हुए थे, उधर सनावदवासियों के प्रयास से आचार्य श्री शिवसागर जी ने सनावद के लिए आज्ञा प्रदान कर दी अतः अगले चातुर्मास का सौभाग्य सनावद नगरवासियों को प्राप्त हुआ।

बारहवाँ चातुर्मास (सन् 1967, सनावद-मध्यप्रदेश)

'सिद्धवरकूट' जैसे रम्यतीर्थ की वंदना करने वालों को सनावद नगर का ज्ञान अनायास ही हो जाता है। मैं (मोतीसागर) स्वयं उस चातुर्मास की देन हूँ कि पूज्य माताजी ने मुझे घर से निकालकर अपना शिष्य बनाया। उनके आदेशानुसार जम्बूद्वीप रचना आदि के निर्माण में मैंने पूरा मनोयोग लगाया और क्षुल्लक दीक्षा धारण कर वर्तमान में आपकी छत्रछाया में रत्नत्रय साधना चल रही है। चातुर्मास के मध्य यहाँ एक शिक्षण शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें प्रौढ़ वर्गों ने बड़ी श्रद्धाभक्ति से भाग लिया। उसी शिविर के एक विद्यार्थी यशवंत कुमार थे, जो कि पुरुषार्थ सिद्धिउपाय पढ़ रहे थे। पूज्य माताजी के साथ आकर ब्रह्मचारी बन गये और बाद में मुनि वर्धमानसागर बनकर वर्तमान में आचार्य बनकर चतुर्विध संघ का संचालन कर रहे हैं।

सनावद चातुर्मास के बाद—ब्र. मोतीचंद (मैं), यशवंत कुमार आदि अनेक श्रावकों

के साथ पूज्य माताजी ने सनावद से विहार करके मुक्तागिरि की यात्रा की। पश्चात् सलुम्बर के पास आचार्यश्री शिवसागर जी के संघ में शीघ्र पदार्पण की भावना से उधर की तरफ विहार किया। मार्ग में बांसवाड़ा में पूज्य माताजी का मंगल आगमन होता है। वहाँ पर सेठ पन्नालाल ने अपनी सुपुत्री कु. कला व कु. कनक को पूज्य माताजी को अध्ययन हेतु प्रदान किया। पूज्य माताजी ने दोनों कुमारिकाओं को 5-5 वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत देकर साथ में रखकर अध्ययन कराया। उसमें से कु. कला ने पूज्य माताजी से शास्त्री कोर्स तक अध्ययन करके शास्त्री की परीक्षा पास कर ली और आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण कर लिया। वर्तमान में वह आर्यिका कैलाशमती माताजी के रूप में धर्मप्रभावना कर रही हैं। पश्चात् शीघ्र ही पूज्य माताजी ने अपने शिष्य-शिष्याओं के साथ आचार्यश्री शिवसागर महाराज के संघ में पुनः पदार्पण किया। उस समय आचार्यश्री शिवसागर जी एवं समस्त संघ को बहुत ही प्रसन्नता हुई तथा अगला चातुर्मास आचार्यश्री के साथ ही प्रतापगढ़ करने का निश्चय हुआ।

तेरहवाँ चातुर्मास (सन् 1968, प्रतापगढ़-राजस्थान)

प्रतापगढ़ राजस्थान का अच्छा नगर है। यहाँ चातुर्मास में प्रवचनादि से खूब धर्मप्रभावना हुई। पूज्य माताजी ने संघस्थ शिष्य मोतीचंद जैन (मुझे), यशवंत कुमार जैन एवं अपनी शिष्याओं को शास्त्री कोर्स का अध्ययन प्रारंभ कराया और सोलापुर बोर्ड से परीक्षाएं भी दिलवायीं।

प्रतापगढ़ चातुर्मास के बाद—इसी वर्ष फाल्गुन माह में श्री महावीर जी क्षेत्र पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के विशेष आमंत्रण को न टालकर आचार्यश्री शिवसागर महाराज ने संघ सहित महावीर जी क्षेत्र की ओर विहार कर दिया और कोटा, सवाई माधोपुर, इन्दरगढ़ आदि होते हुए संघ का आगमन श्री महावीर जी क्षेत्र पर हो जाता है।

श्री महावीर जी में आचार्यश्री शिवसागर जी की आकस्मिक समाधि हो जाने से संघनेतृत्व का एक भीषण संकट उत्पन्न हुआ। पश्चात् मुनि श्री धर्मसागर जी महाराज को समस्त संघ एवं श्रावकों के मध्य आचार्यपट्ट प्रदान करके संघ के नेतृत्व की बागडोर प्रदान की गई, जो अपने निर्मल चारित्र के द्वारा मुनि परम्परा को अक्षुण्ण रखते हुए सारे देश की आँख के सितारे बने और समस्त जैन समाज आपके त्याग और निस्पृह जीवन से प्रभावित हुआ।

महावीर जी से आचार्यसंघ का विहार अजमेर निवासियों के चातुर्मास की प्रार्थना पर अजमेर के लिए हुआ परन्तु मार्ग में ही जयपुर निवासियों ने किसी तरह संघ को आगे बढ़ने ही न दिया और अंत में निराश होकर अजमेरवासियों को वापस जाना पड़ा। इस प्रकार अगला चातुर्मास जयपुर ही होने का निर्णय हो जाता है।

चौदहवाँ चातुर्मास (सन् 1969, जयपुर-राजस्थान)

जयपुर चातुर्मास के मध्य सभी शिष्य-शिष्याओं को पूज्य माताजी अष्टसहस्री, राजवार्तिक, जैनेन्द्र प्रक्रिया, शब्दार्णव चंद्रिका, गद्यचिंतामणि आदि शास्त्री, न्यायतीर्थ कोर्स के विषयों का दिन में 6 घण्टे अध्ययन कराती थीं। इसके अलावा सामूहिक रूप से अनेक आर्यिकाएं और मुनिगण पूज्य माताजी से अध्ययन का लाभ प्राप्त कर रहे थे। यहीं पर पूज्य माताजी ने अष्टसहस्री ग्रंथ की हिन्दी टीका करना प्रारंभ किया और टीका द्रुतगति से चलती रही। पं. सत्यंधर कुमार जी सेठी उज्जैन वाले भी माताजी से बहुत प्रभावित रहे। जयपुर चातुर्मास के मध्य "जैन ज्योतिर्लोक" नामक विषय पर एक शिक्षण-शिविर का आयोजन हुआ। आयोजन काफी सफल रहा। जैन ज्योतिर्लोक, उषा वंदना, शांति भक्ति का प्रत्यक्ष फल, जिन स्तवन माला आदि पुस्तकों का प्रकाशन भी जयपुर में किया गया।

जयपुर चातुर्मास के बाद—जयपुर से संघ का विहार होकर निवाई आदि होते हुए अगला चातुर्मास टोंक (राज.) में होने का निर्णय हुआ।

पन्द्रहवाँ चातुर्मास (सन् 1970, टोंक-राजस्थान)

टोंक चातुर्मास के मध्य भी अध्यापन कार्य एवं हिन्दी टीका का कार्य निरन्तर चलता रहा। टोंक में पूज्य माताजी को पुनः दूसरा शारीरिक कष्ट 'नजला' प्रारंभ हो गया, जिसने कार्य में बड़ा व्यवधान उपस्थित किया और कई माह तक इस रोग से माताजी को बहुत परेशानी रही, फिर भी ज्ञानोपयोग में ढिलाई नहीं आने दी और शीघ्र ही अष्टसहस्री जैसे दुरूह ग्रंथ की हिन्दी टीका पूर्ण कर दी।

टोंक चातुर्मास के बाद—संघ अनेक नगरों में विहार करते हुए टोडारायसिंह में मंगल पदार्पण करता है। यहाँ पर पूज्य माताजी द्वारा अष्टसहस्री ग्रंथ की हिन्दी टीका पूर्ण हो जाती है। आचार्यश्री के चरण सानिध्य में हिन्दी टीका की विधिवत् पूजन की गई। पश्चात् आचार्यश्री धर्मसागर जी महाराज के जन्मदिवस पर रथयात्रा के जुलूस के साथ अष्टसहस्री टीका को पालकी में विराजमान कर उसका भी जुलूस निकालकर प्रभावना की गई।

टोडारायसिंह से संघ का आगमन पुनः टोंक में होता है। यहाँ पर विशाल पंचकल्याणक का आयोजन आचार्यश्री के सानिध्य में हुआ। यहाँ टोंक में प्रतिष्ठा को देखने हेतु पूज्य माताजी के ज्येष्ठ भ्राता श्री कैलाशचंद जी के साथ रवीन्द्र कुमार आये थे। यहीं से उन्हें पूज्य माताजी से ज्ञानार्जन का सानिध्य प्राप्त हुआ। कई वर्षों से अजमेर निवासी आचार्यश्री के संघ का चातुर्मास कराने के लिए बहुत ही लालायित थे अतः टोंक पंचकल्याणक के बाद संघ पीपलू, मालपुरा, लावा, पचेवर, सोडा, दूदू आदि होता हुआ किशनगढ़ पहुँचता है। किशनगढ़ में कई वर्षों के बाद आचार्यश्री धर्मसागर जी संघ एवं आचार्यश्री ज्ञानसागर जी के संघ का मंगल मिलन होता है। पश्चात् संघ चातुर्मास से पूर्व ही अजमेर पहुँचकर अजमेर में चातुर्मास की घोषणा हो जाती है।

सोलहवाँ चातुर्मास (सन् 1971, अजमेर-राजस्थान)

अजमेर चातुर्मास में पूज्य माताजी का समयसार, अष्टसहस्री आदि का स्वाध्याय एवं प्रवचन चला। यहाँ जैन ज्योतिर्लोक विषय पर मोइनिया इस्लामिया हाई स्कूल के हॉल में एक प्रभावशाली प्रवचन हुआ, जिसमें अनेक पत्रकार एवं विशिष्ट जैन-अजैन हजारों की प्रबुद्ध जनता उपस्थित हुई थी। सर सेठ सा. भागचंद जी सोनी पूज्य माताजी से तत्त्वचर्चा में बड़ा ही समय निकालकर लाभ प्राप्त करते रहते थे। अजमेर चातुर्मास के बाद अजमेर में ही पूज्य माताजी की जन्मदात्री माँ मोहिनी जी एवं अन्य ब्रह्मचारिणी बाइयों की दीक्षाएं बड़े ही धूमधाम से सम्पन्न हुईं, जिसमें पच्चीसों हजार की जनता एकटक दीक्षा समारोह के वैराग्य-परक दृश्य को देखकर अपने नेत्रों को सफल कर रही थीं। कु. माधुरी ने यहीं पर सुगंधदशमी के दिन 13 वर्ष की उम्र में आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत धारण किया। वर्तमान में वे आर्यिका चंदनामती माताजी के रूप में पूज्य माताजी के संघ में रत्नत्रयसाधनारत हैं।

चातुर्मास के बाद—अजमेर चातुर्मास के बाद संघ का विहार होता है। स्वास्थ्य ठीक न होने से मध्य में पूज्य माताजी अपनी कुछ शिष्य-शिष्याओं के साथ ब्यावर रुक जाती हैं। ब्यावर के शास्त्र भंडार से 1 हस्तलिखित प्रति अष्टसहस्री की प्राप्त होने से टिप्पणी एवं पाठांतर का कार्य भी प्रारंभ हुआ।

राय सा. चांदमल जी पाण्ड्या-गोहाटी, सेठ माणिकचंद वीरचंद गांधी-फलटण, परसादीलाल पाटनी-दिल्ली, पारसदास मोटर वाले आदि महानुभावों की विशेष प्रेरणा होने से ब्यावर से विहार कर पूज्य माताजी अपने शिष्य-शिष्याओं सहित जयपुर होते हुए भारत की राजधानी दिल्ली में पदार्पण करती हैं।

सत्रहवाँ चातुर्मास (सन् 1972, पहाड़ीधीरज-दिल्ली)

पहाड़ी धीरज-दिल्ली में 2 मुनिराज (मुनि श्री संभवसागर जी एवं मुनि श्री वर्धमानसागर जी) एवं 4 माताजी, ऐसे 6 त्यागियों के संघ का चातुर्मास स्थापित हुआ। चातुर्मास के मध्य ही दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य माताजी की प्रेरणा सेहुई, जिसके प्रथम अध्यक्ष-डॉ. कैलाशचंद जैन राजाटॉयज-दिल्ली एवं प्रधानमंत्री-वैद्य शांतीप्रसाद जी-दिल्ली (फर्म-राजवैद्य शीतल प्रसाद एण्ड संस) मनोनीत किये गये। संस्थान के अन्तर्गत ही 'वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला' स्थापित की गई। अष्टसहस्री के अलावा त्रिलोकभास्कर नामक मौलिक ग्रंथ भी माताजी ने इसी चातुर्मास के मध्य लिखा। जिसमें त्रिलोकसार, तिलोयपण्णत्ति,

जम्बूद्वीपपण्णत्ति आदि ग्रंथों के आधार से योजन को मील आदि सरल आधुनिव परिवेश में प्रस्तुत किया गया। यहाँ पर डॉ. कैलाशचंद जी 'राजा टॉयज' वालों ने माताजी के प्रवचन समयसार, तत्त्वार्थसूत्र आदि पर रिकार्ड किये।

पूज्य माताजी ने दिल्ली की मीनाबाई एवं ब्र. मनोवती बाई को आचार्य देशभूषण जी से दीक्षा दिलाई। उनके क्रम से यशोमती और संयममती नामकरण हुए, उन दोनों ने 3 वर्ष तक पूज्य माताजी के सानिध्य में ध्यान-अध्ययन किया है।

अठारहवाँ चातुर्मास (सन् 1973, नजफगढ़-दिल्ली)

नजफगढ़-दिल्ली के इस चातुर्मास के मध्य विविध कार्यक्रमों के साथ ही पूज्य माताजी ग्रंथ रचना में सतत संलग्न रहीं और न्यायसार नामक तर्कशास्त्र के एक ग्रंथ का निर्माण किया तथा भावसंग्रह, भावत्रिभंगी, आस्रव त्रिभंगी का अनुवाद करके कातंत्र व्याकरण का अनुवाद प्रारंभ किया।

चातुर्मास के बाद संघ का विहार दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर होकर अगला चातुर्मास पुनः आचार्यश्री धर्मसागर जी महाराज के साथ ही दिल्ली में होता है।

उन्नीसवाँ चातुर्मास (सन् 1974, लाल मंदिर-दिल्ली)

भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण महोत्सव वर्ष होने के कारण सारे देश में भगवान महावीर के अहिंसात्मक संदेशों की धूम चल रही थी और देश की राजधानी दिल्ली में आचार्यश्री धर्मसागर जी का संघ सहित चातुर्मास, आचार्य श्री देशभूषण जी का संघ सहित चातुर्मास, मुनि श्री विद्यानंद जी का चातुर्मास एवं आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का चातुर्मास होने से जो प्रभावना हुई है, वह भी आने वाली भावी परम्परा के लिए एक प्रेरणा और आदर्श का विषय रहेगा। इस चातुर्मास के मध्य पूज्य माताजी द्वारा लिखित और अनुवादित 13 पुस्तकों का प्रकाशन सम्पन्न हुआ, जिसमें भगवान महावीर के जीवन पर लिखी गई सचित्र पुस्तक (भगवान महावीर कैसे बने) भी निर्वाण महोत्सव में एक अनूठी पुस्तक सिद्ध हुई और प्रेस से आते ही 25000 पुस्तकें समाप्त हो गईं अतः 10 हजार पुस्तकों का 1 माह के अन्दर पुनः प्रकाशन किया गया।

बच्चों के प्रारंभिक ज्ञान हेतु बालविकास के प्रथम भाग का प्रकाशन भी दिल्ली में इसी समय हुआ था।

निर्वाण महोत्सव के इस पुनीत वर्ष में ही पूज्य माताजी द्वारा अनुवादित अष्टसहस्री ग्रंथ एवं अन्य कतिपय पुस्तकों का एक विशाल समारोहपूर्वक माननीय साहू शांतिप्रसाद जी के सम्मुख गणमान्य राजनेताओं एवं समस्त दिगम्बर, श्वेताम्बर आचार्य-उपाध्याय संघ सानिध्य में विमोचन किया गया।

इसी वर्ष दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के एवं समीचीन धर्मज्ञान के प्रचार हेतु

संस्थान के अंतर्गत ही एक मासिक पत्रिका "सम्यग्ज्ञान" का प्रकाशन प्रारंभ हुआ, जो कि आज देश के कोने-कोने एवं हर प्रांत में अपनी अनूठी शैली से प्रशंसित हो चुकी है।

चातुर्मास के बाद—दिल्ली से आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज संघ सहित, उपाध्यायमुनि श्री विद्यानंद जी महाराज एवं आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का विहार होकर मेरठ होता हुआ ऐतिहासिक तीर्थ क्षेत्र हस्तिनापुर में मंगल पदार्पण होता है। यहाँ पर नवनिर्मित 3 विशाल जिनबिंबों की आचार्य, उपाध्याय एवं समस्त साधुओं के सानिध्य में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न होती है। पुनः आचार्यश्री धर्मसागर जी महाराज का चातुर्मास सहारनपुर, पूज्य माताजी का चातुर्मास हस्तिनापुर और उपाध्याय विद्यानंद जी का चातुर्मास जगाधरी होने से उत्तर भारत में धर्मप्रभावना कायम रही।

बीसवाँ चातुर्मास (सन् 1975, हस्तिनापुर-उत्तरप्रदेश)

हस्तिनापुर में एकांत एवं शांतिप्रिय स्थान होने से पूज्य माताजी का अध्ययन-अध्यापन पूर्व समय से भी तीव्र गति से चला। कई ग्रंथों के अनुवाद किये और सामूहिक स्वाध्याय से अनेक भव्य जीवों को बहुत ही लाभ प्राप्त हुआ।

प्रकाशन में बालविकास के चारों भागों का प्रकाशन प्रमुख रहा।

इक्कीसवाँ चातुर्मास (सन् 1976, खतौली-उत्तरप्रदेश)

यहाँ पर चातुर्मास से पूर्व ही एक शिक्षण शिविर का आयोजन पूज्य माताजी की प्रेरणा से हुआ, जिसमें लगभग 500 स्त्री-पुरुष, बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। उस शिविर में सरल रीति से विषय समझने की दृष्टि से द्रव्यसंग्रह, समाधिशतक एवं इष्टोपदेश का पूज्य माताजी ने पद्यानुवाद करके बड़ा ही उपकार किया। इन पुस्तकों के प्रकाशन के साथ ही अन्य कतिपय 'आर्यिका' आदि पुस्तकों का भी प्रकाशन कार्य सम्पन्न हुआ।

इस चातुर्मास की एक उपलब्धि यह रही कि पूज्य माताजी ने इन्द्रध्वज विधान हिन्दी भाषा में लिखना प्रारंभ किया और 3 माह के अल्प समय में 50 पूजाओं से युक्त इस वृहद् ग्रंथ का निर्माण करके एक अद्भुत कार्य कर दिखाया है। इस इन्द्रध्वज विधान का जब से प्रकाशन हुआ है, तब से लेकर आज तक भारत के कोने-कोने में यह विधान हर वर्ष महती धर्मप्रभावना के साथ सम्पन्न किया जाता है।

बाईसवाँ चातुर्मास (सन् 1977, हस्तिनापुर-उत्तरप्रदेश)

स्वास्थ्य की प्रतिकूलता रहने से पूज्य माताजी ने पुनः हस्तिनापुर के प्राचीन मंदिर में चातुर्मास करके मूलाचार का शब्दशः हिन्दी अनुवाद करने का संकल्प किया। यह ग्रंथ भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित हो चुका है। अन्य कई पुस्तकें सम-सामयिक विषयों पर लिखीं-जिसमें दिगम्बर मुनि, धरती के देवता एवं 3-4 पूजन-विधान की पुस्तकें प्रमुख हैं।

तेईसवाँ चातुर्मास (सन् 1978, हस्तिनापुर-उत्तरप्रदेश)

2 जुलाई सन् 1978 को अखिल भारतीय दिगम्बर जैन शांतिवीर सिद्धान्त संरक्षिणी सभा के माननीय मंत्री श्री गणेशीलाल जी रानीवाला एवं श्री त्रिलोकचंद जी कोठारी-कोटा आदि महानुभावों ने पूज्य माताजी के पास उपस्थित होकर पूज्य माताजी के सानिध्य में एक प्रशिक्षण शिविर लगाने के भाव व्यक्त किये, उसकी रूपरेखा तैयार की गई और पूज्य माताजी की स्वीकृति प्राप्त कर सभी लोग उस कार्य को विधिवत् संचालन करने में संलग्न हो गये। यह शिविर हस्तिनापुर में ही 7 अक्टूबर से 16 अक्टूबर तक सम्पन्न हुआ।। इस शिविर में प्रशिक्षण हेतु एक 'प्रवचन निर्देशिका' नामक 250 पृष्ठ की पुस्तक को पूज्य माताजी ने लगभग 50-60 ग्रंथों के आधार से सप्रमाण अगस्त माह में लिखी थी, जिसका विमोचन शिविर के उद्घाटन के दिन हुआ था।

सन् 1978 का चातुर्मास दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर पर हो रहा था। उसके मध्य 7 से 16 अक्टूबर तक देश भर के उच्चकोटि के विद्वानों का प्रशिक्षण शिविर रखा गया था। तदनुसार 6 अक्टूबर को विद्वानों तथा श्रेष्ठियों का आना प्रारंभ हो गया था, तभी बड़े मंदिर की कमेटी ने विद्वानों को ठहराने से मना कर दिया। कमरों में ताले डाल दिये, जिससे अचानक समस्या उत्पन्न हो गई। यह चर्चा श्वेताम्बर मंदिर जैन बालाश्रम तक पहुँच गई। बालाश्रम के कार्यकर्ताओं ने आकर माताजी से करबद्ध निवेदन किया कि माताजी! किसी प्रकार की चिंता न करें। प्रशिक्षण शिविर बालाश्रम में लगावें, सभी श्रेष्ठी तथा विद्वान भी वहीं ठहरें, वहीं सभी के भोजनादि की भी व्यवस्था करें, पूरा परिसर आपके लिए समर्पित है।

इस प्रस्ताव पर माताजी ने सभी से विचार-विमर्श किया। पुनः सभी ने एकमत से स्वीकृति प्रदान की। निर्णय होते ही वहाँ दो घंटे में संपूर्ण व्यवस्था हो गई। 7 अक्टूबर को प्रातः शिविर का उद्घाटन हुआ, जिसमें पं. मोतीचंद जी कोठारी-फल्टण को कुलपति बनाया गया। शिविर में शास्त्री परिषद के महामंत्री पं. बाबूलाल जी जमादार संचालक थे जिन्होंने माताजी के आदेशानुसार पूर्ण अनुशासन से 10 दिन शिविर चलाया। शिविर में डॉ. लालबहादुर शास्त्री, पं. मक्खनलाल जी शास्त्री जैसे उच्चकोटि के 80 विद्वान पधारे थे। पूज्य माताजी ने स्वयं विद्वानों को प्रवचन शैली के बारे में प्रशिक्षित किया। शिविर अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। आज भी कई युवा विद्वान उस शिविर की उपलब्धियों को याद करते हैं।

इस चातुर्मास में सुदर्शन मेरु का निर्माणकार्य द्रुतगति से चल रहा था। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराने पर विचार-विमर्श प्रारंभ हो गया था। चातुर्मास समापन के पश्चात् माताजी ने ससंघ दिल्ली जाने का निश्चय किया।

चातुर्मास समापन के पश्चात्—हस्तिनापुर का चातुर्मास पूर्ण करके माताजी ने

ससंघ भीषण सर्दी में विहार किया। पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी का स्वास्थ्य अनुकूल न होते हुए भी उन्हें साथ ही ले जाया गया। 19 दिसम्बर को संघ का दिल्ली में पदार्पण हुआ। वहाँ जैन बालाश्रम दरियागंज में प्रवास के मध्य सुदर्शन मेरु की प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 29 अप्रैल से 3 मई 1979 तक "श्री सुदर्शन मेरु जिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव" हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र. में होगा, इसके लिए प्रतिष्ठा समिति का गठन किया गया। प्रतिष्ठाचार्य के रूप में ब्र. सूरजमल जी को रखने का निर्णय किया गया।

पुनः दिल्ली से विहार करके संघ वापस हस्तिनापुर आया। निर्धारित तिथि में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सानंद एवं निर्विघ्न सम्पन्न हुई। इस प्रतिष्ठा महोत्सव में आचार्यकल्प श्री श्रेयांससागर महाराज के ससंघ पधारने से और अधिक विशेषता आ गई। पूज्य माताजी की भावनानुसार पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के मध्य यह निर्णय लिया गया कि जम्बूद्वीप स्थल पर "आचार्य वीरसागर संस्कृत विद्यापीठ" प्रारंभ किया जावे। तदनुसार श्रावण शुक्ला एकम् के शुभ दिन विद्यापीठ का उद्घाटन हुआ, जिसमें प्रथम विद्यार्थी के रूप में सूर्यकांत (सुरेश) कोटड़िया का प्रवेश हुआ। वह प्रथम विद्यार्थी वर्तमान में मुनि श्री रविनंदी जी के रूप में धर्म की आराधना तथा धर्म की प्रभावना कर रहे हैं। इसी प्रकार नरेश कुमार जैन, प्रवीणचंद जैन ने भी इस विद्यापीठ से विद्यार्थी बनकर अध्ययन किया। वे प्रतिष्ठाचार्य के रूप में आज भी खूब धर्मप्रभावना करते हुए संस्थान की सेवा कर रहे हैं।

प्रतिष्ठा सम्पन्न होने के पश्चात् माताजी ने पूज्य रत्नमती माताजी की अनिच्छा होते हुए भी ज्येष्ठ माह की भयंकर गर्मी में पुनः दिल्ली के लिए विहार कर दिया।

चौबीसवाँ चातुर्मास (सन् 1979, मोरीगेट-दिल्ली)

8 जुलाई 1979 को दि. जैन मंदिर मोरीगेट, दिल्ली में चातुर्मास की स्थापना हुई। प्रतिदिन प्रातः प्रवचन तथा स्वाध्याय से महती धर्मप्रभावना हुई। स्त्री-पुरुषों, बालक-बालिकाओं को धर्माध्ययन भी कराया गया। उस समय संघ में आर्यिका श्री रत्नमती माताजी तथा आर्यिका श्री शिवमती माताजी थीं। सब्जी मण्डी-दिल्ली की जैन समाज के निवेदन पर श्रावण शुक्ला 7 को सब्जी मण्डी जाकर भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाणलाडू चढ़ाने के उत्सव में मंगल प्रवचन किया। उक्त कार्यक्रम में मुनि श्री मल्लिसागरजी (आ. श्री विद्यासागर जी महाराज के पिता) भी पधारे थे।

महिला समाज मोरीगेट ने दशलक्षण पर्व में इन्द्रध्वज मंडल विधान किया, जिसमें अनेक स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। दिल्ली में प्रथम बार इन्द्रध्वज विधान हो रहा था। इसीलिए दिल्ली के कोने-कोने से जैन समाज के महानुभाव विधान देखने आये।

आश्विन मास में शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का भव्य आयोजन—चूँकि मोरीगेट में

स्थान पर्याप्त नहीं था इसलिए जैन बालाश्रम दरियागंज में 23 से 30 सितम्बर तक दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान,हस्तिनापुर तथा दि. जैन सिद्धांत संरक्षिणी सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। इसमें भी प्रो. मोतीचंद कोठारी-फल्टण को कुलपति बनाया गया। पं. पन्नालाल साहित्याचार्य-सागर भी पधारे थे।

डिप्टीगंज में पुनः इन्द्रध्वज महामण्डल विधान का आयोजन 3 से 14 अक्टूबर तक माताजी के ससंघ सानिध्य में सम्पन्न हुआ, जिसमें शताधिक स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया, महती धर्मप्रभावना हुई। विधान समापन के पश्चात् माताजी ससंघ वापस मोरीगेट पधारीं। जहाँ जैन समाज दिल्ली के अग्रणी कार्यकर्ता मुनिभक्त श्रेष्ठी श्री रमेशचंद जैन 'पी.एस. जैन मोटर्स'-राजपुर रोड ने 15 से 17 अक्टूबर तक सपरिवार पंचपरमेष्ठी विधान भक्तिविभोर होकर किया, पुनः दीपावली के बाद चातुर्मास समापन हुआ।

मोरीगेट चातुर्मास के पश्चात्– चातुर्मास समापन के पश्चात् माताजी जैन बालाश्रम, दरियागंज पधारीं। यहाँ श्री भारतवर्षीय अनाथरक्षक जैन सोसाइटी, जैन बालाश्रम दरियागंज के 75वर्ष की पूर्णता पर हीरक जयंती महोत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें पूज्य माताजी ने सभी कार्यकर्ताओं को आशीर्वाद प्रदान किया। हीरक जयंती महोत्सव में तत्कालीन भाजपा नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी पधारे, उन्होंने भी माताजी से आशीर्वाद प्राप्त किया। उन्हें मैंने माताजी द्वारा लिखित साहित्य भेंट किया था।

श्री राजेन्द्र प्रसाद कम्मोजी जैन बालाश्रम, दरियागंज-दिल्ली के मंदिर में इन्द्रध्वज विधान कराना चाहते हैं। यह बात मैंने माताजी को बताई, तब माताजी मोरीगेट में विराजमान थीं। कम्मोजी जब मोरीगेट आये, तब उनके आते ही माताजी ने मुझे आदेश दिया कि "इन्हें विधान सामग्री की सूची दे दो।" साथ में यह भी कहा कि कार्तिक आष्टान्हिका में विधान होगा, मैं समय पर पहुँच जाऊँगी।

कम्मोजी ने सामग्री की सूची हाथ में ली तथा माताजी के विहार की तथा विधान की रूपरेखा बनाने लगे। उठते-उठते हंसकर उन्होंने कहा कि "मैं तो विधान न कर सकने के लिए कहने आया था किन्तु आपके भावों को देखकर मना नहीं कर सका, प्रत्युत् पक्का करके जा रहा हूँ।" यह बात सुनकर माताजी भी खूब हंसी तथा वे भी हँसे। 28 अक्टूबर से 4 नवम्बर तक कार्तिक अष्टान्हिका में बहुत धूमधाम से विधान सम्पन्न हुआ।

दरियागंज से विहार कर माताजी ससंघ 25 नवम्बर को दि. जैन मंदिर, ग्रीन पार्क पहुँची, वहाँ 29 नवम्बर से 9 दिसम्बर तक "ध्यान-साधना शिविर" का आयोजन हुआ। संघस्थ कु. माधुरी ने सबको सामायिक विधि सिखाई तथा माताजी ने "ह्रीँ" का ध्यान सिखाया। ध्यान करने में सभी स्त्री-पुरुषों को बहुत आनंद आया। शीतकाल में

संघ का प्रवास लगभग ढाई माह ग्रीनपार्क में रहा। यहाँ मंदिर में प्रातः प्रतिदिन द्रव्यसंग्रह की कक्षा चलाई जाती थी। उसके पश्चात् माताजी का प्रवचन होता था।

यहाँ पर श्री निर्मल कुमार सेठी-सीतापुर वालों से परिचय हुआ। उनकी धर्मरुचि तथा उत्साह देखकर माताजी ने उन्हें अ.भा.दि. जैन महासभा का अध्यक्ष बनने की प्रेरणा दी। तदनुसार उन्हें कोटा (राज.) में महासभा की मीटिंग में अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया। माताजी ने उन्हें खूब आशीर्वाद दिया। तब से माताजी के पास आकर मार्गदर्शन तथा आशीर्वाद प्राप्त करते रहते हैं।

माताजी ने मुझे सेठ हीरालाल जी रानीवाला के सुपुत्र श्री सुरेन्द्र कुमार जी रानीवाला के यहाँ इन्द्रध्वज विधान कराने वर्धा (महा.) भेजा था। 26 नवम्बर से 7 दिसम्बर तक खूब प्रभावनापूर्वक विधान हुआ। मैं पहली बार संघ से बाहर विधान कराने गया था।

ग्रीनपार्क में ही साहू शांतिप्रसाद जी के सुपुत्र साहू अशोक कुमार जी से निकट से परिचय हुआ। उन्हें माताजी ने समाज में आगे आने के लिए पुरजोर प्रेरणा दी। जब दो-चार बार साहू अशोक जी का ग्रीनपार्क में माताजी के पास आना हुआ, तब उन्हें हस्तिनापुर में बनने वाली जम्बूद्वीप रचना के द्वितीय चरण का शिलान्यास करने की प्रेरणा दी गई, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। तदनुसार माघ शुक्ला पूर्णिमा-31 जनवरी 1980 को साहू श्रेयांसप्रसाद जी, साहू अशोक जी व उनकी ध.प. श्रीमती इन्दु जी ने हस्तिनापुर पधारकर हजारों जनसमूह के मध्य समारोहपूर्वक शिलान्यास किया।

ग्रीनपार्क से दि. जैन मंदिर राजाबाजार-कनॉट प्लेस नई दिल्ली में 6 फरवरी 1980 को माताजी का ससंघ पदार्पण हुआ। यहाँ 23 फरवरी से 2 मार्च तक लाला श्यामलाल जी ठेकेदार परिवार की ओर से इन्द्रध्वज विधान का आयोजन फाल्गुन की आष्टान्हिका में हुआ। दिल्ली जैन समाज के अनेक विशिष्ट महानुभावों ने विधान-पूजन में भाग लेकर पुण्योपार्जन किया।

श्री छोटीशाह (प्रद्युम्न कुमार जैन) टिकैतनगर के विशेष आग्रह पर वहाँ से 10 से 19 फरवरी तक आयोजित इन्द्रध्वज विधान कराने के लिए माताजी ने कु. माधुरी को टिकैतनगर भेजा। मैंने भी वहाँ जाकर विधान के मध्य प्रवचन किये। अवध प्रांत में पहली बार यह इन्द्रध्वज विधान हुआ था, जिससे महती धर्मप्रभावना हुई।

कनॉट प्लेस से संघ सहित माताजी मंटोला पहाड़गंज पधारीं। यहाँ 7 से 16 मार्च तक शिक्षण शिविर में द्रव्यसंग्रह पढ़ाया गया, बीच में पंचपरमेष्ठी विधान हुआ। चैत्र वदी 9 को ऋषभदेव जयंती मनाई गई। प्रतिदिन प्रवचन भी होते रहे। खूब लाभ समाज ने लिया।

कार्यक्रमों के साथ-साथ माताजी का लेखन कार्य भी चलता रहा। रत्नकरण्ड के पद्यों की हिन्दी श्लोकों में रचना, शांति विधान आदि ग्रंथ बनाये।

पुनः संघ का आगमन साइकिल मार्केट-चाँदनी चौक में हुआ। महावीर जयंती के संदर्भ में 23 मार्च को प्रातः हीरालाल हायर सेकेण्ड्री स्कूल, पहाड़ी धीरज में तथा उसी दिन मध्यान्ह में महावीर उद्यान कैलाश नगर के पंडाल में माताजी के ओजस्वी प्रवचन हुए। चैत्र शु. 11 से 13 तक सुभाष मैदान चाँदनी चौक में प्रतिदिन प्रातः एवं मध्यान्ह में माताजी के प्रभावी प्रवचन हुए। इनके अतिरिक्त और भी कई स्थानों में महावीर जयंती संबंधी माताजी के प्रवचन हुए।

कम्मोजी की धर्मशाला में 13 से 28 जून तक 16 दिवसीय शांतिविधान माताजी के सानिध्य में श्री विजेन्द्र कुमार जैन सर्राफ ने किया। इससे पूर्व 27 मई से 6 जून तक उसी धर्मशाला में सम्यग्ज्ञान शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें बाल विकास, द्रव्यसंग्रह, रत्नकरण्ड श्रावकाचार आदि का शिक्षण दिया गया। सभी वर्ग के लोगों ने लाभ लिया।

ज्येष्ठ की भयंकर गर्मी के कारण पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी को पीलिया हो गया। 97 वर्षीय हकीम अतरसेन जैन के यूनानी नुस्खे से पीलिया ठीक हुआ। पुनः दूसरी व तीसरी बार पीलिया हुआ। बीच में स्वास्थ्य बहुत नाजुक हो गया था किन्तु उसी कासनी के बीज की ठंडाई वाले नुस्खे से ठीक हो गईं।

पच्चीसवाँ चातुर्मास
(सन् 1980-कूचा बुलाकी बेगम, साइकिल मार्केट, चाँदनी चौक-दिल्ली)

26 जून 1980 आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को कम्मोजी की धर्मशाला में चातुर्मास की स्थापना हुई। मेरु मंदिर में 20 से 29 जुलाई तक माताजी के सानिध्य में इन्द्रध्वज विधान का आयोजन किया गया। इस मंदिर में नंदीश्वर के 52 जिनालयों की भव्य रचना बनी हुई है।

फरवरी 1981 में श्रवणबेलगोला में होने वाले "भगवान बाहुबली सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक" की तैयारियाँ एक वर्ष पूर्व से जोरों से प्रारंभ हो गई थीं अतः माताजी ने भगवान बाहुबली के संबंध में साहित्य का निर्माण प्रारंभ कर दिया। उपन्यास की शैली में "योग चक्रेश्वर बाहुबली" पुस्तक लिखी, "कामदेव बाहुबली" नाम से लघु पुस्तिका लिखी, जिसका पांच भाषाओं में हजारों की संख्या में प्रकाशन किया गया। 'बाहुबली नाटक' लिखा, भरत-बाहुबली नाम से चित्रकथा (कॉमिक्स) का प्रकाशन हुआ। भगवान बाहुबली विषयक माताजी द्वारा लिखित हिन्दी-संस्कृत की स्तुतियों का, बाहुबली स्तोत्र, बाहुबली पूजा आदि का लाखों की संख्या में प्रकाशन किया गया। 'भगवान बाहुबली' काव्य रचना की ऑडियो कैसेट भी बड़ी संख्या में तैयार कराकर वितरित की गई।

दशलक्षण पर्व में माताजी के प्रवचन प्रातः कम्मोजी की धर्मशाला में तथा मध्यान्ह में कूचा सेठ के बड़े मंदिर में हुए।

भगवान बाहुबली सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक श्रवणबेलगोला के प्रचार-प्रसार के लिए लालकिला मैदान से जनमंगल महाकलश प्रवर्तन का उद्घाटन 29 सितम्बर 1980 को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी के करकमलों से हुआ। उस सभा में पूज्य माताजी के भी आशीर्वचन हुए। यह महाकलश पूरे देश के विभिन्न अंचलों में घूमकर फरवरी 1981 में महामस्तकाभिषेक के अवसर पर श्रवणबेलगोला पहुँचा था।

श्री पन्नालाल सेठी-डीमापुर ने सपरिवार माताजी के सानिध्य में इन्द्रध्वज महामण्डल विधान 9 से 19 अगस्त तक कम्मोजी की धर्मशाला में किया। इस विधान को विधानाचार्य के रूप में मैंने सम्पन्न कराया था। अनेकों महानुभावों ने विधान में भाग लेकर खूब पुण्योपार्जन किया।

आसोज (क्वांर) शुक्ला 15 (शरदपूर्णिमा) 23 अक्टूबर 1980 को माताजी का 47वाँ जन्मदिवस माताजी के मना करने के बावजूद भी विशेष समारोहपूर्वक महावीर वाटिका, दरियागंज में विशाल पंडाल बनाकर मनाया गया। तत्कालीन केन्द्रीयमंत्री श्री प्रकाशचंद जैन सेठी तथा ए.पी. शर्मा ने भाग लिया। प्रमुख अतिथियों में साहू अशोक कुमार जैन, अमरचंद पहाड़िया-कलकत्ता आदि ने विनयांजलि समर्पित की। इस अवसर पर श्री पन्नालाल सेठी-डीमापुर की ओर से वृहद् प्रीतिभोज का आयोजन किया गया था, जिसमें लगभग 5000 स्त्री-पुरुषों ने भोजन किया।

इससे पहले माताजी के दीक्षित जीवन में सन् 1966 के सोलापुर चातुर्मास में माताजी के मना करने पर भी आ. श्री विमलसागर जी महाराज के विशेष आग्रह से उन्हीं के सानिध्य में ब्र. सुमतिबाई शाह ने शरदपूर्णिमा पर माताजी के जन्मदिन को भव्यरूप में मनाया था।

जन्मदिवस के अगले दिन 24 अक्टूबर से समयसार वाचना शिविर प्रारंभ हुआ। इसमें डॉ. पन्नालाल जी साहित्याचार्य को कुलपति बनाया गया था। इसमें पं. कैलाशचंद जी सिद्धांतशास्त्री-बनारस भी पधारे थे। शिविर में 85 विद्वान एवं श्रीमान पधारे थे। शिविर में स्वयं माताजी ने प्रतिदिन समयसार पर डेढ़ घंटे तक प्रवचन किया। 2 नवम्बर 1980 को लाल मंदिर में शिविर समापन समारोह की सभा में श्री रमेशचंद जैन 'पी.एस. जैन मोटर्स' ने माताजी द्वारा लिखित एवं मुद्रित भगवान ऋषभदेव, संस्कार, प्रभावना, जीवनदान, उपकार तथा नियमसार पद्यावली पुस्तकों का विमोचन किया।

बाहुबली मस्तकाभिषेक के संदर्भ में फरवरी 1981 का सम्यग्ज्ञान "भगवान बाहुबली" विशेषांक के रूप में निकाला गया जिसमें माताजी द्वारा लिखित अनेक स्तुतियों तथा लेखों का प्रकाशन किया गया। मैं और रवीन्द्र कुमार 9 फरवरी से

5 मार्च तक श्रवणबेलगोला रहे। भगवान बाहुबली का मस्तकाभिषेक किया, समारोह का पूरा आनंद लिया। माताजी दिल्ली में रहकर पत्र-पत्रिकाओं तथा रेडियो, टी.वी. के माध्यम से समारोह की जानकारी लेती रहीं। 22 फरवरी 1981 को 1008 कलशों से महामस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ। 24 फरवरी को श्रवणबेलगोला में दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान का अधिवेशन हुआ जिसमें माताजी द्वारा लिखित ''जैन भारती'' ग्रंथ का विमोचन हुआ। इस ग्रंथ की अनेकों महानुभावों तथा साधुओं ने बहुत प्रशंसा की, क्योंकि इसमें चारों अनुयोगों का संक्षेप में बहुत सुन्दर विवेचन किया गया है, जिससे जैनधर्म को सरलता से समझा जा सकता है। इसे अनेक भाषाओं में प्रकाशित करने का कार्य भी चल रहा है।

दि. जैन लाल मंदिर चाँदनी चौक में प्रेमचंद जैन (दाने वालों) ने 9 से 16 मार्च तक इन्द्रध्वज विधान माताजी के सानिध्य में कराया। विधान के समापन पर 16 मार्च को दिल्ली में प्रथम बार गजरथ निकाला गया। इन्हीं प्रेमचंद दाने वालों ने सन् 1985 में जम्बूद्वीप की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के अवसर पर एक रथ बनवाकर भेंट किया। इन्होंने लाल किले के सामने सुभाष मैदान में बैठकर पक्षियों के लिए अनाज बेचकर उसके लाभ से अनेक रथ बनवाकर भिन्न-भिन्न मंदिरों में भेंट करके एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए प्रस्थान—16 मार्च को लालमंदिर की विशाल सभा में सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए माताजी ने मोरीगेट में आष्टान्हिक पर्व करके 24 मार्च को हस्तिनापुर के लिए विहार किया। 9 अप्रैल को हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर पदार्पण हुआ। यहाँ अब तक दो धर्मशालाओं का निर्माण हो चुका था।

वैशाख शुक्ला 7, दिनाँक 10 मई 1981 को तीनमूर्ति मंदिर तथा रत्नत्रय निलय (त्यागी भवन) का शिलान्यास सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन प्रातः-मध्यान्ह ग्रंथों का स्वाध्याय माताजी के समक्ष चलता रहा, माताजी ग्रंथों का लेखन करती रहीं तथा निर्माणकार्य भी द्रुतगति से चलते रहे। इसी मध्य हस्तिनापुर तथा जम्बूद्वीप रचना के प्रचार-प्रसार के लिए ''जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति'' के नाम से एक रथ पूरे भारत में भ्रमण कराने की रूपरेखा बनाई गई।

छब्बीसवाँ चातुर्मास (सन् 1981, जम्बूद्वीप स्थल-हस्तिनापुर-उ.प्र.)

8 से 18 जुलाई तक श्री निर्मल कुमार सेठी तथा श्री पन्नालाल सेठी-डीमापुर ने इन्द्रध्वज विधान माताजी के सानिध्य में भक्तिभावपूर्वक सम्पन्न हुआ। इसी मध्य 16 जुलाई (आषाढ़ शुक्ला 14) को चातुर्मास की स्थापना हुई। यह जम्बूद्वीप स्थल पर पहला चातुर्मास स्थापित किया। इस चातुर्मास में निर्माण कार्यों की प्रगति के साथ-साथ ''जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति'' रथ प्रवर्तन के विषय में चर्चा-विचार चलता रहा।

11 से 15 अक्टूबर तक 'जम्बूद्वीप सेमिनार' का आयोजन किया गया। पं. पन्नालाल जी साहित्याचार्य-सागर को इस संगोष्ठी का कुलपति मनोनीत किया गया। इस संगोष्ठी के मध्य शास्त्री परिषद द्वारा प्रकाशित ''पं. बाबूलाल जमादार अभिनंदन ग्रंथ'' का विमोचन हुआ तथा उन्हें समर्पित किया गया। माताजी ने भी उन्हें उनकी कर्मठता तथा दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के प्रति समर्पित भावनाओं के लिए बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद दिया।

13 अक्टूबर, शरदपूर्णिमा के दिन माताजी के 48वें जन्मदिवस के शुभ अवसर पर आगत समस्त विद्वानों, श्रीमानों तथा नवयुवकों ने माताजी के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किये।

अनेक विद्वानों के विचारों को लेकर पं. बाबूलाल जमादार ने माताजी का अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित करने की योजना बनाई। जब यह बात माताजी को ज्ञात हुई, तो उन्होंने कहा कि मुझमें जो कुछ भी योग्यता है, उसका श्रेय आर्यिका रत्नमती माताजी को है। उन्होंने ही मुझमें बाल्यकाल से धर्म के संस्कार भरे थे, अतः उनका अभिनंदन ग्रंथ तैयार करें। तदनुसार ''आर्यिका रत्नमती अभिनंदन ग्रंथ'' तैयार करके नवम्बर 1983 में रत्नमती माताजी को समर्पित किया गया।

जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ का प्रवर्तन दिल्ली से प्रारंभ करने के लिए अनेक महानुभावों ने माताजी से आग्रहपूर्ण निवेदन किया, जिसमें प्रमुख थे राजेन्द्रप्रसाद कम्मोजी। साथ में यह भी कहा कि माताजी आपको भी दिल्ली चलना पड़ेगा। अनेक महानुभावों के अत्यधिक आग्रह के कारण माताजी को दिल्ली जाने का कार्यक्रम बनाना पड़ा। 13 फरवरी को हस्तिनापुर से दिल्ली के लिए माताजी ने ससंघ विहार किया। 27 फरवरी को दिल्ली मोरीगेट में पदार्पण हुआ। 2 मार्च 1982 से आष्टान्हिक पर्व में इन्द्रध्वज विधान उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। आचार्य श्री धर्मसागर जी अभिवंदन ग्रंथ का अनेक साधु-साध्वियों के सानिध्य में विमोचन हुआ, उसमें पूज्य माताजी के सानिध्य में भी मोरीगेट में राजेन्द्र प्रसाद कम्मोजी से विमोचन करवाया गया। दिल्ली की विभिन्न कालोनियों में महावीर जयंती पर माताजी के प्रवचन हुए।

17 अप्रैल को लाल मंदिर में माताजी के सानिध्य में ज्ञानज्योति कार्यालय का उद्घाटन हुआ। इसके साथ ही बस चेचिस खरीदकर रथ निर्माण का कार्य तेजी से प्रारंभ हो गया। रथ प्रवर्तन का उद्घाटन करने के लिए प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी से स्वीकृति लेने के लिए श्री जे.के. जैन सांसद (राज्यसभा सदस्य) से मिला गया। उनके प्रयास से 4 जून 1982 को उद्घाटन के लिए श्रीमती इन्दिरागांधी की स्वीकृति 28 मई को प्राप्त हो गई। स्वीकृति मिलते ही रथ तैयार करने की तथा उद्घाटन की तैयारियाँ बहुत तेजी से प्रारंभ हो गईं। धुआंधार प्रचार किया गया। पं. बाबूलाल जी

जमादार पूर्ण निष्ठा तथा तन्मयता के साथ में लगे हुए थे। रवीन्द्र कुमार तथा मैंने तैयारी में रात-दिन एक कर दिया और जिनेन्द्रप्रसाद जैन ठेकेदार, कैलाशचंद जैन-करोलबाग, डॉ. कैलाशचंद जैन राजा टॉयज, हेमचंद जैन-पहाड़गंज, गणेशीलाल रानीवाला-कोटा आदि कई लोग कार्यों में जुटे हुए थे। माताजी ने शुभ मुहूर्त में जम्बूद्वीप रचना के मॉडल की मंत्रों से शुद्धि की तथा उसमें यंत्र स्थापित किया।

4 जून 1982 को लालकिला मैदान में बनाये गये विशाल पंडाल में प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी ने शाम को 4 बजे पधारकर अत्यंत हर्ष एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में दसों हजार की भीड़ में माताजी से आशीर्वाद लेकर मंत्रोच्चारपूर्वक रथ पर पुष्पांजलि क्षेपण करके स्वस्तिक बनाकर श्रीफल चढ़ाया। रथ के देश भ्रमण के लिए शुभकामनाएं दीं। शाम को 5 बजे से रथ की शोभायात्रा चांदनी चौक से प्रारंभ होकर रात्रि में 9 बजे करोलबाग पहुँचकर समाप्त हुई। अगले दिन ग्रीनपार्क होकर रथ राजस्थान भ्रमण के लिए तिजारा पहुँचा। रथ संचालक के रूप में पं. बाबूलाल जी जमादार रथ के साथ में गये। बड़ी भक्तिभाव से राजस्थान के गाँव-गाँव में रथ का स्वागत हो रहा था। हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य चल रहा था।

दिल्ली जैन समाज के प्रमुख महानुभावों के विशेष आग्रहपूर्ण निवेदन को स्वीकार करके सन् 1982 का चातुर्मास कूचा सेठ चाँदनी चौक में करने की स्वीकृति प्रदान कर दी।

सत्ताइसवाँ चातुर्मास
(सन् 1982-कूचा बुलाकी बेगम, साइकिल मार्केट, दिल्ली)

5 जुलाई, आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी की रात्रि में 8 बजे समाज के सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में वर्षायोग की स्थापना की गई। भादों सुदी दूज, 20 अगस्त को चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की पुण्यतिथि के अवसर पर वेदवाड़ा में माताजी का प्रवचन हुआ।

13 सितम्बर से 21 सितम्बर तक श्री उग्रसेन हेमचंद जैन-पहाड़गंज की ओर से मंटोला की जैन धर्मशाला में माताजी के सानिध्य में इन्द्रध्वज मण्डल विधान हुआ। 26 सितम्बर से 10 अक्टूबर तक माताजी के सानिध्य में एक साथ दो विधान हुए। धर्मशाला में प्रातः इन्द्रध्वज विधान तथा दोपहर में प्रेमचंद जैन-महमूदाबाद वालों की तरफ से तीस चौबीसी विधान हुआ। महती धर्मप्रभावना हुई। शाहदरा में और भी कई छोटे-छोटे विधान हुए।

भोगल में माताजी के सानिध्य में 18 अक्टूबर को मंदिर का शिलान्यास सम्पन्न हुआ। 21 अक्टूबर 1982 को जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति सेमिनार का उद्घाटन फिक्की

ऑडिटोरियम नई दिल्ली में तत्कालीन संसद सदस्य श्री राजीव गांधी के करकमलों से हुआ। 22 अक्टूबर से 2 नवम्बर तक सेमिनार कम्मोजी की धर्मशाला साइकिल मार्केट में सम्पन्न हुआ, जिसमें एक जापानी विद्वान भी आये थे। प्रत्येक सत्र के समापन पर माताजी ने शंकाओं का समाधान किया। 1 नवम्बर को दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान का अधिवेशन, ज्ञानज्योति प्रवर्तन पूर्वांचल समिति की तथा अ.भा.दि. जैन युवा परिषद की बैठक हुई। 2 नवम्बर को सेमिनार का समापन समारोह बहुत अच्छे रूप में हुआ।

1 नवम्बर 1982 शरदपूर्णिमा के दिन माताजी का उन्चासवाँ जन्मदिवस विद्वानों तथा दिल्ली जैन समाज के महानुभावों द्वारा उत्साहपूर्वक मनाया गया।

चातुर्मास के पश्चात्–18 नवम्बर 1982 को कम्मोजी धर्मशाला से माताजी ने ससंघ विहार हस्तिनापुर के लिए किया। 29 नवम्बर कार्तिक शुक्ला तेरस को जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर में मंगल प्रवेश हुआ। कार्तिक पूर्णिमा पर हस्तिनापुर के वार्षिक मेले में 20-25 हजार जैन-अजैन आते हैं। यह मेला 'गंगा स्नान' के मेले के नाम से भी प्रसिद्ध है। 1979 में सुमेरु पर्वत के निर्माण के पश्चात् सुमेरु पर्वत भी जनता के आकर्षण का केन्द्र बन गया था। हजारों लोगों ने सुमेरु पर्वत पर चढ़कर उसमें निर्मित 16 चैत्यालयों के दर्शन के साथ-साथ चारों तरफ के प्राकृतिक सौंदर्य का भी आनंद लेने लगे थे। जम्बूद्वीप स्थल पर तीन मूर्ति मंदिर, रत्नत्रय निलय (त्यागी भवन), भोजनशाला आदि के निर्माण के साथ-साथ जम्बूद्वीप रचना में हिमवान आदि पर्वतों का निर्माणकार्य द्रुतगति से चल रहा था।

दूसरी तरफ माताजी के सानिध्य में त्रिलोकसार, राजवार्तिक आदि ग्रंथों का स्वाध्याय संघ के शिष्यवर्ग के लिए चालू किया गया। माताजी द्वारा साहित्य लेखन का कार्य भी चल रहा था। दिन में एक या दो बार माताजी रचना निर्माण के कार्य को भी देख लेती थीं, जिससे कार्य करने वालों को संतोष हो जाता था कि पर्वतों आदि का निर्माण सही रूप में हो रहा है।

उधर राजस्थान में भारी धर्मप्रभावनापूर्वक जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ का प्रवर्तन चल रहा था। बीच-बीच में जब पं. बाबूलाल जी जमादार घर आते, तो रथ संचालन के लिए मैं चला जाता था। बड़े शहरों में कमेटी के पदाधिकारी भी पहुँच जाते थे तथा प्रभावना देखकर हर्षित होते थे। 20 दिसम्बर 1982 को राजस्थान प्रवर्तन का समापन अति उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। राजस्थान के पश्चात् बंगाल-बिहार में रथ प्रवर्तन हुआ। पुनः उड़ीसा होकर रथ का प्रवर्तन 17 से 29 अप्रैल 1983 तक बम्बई में भारी धर्मप्रभावना के साथ हुआ।

हस्तिनापुर में माताजी के सानिध्य में समय-समय पर अनेक विधान सम्पन्न

हुए। 6 मार्च 1983 को नवनिर्मित डाइनिंग हॉल का उद्घाटन हुआ। 15 मई 1983 को श्री उग्रसेन हेमचंद जैन-पहाड़गंज दिल्ली द्वारा निर्मित 'रत्नत्रय निलय' का उद्घाटन उन्हीं के करकमलों से हुआ। 5 जून से 15 जून तक तत्त्वार्थसूत्र तथा दशधर्म पर एक प्रशिक्षण शिविर जम्बूद्वीप स्थल पर सम्पन्न हुआ, जिसमें 50 विद्वानों ने प्रशिक्षण लिया।

शिविर के कुलपति पं. पन्नालाल जी साहित्याचार्य थे। देखते-देखते 1983 के वर्षायोग का समय आ गया। पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की अस्वस्थता को देखते हुए दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के सदस्यों के विशेष निवेदन पर माताजी ने आगामी वर्षायोग जम्बूद्वीप स्थल पर ही स्थापित करने का निर्णय किया।

अट्ठाइसवाँ चातुर्मास (सन् 1983, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर, उ.प्र.)

आषाढ़ की अष्टान्हिका में नवनिर्मित डाइनिंग हॉल में एक साथ दो सिद्धचक्र विधान हुए। एक तेरहपंथ विधि से हुआ तथा दूसरा बीसपंथ आम्नाय से हुआ। यह सामंजस्य बहुत अच्छा लगा। किसी को भी किसी प्रकार की शिकायत नहीं रही, बल्कि सबको बहुत आनन्द आया। आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी, 23 जुलाई को वर्ष 1983 के चातुर्मास की स्थापना हुई।

जम्बूद्वीप स्थल पर जम्बूद्वीप रचना के साथ-साथ अन्य धर्मशाला आदि के निर्माण कार्य चल रहे थे। माताजी अपने लेखन तथा पठन-पाठन में संलग्न थीं। आने वाले भक्तों तथा दर्शनार्थियों को धर्मोपदेश के साथ-साथ जम्बूद्वीप रचना से भी परिचित कराती थीं। उधर ज्ञानज्योति का भ्रमण महाराष्ट्र में चल रहा था। वहाँ की प्रभावना के समाचार जब माताजी को प्राप्त होते, तो वे बहुत हर्षित होती थीं। दैनिक धार्मिक क्रियाओं, सामायिक-प्रतिक्रमण के अतिरिक्त ज्योतिरथ के निराबाध प्रवर्तन के लिए खूब माला जाप भी करती थीं।

जम्बूद्वीप रचना की पूर्णता को नजदीक देखते हुए जम्बूद्वीप रचना के लगभग 200 जिनबिंबों की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा को सम्पन्न कराने के लिए निवेदन करने हेतु संस्थान का एक प्रतिनिधिमण्डल ब्र.रवीन्द्र कुमार एवं कु. माधुरी के साथ 28 अक्टूबर 1983 को राजस्थान गया, वहाँ विभिन्न नगरों में विराजमान आचार्य श्री धर्मसागर जी, उपाध्याय श्री अजितसागर जी, मुनि श्री दयासागर जी, मुनि श्री अभिनंदनसागर जी आदि 10 संघों में जाकर नारियल चढ़ाया। औरंगाबाद में चातुर्मास कर रहे आचार्यश्री विमलसागर महाराज को भी प्रतिष्ठा पर हस्तिनापुर पधारने के लिए मैंने, श्री निर्मल कुमार सेठी आदि ने श्रीफल चढ़ाया।

11 से 21 सितम्बर 1983 तक दशलक्षण पर्व में श्री आनंद प्रकाश जैन 'सोरम वालों' ने तथा 7 से 15 नवम्बर तक श्री जयकुमार जैन विनायका-भागलपुर वालों ने

जम्बूद्वीप स्थल पर पूज्य माताजी के सानिध्य में इन्द्रध्वज विधान किये। शरदपूर्णिमा के दिन माताजी का 50वाँ जन्मदिवस सादगी से मनाया गया।

इस चातुर्मास के मध्य पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी के अभिनंदन ग्रंथ को प्रकाशित करने की तैयारी हुई, ग्रंथ तैयार हो गया। कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा, 20 नवम्बर 1983 को विशाल समारोह के मध्य पूज्य रत्नमती माताजी को अभिनंदन ग्रंथ भेंट किया गया। उक्त समारोह में श्री अमरचंद पहाड़िया-कलकत्ता, श्री निर्मल कुमार सेठी, लाला श्री श्यामलाल ठेकेदार, श्री गणेशीलाल रानीवाला आदि गणमान्य महानुभाव पधारे थे। सांसद श्री जे.के. जैन ने ग्रंथ विमोचन किया था। इस प्रकार अनेक प्रकार से धर्मप्रभावनापूर्वक 1983 को चातुर्मास सम्पन्न हो गया।

चातुर्मास के पश्चात्—ज्ञानज्योति रथ का प्रवर्तन तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल के पश्चात् 1 फरवरी 1984 से मध्यप्रदेश का प्रवर्तन जबलपुर से प्रारंभ हुआ। म.प्र. के अनेक मंत्री तथा नेताओं के साथ-साथ मध्यप्रदेश जैन समाज के प्रमुख सेठ देवकुमार सिंह कासलीवाल, श्री कैलाशचंद चौधरी-सनावद, श्री इन्दरचंद जैन चौधरी-सनावद आदि महानुभाव वहाँ पहुँचे थे, मैं भी गया था।

जम्बूद्वीप रचना के जिनबिंबों की पंचकल्याणक वैशाख शुक्ला 8 से 12 तदनुसार दिनाँक 28 अप्रैल से 3 मई 1984 तक करने की घोषणा माताजी ने की। 11 मार्च 1984 को दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान की बैठक पूज्य माताजी के सानिध्य में हुई, जिसमें प्रतिष्ठा समिति का गठन किया गया।

17 मई को सनावद नगर में ज्ञानज्योति रथ का भव्य स्वागतपूर्वक प्रवेश हुआ। यहाँ त्रिदिवसीय कार्यक्रम रखा गया था। दिल्ली, इंदौर आदि से अनेक गणमान्य महानुभाव तथा पं. बाबूलाल जी जमादार, डॉ. लालबहादुर शास्त्री आदि अनेक विद्वान भी उस समय सनावद पधारे थे। विशाल जनसभा के पश्चात् आकर्षक शोभायात्रा निकाली गई। सभा में सेठ अमोलकचंद जी सर्राफ को अभिनंदन पत्र भेंट किया गया।

कई दिनों से पं. जमादार जी के न जा पाने के कारण एक सुयोग्य विद्वान पं. सुधर्मचंद जी शास्त्री-तिवरी (जबलपुर) म.प्र. को स्थाई संचालक के रूप में नियुक्त किया गया।

14 मई 1983 को ज्योतिरथ संचालक पं. बाबूलाल जी जमादार बिहार प्रदेश से अपने घर आये थे, उसके बाद 17 मई को केवल सनावद के कार्यक्रम में आये थे। 9 जून 1984 को बड़ौत में उनके निवास पर ही पंडित जी का स्वर्गवास हो गया। पुनः एक माह पश्चात् 14 जुलाई को पंडित जी की धर्मपत्नी का भी स्वर्गवास हो गया। पंडित जी के असामयिक निधन से संस्थान के सभी सदस्यों को हार्दिक दुःख हुआ। पंडित जी का वात्सल्यपूर्ण व्यवहार आज भी याद आ जाता है।

उन्तीसवाँ चातुर्मास (सन् 1984, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर, उ.प्र.)

5 से 14 जुलाई 1984 तक श्री निर्मल कुमार सेठी, श्री सुमेरचंद पाटनी-लखनऊ तथा श्री मांगीलाल पहाड़े-हैदराबाद ने मिलकर माताजी के सानिध्य में जम्बूद्वीप स्थल पर इन्द्रध्वज विधान किया। चूंकि जम्बूद्वीप की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा अगले वर्ष होना निश्चित हो गया था। उससे पहले रचना का निर्माण भी पूरा होना था अतः माताजी ने संस्थान के पदाधिकारी व सदस्यों के निवेदन को स्वीकार करके हस्तिनापुर में ही चातुर्मास की स्थापना 12 जुलाई, आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को संघ सहित की।

जम्बूद्वीप रचना के निर्माण कार्य में जयपुर के मूर्ति वेदी निर्माण करने वालों के निमित्त से बीच-बीच में व्यवधान आ जाता था उसका यथोचित निराकरण किया जाता था। उधर रथ प्रवर्तन चल रहा था, उसे भी देखना होता था। प्रतिष्ठा पर यात्रियों को ठहराने के लिए धर्मशालाओं का निर्माण कार्य भी तेजी से चल रहा था। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा शानदार रूप से सम्पन्न हो, उसके लिए माताजी के पास भी विचार-विमर्श चलता रहता था। जम्बूद्वीप रचना की भव्यता को देखकर कुछ अकारणिक विद्वेषीजन झूठी भ्रांतियाँ भी फैलाते रहते थे, उनका भी समय-समय पर निराकरण किया गया।

जम्बूद्वीप रचना पूर्णरूप से शास्त्रोक्त बने, इस बात पर माताजी पूरा ध्यान रखती थीं। उनका ग्रंथ लेखन तथा स्वाध्याय भी निराबाध रूप से चल रहा था। भव्य समारोहपूर्वक 9 अगस्त से गुजरात में रथ प्रवर्तन प्रारंभ हुआ। 14 अक्टूबर से आसाम में ज्ञानज्योति का प्रवेश हुआ। आसाम में मैं (ब्र. मोतीचंद), रवीन्द्र कुमार, कु. माधुरी तथा सुधर्मचंद जी-तिवरी (म.प्र.) रथ प्रवर्तन में साथ में थे। प्रभावनापूर्वक नगर-नगर में प्रवर्तन हो रहा था। उसी मध्य राजधानी दिल्ली में 31 अक्टूबर 1984 को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी को उनके ही निवास पर उनके ही अंगरक्षक ने गोली मारकर उनकी हत्या कर दी, जिससे सारे देश में हाहाकार मच गया। साधुवर्ग को भी इस घटना से आघात पहुँचा किन्तु होनहार को कौन टाल सकता है। अगले दिन इन्दिरा गांधी के पुत्र श्री राजीव गांधी को प्रधानमंत्री पद पर आसीन किया गया। इस घटना से एक सप्ताह तक रथ प्रवर्तन में भी मायूसी का वातावरण रहा।

24 नवम्बर 1984 से उत्तरप्रदेश में ज्योति प्रवर्तन का शुभारंभ माताजी की जन्मभूमि टिकैतनगर से हुआ। ज्योतिरथ का स्वागत करने के लिए उत्तरप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी अपने वरिष्ठ सहयोगी मंत्री प्रो. वासुदेव सिंह के साथ हेलीकॉप्टर से पधारे। विशाल पंडाल में आकर रथ पर स्वस्तिक बनाकर, श्रीफल चढ़ाकर, आरती उतारकर स्वागत किया। सभा समापन पर उन्होंने कहा कि "मुझे ज्ञानमती माताजी के उस घर के दर्शन करना है, जहाँ विश्व की माता, अवध की अनमोल मणि ज्ञानमती माताजी ने जन्म लिया था। उनके कहते ही बिना पूर्व सूचना

तथा व्यवस्था के उनको उस घर में ले जाया गया। वहाँ उन्होंने उस पवित्र भूमि को नमन किया, अतीव हर्ष व्यक्त किया, थोड़ा प्रसाद भी खाया।

हस्तिनापुर में रत्नमती माताजी तथा ज्ञानमती माताजी इस समाचार को सुनकर अतीव हर्षित हुईं। उनका आशीर्वाद टिकैतनगर की विशाल सभा में उस समय पढ़कर सुनाया गया था।

चातुर्मास के पश्चात्–

नियमसार ग्रंथ की स्याद्वाद चन्द्रिका नामक संस्कृत टीका-माताजी ने सन् 1978 में वैशाख शुक्ला 3 (अक्षय तृतीया) के शुभ दिन आचार्य कुंदकुंदकृत नियमसार की संस्कृत टीका लिखना प्रारंभ किया था किन्तु फरवरी 1979 में छूट गई। मात्र 74 गाथाओं की टीका हुई थी। पाँच वर्ष के अन्तराल के पश्चात् 21 मई 1984 को पुनः टीका लिखना प्रारंभ कर दिया और 15 नवम्बर 1984 को मात्र साढ़े 5 माह में टीका पूर्ण कर दी। इस दिन मैं (ब्र. मोतीचंद) यहीं था। अतः उक्त टीका की हस्तलिखित प्रति को पालकी में विराजमान करके जुलूस निकाला।

पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की सल्लेखना–मगसिर शुक्ला चतुर्थी, 26 नवम्बर 1984 से रत्नमती माताजी का स्वास्थ्य विशेष रूप से ढीला होने लगा। धीरे-धीरे स्वास्थ्य गिरता गया। पूज्य बड़ी माताजी ने समझ लिया कि अब इनकी विशेषरूप से देखभाल करना आवश्यक है। अब इनका शरीर जवाब दे रहा है। अस्वस्थ होते हुए भी रत्नमती माताजी अपनी दैनिक क्रियाओं में सावधान थीं। आहार छूटता जा रहा था। उन्हें निरन्तर स्वाध्याय-भक्तिपाठ आदि सुनाया जा रहा था। माघ वदी 9 दिनाँक 15 जनवरी 1985 को णमोकार महामंत्र सुनते-सुनते अत्यंत शांत परिणामों से स्वर्गसिधार गईं। 13 संतानों को जन्म देने के बाद 13 वर्ष तक 13 प्रकार के चारित्र का अच्छी तरह पालन करते हुए स्त्रीपर्याय को सार्थक कर लिया।

पूज्य रत्नमती माताजी की समाधि के पश्चात् अप्रैल 1985 में होने वाली जम्बूद्वीप पंचकल्याणक प्रतिष्ठा निर्विघ्न एवं सानंद सम्पन्न हो, इसके लिए माताजी ने 15 अप्रैल 1985 से 21 अप्रैल 1985 तक प्रतिदिन अनेक विधान कराये। इस मध्य माताजी ने अनेक पूजाओं की रचना की। जम्बूद्वीप पूजा, हस्तिनापुर पूजा, आदिनाथ पूजा आदि और भी बहुत सारा लेखन कार्य किया। बीच-बीच में प्रतिष्ठा समिति की बैठकें भी होती रहीं। प्रतिष्ठा के चार माह पूर्व से हस्तिनापुर में कार्यों की अधिकता से ज्ञानज्योति प्रवर्तन में मेरा व रवीन्द्र कुमार का जाना कम हो गया तो संघस्थ ब्र. कु. माधुरी ने अनेकों स्थानों पर जाकर कुशल संचालन किया। इससे पहले भी कुमारी माधुरी (वर्तमान आर्यिका श्री चंदनामती माताजी) ने अनेकों नगरों, शहरों में जाकर अपने ओजस्वी प्रवचनों से महती प्रभावना की। स्थाईरूप से संचालन पं. सुधर्मचंद जी शास्त्री कर ही रहे थे।

उ.प्र. के मुख्यमंत्री का जम्बूद्वीप स्थल पर आगमन–4 मार्च 1985 को उ.प्र. के मुख्यमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी जम्बूद्वीप स्थल पर पधारे। उत्तर भारत के इस एकमात्र विशाल पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव को शानदार बनाने के लिए उन्होंने रत्नत्रय निलय में बैठकर माताजी से आशीर्वाद लिया। प्रतिष्ठा में बिजली, पानी, सुरक्षा आदि सरकार की तरफ से सुनिश्चित किया। नशिया मार्ग को पक्का बनाकर उसका डामरीकरण कराया। महोत्सव के लिए शासन की तरफ से मंत्री प्रोफेसर वासुदेव सिंह जी को प्रभारी बनाया। सुमेरु पर अभिषेक के लिए सरकार की तरफ से फोल्डिंग पाइप की सीढ़ियाँ बनाई गईं।

मुनिसंघ पदार्पण तथा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का झण्डारोहण–आचार्यश्री धर्मसागर जी संघस्थ कुछ मुनि-आर्यिकावृंद 22 अप्रैल को जम्बूद्वीप स्थल पर पधारे। उसी दिन झण्डारोहण हुआ तथा रथयात्रापूर्वक भगवान पाण्डाल में विराजमान किये गये। 22 अप्रैल से ही प्रतिष्ठा का कार्यक्रम प्रारंभ हो गया। 26 से 28 अप्रैल तक अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। 28 अप्रैल को ज्ञानज्योति रथ की शोभायात्रा निकालकर रथ प्रवर्तन का समापन जम्बूद्वीप स्थल पर हुआ। उसी दिन जम्बूद्वीप रचना के सामने तत्कालीन रक्षामंत्री श्री पी.वी. नरसिंहाराव ने ज्ञानज्योति की अखण्ड स्थापना की।

28 अप्रैल से 2 मई तक बहुत भारी प्रभावनापूर्वक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई जिसका वर्णन शब्दों में करना कठिन है। 30 अप्रैल 1985 को प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी ने पूज्य माताजी से आशीर्वाद प्राप्त कर जम्बूद्वीप रचना का उद्घाटन किया।

पूज्य माताजी गणिनी पद से विभूषित–1 मई 1985 को भगवान ने केवलज्ञान कल्याणक के पश्चात् माताजी की शिष्या आर्यिका श्री जिनमती माताजी ने 'गणिनी' पद की क्रियाएं करवाकर 'गणिनी' पद से विभूषित किया। यह आर्यिकाओं में सर्वोच्च पद होता है। 2 मई को जम्बूद्वीप रचना के सामने अखण्ड ध्वज की स्थापना हुई, तब से निरंतर वह ध्वज लहराता रहता है। 11 वर्ष पूर्व पूज्य माताजी ने जिसका बीजारोपण किया था, वह आज 2 मई 1985 को वृक्ष बनकर फलित हुआ, जिसे देखकर माताजी तथा हम सबको अपार हर्ष हुआ। बीच में कुछ विघ्न आये भी और चले गये। उनसे कार्य रुका नहीं, प्रत्युत् अतीव प्रभावना हुई।

2 मई को जम्बूद्वीप रचना में समस्त प्रतिमाएँ विराजमान होने के पश्चात् माताजी ने समस्त कार्यकर्ताओं को बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

24 जून से 3 जुलाई तक तीन मूर्ति मंदिर में एक साथ 3 इन्द्रध्वज मण्डल विधान हुए, तीन मण्डल मांडे गये, तीनों के अलग-अलग यजमान थे।

तीसवाँ चातुर्मास (सन् 1985, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर, उ.प्र.)

1 जुलाई 1985, आषाढ़ शुक्ला 14 को माताजी ने जम्बूद्वीप स्थल पर वर्षायोग की स्थापना की। जम्बूद्वीप स्थल पर जम्बूद्वीप रचना के अवशेष कार्य तथा अन्य निर्माण कार्य चल रहे थे। स्वाध्याय, पठन-पाठन भी चल रहे थे। 1 अगस्त-भादों कृ. दूज से माताजी ने जम्बूद्वीप विधान बनाना प्रारंभ किया। कुछ ही पूजाएँ शेष रह गईं थीं कि भादों शुक्ला 12 को माताजी को बुखार आना प्रारंभ हो गया। धीरे-धीरे हालत बिगड़ती गई। कई वैद्य बुलाये गये किन्तु स्थिति और नाजुक हो गई। गंभीर स्थिति को देखते हुए 19 नवम्बर को मेरठ से डॉ. ए.पी. अग्रवाल को बुलाया गया। उन्होंने ठीक से जांच करके पीलिया घोषित कर दिया।

अगले दिन से उल्टी तथा बुखार की दवाई बंद करके पीलियासंबंधी दवाई प्रारंभ की गई। जो कासनी के बीज, सौंफ आदि की ठंडाई लीवर को ठीक करने के लिए आर्यिका रत्नमती माताजी को पहले दी गई थी, वह देना प्रारंभ किया गया। उसके बाद थोड़ा-थोड़ा गन्ने का रस भी दिया गया। धीरे-धीरे उल्टी होना बंद हुई। पेट में आहार रुकने लगा। स्वस्थता आते-आते पूरा चातुर्मास बीत गया। जिस कासनी के बीज आदि की ठंडाई से माताजी को पुनर्जीवन प्राप्त हुआ, वह ठंडाई अभी भी उन्हें आहार में दी जाती है। लीवर को ठीक रखने में यह ठण्डाई रामबाण औषधि है।

माताजी की अस्वस्थता के मध्य ही माताजी के परमभक्त संस्थान के मंत्री श्री अमरचंद जैन होमब्रेड-मेरठ ने 18 से 27 अक्टूबर 1985, आश्विन शुक्ला 5 से 15 (शरदपूर्णिमा) तक इन्द्रध्वज मण्डल विधान का विशाल आयोजन किया। इस शरदपूर्णिमा पर माताजी के जन्म के 51 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में स्वर्ण जयंती महोत्सव के रूप में बहुत उत्साह के साथ मनाया किन्तु अत्यन्त कमजोरी के कारण माताजी पांडाल में नहीं जा सकीं। सभी ने माताजी के पास त्यागीभवन में ही जाकर आशीर्वाद लिया।

13 अक्टूबर 1985 को अ.भा.दि. जैन युवा परिषद की कार्यकारिणी की बैठक पूज्य माताजी के सानिध्य में हुई, जिसमें ब्र. रवीन्द्र कुमार को युवा परिषद का राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत किया गया। माताजी ने धर्म, धर्मात्मा तथा धर्मायतनों की रक्षा के लिए अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

कार्तिक अष्टान्हिका में 17 से 27 नवम्बर 1985 तक श्री मदनलाल जैन, टिकैतनगर ने यहाँ तीन मूर्ति मंदिर में इन्द्रध्वज विधान किया। 19 नवम्बर को ही 'पीलिया' रोग घोषित हुआ था। विधान में माताजी की स्थिति उठकर बैठने की नहीं थी अतः अपने कमरे में लेटकर ही पूजाएँ सुनती थीं। वे पूजाएं तथा उनकी जयमालाएं औषधि का काम कर रही थीं।

चातुर्मास के पश्चात्–थोड़ी सी स्वस्थता आने पर 29 दिसम्बर 1985 से माताजी ने पुनः थोड़ा-थोड़ा लेखन प्रारंभ कर दिया। आधा घंटा भी लेखन कर लेने से माताजी को बड़ा संतोष होता था। उन दिनों वयोवृद्ध विद्वान पं. फूलचंद जी सिद्धांतशास्त्री बड़े मंदिर पर रह रहे थे। उन्होंने कई बार आकर माताजी से निवेदन किया कि मैं आपकी क्या वैयावृत्ति करूँ? स्वाध्याय सुनाने के लिए भी निवेदन किया किन्तु कमजोरी माताजी को इतनी अधिक थी कि स्वाध्याय अधिक देर सुनने की हिम्मत नहीं थी, फिर भी पंडित जी ने सर्दी में भी आकर नियमसार प्राभृत (माताजी की नियमसार पर टीका वाला ग्रंथ) 29 जनवरी 1986 से सुनाना प्रारंभ कर दिया। पंडित जी ने माताजी द्वारा की गई टीका की बहुत प्रशंसा की। भले ही कुछ विषयों में सैद्धान्तिक मतभेद था, फिर भी उनका व्यवहार सौहार्दपूर्ण रहा। 21 मई 1986 तक उक्त ग्रंथ का स्वाध्याय सुनाकर पूर्ण किया।

माघ तथा फाल्गुन में 16-16 दिन के शुक्ल पक्ष होने से दोनों महीनों में 16-16 दिन के शांति विधान हुए। फाल्गुन की अष्टान्हिका में श्रीमती शकुन्तला देवी-दिल्ली ने सिद्धचक्र विधान भी किया। पूज्य माताजी को इन विधानों पर काफी पहले से ही बहुत श्रद्धा रही है। इसी से रोग-शोक नष्ट हो जाते हैं, बड़े-बड़े कार्यों की सिद्धि हो जाती है। इसीलिए अब भी छोटे-बड़े विधान कराती ही रहती हैं।

16 दिसम्बर 1985, मगसिर शुक्ला 5 को तीन मूर्ति मंदिर में आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज द्वारा प्रतिष्ठित क्षेत्रपाल वेदी में विराजमान किये गये।

बीमारी के कारण 'जम्बूद्वीप विधान', जो अधूरा छूट गया था, उसे 12 मई 1986 से पुनः लिखना प्रारंभ करके 12 जून 1986 श्रुतपंचमी के दिन पूरा कर दिया। उसी दिन हस्तलिखित विधान की प्रति धवला ग्रंथ तथा मूलाचार ग्रंथ को पालकी में विराजमान करके शोभायात्रा निकाली, श्रुतपंचमी पर्व मनाया।

इन्द्रध्वज विधान एवं प्रशिक्षण शिविर–ज्येष्ठ शु. 12 दिनाँक 19 जून से श्री अमरचंद जैन-होमब्रेड ने तीसरी बार माताजी के सानिध्य में इन्द्रध्वज विधान कराया। इसी मध्य अमरचंद जी ने विद्वानों के लिए प्रशिक्षण शिविर का भी आयोजन रखा, जिसमें 50 विद्वानों ने तत्त्वार्थसूत्र तथा दशधर्मों पर प्रवचनों का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस शिविर के कुलपति प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जी-फिरोजाबाद को बनाया गया था।

माताजी के आदेशानुसार 14 से 21 मई 1986 तक निकटवर्ती सरधना नगर में शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें मैंने (ब्र. मोतीचंद ने) भी वहाँ जाकर बालक-बालिकाओं तथा प्रौढ़ वर्ग में धर्म के संस्कार डाले। अभी तक जम्बूद्वीप रचना के अवशेष कार्य पूरे किये जा रहे थे। वेदियों में शीशे के पल्ले लगाकर 17 जुलाई तक तीन बार में समस्त प्रतिमाएँ विराजमान कर दी गईं, जिससे माताजी के मन में बड़ा संतोष हुआ।

चातुर्मास के पश्चात्-

दीक्षा के लिए श्रीफल चढ़ाकर प्रार्थना–मैंने (ब्र. मोतीचंद ने) 21 फरवरी 1986- माघ शु012 को पूज्य माताजी के समक्ष श्रीफल चढ़ाकर निवेदन किया कि माताजी! मैं क्षुल्लक दीक्षा लेना चाहता हूँ, मुझे आज्ञा प्रदान कीजिये। माताजी ने कुछ देर सोच -विचार करके उचित समय जानकर सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर दी। उस समय माताजी ने वात्सल्यवश यह भी कहा कि "आचार्यसंघ को हस्तिनापुर लाकर यहीं दीक्षा लो।" माताजी के आदेशानुसार रवीन्द्र कुमार, जिनेन्द्र प्रसाद ठेकेदार तथा कैलाशचन्द करोलबाग आदि श्रावकजन विमलसागर जी महाराज से निवेदन करने 27 फरवरी को इन्दौर गये। आचार्यश्री से निवेदन करके 2 मार्च को वापिस आकर माताजी को बताया कि ''आचार्यश्री इन्दौर से फिरोजाबाद जाकर वहाँ से चातुर्मास करने के पश्चात् हस्तिनापुर आकर दीक्षा प्रदान करेंगे।'' अर्थात् एक वर्ष बाद दीक्षा हो सकेगी। फिरोजाबाद चातुर्मास के मध्य मैं भादों वदी 12, 1 सितम्बर को रवीन्द्र कुमार तथा पं. सुधर्मचंद जी के साथ फिरोजाबाद गया। आचार्यश्री के समक्ष श्रीफल चढ़ाया। आचार्यश्री ने कहा-फाल्गुन (मार्च) में दीक्षा का मुहूर्त है। दीक्षा के लिए एक वर्ष का समय निकालना भारी महसूस हो रहा था, फिर भी समय निकालना ही पड़ा। 5 सितम्बर-भादों सुदी 1 को पिता श्री अमोलक चन्द जी सर्राफ का स्वर्गवास हो गया। पिता के वियोग का दुःख तो हुआ ही, उसके अतिरिक्त मन में कई दिन तक यह भी खेद रहा कि "मैं उनके सामने दीक्षा नहीं ले सका'। 5 सितम्बर भादों सुदी 1 से 16 सितंबर भादों सुदी 13 तक श्री पल्टूमल जैन दिल्ली व उनके दामाद श्रीराजकुमार जैन वीरा बिल्डर्स दिल्ली ने पूज्य माताजी के सानिध्य में तीनमूर्ति मन्दिर में इन्द्रध्वज विधान किया। मध्य के समय का सदुपयोग करते हुए मैंने तीर्थयात्रायें की पुनः 12 अक्टूबर 1986 आश्विन शु. 10 (विजयादशमी) को फिरोजाबाद जाकर दीक्षा की तिथि सुनिश्चित करने के लिए आचार्यश्री विमलसागरजी महाराज के समक्ष श्रीफल चढ़ाया। आचार्य महाराज ने 8 मार्च-फाल्गुन शुक्ला 9, रविवार को दीक्षा का शुभ मुहूर्त बतलाया। मेरे साथ वहाँ रवीन्द्र कुमार, जिनेंद्र प्रसाद ठेकेदार, राजेन्द्र प्रसाद कम्मोजी दिल्ली एवं सुरेश चंद गोटे वाले गये थे। बीच-बीच में मैं यात्राएँ करता रहा। 19 अक्टूबर को माताजी का 53वाँ जन्मदिन विशेष समारोहपूर्वक मनाया गया। मेले का आयोजन किया गया था। 20 अक्टूबर को हस्तिनापुर से हरिद्वार होकर बद्रीनाथ की यात्रा करके 25 अक्टूबर को वापस सकुशल हस्तिनापुर आ गये।

कमल मंदिर का शिलान्यास–26 अक्टूबर 1986 दिन रविवार, भादों वदी 8 के शुभ दिन श्री राजकुमार जैन वीराबिल्डर्स एवं श्रीपल्टूमल जैन दिल्ली ने कमल मंदिर का शिलान्यास किया, यहीं पर प्रारंभ में एक कमरा बनाकर भगवान महावीर स्वामी

की कल्पवृक्षस्वरुप सवा नौ फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा विराजमान की गयी थीं, इसी को घेरकर चारों तरफ कमलाकार मंदिर बनाया गया। प्रतिमा जहाँ की तहाँ खड़ी रहीं, कमरे के चारों तरफ की दीवारें हटा दी गयीं।

रवीन्द्र कुमार जी ने मेरी दीक्षा के साथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा की भी घोषणा कर दी। भगवान नेमिनाथ तथा पार्श्वनाथ की विशाल प्रतिमाएँ लाई गयीं। 25 फरवरी से यात्राओं का सिलसिला बंद हुआ। 8 फरवरी 1987 माघ शुक्ला 10 को माताजी ने तीनलोक विधान लिखकर पूरा किया, उसका नाम ''सर्वतोभद्र विधान'' रखा गया।

इक्कीसवाँ चातुर्मास (1986-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में)

14 जुलाई से 22 जुलाई तक होने वाले इन्द्रध्वज विधान के मध्य 20 जुलाई को माताजी ने चातुर्मास की स्थापना की। इसमें दो मंडल एक साथ बनाये गये। एक आनंदप्रकाशजी (सोरम वाले) दिल्ली वालों की ओर से तथा दूसरा प्रकाशचंद- सुभाषचंद जैन टिकैतनगर की तरफ से। सौ. श्रीमती जैन ध.प. प्रेमचंद जैन बहराइच वालों ने भादों वदी 3 से 12, तदनुसार 22 अगस्त से 1 सितंबर तक बहराइच में इन्द्रध्वज विधान कराया उसमें माताजी ने मुझे (ब्र. मोतीचंद) रवीन्द्र कुमार तथा माधुरी को भेजा। वहाँ अच्छी धर्मप्रभावना हुई।

सन् 1983 से कई बार माताजी के भाव 'कल्पद्रुम' विधान बनाने के हुए। उसमें लिखी जाने वाली पूजाओं की रूपरेखा भी माताजी ने लिखी किन्तु पहले व्यस्तता के कारण तथा बाद में अस्वस्थता के कारण वह कार्य संभव नहीं हो सका। एक दिन अस्वस्थ अवस्था में माताजी ने माधुरी से कहा कि मेरे बाद तुम इस विधान को बनाना। माधुरी ने कहा-माताजी! आप जल्दी स्वस्थ होकर आप ही बनावेंगी। विधान तो क्या, और भी बहुत सारे धर्मप्रभावना के कार्य आपके द्वारा होना है।

थोड़ी स्वस्थता प्राप्त होते ही माताजी के मस्तिष्क में 8 जुलाई 1986 आषाढ़ शु. 1 की रात्रि में रूपरेखा प्रस्फुटित हुई और 9 जुलाई को प्रातः 5:45 पर रत्नत्रय निलय में ''ॐ नमः सिद्धेभ्यः'' लिखकर विधान पूजा लिखना प्रारंभ कर दिया और मन में यह सोचा कि जब भक्तामर स्तोत्र की रचना से मानतुंगाचार्य के 48 ताले टूट गये, एकीभावस्तोत्र की रचना से वादिराज मुनिराज का कुष्ठ रोग दूर हो गया, तो इस महान कल्पद्रुम विधान की रचना से मेरा शरीर स्वस्थ हो जावे, तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है! और हुआ ऐसा ही, 17 अक्टूबर1986 की शरदपूर्णिमा के दिन रचना पूर्ण हो गई, माताजी के हर्ष का पार नहीं रहा, वह दिन माताजी का 53वाँ जन्मदिन था, उसी दिन माताजी ने तीनलोक विधान की रचना प्रारंभ कर दी।

17 से 19 अक्टूबर तक त्रिदिवसीय जन्मदिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। दिल्ली तथा आसपास के अनेक नगरों से बसें आयीं। मध्य प्रदेश तथा अवध प्रांत

से अनेक भक्तगण पधारे, अनेक विद्वान भी आये। उल्लासपूर्ण वातावरण में माताजी का जन्मदिन मनाया गया। अनेकों वक्ताओं ने माताजी के प्रति विनयांजलि समर्पित करते हुए उनके दीर्घ जीवन की मंगल कामना की। माताजी ने सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। इस प्रकार विविध उपलब्धियों के साथ वर्षायोग पूर्ण हुआ।

आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज का ससंघ हस्तिनापुर में मंगल पदार्पण– मुझे दीक्षा प्रदान करने के लिए तथा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न कराने के लिए वात्सल्यरत्नाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज का ससंघ 1 मार्च 1986 फाल्गुन शुक्ला दूज को जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर में मंगल पदार्पण हुआ। संघ के आगमन से माताजी तथा हम लोगों को अतीव हर्ष हुआ। माताजी की प्रेरणा से नवनिर्मित तीन लोक विधान 20 फरवरी से मैंने प्रारंभ किया था, वह 1 मार्च को आचार्यश्री के समक्ष पूर्ण हुआ।

2 मार्च से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा प्रारंभ हो गई। झण्डारोहण से पंचकल्याणक के समस्त कार्यक्रम माताजी तथा आचार्यसंघ के सानिध्य में क्रमशः सम्पन्न होने लगे। 8 मार्च रविवार, फाल्गुन शुक्ला 9 का वह शुभ दिन आ गया। प्रातः पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के अंतर्गत जन्मकल्याणक मनाया गया। सुमेरू की पांडुकशिला पर जन्माभिषेक हुआ। मध्यान्ह में श्रीविमल मंडप में विशाल जनसमूह के मध्य आचार्यश्री ने मेरी क्षुल्लक दीक्षा की विधि प्रारंभ की, दीक्षा संस्कार करके ''क्षुल्लक मोतीसागर'' नाम घोषित किया। समारोह के मुख्य अतिथि तत्कालीन केन्द्रीय रेलमंत्री श्री माधवराव सिंधिया थे।

दीक्षा के अवसर पर गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने बहुत ही मार्मिक उद्गार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि- ''मैंने सनावद में अमोलकचंद जैनरूपी सागर से मोती को लिया था, आज आचार्यश्री ने पुनः मोती को सागर से जोड़कर ''क्षुल्लक मोतीसागर'' बना दिया।'' 9 मार्च को माँ रूपाबाई तथा संघस्थ कु. माधुरी ने आचार्य श्री विमलसागर जी, उपाध्याय श्री भरतसागर जी, गणिनी ज्ञानमती माताजी तथा (मुझे) नवदीक्षित क्षुल्लक मोतीसागर आदि 9 साधुओं का पड़गाहन कर आहार दिया। 11 मार्च-फाल्गुन शु. 11 को मोक्षकल्याणकपूर्वक प्रतिष्ठा विधि सम्पन्न हुई। पूज्य माताजी की भावनानुसार मुझे हस्तिनापुर में ही छोड़कर 17 मार्च 1987, चैत्र कृष्णा दूज को आचार्यसंघ का मेरठ की तरफ मंगल विहार हो गया। आचार्यसंघ के साथ 34 साधु-साध्वी थे।

22 अप्रैल-वैशाख कृष्णा 9 को सीकर (राज.) में चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के तृतीय पट्टाधीश आचार्य श्री धर्मसागरजी महाराज का समाधिपूर्वक स्वर्गारोहण हो गया। उसके अगले दिन माताजी के सानिध्य में हस्तिनापुर में उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। अनंतर 6 मई, वैशाख शु. 8 को

उपाध्याय श्री अजितसागर जी महाराज के लिए आचार्यपद की घोषणा की गई। 7 जून, ज्येष्ठ शुक्ला 10 को उदयपुर में विशाल जनसमुदाय तथा चतुर्विध संघ के सानिध्य में चतुर्थ आचार्यपट्ट प्रदान किया गया।

आचार्य श्रीधर्मसागर जी महाराज की समाधि के एक माह बाद ही आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज की उनकी जन्मभूमि कोथली में ही (28 मई 1987 ज्येष्ठ शुक्ला 1 को) समाधि होने के समाचार अचानक प्राप्त कर पूज्य माताजी तथा संघ के सभी लोग हतप्रभ रह गये। समाचार प्राप्त होने पर पूज्य माताजी के सानिध्य में उनके प्रति भी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की गई । आचार्यश्री ने पूज्य माताजी को 1953 में श्री महावीर जी में क्षुल्लिका दीक्षा देकर ''क्षुल्लिका वीरमती'' नाम प्रदान किया था।

गुजरात में शिक्षण शिविर—गुजरात प्रदेश के धर्मनिष्ठ महानुभावों के विशेष निवेदन पर पूज्य माताजी के आशीर्वाद से दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर द्वारा 31 मई से 8 जून 1987 तक अहमदाबाद में एक विशाल शिक्षण शिविर का आयोजन पूरे गुजरात प्रदेश के स्तर पर आयोजित किया गया। जिसमें अनेक नगरों से 1000 से अधिक स्त्री-पुरुषों तथा बालक- बालिकाओं ने भाग लिया। उसमें माताजी की शिष्या कु. माधुरी (वर्तमान आर्यिका श्री चंदनामती माताजी) के साथ अनेक विद्वानों ने वहाँ जाकर शिक्षण प्रदान किया। उस शिविर को तथा चंदनामती माताजी को आज भी गुजरात वाले याद करते हैं। वैसा शिविर न उससे पहले न उसके बाद आज तक हुआ। उस शिविर के माध्यम से हस्तिनापुर के वीरसागर विद्यापीठ में 15-20 विद्यार्थी पढ़ने के लिए आये थे।

बत्तीसवाँ चातुर्मास (1987- *जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में*)

10 जुलाई 1987 आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को माताजी ने 35वाँ चातुर्मास जम्बूद्वीप स्थल पर स्थापित किया। उस समय 15 जुलाई से 24 जुलाई-श्रावण कृ. 5 से श्रावण कृ. 14 तक श्रीमती हीरामणी जी महमूदाबाद तथा श्री कमलचंद जैन, खारी बावली दिल्ली ने तीन मूर्ति मंदिर में दो अलग-अलग मंडल मांडकर बहुत उत्साह के साथ इन्द्रध्वजविधान किये। विधान पूजन के अतिरिक्त मध्यान्ह में छहढाला आदि की कक्षाएँ भी चलाईगईं।

वर्ष 1987 में माताजी ने विविध प्रकार का लेखन कार्य किया। ''कल्याण कल्पतरू स्तोत्र'' नाम से स्वरचित संस्कृत की चतुर्विंशति स्तुति का अन्वय अर्थ हिन्दी में, आचार्य पूज्यपादकृत संस्कृत पंचामृत अभिषेक का हिन्दी पद्यानुवाद, सकलीकरण-हवन आदि की विधि के संस्कृत श्लोकों का भावरूप पद्यानुवाद करके ''मण्डल विधान प्रारम्भ विधि तथा हवनविधि'' नाम से पुस्तक का सृजन, भगवान नेमिनाथ उपन्यास आदि का लेखन किया। इन दिनों में ''मेरी स्मृतियाँ'' नाम से एक सुंदर आत्मकथा का लेखन भी चल रहा था।

स्वास्थ्य लाभ होने के बाद माताजी का चिंतन चल रहा था कि साधु जीवन के 6 काल माने हैं- (1) दीक्षा (2) शिक्षा (3) गणपोषण (4) आत्म संस्कार (5) सल्लेखना (6) उत्तमार्थ। इनमें से प्रारंभ के तीन कार्य अच्छी तरह हो चुके हैं, अब आगे चौथे का नम्बर आ रहा है अतः दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की भावी गतिविधियों के सुदृढ़ संचालन हेतु एक नवीन रूपरेखा बनाई।

क्षुल्लक मोतीसागर को पीठाधीश बनाया—2 अगस्त 1987, रविवार श्रावण शुक्ला सप्तमी को दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की बैठक आहूत की गई, जिसमें माताजी की आज्ञा से तीन वर्ष के लिए नवीन कार्यकारिणी का मनोनयन किया गया। जिसके अन्तर्गत ब्र. रवीन्द्र कुमार को अध्यक्ष, श्री जिनेंद्रप्रसाद ठेकेदार दिल्ली को कार्याध्यक्ष, श्री गणेशीलाल रानीवाला कोटा को महामंत्री तथा कु. माधुरी को मंत्री पद का भार सौंपा गया। अब तक संस्थान के कार्यों में प्रेरणा तथा मार्गदर्शन माताजी देती रहती थीं किन्तु अब आगे से क्षुल्लक मोतीसागर पर यह भार डाला जा रहा है, उन्हें स्थाईरूप से ''पीठाधीश'' पद पर प्रतिष्ठापित किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त संस्थान की गतिविधियों को सुचारूरूप से देखने व चलाने के लिए एक ''स्थाई समिति'' का भी गठन किया गया, जिसमें सात व्यक्तियों को स्थाईरूप में लिया गया। इस भावी व्यवस्था की उपस्थित सभी महानुभावों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। अगले दिन स्थाई समिति के सदस्यों ने पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर का पादप्रक्षाल करके नूतन वस्त्र-चादर-लंगोट अर्पित किये। पूज्य माताजी ने नवीन पिच्छी प्रदान कर मंगल आशीर्वाद दिया।

इस वर्ष का दशलक्षण पर्व—इस वर्ष 1987 में माताजी ने रवीन्द्र कुमार को डॉ. श्रेयांस कुमार बड़ौत के साथ तलौद (गुजरात), कु. माधुरी को बड़ौदा तथा पं. सुधर्मचंद, पं. प्रवीण चंद, पं. नरेश कुमार को भी गुजरात ही दशलक्षण पर्व में प्रवचन करने के लिए भेजा, अच्छी प्रभावना हुई। हस्तिनापुर में मैंने तत्वार्थसूत्र तथा दशधर्मों पर प्रवचन किये। आश्विन कृष्णा 7 से आश्विन शुक्ला 1, दिनाँक 14 से 24 सितम्बर तक श्री पुतानचंद जैन फतेहपुर वालों ने सपरिवार इन्द्रध्वज विधान किया।

आश्विन कृष्णा 14 (दि. 21 सितम्बर 1987) को मेरा 48वाँ जन्मदिन था। उस समय सनावद (म.प्र.) से (माँ) रूपाबाई तथा (बहन) किरणबाई चौधरी यहाँ आई हुई थीं। उन्होंने स्नेहवश जन्मदिवस का एक छोटा सा कार्यक्रम पूज्य माताजी से आज्ञा लेकर रख दिया। मैंने कहा—माताजी के समक्ष मेरे जन्मदिवस का कार्यक्रम अच्छा नहीं लगता। इस पर माताजी ने कहा कि—बेटे-बेटियों का माता के सामने गुणगान होता है, तो अच्छा ही है, होने दो।

शरदपूर्णिमा आ रही थी 7 अक्टूबर बुधवार को किन्तु दिल्ली तथा आसपास के शहर वालों की सुविधा को देखते हुए 4 अक्टूबर रविवार आश्विन शुक्ला 12 को ही

पूज्य माताजी के 54 वें जन्मजयंती महोत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया गया। दिल्ली, पूर्वी उत्तरप्रदेश, पश्चिमी उत्तरप्रदेश, म.प्र., राजस्थान, महाराष्ट्र, आसाम, हरियाणा आदि अनेक प्रदेशों के नगरों व शहरों से हस्तिनापुर आकर भक्तों ने जन्मजयन्ती समारोह में भाग लिया। पूज्य माताजी अपने प्रत्येक जन्मदिवस पर यह अवश्य बताती हैं कि शरद पूर्णिमा के दिन केवल मेरे शरीर का ही जन्म नहीं हुआ प्रत्युत् त्याग और संयम का भी आज ही जन्म हुआ था। सन् 1952 में बाराबंकी (उ.प्र) में शरदपूर्णिमा के दिन ही आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत तथा गृहत्यागरूप सप्तम प्रतिमा के व्रत प्राप्त किये थे पुनः 7 अक्टूबर शरदपूर्णिमा को संघ के ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणी शिष्यों ने तथा संस्थान के सदस्यों ने माताजी के पादप्रक्षाल करके पूजन की तथा 54 दीपकों से आरती उतारी। उसी दिन संस्थान की "स्थाई समिति" के सदस्यों ने पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर को (मुझे) रजत प्रशस्ति पत्र भेंट की, जिसे रत्नत्रय निलय-त्यागीभवन में लगा दिया गया।

जन्म जयंती के पावन अवसर पर श्री पुरुषोत्तमदास जैन जगाधरी (हरियाणा) वालों ने 2 अक्टूबर-आश्विन शुक्ला 10 से 11 अक्टूबर कार्तिक वदी 5 तक इन्द्रध्वज विधान किया। 20 अक्टूबर 1987 कार्तिक वदी 13 को महावीर मंदिर में विराजमान छोटी प्रतिमाओं को वहाँ से लाकर तीन मूर्ति मंदिर में अस्थाई अलमारी बनाकर उसमें लोहे का मजबूत दरवाजा लगाकर उसमें विराजमान किया गया। वे प्रतिमाएँ अभी भी उसी अस्थाई अलमारी में विराजमान हैं।

इस अक्टूबर माह में यहाँ के अतिरिक्त लखनऊ में श्री कैलाशचंद सर्राफ टिकैतनगर वालों ने, आश्विन शुक्ला में श्री वीरेन्द्र कुमार जैन ने, उसके बाद निकटवर्ती दरियाबाद में इन्द्रध्वज विधान हुये। देश में अन्यत्र भी अनेकों नगरों में इन्द्रध्वज विधान हो रहे थे। इन्द्रध्वज विधानों की सर्वत्र धूम सुनकर माताजी को बहुत प्रसन्नता होती थी क्योंकि वह उनके द्वारा ही भक्ति से रचे गये पदों की रचना थी।

अद्वितीय जम्बूद्वीप मंडल विधान पूजन—देश में सर्वत्र मंदिर या पंडाल में मंडल विधान की रचना करके पूजा की जाती है किन्तु यहाँ जम्बूद्वीप स्थल पर साक्षात् जम्बूद्वीप रचना के सामने पंडाल बनाकर उसमें पूजा करते हुए जम्बूद्वीप रचना में यथास्थान 1008 अर्घ्य व जयमाला में श्रीफल चढ़ाये गये। यह विधान 27 अक्टूबर 1987 कार्तिक शुक्ला 5 से प्रारंभ होकर कार्तिक शु. 14 दिनाँक 4 नवम्बर तक हुआ। इसके आयोजनकर्ता परमगुरुभक्त श्रीआनंद प्रकाश जैन (सोरम वाले) गांधी नगर दिल्ली थे, उनके साथ अनेक श्रावकों ने भी विधान-पूजन में भाग लिया। इस प्रकार के विधान का पहला ही अवसर था, बहुत ही आनंद आया। उसके बाद फिर उस प्रकार का विधान जम्बूद्वीप रचना के सामने नहीं हो सका।

चातुर्मास के पश्चात्—प्रतिदिन माताजी के सानिध्य में हम लोग स्वाध्याय पढ़ते

थे। यात्रियों के लिए प्रातः-मध्यान्ह में प्रवचन भी होते थे। माताजी विभिन्न विषयों के लेखन में लगी रहती थीं। मेरे पास ग्रंथों की प्रूफरीडिंग का विशेष कार्य रहता था। निर्माण कार्यों को कराने, बाहर जाने-आने में, ऑफिस के कार्यों में रवीन्द्र कुमार व्यस्त रहते थे। कु. माधुरी संघ की परिचर्या के अतिरिक्त माताजी के आदेशानुसार नूतन रचनाओं का सृजन तथा प्रतिमाह सम्यग्ज्ञान पत्रिका के लिए लेख-कविताएँ लिखती रहती थीं।

जम्बूद्वीप स्थल पर पहली बार कल्पद्रुम विधान का आयोजन—सन् 1986 की आश्विन शुक्ला 15 (शरदपूर्णिमा) के शुभ दिन मात्र साढ़े तीन माह में यह कल्पद्रुम विधान लिखकर माताजी ने तैयार कर दिया था। इस समय छोटीसा टिकैतनगर उस हस्तलिखित प्रति को अपने हाथ में रखकर रथ में बैठे थे, तभी उन्होंने कह दिया था कि- "माताजी! मैं ही इस विधान को छपवाऊंगा और मैं ही सबसे पहले आपके सानिध्य में जम्बूद्वीप स्थल पर कराऊंगा।" तदनुसार उन्हें ही जम्बूद्वीप स्थल पर माताजी के सानिध्य में पहली बार इस विधान को करने का अवसर प्राप्त हुआ। 24 फरवरी 1988 फाल्गुन शुक्ला 8 से 15 तक यह विधान तीनमूर्ति मंदिर में बहुत ठाठ-बाट के साथ सम्पन्न हुआ। छोटीसा सहित 5 महानुभावों को चक्रवर्ती बनाया गया। गोलाकार सुंदर समवसरण की रचना की गई। धातु से नवनिर्मित गंधकुटी, मानस्तंभ, तोरणद्वार, ध्वजाएं, चैत्यवृक्ष, सिद्धार्थवृक्ष आदि मंडल पर पहली बार रखे गये जिससे अद्भुत शोभा व्याप्त हो गई। विधान में लिखित विधि के अनुसार चारों प्रकार का दान लगातार 8 दिन तक खूब बांटा गया, इस अवसर पर योगीराज फूलचंद जैन छतरपुर (म.प्र.) को बुलाया गया था, वे प्राणयाम तथा योग में पूर्ण निष्णात हैं, उन्होंने अनेक प्रकार के रोगों के लिए अनेक प्रकार के योग तथा प्राणायाम सिखाये। उससे सीखने वालों को स्वास्थ्य लाभ हुआ।

सन् 1988 में चैत्र वदी 9 को प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की जन्मजयंती मनाने की विशेष प्रेरणा माताजी ने जनमानस को दी और उसका कारण यह बताया कि इससे आम जनता की यह भ्रांत धारणा दूर होगी कि 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर जैनधर्म के संस्थापक हैं क्योंकि चौबीसवें तीर्थंकर संस्थापक नहीं हो सकते, भगवान महावीर से पहले 23 तीर्थंकर हो चुके हैं। जम्बूद्वीप स्थल पर भी ऋषभदेव जन्मजयंती मनाई गई।

समय-समय पर विशेष प्रवचन—जम्बूद्वीप स्थल पर यदा-कदा होमगार्ड, एन.सी.सी., केडेट, मिलिट्री के जवानों के समूह आते रहते थे। उन्हें माताजी को उपदेश देने में विशेष आनंद इसलिए आता था क्योंकि उन्हें मांस-मदिरा का त्याग करने की प्रेरणा दी जाती थी और जब उनमें से अधिक या थोड़े लोग त्याग कर देते थे, तब

अपार हर्ष होता था। प्रतिदिन कई अजैन भी दर्शनार्थ आते रहते थे, उन्हें भी अंडे, मांस, मदिरा का त्याग करवाकर छोटा मंत्र "ॐ नमः" सुख-शांति के लिए देती रहती थीं। यह क्रम अब भी चलता रहता है।

वर्ष के अंतर्गत आने वाले अनेक छोटे-बड़े पर्वों को माताजी यहाँ भी मनवातीं तथा आने वाले यात्रियों को भी प्रेरणा देती थीं तथा अब भी देती हैं जिससे धर्म की प्रभावना सदैव होती रहे तथा नई पीढ़ी को भी उन पर्वों की महत्ता का परिचय होता रहे।

अक्षय तृतीया मेला– भगवान ऋषभदेव का एक वर्ष के उपवास के बाद हस्तिनापुर में वैशाख शु. तीज को प्रथम आहार हुआ था, वह तिथि अक्षय तृतीया के नाम से प्रसिद्ध हो गई। उस उपलक्ष्य में श्वेताम्बर जैन समाज में वर्षीतप करने की परंपरा है। वर्षीतप करने वाले एक दिन भोजन, अगले दिन केवल पानी, यह क्रम पूरे वर्ष भर तक चलाते हैं। उस क्रम में वैशाख शु. तृतीया को वे वर्षीतप करने वाले उस दिन यहाँ अंतिम पारणा करते हैं, उस दिन प्रतिवर्ष श्वेताम्बर समाज का बड़ा मेला लगता है। माताजी की तीव्र भावना रही कि इस अवसर पर दिगम्बर समाज भी हस्तिनापुर आकर अच्छे स्तर से इस पर्व को मनावे किन्तु उनकी वह भावना अब तक भी सफल नहीं हो पाई। फिर भी माताजी की प्रेरणा से जम्बूद्वीप स्थल पर अक्षय तृतीया के दिन प्रतिवर्ष रथयात्रा निकाली जाती है। प्रसादरूप में इक्षुरस बांटा जाता है। अभी यहाँ 9 फुट उत्तुंग खड्गासन भगवान ऋषभदेव की आहारदान की प्रतिमा तीन कल्याणकों से प्रतिष्ठित विराजमान है और साथ में राजा श्रेयांस आहार देते हुए खड़े किये हैं। उसी उपलक्ष्य में अक्षयतृतीया के दिन भगवान को इक्षुरस का आहार देकर प्राचीन राजा श्रेयांस द्वारा दिये गये प्रथम आहार के दिवस को याद कर श्रद्धालु कृतकृत्य होते रहते हैं।

आचार्यकल्प श्रुतसागर जी का समाधिमरण– जब पूज्य माताजी ने यह समाचार सुना कि लूणवा (सीकर) राज. में आचार्यकल्प श्री श्रुतसागर जी महाराज ने 28 अप्रैल को चतुर्विध आहार का त्याग कर दिया है, शीघ्र ही समाधिमरण की तैयारी है अतः यहाँ स्वाध्याय बंद करके तीन दिन तक प्रातः सायं णमोकार मंत्र का पाठ कराया। यहाँ से गये रवीन्द्र कुमार तथा कु. माधुरी ने 6 मई 1988 शुक्रवार जेष्ठ वदी 5 को फोन से सूचना दी कि आ.क. श्री श्रुतसागरजी महाराज का समाधिमरण हो गया,तभी यहाँ सभा का आयोजन करके श्रद्धांजलि अर्पित की गई। आ.क. श्रुतसागर महाराज संघ के वरिष्ठतम साधु थे। क्षुल्लक अवस्था से ही माताजी के प्रति विशेष वात्सल्य था। उन्होंने 12वर्ष की समाधि ले रखी थी।

आचार्य मुनि श्री दर्शनसागरजी महाराज हस्तिनापुर पधारे– सहारनपुर में सन् 1988 में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कांजीपंथी विद्वानों के द्वारा हो रही थी। उन विद्वानों ने धूप खेने से मना कर दिया अतः वहाँ की समाज ने उन विद्वानों का बहिष्कार कर

दिया। दिल्ली से आचार्य श्री दर्शनसागर जी महाराज को ले गये। उनके सानिध्य में प्रतिष्ठाचार्य पं. फतहसागर जी उदयपुर वालों से प्रतिष्ठा करवाई। उन्हीं दिनों में दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर हस्तिनापुर में कांजीपंथ का शिविर लगने वाला था । बड़ौत, सहारनपुर, खतौली, दिल्ली आदि आसपास की जैन समाज के विशेष आग्रह से आचार्य श्री दर्शनसागर जी महाराज 13 मई 1988 ज्येष्ठ शु. 12 को हस्तिनापुर आये ओर बड़े मंदिर में ठहरे। बड़े मंदिर की कमेटी वालों को कांजीपंथी शिविर न लगाने के लिए कहा, जब वे नहीं माने, तो आसपास व दिल्ली की मुनिभक्त समाज ने खुले आम विरोध कर दिया। अंततोगत्वा हस्तिनापुर में शिविर न लगकर उन लोगों को मवाना में लगाना पड़ा। वे मुनिराज जम्बूद्वीप में दर्शन तथा आहार के लिए भी आते थे। माताजी से चर्चा-वार्ता, विचार-विमर्श भी करते थे। आचार्यश्री दर्शनसागर जी महाराज की निर्भीकता को देखते हुए उन्हें जम्बूद्वीप स्थल पर माताजी की प्रेरणा से आसपास की जनता ने मिलकर 'धर्मकेसरी' की उपाधि से अलंकृत किया।

समयसार की दोनों टीकाओं का हिन्दी अनुवाद– ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी (श्रुत पंचमी) 19 जून 1988 को जिनवाणी की पूजा के अनंतर पूज्य माताजी ने समयसार ग्रंथराज की आचार्य अमृतचन्द्र तथा आचार्य जयसेनकृत संस्कृत टीकाओं का हिन्दी अनुवाद करना प्रारंभ किया। टीका के साथ-साथ विषय को स्पष्ट करने के लिए उनमें भावार्थ तथा विशेषार्थ भी दिये जिससे पढ़ने वालों को विषय हृदयंगम करने में सरलता हो गई। इस ग्रंथ की दोनों टीकाओं के हिन्दी अनुवाद करने में जो भाव आये, वह माताजी ने "मेरी स्मृतियाँ ग्रंथ" में इन शब्दों में लिखा है। "इस ग्रंथ के अनुवाद में मुझे जो आनंद आया, वह शब्दों से परे है।"

ज्येष्ठ शुक्ला तीज- 17 जून 1988 से 21 जून 1988 तक श्री शांतिलाल जी गंगवाल इम्फाल वालों ने तीन मूर्ति मंदिर में इन्द्रध्वज विधान कराया। उसमें माताजी ने प्रतिदिन प्रवचन दिया। कु. माधुरी ने सामायिक विधि सिखाई तथा 'ह्रीं' का ध्यान कराया, सबको बहुत आनंद आया।

ग्रीष्मावकाश में अवध प्रांत से आये हुए बालक-बालिकाओं के लिए शिक्षण-शिविर लगाया गया। उसमें मैंने, कु. माधुरी, पं. प्रवीणचंद, पं. नरेशकुमार आदि ने उनको अनेक विषयों का अध्ययन कराया। विधि विधान प्रारंभ विधि तथा हवन विधि भी सिखाई। माताजी ने प्रवचन दिये। बच्चों ने खूब लाभ लिया। छुट्टियों में गुरु के पास आना सार्थक हो गया।

आषाढ़ की अष्टान्हिका में एक साथ दो इन्द्रध्वज विधान- श्रीमती शांतिदेवी ध.प. श्री राजकुमार जैन डालीगंज तथा उनके सुपुत्र सुशील कुमार जैन ने सपरिवार आकर तथा श्री विजेन्द्र कुमार जैन शालीमारबाग दिल्ली ने सपरिवार आकर इन्द्रध्वज विधान

किया। एक ने बीसपंथ से, दूसरे ने तेरहपंथ से विधान किया। ऐसी समन्वयात्मक दृष्टि अन्यत्र देखने को बहुत कम मिलेगी। बहुत ही भक्तिविभोर होकर आनंद से दोनों ग्रुप अपनी-अपनी विधि से पूजा करते थे। माताजी के प्रवचन प्रतिदिन सुनते थे।

आचार्य वीरसागर संस्कृत विद्यापीठ—विद्यापीठ के एक विद्यार्थी कमलेश कुमार ने 25 जुलाई 1988 को पूज्य माताजी से आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया, जिससे माताजी को प्रसन्नता हुई। इस विद्यापीठ के विद्यार्थी ब्र. सुरेश जैन कोटड़िया एवं सुभाष जैन बंडा ने मुनि दीक्षा लेकर जीवन सार्थक किया है जिसका माताजी को व हमें विशेष गौरव है।

तैंतीसवाँ चातुर्मास (1988-जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में)

संस्थान के पदाधिकारी तथा सदस्यों एवं आसपास के जैन समाज के महानुभावों के निवेदन पर वर्ष 1988 का चातुर्मास हस्तिनापुर में ही 27 जुलाई को स्थापित किया। चातुर्मास में अनेक छोटे-बड़े विधान होते रहे। पूज्य माताजी द्वारा लेखन कार्य भी सतत चलता रहा। समय-समय पर प्रवचन भी होते रहते थे। दशलक्षण पर्व में अहमदाबाद से चंदूभाई, दिनेशभाई आदि कुछ श्रावक-श्राविकायें आ गये थे, अन्य स्थानों के भी श्रावक आ गये थे। पर्व पूजाओं के अतिरिक्त दस धर्म, तत्त्वार्थसूत्र पर मेरे व माताजी के प्रवचन होते थे। कु. माधुरी तथा रवीन्द्र कुमार पर्व में बड़ौत में आयोजित कल्पद्रुम विधान कराने गये थे। आश्विन कृष्णा में हापुड़ में इन्द्रध्वज विधान हुआ, उसमें कु. माधुरी को ले गये थे। वहाँ बहुत उत्साह था।

कल्पद्रुम विधान—16 अक्टूबर 1988, आसौज शुक्ला 5 से जम्बूद्वीप स्थल पर श्री मांगीलाल जी पहाड़े हैदराबाद ने सपरिवार उत्साहपूर्वक कल्पद्रुम विधान किया। विधानपर्यन्त चारों प्रकार के दान भी बांटे गये। शरद पूर्णिमा-25 अक्टूबर को पूज्य माताजी का 54वाँ जन्मदिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। श्री बाबूलाल जी, मांगीलालजी पहाड़े परिवार की पुत्रवधुओं तथा बालक-बालिकाओं ने मिलकर पूज्य माताजी के जीवन पर एक छोटा सा एकांकी प्रस्तुत किया, बहुत ही रोमांचक रहा। यह पहाड़े परिवार सन् 1964 से पूज्य माताजी का परम भक्त है। जब तक श्री मांगीलाल जी जीवित रहे, तब तक प्रतिवर्ष माताजी के दर्शनार्थ आते रहे। कई बार माताजी की जन्मजयंती पर प्रीतिभोज किया। उनके भाई श्री बाबूलालजी पहाड़े भी बराबर आते रहते हैं तथा संस्थान की प्रगतिशील योजनाओं में आर्थिक योगदान भी करते रहते हैं। इस विधान के मध्य स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्ति जी (श्रवणबेलगोल) भी पधारे थे। उन्होंने इस विधान को श्रवणबेलगोल में भी कराने का निर्णय लिया। संगीतकार तथा स्थल विधान पर रखे जाने वाले मानस्तंभ, तोरणद्वार आदि उपकरण भी यहाँ से ले जाने का भाव व्यक्त किया। 16 नवम्बर से श्रवणबेलगोल में बहुत भारी उत्साह के साथ कल्पद्रुम विधान सम्पन्न

हुआ। वहाँ कन्नड़भाषी अनेक भक्तों ने माताजी का बहुत गुणानुवाद किया क्योंकि माताजी ने सन् 1965 में श्रवणबेलगोल में चातुर्मास किया था।

8 नवम्बर 1988, कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी की पिछली रात्रि को आगमोक्त विधि से वर्षायोग की निष्ठापना माताजी ने ससंघ की, तदनंतर भगवान महावीर का निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। उसी दिन शाम को दीपावली पूजन संघस्थ ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणियों तथा स्टाफ वालों ने की। जम्बूद्वीप में दीपमालिका लगाई गयी।

चातुर्मास के बाद—कार्तिक अष्टान्हिका में श्री वीरेन्द्र कुमार जैन टिकैतनगर तथा श्री बिजेन्द्र कुमार जैन दिल्ली ने हस्तिनापुर सपरिवार आकर सर्वतोभद्र मंडल विधान किये। दो अलग-अलग मंडल बने थे। इस विधान में माताजी ने 108 जयमालाएँ लिखी हैं प्रत्येक जयमाला में चांदी का एक स्वस्तिक चढ़ाने का लिखा है। दोनों ग्रुप ने धातु के 108 स्वस्तिक चढ़ाये। कु. माधुरी ने भी पहली बार पूरा विधान अपने हाथ से करके मण्डल पर 108 स्वस्तिक चढ़ाये। आचार्य सुमतिसागर जी महाराज हस्तिनापुर में बड़े मंदिर पर ठहरे थे, विधान के मध्य जम्बूद्वीप स्थल पर पधारे। तेरहपंथ-बीसपंथ का समन्वय देखकर प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि "जम्बूद्वीप के बारे में जैसी अफवाहें लोगों ने फैला रखी थीं, वैसा कुछ भी यहाँ देखने में नहीं आया, सब गलत निकला, यहाँ पर बहुत ही अच्छा लगा।"

समयसार का स्वाध्याय भी माताजी के समक्ष सामूहिक रुप में चल रहा था तथा माताजी उसकी टीकाओं का अनुवाद भी कर रही थीं। 3 जनवरी 1989 को समयसार पूर्वार्ध छपने दे दिया मेरठ में सुमन प्रिंटर्स को। इसी मध्य माताजी ने आचार्य कुन्दकुन्द के ग्रन्थों से मक्खनस्वरुप निश्चय-व्यवहारसमन्वयात्मक 108 गाथाएँ संकलित करके गाथाओं का अर्थ तथा भावार्थ देकर "कुन्दकुन्द मणिमाला" नाम से एक पुस्तक तैयार कर दी, उस पुस्तक का प्रकाशन भी हो गया।

मई में यहाँ आचार्य श्री कुंथुसागर महाराज का ससंघ मंगल पदार्पण हुआ। 40 दिन तक संघ हस्तिनापुर में रुका, सभी ने संघ की खूब सेवा की और पूज्य माताजी ने संघस्थ साधुओं को अनेक विषयों का अध्ययन कराया।

20 जून से श्री प्रकाशचंद जैन टिकैतनगर ने सपरिवार आकर त्रैलोक्य विधान किया। माताजी ने तीन लोक विधान तीन साइज के बनाये—बड़ा सर्वतोभद्र, मध्यम तीनलोक तथा छोटा त्रैलोक्य विधान नाम से बनाया। तन्मयता से भक्तिपूर्वक विधान पूजन की। विधान के मध्य प्रतिदिन माताजी के प्रवचन भी हुए, पूरे परिवार ने भक्ति व ज्ञान का पूरा लाभ लिया।

श्री ताराचंदजी (नरपत्या) भरतपुर (राज.) ने हस्तिनापुर आकर "जम्बूद्वीप विधान" किया। विधान के मध्य 16 जुलाई 1988, आषाढ़ शुक्ला 13 को

ब्र. रवीन्द्र कुमार, गणेशीलाल रानी वाला, जिनेन्द्र प्रसाद ठेकेदार आदि महानुभावों के द्वारा माताजी के पास बैठकर जम्बूद्वीप स्थल की प्रगति तथा 1990 में जम्बूद्वीप महोत्सव करने के बारे में विचार-विमर्श चल रहा था, तभी माताजी ने उचित समय देखकर सहसा घोषित कर दिया कि ब्र. कु. माधुरी की दीक्षा होगी, 13 अगस्त, श्रावण शुक्ला 11 का मुहूर्त है। यह बात सुनते ही रवीन्द्र कुमार कुछ देर के लिए हतप्रभ रह गये, जब यह देख लिया कि–माताजी का निर्णय व घोषणा दृढ़ है, तब कहा कि–''दीक्षा ठाठ बाट से होगी, उत्साहपूर्वक कार्यक्रम बनाया जावेगा।''

चौंतिसवाँ चातुर्मास (1989- जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में)

दीक्षा हेतु ब्र. कु. माधुरी ने प्रार्थना की–17 जुलाई आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी के दिन चातुर्मास स्थापना हेतु उपस्थित जनसमुदाय श्रीफल चढ़ाकर प्रार्थना कर रहे थे, उसी समय ब्र. कु. माधुरी ने दीक्षा के लिए श्रीफल चढ़ाकर माताजी से निवेदन किया। माताजी ने सहर्ष स्वीकृती प्रदान की। यह जानकारी पूरे देश की दि. जैन समाज को प्राप्त होते ही हर्ष का वातावरण व्याप्त हो गया। कुछ लोगों को विषाद इसलिये हुआ कि अब कु. माधुरी जी अपने सुमधुर कंठ से विधान कराने नहीं आ सकेंगी। यह उनके वात्सल्य भाव का द्योतक था। जगह-जगह से दीक्षा पूर्व बिनोरी (शोभायात्रा) निकालने के लिए तेजी से मांग आने लगी। दीक्षा तिथि में एक माह से भी कम का समय था अतः कई जगह एक दिन में दो-दो जगह बिनोरी निकाली गयी। बिनोरी के लिए अनेक नगरों के भक्तों को मना भी करना पड़ा।

13 अगस्त, श्रावण शुक्ला 11 रविवार को दीक्षा पूर्व भी शोभायात्रा निकाली गई। वह शोभायात्रा जम्बूद्वीप स्थल पर बने विशाल पंडाल में सभा के रूप में परिणत हो गई। सभा में 10,000 से अधिक जनसमुदाय उपस्थित था। अनेक प्रदेशों के भक्तगण पधारे थे उसके पश्चात् पूज्य माताजी ने अपने हाथों से दीक्षा विधि प्रारंभ करते हुए दीक्षार्थी कु. माधुरी के लम्बे-लम्बे बालों का केशलोंच प्रारंभ किया। उस केशलोंच के दृश्य को देखकर सारी जनता के नेत्र अश्रुपूरित हो रहे थे किन्तु माधुरी के चेहरे पर मुस्कान थी। उस समय दीक्षा का दृश्य बड़ा ही रोमांचक था। 28 मूलगुणों का संस्कार करके पिच्छी, कमंडलु तथा शास्त्र प्रदान करने से पूर्व पहने हुए सभी वस्त्रों का त्याग करवाकर मात्र दो साड़ी प्रदान कीं। एक उसी दिन के लिए तथा दूसरी अगले दिन के लिए। दीक्षित नाम 'आर्यिका चंदनामती' घोषित करते ही पंडाल जयकार के नारों से गूंज उठा। कु. माधुरी बन गयीं जगत्माता। मेरे सहित सभी ने उन्हें नमोस्तु किया। आज भी अनेक भक्त उस दृश्य को याद करके रोमांचित हो जाते हैं। दीक्षा के पश्चात् विगत वर्षों से चंदनामती माताजी के द्वारा भी धर्म की महती प्रभावना हो रही है। माताजी के आदेशानुसार खूब लेखन किया, भजन व पूजाएँ लिखीं, अनेकों विधान

अपने मधुर कंठ से कराये, ओजस्वी प्रवचन किये, खूब पदयात्रायें की।

दशलक्षण पर्व में इन्द्रध्वज विधान सम्पन्न हुआ, जिसमें अनेक नगरों के भक्तों ने भाग लिया। प्रातः, मध्यान्ह तथा रात्रि में खूब धर्मामृत की वर्षा हुई।

शरदपूर्णिमा पर माताजी का 56वाँ जन्म दिवस त्रिदिवसीय कार्यक्रम के साथ वृहद् स्तर पर मनाया गया। शरद पूर्णिमा के 8 दिन पूर्व संघस्थ वयोवृद्ध ब्रह्मचारिणी श्यामाबाई टिकैतनगर ने माताजी के समक्ष श्रीफल चढ़ाकर क्षुल्लिका दीक्षा देने के लिए प्रार्थना की थी तदनुसार 15 अक्टूबर शरदपूर्णिमा के शुभ दिन माताजी के जन्मजयंती समारोह के मध्य माताजी ने उन्हें क्षुल्लिका दीक्षा प्रदान कर ''क्षुल्लिका श्रद्धामती'' नाम घोषित किया। उनकी समाधि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में 2004 के चातुर्मास में हो गई।

इसी शुभ अवसर पर माताजी के ससंघ सानिध्य में प्रतिष्ठाचार्यों की एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी 15 से 17 अक्टूबर 1989 तक सम्पन्न हुई, अनेक प्रतिष्ठाचार्य पधारे थे। माताजी ने तीनों दिन प्रतिष्ठाचार्यों को सम्बोधित किया। बहुत सफल संगोष्ठी रही। इसी समारोह के मध्य प्रथम जम्बूद्वीप पंचवर्षीय महोत्सव तथा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 3 मई से 7 मई 1990 वैशाख शुक्ला 9 से 13 तक करने की घोषणा की गयी।

इस प्रकार विविध उपलब्धियों के साथ आसौज कृष्णा 14 को वर्षायोग का समापन हो गया।

चातुर्मास के बाद–बड़ौत में 27 नवम्बर से 14 दिसम्बर तक वृहद् तीन लोक विधान का आयोजन रखा गया था। बड़ौत जैन समाज के महानुभावों के विशेष आग्रह एवं निवेदन पर माताजी ने जाने की स्वीकृति प्रदान कर दी थी। यहाँ से संघ सरधना पहुँचा। वहाँ माताजी का स्वास्थ्य खराब हो गया। मवाना में णमोकार मंत्र वाले बाबा आचार्य कल्याणसागर जी से भेंट हुई थी। सरधना में स्वास्थ्य सुधार होने पर बड़ौत जाते हुए बिनौली में उपाध्याय श्री ज्ञानसागर महाराज से भेंट हुई। 26 नवम्बर को बड़ौत शहर में पदार्पण हुआ। दिगम्बर जैन अतिथि भवन में गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी महाराज का संघ ठहरा हुआ था। उनका चातुर्मास यहीं हुआ था। माताजी संघ सहित अतिथि भवन के निकट गेस्ट हाउस में ठहरीं। विधान का झंडारोहण 27 को तथा विधान पूजन 28 से प्रारंभ हुई। चंदनामती माताजी ने व मैंने प्रतिदिन 1-2 घंटा विधान, पूजन पढ़ी। संघ सानिध्य में स्वाध्याय आदि भी हुआ, पूज्य माताजी ने यहाँ उपाध्याय श्री कनकनंदी आदि मुनियों के आग्रह से सभी मुनिराजों को अष्टसहस्री आदि ग्रंथों का अध्ययन भी कराया। यहाँ सर्दी बहुत अधिक हो गयी थी। यहाँ से 5 जनवरी 1990 को विहार करके मोदीनगर में 18 जनवरी से 27 जनवरी तक इन्द्रध्वज विधान कराया।

29 जनवरी को मोदीनगर से विहार करके संघ का पदार्पण 31 जनवरी को कमला नगर मेरठ में हुआ। 1 फरवरी से 12 फरवरी तक श्री प्रेमचंद जी तेलवालों ने कमलानगर मंदिर के सामने पंडाल बनाकर बहुत ठाठ-बाट से कल्पद्रुम विधान कराया, चारों प्रकार का दान खूब बांटा, पूर्ण उदारता से विधान किया। कमलानगर से 14 फरवरी को हस्तिनापुर की तरफ विहार करके मेरठ में कुछ श्रावकों के घर एक-एक दिन के विधान कराते हुए रास्ते में ठहरने के स्थानों पर, स्कूल में प्रवचन करते हुए मवाना पधारकर यहाँ भी कुछ श्रावकों के घरों में सुख-शांति के लिए छोटे विधान कराये। 22 फरवरी को हस्तिनापुर में माताजी का ससंघ मंगल पदार्पण हुआ। कार्तिक शुक्ला 1 से फाल्गुन शुक्ला तक का विहार मंगलमय रहा, विविध प्रकार से धर्मप्रभावना हुई। इस प्रवास में माताजी के साथ आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, मैं तथा क्षुल्लिका श्रद्धामती के अतिरिक्त ब्र.कु. बीना व कु. आस्था थीं। दीक्षा के पश्चात् मेरा तथा चंदनामती माताजी का यह प्रथम विहार था।

जम्बूद्वीप महामहोत्सव की तैयारियाँ—जम्बूद्वीप स्थल पर आते ही संघ की दिनचर्या विधिवत् प्रारंभ हो गई। दैनिक सामूहिक स्वाध्याय भी प्रारंभ हो गया। माताजी का अपना लेखनकार्य चल रहा था। महोत्सव से पूर्व मंदिरों तथा धर्मशालाओं में रंगाई-पुताई का कार्य भी चल रहा था। पीतल की ह्रीं बनाकर उसमें 24 तीर्थंकरों की प्रतिमा विराजमान करने के लिए पहले माताजी ने मिट्टी से ह्रीं का नमूना बनवाया। अनंतर मुरादाबाद में पीतल की ह्रीं तथा उसके नीचे पीतल का ही कमल बनने का ऑर्डर दिया गया। उसी के साथ पीतल के 5 मेरु बड़े-बड़े एवं तेरहद्वीप के 378 मंदिरों के बनाने का ऑर्डर दिया। जयपुर में प्रतिमाओं का ऑर्डर दिया गया।

फाल्गुन की अष्टान्हिका में तीस चौबीसी विधान श्री शिखरचंद जैन हापुड़ तथा श्री जिनेन्द्र प्रसाद ठेकेदार व उनकी बहन सरलाजी ने आकर सम्पन्न किया। जम्बूद्वीप पंचवर्षीय महोत्सव के साथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करने का भी निर्णय पूर्व में किया गया था अतः 4 मार्च को प्रतिष्ठा समिति की मीटिंग करके प्रतिष्ठा- संबंधी कार्यभार सौंपे गये। सभी ने उत्साहपूर्वक जिम्मेदारी ली।

आचार्य पद की चर्चा—चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के चतुर्थ पट्टाधीश आचार्य श्री अजितसागर जी महाराज के असाध्य क्षयरोग को देखते हुए भावी आचार्य के बारे में चर्चा प्रारंभ हो गई। अधिकांश मुनि-आर्यिका आचार्यकल्प श्री श्रेयांससागर जी महाराज को भावी आचार्य बनाने का निर्णय कर चुके थे। यहाँ माताजी को भी यह उचित निर्णय सुनकर प्रसन्नता हुई थी किन्तु आचार्य श्री अजितसागर जी महाराज की समाधि के पश्चात् आचार्यपद का निर्णय गंभीर विवाद में पड़ गया।

व्रतों की साधना—पूज्य माताजी ने रुग्ण तथा अशक्त शरीर से भी मनोबल के

द्वारा रस-अन्न आदि त्याग करके अनेक व्रत किये। कौन-कौन से व्रत कब किये? इसका विस्तृत विवेचन माताजी ने स्वयं 'मेरी स्मृतियाँ' ग्रंथ में किया है। वर्षों तक एक अन्न-चावल लिया। बाद में दो अन्न लेना प्रारंभ किया, वह अब भी चल रहा है। इसी प्रकार वर्षों तक विविध प्रकार के रसों का त्याग रखा। आचार्य श्री वीरसागर महाराज की समाधि के पश्चात् गुड़, शक्कर तथा दही व तेल का भी त्याग कर दिया था। नमक का त्याग 30 वर्ष तक रहा है। वर्तमान में भी पूज्य माताजी केवल दो अन्न एवं दो ही रस आहार में ग्रहण करती हैं।

जम्बूद्वीप महामहोत्सव से पहले महान ग्रंथों का प्रकाशन—समयसार ग्रंथ का पूर्वार्ध छपकर आ जाने से माताजी सहित सभी को अतीव प्रसन्नता हुई। अष्टसहस्री के प्रथम भाग की प्रतियाँ समाप्त हो जाने से उसके द्वितीय संस्करण का भी प्रकाशन कर दिया गया। इसी प्रकार माताजी की भावनानुसार आचार्य श्री वीरसागर स्मृतिग्रंथ का प्रकाशन भी दिन रात एक करके किया गया। इन सभी ग्रंथों के विमोचन मई 1990 में होने वाले महोत्सव में होकर जन-जन तक पहुँचाए गये।

मेरठ में उ.प्र. की नगरपालिकाओं के अध्यक्ष, सदस्य तथा मेयरों के सम्मेलन से अनेक लोग 5 अप्रैल 1990 को जम्बूद्वीप स्थल पर आये, देखकर बहुत प्रसन्न हुए। मेरे, बड़ी माताजी के प्रवचन हुए। इसी प्रकार प्रतिदिन मेरठ संभाग, प्रदेश तथा देश के विभिन्न भागों से दर्शनार्थी बड़ी संख्या में यहाँ आते हैं, उन्हें माताजी का उपदेश सुनने का भी पुण्य अवसर प्राप्त होता रहता है।

क्षेत्र पर चल रहे निर्माण कार्यों की देखरेख विगत 7-8 वर्षों से सेवानिवृत्त इंजी. श्री कैलाशचंद जैन तोपखाना मेरठ वाले कर रहे हैं, अवैतनिक सेवा दे रहे हैं। उनकी ध.प. कैलाशवती जी भी भक्तिपूर्वक उनके साथ यहीं रहती हैं। दोनों की दान तथा सेवावृत्ति में विशेष रुचि रही। सन् 1975 से 1987 तक जम्बूद्वीप स्थल पर चार पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं हो चुकी थीं। मई में महोत्सव के साथ पांचवीं प्रतिष्ठा होगी। प्रतिष्ठा से पूर्व 12 अप्रैल 1990 वैशाख कृष्णा दूज को एक विधान का प्रातः हवन हो रहा था, उसी दिन दूसरी तरफ मवाना के श्रीपालजी तथा उनके पुत्र ज्ञानचंद जैन इन्द्रध्वज विधान का झंडारोहण कर रहे थे। यह विधान 22 अप्रैल को सम्पन्न हुआ।

12 अप्रैल-वैशाख वदी दूज को माताजी का 34 वाँ आर्यिका दीक्षा दिवस था, उस दिन जम्बूद्वीप स्थल पर माताजी के पादप्रक्षाल, आरती के द्वारा संघ के सदस्यों ने अपने भक्तिसुमन अर्पित किये, माताजी के गुणानुवाद गाये। इस अवसर पर माताजी ने भी अपने गुरू आचार्य श्री वीरसागर महाराज, दीक्षा दिवस तथा अब तक किये कार्यों का स्मरण किया। अपने शिष्यों द्वारा अहर्निश किये जा रहे कार्यों को भी याद कर अति संतोष एवं हर्ष व्यक्त किया। देखते-देखते पंचवर्षीय महोत्सव व पंचकल्याणक

प्रतिष्ठा का समय नजदीक आ गया। 28 अप्रैल से 2 मई तक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं प्रथम पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महोत्सव 3 मई से 7 मई 1990 तक—समय आ गया चिरप्रतीक्षित प्रथम पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महोत्सव का। तिथि थी वैशाख शु. तीज (अक्षय तृतीया), तारीख थी 27 अप्रैल 1990। कार्यक्रम प्रारंभ हुआ जम्बूद्वीप महोत्सव तथा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के आचार्य निमंत्रण, गुरु आज्ञा तथा झंडारोहण से। ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन ने संघ सानिध्य में आचार्य निमंत्रण देते हुए तिलक लगाकर कंकण बंधन किया, माला पहनाई तथा वस्त्र भेंट किये-प्रतिष्ठाचार्य पं.फतेहसागर जी, सहयोगी पं. प्रदीप कुमार कुसुंबा (महा.) पं. सुधर्मचंद जी तिवरी को। प्रतिष्ठाचार्यों तथा समिति पदाधिकारियों ने मिलकर पूज्य माताजी से श्रीफल चढ़ाकर प्रार्थना की पूरे कार्यक्रम में सानिध्य प्रदान करने के लिये। माताजी ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हुए सभी को आशीर्वाद प्रदान किया। अनंतर ''सिद्धार्थ मंडप'' के सामने बने ऊँचे ध्वजदण्ड पर झंडारोहण किया माताजी के परमभक्त श्री कमलचंद जैन खारी बावली दिल्ली ने सपरिवार। झंडारोहण के पश्चात् रथयात्रा एवं घटयात्रा के साथ पंडाल में बनी वेदी की शुद्धि हुई तथा उस पर विराजमान की गई प्रतिष्ठित प्रतिमाजी, इसी के साथ प्रारंभ हो गये विविध अनुष्ठान, मंत्रजाप्य, मंडल विधान आदि।

कार्यक्रम की अगली कड़ी के रूप में 28 अप्रैल 1990 को ''ज्ञानज्योति शिक्षण/प्रशिक्षण शिविर'' का उद्घाटन हुआ। शिविर का कुलपति मुझे मनोनीत किया गया। शिविर के आयोजन का सुझाव श्री हीरालालजी अहमदाबाद ने दिया था। शिविर में अन्य स्थानों के अतिरिक्त गुजरात से भी 25-30 लोग पधारे थे। शिविर 3 मई तक चला। संघस्थ ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणियों, पूज्य चंदनामती माताजी तथा मैंने शिक्षण प्रदान किया। गणिनी माताजी के प्रतिदिन प्रवचन हुए। 2 मई को सबकी परीक्षा ली गई। 3 मई को समापन पर सभी को प्रमाणपत्र दिये गये।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में भगवान के माता-पिता बने श्री जिनेंद्र प्रसाद जैन ठेकेदार दिल्ली व उनकी ध.प. श्रीमती विमला देवी। सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ श्री मोतीचंद जैन कासलीवाल जौहरी दरीबा दिल्ली को। 3 मई की रात्रि में डी.पी कौशिक मुजफ्फरनगर द्वारा जैन रामायण पर आधारित ''सीता स्वयंवर''नाटिका का मंचन किया गया। दर्शकों ने खूब सराहना की। अनंतर गर्भकल्याणक की बहिरंग व अंतरंग क्रियाएँ सम्पन्न हुईं। प्रतिष्ठा में 5 फुट ऊँचे धातु के ह्रीं में विराजमान होने वाली 24 प्रतिमाओं की, इन्द्रध्वज विधान में तेरह द्वीप में स्थापित करने के लिए 458 प्रतिमाओं तथा बाहर से भी आई हुई प्रतिमाओं की प्रतिष्ठाविधि प्रारंभ हुई। 4 मई को प्रातः जन्मकल्याणक के दृश्य प्रस्तुत हुए। जन्मकल्याणक के अवसर पर ऐरावत हाथी

पर शोभायात्रा निकाली गई। सुमेरु की पांडुकशिला पर जन्माभिषेक हुआ। केन्द्रीय उद्योगमंत्री चौधरी अजितसिंह ने जम्बूद्वीप पर आते हुए हेलीकॉप्टर से पुष्पवृष्टि की एवं उतरकर माताजी का आशीर्वाद ग्रहण किया। तदनंतर सभामंडप में पहुँचकर मंच पर आसीन हुए। आज के इस कार्यक्रम को ''अष्टमूलगुण सम्मेलन'' नाम दिया गया था। चौधरी अजितसिंह जी के स्वागत के अनंतर मैंने व पूज्य श्री चंदनामती माताजी ने अष्टमूलगुणों तथा उसकी जीवन में महत्ता पर प्रकाश डाला। पूज्य गणिनी माताजी द्वारा अनुवादित समयसार ग्रंथ का विमोचन उद्योगमंत्री जी ने किया। मंडप के पास लगाई गई अष्टमूलगुण प्रदर्शनी का उद्घाटन भी चौधरी अजितसिंह जी ने किया, प्रदर्शनी बहुत ही आकर्षक थी। शाम को भगवान का पालना झुलाया गया।

5 मई को प्रातः बालक्रीडा दिखाई गई। मध्यान्ह में राज्याभिषेक के पश्चात् भगवान वर्धमान कुमार की दीक्षा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। रात्रि में दिल्ली की सुप्रसिद्ध गायिका चैताली ने जैन भजन प्रस्तुत किये। वे स्वयं स्त्री-पुरुष की आवाज में गाकर जनता के आकर्षण का केन्द्र बन गई थीं। 6 मई को प्रातः भगवान की आहारचर्या कराने का पुण्य श्री अमरचंद जी पहाड़िया कलकत्ता को प्राप्त हुआ। आज पंचवर्षीय महोत्सव के उपलक्ष्य में सुमेरुपर्वत की पांडुकशिला पर अभिषेक करने के लिए देश भर से आये भक्तों की भीड़ प्रातः से एकत्रित होना प्रारंभ हो गई। एक अनहोना शुभ संयोग प्राप्त हो गया आज के दिन। 5 वर्ष पूर्व भी आज के दिन वैशाख शुक्ला 12 की तिथि थी। वाद्यों की मंगल ध्वनि के साथ मंगल चौक पर स्थापित कलशों से हार-मुकुट धारण किये हुए केशरिया परिधान में सुसज्जित इन्द्र-इन्द्राणियों ने भक्ति-विभोर होकर अभिषेक करना प्रारंभ कर दिया।

6 मई को अपरान्ह 3 बजे उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री सत्यनारायण रेड्डी एक भक्त के रुप में समारोह में पधारे। सभामंडप में जनसमुदाय एकत्रित था। राज्यपाल महोदय के मंच पर पधारते ही सभी ने करतल ध्वनि से उनका स्वागत किया। सभा की अध्यक्षता श्री वीरेन्द्र कुमार जैन चीफ जस्टिस लखनऊ ने की। श्री रेड्डी जी एवं चीफ जस्टिस का स्वागत पुष्पहार, शॉल, श्रीफल से किया गया। मैंने महोत्सव की महिमा पर विचार प्रस्तुत करते हुए बताया कि पुण्ययोग से जम्बूद्वीप रचना की पावन प्रेरिका गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का पावन सानिध्य प्रथम जम्बूद्वीप महोत्सव को प्राप्त हो रहा है। पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने पूज्य गणिनी माताजी द्वारा अनुवादित महान ग्रंथ अष्टसहस्री के तीनों भागों के विमोचन से पूर्व उक्त ग्रंथ की टीका की महत्ता पर प्रकाश डाला। नारी शक्ति के विषय में ओजस्वी प्रवचन किया। तीनों भागों का विमोचन करके राज्यपालजी ने पूज्य माताजी के करकमलों में प्रदान किये। माताजी ने ग्रंथ पर आशीर्वाद लिखकर रेड्डी जी को प्रदान किये। पूज्य माताजी के

दीक्षागुरु आचार्य श्री वीरसागर महाराज के स्मृतिग्रंथ का विमोचन भी श्री मांगीलालजी पहाड़िया, हैदराबाद ने राज्यपाल से करवाया।

राज्यपाल श्री रेड्डी जी ने अपने भाषण में कहा कि– हस्तिनापुर की धरती महान है। यहाँ की भूमि पर हुआ महाभारत का युद्ध धर्म की विजय तथा अधर्म की पराजय बताता है। मुझे पहली बार इस पवित्र तीर्थ पर आने का अवसर मिला है। ज्ञानमती माताजी जैसी महान साध्वी यहाँ त्याग और तपस्या का श्रोत बहा रही हैं। इनसे ऐसा आशीर्वाद प्राप्त करना है कि हमारा देश शक्तिशाली एवं धर्मसहिष्णु बने। मेरी शुभकामनाएँ आप सब स्वीकार करें।

पूज्य माताजी ने दूर-दूर से आये समस्त नर-नारियों को तथा राज्यपाल महोदय को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। अंत में सभाध्यक्ष जस्टिस श्री वीरेन्द्र कुमार जैन ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि ऐसे उत्सव यहाँ प्रतिवर्ष होते रहें जिससे हमें व आप सबको यहाँ प्रतिवर्ष आने का मौका मिलता रहे। दोनों अतिथियों ने मंच पर विराजमान प्रतिमाओं तथा ह्रीं के दर्शन किये अनंतर जम्बूद्वीप दर्शन करते हुए प्रोटोकोल को मद्देनजर करके सुमेरुपर्वत की 136 सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर तक जाकर चारों तरफ का प्राकृतिक सौंदर्य देखते रहे, नौकाविहार भी किया। अंत में कमल मंदिर के उद्घाटन के रूप में शिलापट्ट का अनावरण कर मंदिर के दर्शन करके दिल्ली के लिए रवाना हो गए, पूरे ढाई घंटे रुके।

12 बजे से 3 बजे तक केवलज्ञान कल्याणक की क्रियाएँ हुई। समवसरण की रचना दिखाई गई। पूज्य माताजी का मंगल प्रवचन भी हुआ। रात्रि में ''महाराज कृष्ण कुमार कत्थक कला केन्द्र'' दिल्ली द्वारा जैन शास्त्रों के आधार से महाभारत की काव्य में नाटिका दिखाई गई, जिसे दर्शकों ने खूब सराहा।

7 मई को प्रातः पावापुरी की रचना बनाकर भगवान महावीर का मोक्षगमन दिखाया गया। कमल मंदिर पर कलशारोहण तथा ध्वजारोहण किया श्रीमती उर्मिला देवी संतोष कुमार जैन दिल्ली ने। इन्हीं की तरफ से कमल मंदिर में भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा स्थापित की गई थी। मध्यान्ह में समापन पर रथयात्रा निकाली गई। समस्त आगत विद्वानों, श्रीमानों तथा लगनशील कार्यकर्ताओं का समिति की ओर से स्वागत तथा अभिनंदन किया गया। समस्त प्रतिमाएँ यथास्थान विराजमान कर दी गई। महोत्सव सानंद तथा निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

आचार्यकल्प श्री श्रेयांससागर जी महाराज को पंचम पट्टाचार्य पद पर प्रतिष्ठापित किया गया–चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के चतुर्थ पट्टाचार्य श्री अजितसागर जी महाराज की समाधि के पश्चात् पंचम पट्टाचार्य के विषय में काफी प्रयास के बाद भी जब एकमत नहीं बन पाया, तब दो पट्टाचार्य बनाये गये। उनमें से एक आचार्यकल्प श्री श्रेयांससागर जी महाराज को बनाया गया। उन्हें लोहारिया (राज.) में 10 जून 1990 को 34 पिच्छीधारी मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिकाओं, पचासों व्रतियों तथा 25 हजार श्रावक-श्राविकाओं की विशाल उपस्थिति में पंचम पट्टाचार्य के पद पर प्रतिष्ठापित किया गया। इस समारोह में हस्तिनापुर से कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार को माताजी ने अपनी सहमति के साथ भेजा था। उक्त समारोह में देश के सैंकड़ों नगरों से भक्तगण पधारे थे। आचार्यपद के संस्कार उपाध्याय श्री अभिनंदनसागर जी महाराज ने किये। समस्त विधि-विधान ब्र. श्री सूरजमलजी बाबाजी ने कराये। यह कार्यक्रम प्रातः 8:30 से प्रारंभ होकर 1.30 बजे तक– 5 घंटे चला।

पैंतिसवाँ चातुर्मास (1990- जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में)

पूज्य माताजी ने 6 जुलाई 1990 आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को जम्बूद्वीप स्थल पर संघसहित वर्षायोग की स्थापना की। आषाढ़ शु. पूर्णिमा को आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज की जन्मजयन्ती, श्रावण कृष्णा एकम् को वीरशासन जयंती के कार्यक्रम सम्पन्न हुए एवं श्रावण शुक्ला 7 को भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाण कल्याणक के उपलक्ष्य में अभिषेक-पूजापूर्वक माताजी के सानिध्य में निर्वाणलाडू चढ़ाया गया।

वैसे तो माताजी विविध प्रकार के लेखन में संलग्न रहती थीं फिर भी समय निकालकर कार्यक्रमों में सानिध्य एवं धर्मोपदेश भी देती रहती थीं।

दशलक्षण पर्व में श्री मनोज कुमार जैन हस्तिनापुर ने इन्द्रध्वज मंडल विधान बहुत हर्षोल्लास से सपरिवार किया। प्रातः विधान पूजन, मध्यान्ह में दशधर्म तथा तत्वार्थसूत्र पर प्रवचन तथा रात्रि में भक्ति, भजन, आरती, नृत्य तथा प्रवचन, प्रश्न-मंच हुए। विद्यापीठ के विद्यार्थी ब्र. धरणेन्द्र कुमार (तमिलनाडु वाले) विधानाचार्य थे। भादों सुदी दूज को चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की 35वीं पुण्यतिथी मनाई गई।

25 सितम्बर, आसोज शुक्ला 6 से 7 अक्टूबर, आसौज शुक्ला 15 (शरदपूर्णिमा) तक जम्बूद्वीप स्थल पर तीनलोक मंडल विधान का आयोजन किया गया जिसमें मेरठ, दिल्ली, हापुड़ से भक्त महानुभावों ने पधारकर भक्ति गंगा में अवगाहन कर पुण्योपार्जन किया। देश के विभिन्न नगरों के अशांत वातावरण को देखते हुए माताजी का 57 वाँ जन्मदिवस 2 अक्टूबर (शरद पूर्णिमा) के दिन सादगी से मनाया गया।

1 अगस्त 1990 को सुप्रसिद्ध विद्वान श्री मोतीचंद गौतमचंद कोठारी, फल्टन (महा.) का उनके गृहनगर फल्टन में 90 वर्ष की आयु में समाधिमरण हो गया। आपने संस्थान द्वारा आयोजित शिक्षण- प्रशिक्षण शिविरों में कुलपति के पद को गौरवान्वित किया था। उन्हें संस्थान की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

पूज्य माताजी का 57 वाँ जन्म दिवस शरदपूर्णिमा के दिन श्रीमती संतोषकुमारी

के नेतृत्व में नागौर (राज.) में जैन समाज ने हर्षोल्लास के साथ मनाया। माताजी की पूजन करके उनके चित्र के समक्ष 57 दीपकों से आरती उतारी।

सरधना (मेरठ) उ.प्र. में प्रथम बार विशाल कल्पद्रुम विधान का भव्य आयोजन– कार्तिक अष्टान्हिका के अवसर पर 24 अक्टूबर से 2 नवम्बर 1990 तक विधान किया गया। विधान से पूर्व जैन समाज के वरिष्ठ महानुभावों ने हस्तिनापुर आकर पूज्य माताजी से ससंघ सानिध्य प्रदान करने के लिए सरधना पधारने हेतु निवेदन किया। माताजी ने अपनी शिष्या आर्यिका श्री चंदनामती माताजी तथा क्षुल्लिका श्री श्रद्धामती माताजी को भेज दिया। चंदनामती माताजी का समाज ने भव्य स्वागत किया। उनके वहाँ पधार जाने से समाज में अभूतपूर्व उत्साह जागृत हो गया। पं. प्रवीणचंद शास्त्री एवं ब्र. धरणेन्द्रकुमार विधानाचार्य के रूप में थे। विधान करने वालों को बहुत आनंद आया। विधान सम्पन्न करवाकर श्री चंदनामती माताजी वापस हस्तिनापुर पधार गईं।

दीपावली 1990 के दिन माताजी ने ससंघ चातुर्मास प्रातः समापन किया तदुपरांत कमलमंदिर में भगवान महावीर के निर्वाण के उपलक्ष्य में निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। शाम को दीपमालिका लगाई गई, दीपावली पूजन की गई।

चातुर्मास के पश्चात्–21 दिसम्बर 1990 को पंचम पट्टाचार्य श्री श्रेयांससागर जी महाराज की 72 वीं जन्मजयंती पर माताजी के सानिध्य में सभा का आयोजन करके उनके प्रति विनयांजलि अर्पित की गई।

9 जनवरी 1991 माघ कृष्णा 9 को आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की छठी पुण्यतिथी मनाई गई, उनके चरणों का प्रक्षाल करके पूजन की गई तथा सभा में श्रद्धांजलि समर्पित की गई। सन् 1985 में उनकी जम्बूद्वीप स्थल पर ही समाधि हुई थी।

आर्यिका पवित्रश्री एवं पावनश्री माताजी का जम्बूद्वीप स्थल पर ढ़ाई माह तक प्रवास रहा। उन्होंने पूज्य माताजी से खूब ज्ञान अर्जित किया, अनुभव सुने।

उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी महाराज भी तीन दिन रुके। माताजी से आध्यात्मिक चर्चाएँ कीं। पूज्य माताजी की शिष्या आर्यिका श्री श्रेष्ठमती माताजी का चित्तौड़-रेनवाल (राज.) में फाल्गुन वदी अमावस्या सन् 1991 को सामान्य अस्वस्थता के बाद अचानक समाधिमरण हो गया। वे पूज्य मुनि श्री गुणसागर जी तथा आर्यिका श्री आदिमती माताजी के साथ थीं। समाधि का समाचार सुनकर यहाँ गणिनी माताजी को खेद हुआ। उनके प्रति यहाँ सबने श्रद्धांजलि अर्पित की।

पूज्य गणिनी माताजी की आज्ञा से 15 फरवरी 1991 को चंदनामती माताजी ने मवाना पहुँचकर फाल्गुन के अष्टान्हिक पर्व में श्री सिद्धचक्र मंडल विधान कराया। 20 फरवरी से 25 फरवरी तक मुझे भी माताजी ने मवाना भेजा। वहाँ जाकर मैंने भी पूजाएं पढ़ीं तथा प्रवचन किये। विधान में ब्र. रवीन्द्र जी, ब्र. कमलेश, ब्र. धरणेन्द्र,

ब्र. जवेरचंद तथा ब्र. कु. बीना आदि भी पहुँचे थे, मैं 25 को वापस हस्तिनापुर आ गया। जिस दिन विधान का पूर्णाहुति हवन हुआ, उसी दिन खाड़ी युद्ध समाप्ति की सूचना से पूरे नगर में हर्ष छा गया। पूज्य चंदनामती माताजी 2 मार्च को वापस हस्तिनापुर पधार गईं।

हस्तिनापुर में होली मेला–प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष (1991में) होली मेले पर जम्बूद्वीप स्थल से रथयात्रा पूज्य गणिनी माताजी के ससंघ सानिध्य में निकाली गई। माताजी का प्रवचन भी हुआ। आसपास के विभिन्न नगरों से 6-7 हजार श्रावक-श्राविकाओं ने आकर जम्बूद्वीप के दर्शन किये।

अप्रैल 1991 में पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का अभिनंदनग्रंथ प्रकाशित करने की रूपरेखा बनाई गई। 9 मार्च 1991, चैत्र वदी 9 को भगवान ऋषभदेव की जयंती के उपलक्ष्य में जम्बूद्वीपस्थल पर विविध कार्यक्रम सम्पन्न हुए। प्रातः प्रभातफेरी तथा 108 कलशों से तथा पंचामृत अभिषेक, मध्यान्ह में धर्मसभा में गणिनी माताजी व संघ के साधुओं के प्रवचन हुए। इस शुभ अवसर पर सेंट्रल टाउन हस्तिनापुर के विद्यालयों में से सात विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के द्वारा ऋषभदेव सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। उनमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना पुरस्कार दिये गये। कार्यक्रम में 4-5 हजार छात्र-छात्राएं तथा निकटवर्ती अनेक नगरों से जैन बंधु पधारे थे। कार्यक्रम बहुत रोचक थे। सभी ने प्रशंसा की।

आर्यिका श्री पवित्रश्री एवं पावनश्री माताजी का 7 मार्च को जम्बूद्वीपस्थल से विहार हुआ। विगत ढाई माह से जम्बूद्वीपस्थल पर प्रवास करके पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी से खूब ज्ञान लाभ तथा अनुभव ज्ञान प्राप्त किया।

नांदणी (जिला- कोल्हापुर) महा. के भट्टारक श्री जिनसेन स्वामी का 7 मार्च 1991 को मठ में समाधिमरण हो गया। आपने अंतसमय में आ. श्री सुबलसागर जी महाराज से मुनि दीक्षा ले ली थी। आपने पूर्व में हस्तिनापुर पधारकर पूज्य माताजी से विविध विषयों पर धार्मिक चर्चा की थी। आप क्षुल्लक पद का निर्वाह करते थे। जम्बूद्वीपस्थल पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उनके स्थान पर क्षुल्लक श्री चन्द्रभूषणजी (शिष्य- आचार्य श्री देशभूषणजी) को भट्टारक पद पर क्षुल्लक वेश में प्रतिष्ठापित किया गया।

मुनि श्री निर्वाणसागर जी महाराज का इन्दौर में 12 मार्च 1991 को समाधिमरण हो गया। उनके प्रति संस्थान की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की गई। पूज्य मुनि श्री 13 वर्ष पूर्व हस्तिनापुर पधारे थे। उन्होंने जम्बूद्वीप संस्थान के विकास के लिए जो सहयोग श्रावकों से करवाया, वह चिरस्मरणीय रहेगा।

आचार्य श्री वीरसागर महाराज के शिष्य ब्र. सुगनचंदजी अजमेर का अपने

गृहनगर में 24 मार्च 1991 चैत्र शु. 9 को 85 वर्ष की अवस्था में समाधिमरण हो गया। उनके प्रति संस्थान के द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उन्होंने माताजी की प्रेरणा से सप्तम प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये थे, सन् 1962 से 1967 तक माताजी के संघ के साथ रहे थे। कलकत्ता, कटक, श्रवणबेलगोल, सोलापुर तथा सनावद तक की यात्रा में समय-समय पर जाकर यात्रा में सहयोग दिया था।

पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद से स्थापित ब्राह्मी आश्रम जबलपुर की 27 बालब्रह्मचारिणी बहनें 20 अप्रैल को पूज्य गणिनी माताजी के दर्शनार्थ पधारी थीं। 5 दिन तक माताजी के पास रहकर अनेक प्रकार के अनुभव तथा मार्गदर्शन आर्यिकाचर्या के विषय में तथा अन्य धार्मिक विषयों में प्राप्त किये। शंकाओं का समाधान भी प्राप्त किया तथा विविध विषयों पर मार्मिक प्रवचन भी सुने।

बारामती (महाराष्ट्र) में वयोवृद्ध आर्यिका श्री अजितमती माताजी का 29 अप्रैल सन् 1991 को महामंत्र श्रवण करते हुए समाधिमरण हो गया। अजितमती माताजी ने अब से 63 वर्ष पूर्व सन् 1928 में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज से क्षुल्लिका दीक्षा धारण की थी। आपने 12 वर्ष की सल्लेखना ले रखी थी, उसका यह अंतिम वर्ष था। 7 जनवरी 1991 को आचार्य बाहुबलीसागर महाराज ने आपको आर्यिका दीक्षा प्रदान कर दी। समाधिपर्यंत आचार्य बाहुबली सागर जी महाराज वहीं रहे। समाधि होने की सूचना प्राप्त होने पर जम्बूद्वीपस्थल पर सभा करके श्रद्धांजलि अर्पित की गई। पूज्य माताजी ने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि आचार्य श्री शांतिसागर महाराज का अंतिम दीपक बुझ गया। आर्यिका अजितमती माताजी की समाधि आर्यिकाओं के लिए अनुकरणीय है।

दिल्ली हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश श्री मिलापचंदजी जैन ने 12 मई 1991 को जम्बूद्वीप स्थल पर पधारकर माताजी से आशीर्वाद प्राप्त किया। 16 मई को जम्बूद्वीप स्थल पर पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में अक्षयतृतीया पर्व मनाया गया, रथयात्रा निकाली गई, इक्षुरस का प्रसाद वितरित किया गया। 21 मई 1991 को पूर्व प्रधानमंत्री तथा कांग्रेस अध्यक्ष श्री राजीव गांधी की हत्या मद्रास के निकट पेरम्बदूर में मानव बम के द्वारा कर दी गई। देश के लिए दुखद घटना रही। इस घटना से माताजी व संघ को भी हार्दिक क्षोभ हुआ। संस्थान की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। पूज्य माताजी के सानिध्य में वैशाख शु. 7 को सुदर्शनमेरु स्थापनादिवस, वै.शु.12 को जम्बूद्वीप प्रतिष्ठापना दिवस तथा 4 जून को ज्ञानज्योति प्रवर्तन की वर्षगांठ मनाई गई।

जैनसमाज सरधना के विशेष निवेदन को स्वीकार करके माताजी ने ससंघ 13 जुलाई 1991 को सरधना के लिए मंगल विहार किया। 20 जुलाई को भव्य स्वागत के साथ संघ का सरधना नगर में मंगल पदार्पण हुआ।

छत्तीसवाँ चातुर्मास (1991- सरधना, जि.-मेरठ- उ.प्र. में)

25 जुलाई आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को चातुर्मास की स्थापना उल्लासपूर्ण वातावरण में हुई। श्रावण मास में विविध कार्यक्रम-गुरुपूर्णिमा, वीरशासन जयंती, भगवान पार्श्वनाथ निर्वाणदिवस आदि आयोजित किये गये। प्रतिदिन आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, क्षुल्लक मोतीसागर (मेरे) एवं गणिनी माताजी के प्रवचन हुये। 11 अगस्त को महिला मण्डल स्थापना, श्रा.कृ.14 से श्रा.शु. 7 तक प्रतिदिन एक-एक विधान हुए। 13 अगस्त को आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का दीक्षा दिवस मनाया गया। उसी दिन दिगम्बर जैन बालिकासंघ की स्थापना की गई। 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस पर विशेष प्रवचन सभा हुई ''अहिंसा से ही विश्वशांति संभव है'' विषय पर भाषण प्रतियोगिता हुई जिसमें जैनेतर वक्ताओं ने भी भाग लिया। 24 अगस्त को जैन कन्या इन्टर कालेज में रक्षाबंधन पर्व पर विशेष प्रवचन हुए। 25 अगस्त को रक्षाबंधन पर्व का धार्मिक एवं राष्ट्रीय महत्त्व पर सार्वजनिक प्रवचन हुए।

11 सितम्बर से 24 सितम्बर तक सर्वतोभद्र महामंडल विधान सम्पन्न हुआ। 200 से अधिक स्त्री-पुरुषों ने भाग लेकर पूजन की । 11 सितम्बर को अ.भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष साहू श्री अशोक कुमार जैन ने सरधना पधारकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया। 16 से 22 अक्टूबर तक शिक्षण शिविर का आयोजन हुआ जिसमें सभी वय के लोगों ने भाग लेकर ज्ञानार्जन प्राप्त किया, माताजी के धर्मोपदेश सुने। 23 अक्टूबर शरदपूर्णिमा के दिन पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की 58 वीं जन्म जयंती विशाल समारोहपूर्वक मनाई गई जिसमें मुख्यअतिथि के रुप में भा.ज.पा. के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मुरली मनोहर जोशी पधारे थे। श्री जोशी जी ने माताजी द्वारा संकलित ''मुनिचर्या'' नामक ग्रंथ का विमोचन किया।

22 अक्टूबर को अ. भा. दि. जैन युवा परिषद की कार्यकारिणी की बैठक में आगामी तीन वर्ष के लिए बा.ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन को अध्यक्ष, मनोज कुमार हस्तिनापुर को महामंत्री सहित 16 पदाधिकारी एवं सदस्यों का चयन किया गया। 26 अक्टूबर को माताजी का ससंघ लश्करगंज में पदार्पण हुआ, वहाँ एक सप्ताह का प्रवास रहा। प्रतिदिन प्रातः से शाम तक प्रवचन, प्रश्नमंच, सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। 2 नवम्बर को संघ का गांधीनगर कालोनी में आगमन हुआ। पूरे चातुर्मास में सरधना नगर धर्ममय हो गया था। धर्मामृत की खूब वर्षा हुई।

13 नवम्बर को माताजी का सरधना नगर से पुनः हस्तिनापुर के लिए मंगल विहार हुआ। अनेकों स्त्री-पुरुष कह रहे थे कि हम माताजी के बिना कैसे रहेंगे? माताजी का स्नेह वात्सल्य आगे कब कैसे मिलेगा? 14 नवम्बर को संघ सलावा पहुँचा। श्री अमरचंद होमब्रेड मेरठ वालों ने जैन समाज सलावा के साथ अपनी

जन्मनगरी में भावभीना स्वागत किया। तीन दिन तक प्रातः, मध्यान्ह तथा रात्रि में प्रवचन आदि के विविध कार्यक्रम हुए। जैनेतर समाज ने भी सभी कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक भाग लिया। सलावा से महलका, मवाना होते हुए 19 नवम्बर को माताजी का ससंघ जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर में बैंडबाजों के साथ मंगल पदार्पण हुआ।

चातुर्मास के पश्चात्–20 नवम्बर कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी को पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में वार्षिक रथयात्रा निकाली गई। 21 नवम्बर कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को लगभग 20-25 हजार जैन-अजैन श्रद्धालुओं ने जम्बूद्वीप दर्शन का लाभ लिया। पूज्य माताजी के सानिध्य में प्रतिदिन धवला ग्रंथ का स्वाध्याय प्रातः चलता रहा, माताजी का लेखनकार्य चलता रहा, शिष्यों का पठन-पाठन होता रहा। समय-समय पर सामयिक विषयों पर कार्यक्रम भी कराती रहीं। देश के विभिन्न प्रदेशों से आने वाले भक्तों तथा दर्शनार्थियों को धर्मोपदेश देकर कृतकत्य करती रहीं।

28 जनवरी 1992 माघ वदी 9 को आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की 7वीं पुण्यतिथि पर उनकी चरणछत्री पर चरणों का प्रक्षाल करके पूजन की गई। श्रद्धांजलि सभा में उनके गुणों का स्मरण करते हुए संघ के साधुओं ने तथा अन्य वक्ताओं ने श्रद्धांजलि अर्पित की। गणिनी माताजी ने भी उनके जीवन की विशेषताओं से सभी को परिचित कराया। वे वास्तव में मोहिनी से निर्मोहिनी बन गईं, वे रत्नों की खान थीं।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की परम्परा के पंचमपट्टाचार्य श्री श्रेयांससागर जी महाराज का बांसवाड़ा (राज0) में 19 फरवरी 1992 को समाधिमरण हो गया। उन्होंने सन् 1993 में श्रवणबेलगोल में होने वाले भगवान बाहुबली के मस्तकाभिषेक में सम्मिलित होने के लिए 5 फरवरी 1992 को सलुम्बर (राज.) से विहार किया था। भीमपुर (राज.) में पहुँचने पर आहार के बाद स्वास्थ्य बिगड़ गया। दो दिन में कई दस्त-उल्टी हो गए, तब भी आगे विहार कर दिया। अंततोगत्वा 19 फरवरी को बांसवाड़ा में समाधिमरण हो गया। हस्तिनापुर में सूचना मिलते ही श्रद्धांजलि सभा में उनके प्रति संघ के साधुओं व्रतियों ने श्रद्धांजलि समर्पित की। गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने भी कहा कि संघ परम्परा का एक निर्भीक एवं तपस्वी साधु अचानक चला गया। होनी को कौन टाल सकता है ?

24 फरवरी से 4 मार्च 1992 तक सरधना निवासी श्री नरेन्द्र कुमार सुनील कुमार (मे.सुनील टेक्सटाईल्स) ने पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में जम्बूद्वीपस्थल पर इन्द्रध्वज विधान किया।

हस्तिनापुर में भारत विकास परिषद के दो दिवसीय सम्मेलन का उद्घाटन करने पधारे उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री कल्याणसिंह जी ने 15 फरवरी को जम्बूद्वीप स्थल पर बने हेलीपेड पर हेलीकॉप्टर से उतरते ही त्यागीभवन पधारकर पूज्य गणिनी माताजी से आशीर्वाद प्राप्त किया। माताजी ने देश तथा प्रदेश को अहिंसा के रास्ते पर चलाने की प्रेरणा दी।

16 फरवरी को कल्पवृक्ष सदृश कमलमंदिर में विराजमान भगवान महावीर की प्रतिमा का 17वाँ प्रतिष्ठापना दिवस माताजी की छत्रछाया में मनाया गया। यह प्रतिमा 17 वर्ष पूर्व 1975 में माघ शु . 13 को एक छोटे कमरे में विराजमान की गई थी। बाद में उसी जगह भव्य कमल मंदिर बनाया गया।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के पंचम पट्टाचार्य श्री श्रेयांससागर जी महाराज के स्वर्गारोहण के पश्चात् उसी संघ परम्परा के वरिष्ठ मुनिराज उपाध्याय श्री अभिनंदनसागर जी महाराज को पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी तथा अन्य कई साधुओं की सहमति से 8 मार्च 1992 को खांदू कालोनी बांसवाड़ा में चतुर्विध संघ के सानिध्य में षष्ठम पट्टाचार्य के पद पर प्रतिष्ठापित किया गया। उक्त समारोह में माताजी ने यहाँ से ब्र. रवीन्द्र कुमार को भेजा था।

पूज्य माताजी के सानिध्य में होली मेले पर वार्षिक रथयात्रा निकाली गई। चैत्र वदी 9 को ऋषभ जयंती 27 मार्च को तथा चैत्र शुक्ला 13, 15 अप्रैल को महावीर जयंती मनाई गई। वैशाख शु. 3 को अक्षय तृतीया पर्व मनाया गया, इसी दिन भगवान ऋषभदेव का प्रथम आहार हस्तिनापुर में हुआ था।

जैन समाज के शीर्ष नेता साहू श्री श्रेयांसप्रसाद जी का 17 मार्च को निधन हो गया। उनके प्रति संस्थान के पदाधिकारियों व सदस्यों ने 19 मार्च को श्रद्धांजलि समर्पित की। साहूजी ने सन् 1980 में जम्बूद्वीप के द्वितीय चरण का शिलान्यास किया था। भगवान बाहुबली के 1981 में सहस्राब्दि महोत्सव के विषय में उन्होंने समय-समय पर पूज्य माताजी से मार्गदर्शन भी प्राप्त किया था।

कलकत्ता के कर्मठ कार्यकर्ता श्री कल्याणचंद पाटनी का 14 मार्च 1992 को सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। सन् 1963 में जब माताजी का चातुर्मास कलकत्ता में हुआ था तभी से पाटनी जी की माताजी के प्रति अनन्य भक्ति रही। 14 मार्च को ही करुणादीप के यशस्वी संपादक श्री जिनेंद्र प्रकाश जैन का एटा (उ.प्र) में आकस्मिक निधन हो गया। इनकी भी पूज्य माताजी के प्रति अपार भक्ति थी। दोनों महानुभावों के प्रति संस्थान की ओर से श्रद्धांजलि समर्पित की गई।

श्री अमरचंद जैन होमब्रेड परिवार मेरठ ने 29 मई से 9 जून तक इन्द्रध्वज विधान किया। पूज्य गणिनी माताजी के प्रतिदिन विधान के मध्य प्रवचन हुए। मध्य में 31 मई ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी को भगवान शांतिनाथ के निर्वाण कल्याणक के उपलक्ष्य में निर्वाणलाडू चढ़ाया गया तथा रथयात्रा निकाली गई। आषाढ़ अष्टान्हिका में श्री सुधीरकुमार, सुभाषचंद जैन मुजफ्फरनगर ने श्री सिद्धचक्र विधान हर्षोल्लास से किया। ब्र. धरणेन्द्र विधानाचार्य थे। विधानों में आर्यिका श्री चंदनामती माताजी एवं क्षुल्लक श्री मोतीसागर (मेरे) तथा आर्यिका श्री अभयमती माताजी के समय समय पर प्रवचन हुए।

सैंतिसवाँ चातुर्मास (1992-जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में)

13 जुलाई 1992- आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को जम्बूद्वीपस्थल पर गणिनी माताजी ने ससंघ वर्षायोग की स्थापना की। वर्षायोग स्थापना के अगले दिन पूज्य माताजी के दीक्षागुरु आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज का स्मरण करते हुए गुरूपूर्णिमा के रुप में उनका जन्मदिन मनाया गया। श्रावण कृ. एकम को भगवान महावीर की प्रथम दिव्यध्वनि खिरी थी। उसका स्मरण करते हुए उसे ''वीर शासन जयंती'' के रूप में मनाया गया। सम्मेदशिखर से मोक्ष प्राप्त करने वाले भगवान पार्श्वनाथ अंतिम तीर्थंकर थे, उनका श्रावण शु. 7 को मोक्षकल्याणक मनाया गया। सम्मेदशिखर पर्वत की कृत्रिम रचना बनाकर निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। भादों शुक्ला दूज- 29 अगस्त को बीसवीं शताब्दि के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की 37वीं पुण्य तिथी उनकी पूजा भक्ति तथा गुणानुवाद करके मनाई गई। समस्त कार्यक्रमों में पूज्य गणिनी माताजी का ससंघ सानिध्य प्राप्त रहा।

दशलक्षण पर्व में श्री मनोजकुमार जैन हस्तिनापुर ने सपरिवार कल्पद्रुम विधान सम्पन्न किया। श्री अमरचंद होमब्रेड ने भी द्वितीय चक्रवर्ती बनकर पूजा की। विधान पूजन के अतिरिक्त पर्व सम्बंधी प्रवचनों का भी लाभ सबको मिला। विधान की विधि के अनुसार विधानपर्यंत प्रतिदिन चारों प्रकार का दान बांटा गया।

8 से 12 अक्टूबर 1992 तक जम्बूद्वीप स्थल पर ''चारित्र निर्माण संगोष्ठी'' का आयोजन पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में जम्बूद्वीपस्थल पर किया गया। इस संगोष्ठी में देश भर से 100 से अधिक उच्चकोटि के विद्वानों के अतिरिक्त सेठ श्री देवकुमारसिंह जी कासलीवाल इंदौर जैसे अनेक श्रेष्ठीगण भी पधारे थे। बहुत सफल संगोष्ठी रही।

11 अक्टूबर 1992-आसौज शुक्ला 15 (शरदपूर्णिमा) के शुभ दिन पूज्य गणिनी प्रमुख माताजी की 59वीं जन्मजयंती विशाल समारोहपूर्वक मनाई गई। मुख्य अतिथि के रुप में केन्द्रिय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्री उत्तम भाई पटेल पधारे थे। राज्य सभा सदस्य चन्द्रिका केनिया भी पधारी थीं। अनेकों प्रदेशों के भक्त भी बड़ी संख्या में पूज्य माताजी के प्रति अपने भक्ति सुमन समर्पित करने के लिए पधारे थे। उसी दिन पूज्य माताजी को उनका अभिनंदनग्रंथ मंत्री महोदय ने विमोचित करके उनके करकमलों में समर्पित किया।

''गणिनी ज्ञानमती अभिवंदन ग्रंथ'' के संपादक मंडल में कई विद्वानों के नाम हैं किन्तु उसके तैयार करने में सर्वाधिक परिश्रम आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने किया। कई महीनों का समय उसमें लगाया। यह बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य हुआ है। सदियों तक यह ग्रंथ ज्ञानमती माताजी की महिमा को प्रद्योतित करता रहेगा।

राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगरी जयपुर में 17 से 29 सितम्बर 1992 तक पूज्य माताजी द्वारा रचित कल्पद्रुम महामंडल विधान का आयोजन विशालरूप में किया गया था। जिसमें 1300 स्त्री-पुरुषों ने पूजन की तथा प्रतिदिन 5 से 10 हजार स्त्री-पुरुष विधान देखने तथा सुनने आते थे। विधान की निर्विघ्न एवं सानंद सम्पन्नता से हर्षित होकर जयपुर से 45 बसों द्वारा 3000 श्रावक-श्राविकाओं ने 18 अक्टूबर 1992 को आकर विशाल सभा में विधान की महिमा को बताते हुए पूज्य गणिनी माताजी को ''आर्यिका शिरोमणी'' की उपाधि प्रदान करते हुए सम्मानित किया। संस्थान की ओर से आगत समस्त महानुभावों का स्वागत किया गया।

14 अक्टूबर कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी को पिछली रात्रि में पूज्य माताजी ने वर्षायोग का समापन किया अनंतर भगवान महावीर के निर्वाण के उपलक्ष्य में निर्वाणलाडू चढ़ाकर दीपावली मनाई गई।

चातुर्मास के पश्चात्—सनावद (म.प्र.) में सम्पन्न पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में क्षुल्लक मोतीसागर जी- धर्मकेशरी आचार्य श्री दर्शनसागर जी महाराज तथा उपाध्याय श्री समतासागर जी महाराज की प्रेरणा एवं सानिध्य में 26 से 30 नवम्बर 1992 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सानंद सम्पन्न हुई। उसमें सम्मिलित होने के लिए आचार्यश्री ने मुझे (क्षुल्लक मोतीसागर को) सनावद आने के लिए समाज को विशेष प्रेरणा दी। तदनुसार पूज्य माताजी ने मुझे सनावद जाने का आदेश दिया। ब्र. रवीन्द्र कुमार, मनोज कुमार आदि के साथ मैं सनावद गया। 1 दिसम्बर को सनावद से वापस प्रस्थान करके सिद्धवरकूट, पावागिरी-ऊन, बड़वानी, बनेड़िया, बजरंगगढ़ के दर्शन करते हुए 5 दिसम्बर को हस्तिनापुर आ गये।

माघ वदी 9 दि. 16 जनवरी 1993 को पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की 8वीं पुण्यतिथी प्रतिवर्षानुसार, पूजन एवं श्रद्धांजलि सभा करके मनाई गई।

वैसे तो माताजी को धनतेरस-23 अक्टूबर 1992 को प्रातः 4 बजे सामायिक के पश्चात् ध्यान करते हुए रायगंज अयोध्या में स्थित भगवान ऋषभदेव की विशालकाय 31 फुट उत्तुंग प्रतिमा के दर्शन करते हुए अंतर्मन में उस विशाल प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक कराने की प्रेरणा प्राप्त हुई, तभी माताजी ने अयोध्या जाने का मन बना लिया था किन्तु अनेक प्रकार से ऊहापोह के पश्चात् अंततोगत्वा अयोध्या के लिए विहार करने का निश्चय हो गया। इससे पहले माताजी ने कभी उस प्रतिमा के साक्षात् दर्शन नहीं किये थे।

जम्बूद्वीप स्थल पर तेरहद्वीप रचना मंदिर का शिलान्यास—पूज्य गणिनी आर्यिका शिरोमणी श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ मंगल सानिध्य में लाला महावीरप्रसाद जैन बंगाली स्वीट, साउथ एक्स. नई दिल्ली के करकमलों से ''तेरहद्वीप जिनालय''

का शिलान्यास 5 फरवरी 1993 माघ शुक्ला तेरस को किया गया। इस विशाल जिनालय में तेरहद्वीप की सुंदर रचना बनाई गई है जिसमें 458 अकृत्रिम चैत्यालयों में 458 प्रतिमाएं विराजमान के साथ-साथ देवभवनों आदि में 2000 से अधिक प्रतिमाएं हैं।

अयोध्या के लिए मंगल विहार—11 फरवरी 1993 तिथी फाल्गुन कृष्णा पंचमी गुरुवार को मध्यान्ह 1 बजे पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने ससंघ अयोध्या तीर्थ के लिए जम्बूद्वीपस्थल से मंगलविहार कर दिया। संघ में आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, क्षुल्लक मोतीसागर, क्षुल्लिका श्रद्धामती, ब्र. रवीन्द्र कुमार, ब्र. कु. बीना, कु. आस्था आदि थे। हस्तिनापुर से बहसूमा, मीरापुर, बिजनौर, नहटोर, धामपुर, स्योहरा, काँठ तथा मुरादाबाद में धर्मप्रभावना करते हुए 12 मार्च को भगवान पार्श्वनाथ की केवलज्ञान कल्याणक भूमि अहिच्छत्र में पदार्पण हुआ। यहाँ संघ 3 दिन रहा। उसी समय इस पुनीत क्षेत्र पर माताजी ने तीस चौबीसी की 720 प्रतिमाओं को विराजमान करने हेतु "तीस चौबीसी मंदिर" की योजना प्रदान की। यह योजना साकार होकर वहाँ 11 शिखरों वाला अति सुंदर विशाल मंदिर बनकर तैयार हो गया है उसमें 720 प्रतिमाएं भव्य कमलों पर विराजमान की गई हैं।

अहिच्छत्र से बरेली, शाहजहाँपुर होते हुए महावीर जयंती पर सीतापुर संघ पहुँचा। अहिच्छत्र से पूर्व 1 मार्च से 6 मार्च 1993 तक श्री निर्मल कुमार सेठी की शुगर मिल बिलारी में सिद्धचक्रविधान माताजी के सानिध्य में सम्पन्न हुआ, यहाँ अयोध्या तीर्थविकास के लिए चर्चा प्रारंभ हुई।

4 अप्रैल को महावीर जयंती सीतापुर में उत्साहपूर्वक मनाई गई। वहीं पर पूज्य माताजी का 37 वाँ आर्यिका दीक्षा जयंती महोत्सव बैसाख वदी दूज-8 अप्रैल 1993 को भव्य रूप में मनाया गया। यहीं पर अयोध्या में त्रिकाल चौबीसी की 72 प्रतिमाएं स्थापित करने की योजना ने साकाररूप धारण किया। 15 मिनट में 72 प्रतिमाओं के दातार सुनिश्चित हो गये। सीतापुर से सिधौली, बिसवां होते हुए पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी (गणिनी माताजी की जन्मदात्री मां) की जन्मभूमि महमूदाबाद में माताजी के प्रथम बार पदार्पण के मंगल अवसर पर भव्य स्वागत किया। 25 अप्रैल को अक्षय तृतीया पर्व सोल्लास मनाया गया। वहाँ भारी धर्म प्रभावना करके संघ फतेहपुर पहुँचा। फतेहपुर में अपूर्व उत्साह के साथ धर्मामृत की वर्षा हुई।

40 वर्ष के पश्चात् पूज्य माताजी का संघ सहित जन्मभूमि टिकैतनगर में मंगल पदार्पण—अवध के अनेकों नगरों में महती प्रभावना करते हुए पूज्य माताजी का अपनी जन्मनगरी टिकैतनगर (जिला-बाराबंकी) उ.प्र. में ससंघ 9 मई 1993 रविवार को मंगल पदार्पण हुआ। भारी गरम जोशी के साथ स्वागत किया गया। स्वागत के लिए प्रदेश के

पूर्व मुख्यमंत्री श्री कल्याण सिंह पधारे थे। संघ का 8 जून तक टिकैतनगर में प्रवास रहा। 8 जून को अयोध्या तीर्थ के लिए टिकैतनगर से मंगल विहार हुआ।

अयोध्या तीर्थ पर 16 जून को माताजी का ससंघ पदार्पण हुआ। 17 जून को त्रिकाल चौबीसी मंदिर का शिलान्यास कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। वैसे तो माताजी ने आने वाला 1993 का चातुर्मास टिकैतनगर में करने की 99 प्रतिशत स्वीकृती प्रदान कर दी थी किन्तु अयोध्या तीर्थ की दयनीय स्थिति को देखते हुए उन्होंने 1 प्रतिशत छूट का लाभ उठाते हुए अयोध्या में ही 1993 का चातुर्मास करने की घोषणा कर दी।

अड़तीसवाँ चातुर्मास (1993- अयोध्या तीर्थ में)

पूज्य माताजी ने आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी-2 जुलाई 1993 को संघ सहित रायगंज दि. जैन मंदिर अयोध्या में बड़ी मूर्ति के सामने वर्षायोग की स्थापना की। यहाँ 10 माह तक प्रवास रहा। 10 माह में पूजा विधान आदि के विविध कार्यक्रम होते रहे। तीन चौबीसी मंदिर का निर्माण कार्य चलता रहा। सन् 1965 में बड़ी प्रतिमा विराजमान होने के पश्चात 28 वर्षों से या उससे पूर्व बीसवीं शताब्दी में किसी दिगम्बर जैन साधु-साध्वी को चातुर्मास का अवसर नहीं आ पाया। माताजी का यह अयोध्या में प्रथम चातुर्मास था।

पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की 60वीं जन्मजयन्ती तथा भारतीय संस्कृति के आद्यप्रणेता भगवान ऋषभदेव पर राष्ट्रीय संगोष्ठी—27 से 31 अक्टूबर 1993 तक भगवान ऋषभदेव पर एक विशाल संगोष्ठी का आयोजन पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में रायगंज दि. जैन मंदिर के सामने बड़े भव्य पंडाल में रखी गई थी जिसके विविध सत्रों में अनेकों विद्वानों ने अपने आलेख पढ़े। इस संगोष्ठी में शताधिक जैन तथा जैनेतर विद्वान पधारे थे। यह संगोष्ठी दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर तथा अवध विश्व विद्यालय फैजाबाद के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित की गई थी। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. अनुपम जैन इंदौर थे। संगोष्ठी का समापन 31 अक्टूबर को किया गया। 30 अक्टूबर 1993 आसौज शु. 15 (शरदपूर्णिमा) के शुभ दिन पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की 60 वीं जन्मजयन्ती का कार्यक्रम प्रातः सूर्योदय से पूर्व ही प्रारंभ हो गया था। भक्तों ने आकर माताजी के पादप्रक्षाल कर आरती उतारी, पुष्पवृष्टि की, भजन गाए, नृत्य किये। सर्वत्र खुशी का वातावरण व्याप्त था क्योंकि स्वयं माताजी प्रसन्न मुद्रा में सबको मंगल आशीर्वाद प्रदान कर रही थीं। मध्यान्ह में विशाल विनयांजलि सभा की अध्यक्षता की श्री निर्मल कुमार सेठी ने, तथा मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे श्री आर.के.जैन बंबई। अनेक श्रीमानों, विद्वानों, भक्तों तथा कार्यकर्ताओं ने अपनी विनयांजलियाँ भक्ति विभोर होकर अर्पित कीं। माताजी में विद्यमान अनेक गुणों का वर्णन 5-10 मिनट, घंटे-दो घंटे अथवा दो चार दिनों में करना संभव नहीं था। विनयांजलि केवल प्रतीकात्मकरूप में ही कर पा रहे थे

समयाभाव के कारण। पूज्य माताजी द्वारा लिखित ''अयोध्या तीर्थ पूजा'' पुस्तक का विमोचन श्री त्रिलोक चंद जी कोठारी-कोटा ने किया। और भी अनेक पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं के विमोचन हुए जिनमें भगवान ऋषभदेवविषयक सामग्री थी। ''जैन साहित्य में राम'' विषय पर निबंध प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार प्रदान किये गये। बाल लेखकों को भी पुरस्कृत किया गया। पुरस्कारों की राशि श्री छोटेलाल जैन पारमार्थिक ट्रस्ट टिकैतनगर तथा श्रीमती रूपाबाई पारमार्थिक ट्रस्ट सनावद के सौजन्य से प्रदान की गई। ''ज्ञानमती चित्रप्रतियोगिता'' में 39 चित्र प्राप्त हुए थे। उन चित्र निर्माताओं को भी प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा शेष को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किये गये। अनेक महानुभावों ने इस शुभ अवसर पर 60-60 वस्तुएं आगत महानुभावों को भेंट में दीं। ''ऋषभ जन्मभूमि अयोध्या'' पुस्तक, जो कि गणिनी माताजी ने अयोध्या में ही लिखकर तैयार की थी, उसका विमोचन श्री उम्मेदमल पांड्या ने किया।

छोटी छावनी अयोध्या के सुप्रसिद्ध महंत श्री नृत्यगोपालदासजी ने समारोह में पधारकर अपनी विनम्र पुष्पांजलि समर्पित की। दिल्ली, आसाम, नागालैंड, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अनेक नगरों, राजस्थान, मध्य प्रदेश, हरियाणा, हैदराबाद तथा अवध के प्रत्येक जैन आबादी वाले नगरों तथा शहरों से हजारों की संख्या में भक्तों ने पधारकर माताजी की जन्मजयन्ती भारी उत्साहपूर्वक मनाई। पूज्य माताजी का अवध तथा अयोध्या में पहली बार दीर्घकालीन प्रवास तथा चातुर्मास हुआ था।

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी को ''चारित्र चन्द्रिका'' उपाधि– यूं तो माताजी को पूर्व में समय-समय पर अनेक उपाधियों से विभूषित किया गया फिर ''चारित्र चन्द्रिका'' की उपाधि भी अतीव सार्थक तथा सामयिक रही। सन् 1992 में आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने शरदपूर्णिमा 11 अक्टूबर को ''चरित्र निर्माण संगोष्ठी'' में आगामी वर्ष को चारित्र उत्थान वर्ष के रूप में मनाने की घोषणा की थी, उसी वर्ष के समापन पर चारित्रचन्द्रिका की उपाधि संघ तथा समस्त जनता ने भक्तिविभोर होकर 30 अक्टूबर 1993 शरदपूर्णिमा के पावन दिन प्रदान की।

9 नवम्बर को महाराजा इंटर कालेज में पूज्य माताजी के मंगल प्रवचन हुए। कालेज के प्राचार्य श्री सुधांशु जी, विद्यार्थियों तथा अध्यापकों ने सरस्वती वंदना के साथ पुष्प अर्पित करते हुए भव्य स्वागत किया। यह कालेज अयोध्या के राजा साहब द्वारा संचालित है। 1600 छात्र-छात्राओं ने भगवान ऋषभदेव तथा अयोध्या की प्राचीनता का इतिहास रुचिपूर्वक सुना। मेरे व आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के भी प्रवचन हुए। इस अवसर पर गुजरात के मुख्यमंत्री चिमन भाई पटेल की ध.प. श्रीमती उर्मिला बेन पटेल भी दर्शनार्थ आ गई थीं।

कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी की पिछली रात्रि में आगम की आज्ञानुसार पूज्य माताजी

ने ससंघ भक्तिपाठ करके चातुर्मास समाप्ति की घोषणा की, अनंतर भगवान महावीर की पूजा करके निर्वाणलाडू चढ़ाकर दीपावली पर्व मनाया गया। इस प्रकार अयोध्या की पावन भूमि पर वर्ष 1993 का यह चातुर्मास अनेक महान उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास के पश्चात्– चातुर्मास समाप्ति के साथ जोरदार तैयारियाँ प्रारंभ हो गईं भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा के महामस्तकाभिषेक की तथा नवनिर्मित त्रिकाल चौबीसी मंदिर में विराजमान होने वाली त्रिकाल चौबीसी की 72 जिनप्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा की। वैसे तो पूरे चातुर्मास में इस विषय पर अनेकों बैठकें अयोध्या, लखनऊ, दिल्ली आदि में होती रहीं किन्तु अब उसको मूर्तरूप प्रदान करने का समय आ गया। पूरे देश में इस कार्यक्रम की गूंज फैल गई। पूरे अयोध्या का वातावरण ऋषभदेवमय हो गया।

भगवान ऋषभदेव पंचकल्याणक तथा महामस्तकाभिषेक महोत्सव का शुभारंभ– 13 फरवरी 1994 रविवार को विशाल पंडाल के सामने दिल्ली निवासी श्री वीरचंद बड़जात्या ने पूज्य गणिनी माताजी का आशीर्वाद प्राप्त करके महोत्सव का शुभारंभ झंडारोहण से किया। प्रतिष्ठाचार्य थे- ब्र.बाबा सूरजमलजी। मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे- केन्द्रीय ग्राम विकास मंत्री उत्तमभाई हरजीभाई पटेल तथा उ.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री भा.ज.पा. नेता श्री कल्याण सिंह जी। अयोध्या के विधायक श्री लल्लूसिंह जी भी पधारे थे। कार्यक्रम की प्रथम सभा ''भरत मंडप'' में हुई जिसका संचालन कर्मयोगी ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन ने किया। मेरे, आ. श्री चंदनामती माताजी के तथा गणिनी माताजी के प्रवचन तथा आशीर्वचन हुए। भगवान के माता-पिता बनने का सौभाग्य बाराबंकी निवासी श्री चंदनलालजी व उनकी ध.प. को प्राप्त हुआ। सौधर्म इन्द्र श्री अनिल कुमार जैन प्रीतविहार दिल्ली को बनने का सुअवसर मिला। 13 से 18 फरवरी तक विविध मंडलविधान अनुष्ठान होते रहे। ऋषभदेव पंचकल्याणक तो देश भर में होते रहते हैं, वहाँ उन्हें अपने मंडप को अयोध्यापुरी नाम देना पड़ता है किन्तु यहाँ मणिकांचन संयोग रहा कि ऋषभदेव की नगरी अयोध्या में ही ऋषभदेव पंचकल्याणक हो रहा था।

19 फरवरी से 23 फरवरी तक क्रमशः पंचकल्याणक हुए। 19 फरवरी को गर्भकल्याणक के दिन केन्द्रीय उपगृहराज्यमंत्री श्री रामलालराही ने पधारकर विशाल प्रतिमा के दर्शन किये तथा माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया। रात्रि में गर्भकल्याणक के बाह्य दृश्य दिखाये गए तथा अंतरंग क्रियाएं हुईं।

मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव पधारे– 20 फरवरी को प्रातः जन्मकल्याणक के अंतर्गत भगवान का जन्माभिषेक हुआ। सैकड़ों नर-नारियों ने पांडुक शिला पर

जन्माभिषेक किया। मध्यान्ह में 3 बजे उ.प्र. के मुख्यमंत्री श्री मुलायमसिंह यादव हेलीकॉप्टर से पधारे। मंदिर परिसर में पधारकर सर्वप्रथम पूज्य माताजी के कक्ष में जाकर माताजी का विशेष आशीर्वाद ग्रहण किया तथा कुछ सामयिक चर्चा तथा विशेष मार्गदर्शन प्राप्तकर भगवान ऋषभदेव के दर्शन करते हुए सभा मंच पर पधारे। उपस्थित जनसमुदाय ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ मुख्यमंत्री जी का अभिवादन-स्वागत किया। मुख्यमंत्री के साथ प्रदेश के जेल मंत्री श्री अवधेश प्रसादजी, ग्रामीण विकास मंत्री श्री उमाशंकर कौशिक आदि भी पधारे थे। सभी का समिति की ओर से स्वागत किया गया। सभा की अध्यक्षता कर रहे श्री कैलाशचंद जी चौधरी सनावद का स्वागत मुख्यमंत्री जी ने किया। सभा का संचालन कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन ने किया।

मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह जी ने अपने भाषण में स्पष्ट शब्दों में कहा कि ''राजनीति में आने से पहले मेरा जीवन जैन समाज के मध्य बीता। जैन स्कूल में पढ़ा तथा जैन स्कूल में ही पढ़ाया'' इस अवसर पर अनेक घोषणाएं भी कीं जिनमें कुछ इस प्रकार से थीं- 1-अयोध्या में ऋषभदेव नेत्र चिकित्सालय खोला जावेगा। 2-राजघाट राजकीय उद्यान का नाम ''ऋषभदेव राजकीय उद्यान'' कर दिया जावेगा। 3-अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद में ''भगवान ऋषभदेव जैनचेयर'' की स्थापना के लिए उ. प्र. सरकार की ओर से 25 लाख रु. दिया जावेगा। 4-अयोध्या में ''अवध प्रेस क्लब'' की स्थापना तथा भवन के लिए 10 लाख रु. अनुदान दिया जावेगा इत्यादि मुख्यमंत्री जी ने जो जो घोषणाएं की उनमें से उपरोक्त सभी मूर्तरूप में परिणत हो गई हैं। सभा में मेरे व श्री आ. चंदनामती माताजी के प्रवचनों के अनंतर गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ओजस्वी प्रवचन हुए।

तपकल्याणक के दिन 21 फरवरी को रात्रि में कवि सम्मेलन हुआ, 22 फरवरी को केवलज्ञान कल्याणक के दिन महिलासम्मेलन हुआ। समवसरण की रचना की गई। 23 फरवरी को प्रातः निर्वाणकल्याणक के पश्चात् नवनिर्मित कमल मंदिर में अति सुंदर खिले कमल की गुलाबी पंखुडियों पर क्रमशः त्रिकाल चौबीसी की 72 प्रतिमाएं दातारों ने अपने हाथों से विराजमान की। प्रतिमाओं के विराजमान होने से कमल की आभा शत गुनी हो गई। 23 फरवरी के मध्यान्ह में उ.प्र. के महामहिम राज्यपाल श्री मोतीलाल वोरा। पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त कर सभा में पधारे। सभा की अध्यक्षता जैन समाज के अग्रणी नेता साहू श्री अशोक कुमार जैन ने की। समिति की ओर से राज्यपाल महोदय का स्वागत किया गया। साथ में पधारीं उनकी ध.प. का भी स्वागत किया गया। साहू श्री अशोक कुमार जी का भी स्वागत हुआ। साहू अशोक जी तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष होते हुए भी पहली बार अयोध्या पधारे थे।

अयोध्या का मंदिर उन्हीं के पिता श्री साहू शांतिप्रसाद जी ने बनवाया था। मेरे, पूज्य श्री चंदनामती माताजी तथा गणिनी माताजी के प्रवचन हुए।

रात्रि में सुप्रसिद्ध संगीतकार रवीन्द्र जैन-बम्बई के भजनों की धूम सभा मंडप में रही। उनका एक भजन बड़ा मार्मिक रहा अयोध्या की महिमा के विषय में-''सिर धरने वाली धरती पर पग रखना पड़ते हैं'' इत्यादि। साहू अशोक कुमार जी ने अपने भाग्य की सराहना करते हुए पूज्य माताजी का भक्तिपूर्वक आभार व्यक्त किया कि मैं जीवन में पहली बार अयोध्या आया हूँ ''इस समारोह में मुझे आमंत्रित नहीं किया जाता तो न मालूम कब इस महान शाश्वत तीर्थ के दर्शन होते।'' राज्यपाल श्री वोराजी ने भी अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि अयोध्या की प्रसिद्धि अभी तक दुनिया में राम जन्मभूमि के नाम से थी किन्तु पूज्य माताजी के इस प्रयास से अब जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की जन्मभूमि के नाम से भी जानी जावेगी।

24 फरवरी का दिन अयोध्या के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया– 23 फरवरी को अयोध्या की गली-गली जैन श्रावक-श्राविकाओं से भरी हुई थी। देश के अनेक प्रदेशों से हजारों की संख्या में भक्तगण अयोध्या में पहली बार भगवान ऋषभदेव का महामस्तकाभिषेक देखने तथा करने आये थे। 24 फरवरी को प्रातःकाल बहुत बड़ी संख्या में केशरिया परिधान से सुसज्जित होकर अभिषेक करने के लिए तत्पर थे। महामस्तकाभिषेक में प्रथम कलश करने का सौभाग्य दिल्ली के श्रेष्ठी लाला महावीर प्रसाद जैन बंगाली स्वीट, साउथएक्स. नई दिल्ली को प्राप्त हुआ। जल के कलशों से अभिषेक के पश्चात् पंचामृत अभिषेक हुआ। क्रमशः नारियल जल, इक्षुरस, घृत, दूध, दही, सर्वोषधि, कल्कचूर्ण, केशर से अभिषेक की छटा देखते ही बनती थी। भक्तगण भक्ति में सराबोर होकर नृत्य कर रहे थे। वे स्वयं भी अभिषेक के गंधोदक से रंगीन हो रहे थे। इस अवसर पर संगीतकार श्री रवीन्द्र जैन ने भजनों के माध्यम से सभी को भक्ति में सराबोर कर दिया। मंदिर के भीतर भक्तगण भगवान पर पुष्पवृष्टि कर रहे थे तथा बाहर में अयोध्या के राजा विमान से पुष्पवृष्टि करके भगवान के प्रति अपनी भक्ति प्रदर्शित कर रहे थे। आकाशवाणी से कार्यक्रम का सीधा प्रसारण किया जा रहा था। पूज्य गणिनी माताजी व समस्त संघ के हर्ष का पारावार नहीं था, सभी के परिश्रम ने कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिये। भगवान की आरती तथा शांतिधारा से महामस्तकाभिषेक कार्यक्रम का समापन हुआ। पूज्य माताजी ने आकाशवाणी के माध्यम से समस्त जनसमुदाय को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

समारोह सदियों के लिए अपनी अमिट छाप छोड़ गया, अयोध्या के इतिहास में एक कीर्तिमान स्थापित कर गया। इससे पहले अयोध्या में जैन समुदाय की इतनी बड़ी भीड़ कभी नहीं देखी गई। पूज्य माताजी ने जिस उद्देश्य को लेकर हस्तिनापुर से

विहार किया था, वह शतप्रतिशत सफल रहा। जैन तीर्थ अयोध्या की वीरानियत दूर हो गई। भय के भूत भाग गये, सांप बिच्छू चले गये, गुंडे पलायमान हो गये। बी.बी.सी. लंदन ने अपने प्रसारण में कहा कि अभी तक अयोध्या में दो शक्तियाँ देखी जा रही थीं किन्तु अब तीसरी शक्ति के रूप में जैन उभरकर आये हैं। आगे प्रति पांच वर्ष में इस प्रकार का महामस्तकाभिषेक करने की प्रेरणा पूज्य माताजी ने समिति को प्रदान की जिसे सभी ने विनयपूर्वक स्वीकार किया।

16 जून 1993 से 6 अप्रैल 1994 तक के 295 दिन जैन तीर्थ अयोध्या के इतिहास में स्वर्णिम रहे। केवल पंचकल्याणक अथवा महामस्तकाभिषेक ही नहीं हुआ अपितु क्षेत्र का आमूल चूल विकास हुआ, टोंकों के जीर्णोद्धार हुए। अनेक शिलालेख लगे। यात्रियों की आवासीय सुविधा के लिए ''ज्ञानमती निलय'' का भव्य निर्माण हुआ।

अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी का चुनाव—पंचकल्याणक प्रतिष्ठा तथा भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय महामस्तकाभिषेक महोत्सव 24 फरवरी 1994 में सम्पन्न होने के पश्चात् चैत्र कृष्णा नवमी 4 अप्रैल 1994 को भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती का वार्षिकोत्सव पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में रथयात्रा तथा भगवान के अभिषेकपूर्वक सम्पन्न हुआ। उसी दिन अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी का चुनाव भी हुआ। जिसमें ब्र. रवीन्द्र कुमार को अध्यक्ष, सरोज जैन फतेहपुर को महामंत्री तथा प्रद्युम्न कुमार जैन (छोटी सा) टिकैतनगर को कोषाध्यक्ष के रूप में चुना गया। उपाध्यक्ष, मंत्री आदि के पदों के लिए योग्य एवं अनुभवी महानुभावों को चुना गया। इस कमेटी के पदाधिकारियों का चुनाव आगामी 3 वर्ष के लिए किया गया। विगत 12 वर्षों से लगभग वे ही पदाधिकारी क्षेत्र की उन्नति कर रहे हैं।

6 अप्रैल 1994 को माताजी ने ससंघ अयोध्या से लखनऊ के लिए मंगल प्रस्थान किया। 22 अप्रैल को लखनऊ में संघ का पदार्पण डालीगंज में हुआ। दो माह तक लखनऊ की विभिन्न कालोनियों में माताजी का भ्रमण हुआ जिससे अनेक प्रकार के आयोजनों से सर्वत्र ज्ञान की गंगा प्रवाहित हुई। 11 जून से 19 जून तक इन्दिरानगर कालोनी में शिक्षण शिविर, संगोष्ठी तथा श्रावक सम्मेलन आदि सम्पन्न हुए।

पूज्य माताजी के मंगल सानिध्य में चारबाग में महावीर जयंती का समारोह बहुत उत्साहपूर्वक मनाया गया। वैशाख कृष्णा दूज 1 मई 1994 को लखनऊ के सुप्रसिद्ध आडिटोरियम ''रवीन्द्रालय'' में पूज्य माताजी का 38वाँ आर्यिका दीक्षा जयंती का कार्यक्रम भी अति उल्लासपूर्वक वातावरण में सम्पन्न हुआ। 9 जून को माताजी ने विशाल जनसमूह के मध्य इन्दिरानगर में वर्ष 1994 का चातुर्मास टिकैतनगर में करने की घोषणा की जिससे पूरे अवध में हर्ष की लहर दौड़ गई।

23 जून को माताजी का इन्दिरानगर लखनऊ से विहार होकर 25 जून को

बाराबंकी में पदार्पण हुआ। यहाँ 10 जुलाई तक सिद्धचक्र विधान, शिक्षण शिविरआदि अनेक धर्मप्रभावना के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। 11 जुलाई को बाराबंकी से टिकैतनगर के लिए विहार हुआ।

उन्तालिसवाँ चातुर्मास (1994-टिकैतनगर (बाराबंकी-उ.प्र. में)

21 जुलाई 1994 आषाढ़ शु. 14 को टिकैतनगर में चातुर्मास की स्थापना—चातुर्मास स्थापना के कार्यक्रम में अवध के अनेक नगरों से भक्तगण पधारे थे। इसी दिन पूज्य माताजी ने केशलोंच भी किये। पिच्छी परिवर्तन भी किया गया। पूज्य माताजी के क्षुल्लिका दीक्षा के पश्चात् प्रथम चातुर्मास सन् 1853 में आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज के साथ टिकैतनगर में हुआ था, तब से 40 वर्षों के बाद टिकैतनगर निवासियों को चातुर्मास कराने का स्वर्ण अवसर प्राप्त हुआ।

आषाढ़ की आष्टान्हिका में पूज्य माताजी के सानिध्य में चार सिद्धचक्र मंडल विधानों का एक साथ आयोजन किया गया। वर्षायोग के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हो गये। आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा को आचार्य श्री वीरसागर महाराज की जन्मजयन्ती, श्रावण कृष्णा एकम् को वीरशासन जयंती मनाई गई। 13 अगस्त 1994 को आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का 5वाँ दीक्षा दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। 12,13,14 अगस्त को तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर एवं भगवान पार्श्वनाथ पर संगोष्ठी तथा चित्र प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय बालक-बालिकाओं तथा स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। प्रतियोगियों ने भगवान पार्श्वनाथ तथा सम्मेदशिखर के सुन्दर-आकर्षक चित्र बनाये। इसी शुभ अवसर पर श्री मदनलाल जैन एवं सुभाषचंद जैन ने 12 से 23 अक्टूबर तक इन्द्रध्वज विधान सम्पन्न किया जिसमें अनेकों स्त्री-पुरुषों ने भाग लेकर पुण्योपार्जन किया।

दशलक्षण पर्व से पूर्व भादों सुदी 2, 7 सितम्बर को चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की पुण्य तिथी मनाई गई। उक्त अवसर पर त्रिदिवसीय संगोष्ठी तथा आचार्यश्री से संबंधित चित्र प्रतियोगिता भी रखी गई थी। 9 सित. भादव सुदी 5 से 18 सित. भादों सुदी 14 तक विविध कार्यक्रमों के साथ दशलक्षण पर्व मनाया गया। दस उपवास, पांच उपवास, तीन उपवास, दो उपवास करने वाले अनेकों बालक-बालिकाओं तथा स्त्री-पुरुषों का स्वागत किया गया। दशधर्म तथा तत्त्वार्थसूत्र पर दोनों माताजी तथा मेरे प्रवचन हुए। 20 सित. को क्षमावणी पर्व मनाया गया। 22 सित. को क्षमावणी पर्व के अवसर पर सार्वजनिक सभा में श्री चंदनामती माताजी ने अपनी जन्मभूमि में पहली बार केशलोंच किये।

जन्मभूमि टिकैतनगर में षष्ठिपूर्ति का आयोजन—पूज्य माताजी के षष्ठीपूर्ति समारोह के पावन अवसर पर श्री प्रद्युम्न कुमार जैन (छोटी सा) अमर उद्योग टिकैतनगर

ने 6 से 17 अक्टूबर को सर्वतोभद्र महामंडल विधान का आयोजन किया। षष्ठीपूर्ति समारोह का भव्य आयोजन 17 से 19 अक्टूबर तक विशाल समारोहपूर्वक आयोजित किया गया। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री मोतीलाल वोरा, कारागार मंत्री अवधेशप्रसाद जी, फैजाबाद के पूर्व विधायक श्री जयशंकर प्रसाद पांडे आदि अनेक राजनैतिक व प्रशासनिक अधिकारी पधारे। देशभर के (माताजी के निकटस्थ) 61 श्रेष्ठियों का सम्मान किया गया। 61 सिलाई मशीनें बांटी गईं, ग्रामीण स्त्री-पुरुषों को साड़ियाँ व कम्बल बांटे गये। श्री हंसराज जैन लखनऊ वालों की तरफ से संपूर्ण टिकैतनगर के समस्त जातियों के नरनारियों को व आसपास ग्रामों से आई जनता के लिए भंडारा (प्रीतिभोज) का आयोजन किया गया। टिकैतनगर के इतिहास में एक यादगार कार्यक्रम हुआ। शरदपूर्णिमा के दिन ही श्री महावीर प्रसाद जैन बंगाली स्वीट सेंटर दिल्ली के द्वारा टिकैतनगर में निर्मित ज्ञानमती कीर्तिस्तम्भ का उद्घाटन किया गया। रात्रि में डी.पी. कौशिक आर्ट ग्रुप मुजफ्फरनगर द्वारा अतीव आकर्षक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। श्री छोटी सा., श्री मदनलाल जैन तथा सुभाष चंद जैन की ओर से समस्त जैन बंधुओं के लिए प्रीतिभोज का आयोजन किया गया था।

वर्षायोग के मध्य टिकैतनगर से मात्र 6 कि.मी. दूर दरियाबाद में 24 से 30 सितम्बर तक आर्यिका श्री चंदनामती माताजी तथा मैंने जाकर अनेक विषयों पर शिक्षण प्रदान करके ज्ञानामृत की वर्षा की । वहाँ के लालबहादुर शास्त्री इन्टर कालेज में भी प्रवचन हुए।

चातुर्मास समापन की पावन बेला में वर्षायोग समापन के साथ भगवान महावीर का निर्वाणलाडू चढ़ाया गया, दीपावली मनाई गई। जनमानस में बाहर से उल्लास दिखाई दे रहा था किन्तु चातुर्मास समापन की घोषणा से सबके मन रोने लगे थे कि अब माताजी विहार करने के लिए स्वतंत्र हो गई हैं।

टिकैतनगर से विहार—विहार के समय मंदिर से निकलते ही स्त्री-पुरुषों, बालक-बालिकाओं की अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी। उसके साथ अनेक लोग जोर जोर से सिसकियाँ भर कर रोने लगे। कह रहे थे माताजी हम आपके बिना कैसे रहेगें? हमारे दिन कैसे व्यतीत होंगे? कुछ आगे बढ़ने पर सिसकियाँ करुणक्रंदन में बदल गईं। ऐसा लग रहा था मानों नगरनिवासी अश्रुधाराओं से माताजी के पादप्रक्षाल कर रहे हैं। अत्यंत कठोर हृदय करने के बावजूद भी सबके शोक की उमड़ती सरिता देखना पूज्य माताजी तथा समस्त संघ के लिए बहुत कठिन हो रहा था। टिकैतनगर से दरियाबाद जाने तक भी 6 कि.मी. तक सैकड़ों लोगों के आंसू बंद नहीं हो पा रहे थे। यह रुदन जन्मभूमिवासियों के अपनत्व तथा वात्सल्य को बता रहा था। वह दिन था 9 नवम्बर 1994 का।

चातुर्मास के पश्चात्—दरियाबाद में 9 नवम्बर को संघ का प्रवेश हुआ और उसी दिन से वहाँ कल्पद्रुम विधान प्रारंभ हो गया जो 19 नवम्बर को पूर्ण हुआ। विधान के मध्य विविध प्रकार के ज्ञानवर्धक कार्यक्रम तथा दोनों माताजी व मेरे समय-समय पर प्रतिदिन प्रवचन भी हुए, दरियाबाद से अतिशय क्षेत्र त्रिलोकपुर के लिए 20 नवम्बर को प्रस्थान हुआ। 21 नवम्बर से 1 दिसम्बर 1994 तक कल्पद्रुम विधान प्रभावनापूर्वक सम्पन्न हुआ, अतिशययुक्त भगवान नेमिनाथ की प्रतिमा का मस्तकाभिषेक हुआ। लखनऊ, बाराबंकी, टिकैतनगर, फतेहपुर आदि नगरों से भक्तगण बड़ी संख्या में पधारे थे।

त्रिलोकपुर से प्रस्थान करके माताजी का ससंघ 16 दिसम्बर 1994 को पुनः अयोध्या में पदार्पण हुआ। रायगंज स्थित बड़ी प्रतिमा वाले मंदिर के एक तरफ समवसरण मंदिर में समवसरण रचना तथा मंदिर के शिखर का तथा दूसरी तरफ गतवर्ष में निर्मित तीन चौबीसी मंदिर के शिखर का निर्माणकार्य तेजी से चल रहा था। माताजी के पहुँचने से ज्ञान की गंगा भी प्रवाहित होने लगी। आर्यिका चंदनामती माताजी, क्षुल्लक मोतीसागर जी तथा स्वयं गणिनी माताजी द्वारा संघ के शिष्यों को अध्ययन कराया जा रहा था। आने वाले श्रावक भी लाभ लेते थे। 29 दिसम्बर 1994 की शाम को सूचना मिली कि मेरे दीक्षागुरु वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज का पावन सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर में आज ही समाधिमरण हो गया, यह समाचार सुनकर संघ में सभी को क्षोभ हुआ। माताजी के सानिध्य में श्रद्धांजलि सभा की गई। 30 दिसम्बर को पूज्य माताजी के सानिध्य में सभा का आयोजन करके साधुओं तथा संघ के व्रतियों तथा आये हुए श्रावकों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

निर्माणाधीन समवसरण मंदिर में विराजमान होने वाली प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 15 से 20 फरवरी 1995 को होना निश्चित हुआ था उसी की तैयारी जनवरी 1995 से प्रारंभ हो गई थी। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 15 फरवरी को झंडारोहण के साथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। 16 से 20 फरवरी तक क्रमशः पंचकल्याणक महती प्रभावनापूर्वक सम्पन्न हुए। 20 फरवरी को प्रातः मोक्षकल्याणक के पश्चात् समवसरण मंदिर में यथा- स्थान प्रतिमाएं विराजमान की गईं अनंतर त्रिकाल चौबीसी तथा समवसरण मंदिर के शिखरों पर कलशारोहण तथा ध्वजारोहण कियेगये।

ऋषभदेव राजकीय उद्यान में भगवान ऋषभदेव प्रतिमा का अनावरण—एक भव्य शोभायात्रा के साथ पूज्य माताजी ससंघ रायगंज से ऋषभदेव राजकीय उद्यान में पहुँचीं, 21 फुट की प्रतिमा को बनने में एक माह का समय लगा किन्तु राजकीय उद्यान में प्रतिमा स्थापित करने की स्वीकृति फैजाबाद के तत्कालीन कमिश्नर श्री राधेश्याम कौशिक ने मात्र 15 सेकेंड में प्रदान की थी। उन्हीं के करकमलों से प्रतिमा का

अनावरण कराया गया। कौशिकजी का भावभीना स्वागत किया गया। पूज्य माताजी ने कमिश्नर महोदय को खूब आशीर्वाद प्रदान किया। वह प्रतिमा उद्यान में आने वालों को सहजरूप में वीतरागता का पावन संदेश देकर पुण्योपार्जन करा रही है, मूर्ति निर्माता श्री महावीर प्रसाद जैन बंगाली स्वीट सेंटर नई दिल्ली द्वारा लगाया गया द्रव्य सार्थक हो गया।

उ.प्र. के मुख्यमंत्री श्री मुलायमसिंह यादव गतवर्ष जब महामस्तकाभिषेक महोत्सव में पधारे थे, तब डॉ. राममनोहर लोहिया विश्व विद्यालय में ऋषभदेव जैन शोधपीठ खोलने की घोषणा की थी। तदनुसार 5 फरवरी 1995 को उ.प्र. के राज्यपाल के प्रमुख सचिव श्री योगेन्द्र नारायण मिश्र ने विश्वविद्यालय परिसर में शोधपीठ का शिलान्यास किया। उक्त अवसर पर गणिनी माताजी, आ.श्री चंदनामती माताजी, क्षु. मोतीसागर महाराज, ब्र. रवीन्द्रकुमार तथा संघ की ब्रह्मचारिणी बहनें उपस्थित थीं। वह शोधपीठ तैयार होकर कार्य कर रही है।

ज्ञानमती माताजी को विश्वविद्यालय द्वारा डी.लिट् की उपाधि–5 फरवरी 1995 को विश्वविद्यालय परिसर में शोधपीठ के शिलान्यास में पूज्य माताजी की उपस्थिति का लाभ उठाते हुए तत्कालीन कुलपति के.पी. नौटियाल ने माताजी को विश्व विद्यालय की **मानद उपाधि डी.लिट.** से सम्मानित किया। यह सम्मान किसी भी दिगम्बर जैन साधु को देश में प्रथम बार प्रदान किया गया।

मुख्यमंत्री महोदय की घोषणानुसार भगवान ऋषभदेव नेत्र चिकित्सालय भी अयोध्या तथा आसपास की जनता को लाभ पहुँचा रहा है। 9 मार्च 1995 को पूज्य माताजी ने अयोध्या में सरयूतट पर स्थित स्फटिक शिला नामक आश्रम में जाकर सर्वधर्म सम्मेलन में ससंघ उपस्थित होकर उपस्थित जनसमुदाय को जैनधर्म की प्राचीनता से अवगत कराया। 19 से 27 मार्च तक नवनिर्मित समवसरण मंदिर में कल्पद्रुम मंडल विधान सम्पन्न हुआ। विधान में अवध के अनेक नगरों से भक्तगण पधारे थे, सभी ने प्रवचनों का लाभ लिया।

28 मार्च को अयोध्या से माताजी का ससंघ हस्तिनापुर के लिए मंगल विहार– मंगल विहार से पूर्व की सभा में आ. श्री चंदनामती माताजी ने अपने उद्बोधन के मध्य एक मार्मिक भजन प्रस्तुत किया जिससे सभी उपस्थित जन- समुदाय के नेत्र सजल हो गये, उसकी दो पंक्तियां इस प्रकार से थीं-

निधियाँ कईं दे दी हैं अयोध्या को मात ने।
अब तीर्थ को रखना मेरे भक्तों सम्हाल के।।

अयोध्या से भगवान संभवनाथ की जन्मभूमि श्रावस्ती होकर बहराइच, जरवलरोड, गनेशपुर, त्रिलोकपुर में धर्मप्रभावना करते हुए संघ का 16 अप्रैल को तहसील फतेहपुर

में पदार्पण हुआ, जहाँ पूज्य माताजी का 17 अप्रैल वैशाख वदी दूज को 39 वाँ आर्यिका दीक्षा समारोह भव्यतापूर्वक मनाया गया। फतेहपुर से भीषण गर्मी में विहार करके मार्ग के अनेक नगरों में धर्मामृत एवं ज्ञानामृत की वर्षा की।

28 मई 1995 को भगवान शांतिनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर में पुनः मंगल पदार्पण–पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का संघ सहित अवध प्रांत की 20 माह की यात्रा प्रभावनापूर्वक सानंद सम्पन्न करके जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में मंगल पदार्पण हुआ। दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के सदस्यों ने भावभीना स्वागत किया। माताजी के आगमन से सभी अतीव हर्षित थे। स्वाध्याय,अध्ययन, पठन-पाठन, लेखन आदि दैनिक कार्यों के साथ-साथ आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा बनना प्रारंभ हो गयी। अक्टूबर में पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महोत्सव तथा माताजी का जन्मजयंती उत्साहपूर्वक मनाने की चर्चा चलने लगी।

चालिसवाँ चातुर्मास (1995-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में)

11 जुलाई 1995- आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को संस्थान के पदाधिकारी, सदस्यों तथा दिल्ली, मेरठ, सरधना, खतौली, मवाना आदि के भक्तों के निवेदन पर माताजी ने वर्ष 1995 का चातुर्मास जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में करने की घोषणा के साथ आगम विधिपूर्वक भक्तियाँ पढ़कर चातुर्मास की स्थापना की। प्रतिवर्षानुसार पूर्णिमा को पूज्य माताजी के दीक्षागुरु आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज की जन्म जयंती तथा श्रावण कृ. 1 को वीरशासन जयंती मनाई गई जिनमें माताजी व अन्य साधुओं का उद्बोधन हुआ।

चातुर्मास स्थापना वाले दिन पूज्य माताजी ने केशलोंच किये। आषाढ़ की अष्टान्हिका में सिद्धचक्र विधान राजकुमार जैन तथा प्रद्युम्न कुमार जैन टिकैतनगर ने किया। विधान के समापन पर बाराबंकी, तहसील फतेहपुर, लखनऊ आदि से भी महानुभाव पधारे थे। कार्यक्रमों की शृंखला में श्रावण शुक्ला 7 को भगवान पार्श्वनाथ का निर्वाणोत्सव मनाया गया, निर्वाणलाडू संघ के सानिध्य में चढ़ाया गया। भादों शु. दूज को चरित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की 41 वीं पुण्य तिथि मनाई गई। दशलक्षण पर्व में पूजा के साथ-साथ दशधर्म तथा तत्त्वार्थसूत्र पर प्रतिदिन गणिनी ज्ञानमती माताजी, आर्यिका श्री चंदनामती माताजी तथा मेरे प्रवचन हुए, रात्रि में प्रश्नमंच तथा भजन-भक्तिनृत्य हुए, इन्द्रध्वज मंडल विधान भी पर्व में सम्पन्न हुआ।

श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को सामूहिक रूप से रक्षाबंधन पर्व मनाया गया। अकंपनाचार्य आदि 700 मुनियों की तथा विष्णुकुमार मुनिराज की पूजन, यज्ञोपवीत परिवर्तन हेतु हवन हुआ। भगवान श्रेयांसनाथ जी का निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। श्रावण शुक्ला 11 को आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का छठा दीक्षा दिवस तथा आसौज कृष्णा 14 को मेरा 55 वाँ जन्मदिवस सामान्य रूप से मनाया गया।

विगत दो वर्षों से मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र ट्रस्ट कमेटी के महानुभाव बार-बार मांगीतुंगी पधारकर वहाँ कई वर्षों से बक्सों में बंद प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराने हेतु माताजी के पास आते रहे। पूज्य आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी सैकड़ों पत्र लिखकर गणिनी माताजी से निवेदन करती रहीं कि आप जैसी "दिव्य शक्ति" के आये बिना मांगीतुंगी में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा होना संभव नहीं है, इस विषय पर माताजी ने पूर्व में तथा इस चातुर्मास में भी कई बार सोचा-विचारा किन्तु दूरी देखकर जाने की हिम्मत नहीं हो पा रही थी। चर्चाओं के चलते आसौज माह का शुक्ल पक्ष आ गया।

जम्बूद्वीप पंचवर्षीय महोत्सव—जम्बूद्वीप महोत्सव की पूर्व बेला में 25 सितम्बर से 3 अक्टूबर 1995 तक तीन मूर्ति मंदिर जम्बूद्वीप स्थल पर सम्पन्न हुआ। 1 अक्टूबर को सरस्वती माता की महाआराधना की गई। जम्बूद्वीप महोत्सव का शुभारम्भ 2 अक्टूबर को श्री नरेश बंसल द्वारा किये गये झंडारोहण से हुआ। 4 से 6 अक्टूबर नवनिर्मित ॐ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर तथा शांतिनाथ मंदिर में वेदी प्रतिष्ठा होकर भगवान विराजमान करके तीनों मंदिरों पर कलशारोहण तथा ध्वजारोहण हुए। 4 से 7 अक्टूबर तक " गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती साहित्य संगोष्ठी" सम्पन्न हुई जिसमें शताधिक विद्वानों ने भाग लिया। 6 अक्टूबर को अ. भा. दि. जैन युवा परिषद का नैमित्तिक अधिवेशन हुआ, 7 अक्टूबर को अ.भा. दि. जैन पत्रकार सम्मेलन, चित्र प्रतियोगिता, विद्वानों के मध्य वाद-विवाद प्रतियोगिता, जम्बूद्वीप प्रदक्षिणा प्रतियोगिता आदि सम्पन्न हुए। 8 अक्टूबर 1995 को प्रातः सुदर्शन मेरू की पांडुक शिला पर 1008 कलशों से भगवान शांतिनाथ का अभिषेक हुआ। मध्यान्ह में गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 62 वें जन्म जयन्ती समारोह की विशाल सभा हुई जिसमें देश के विभिन्न प्रदेशों से हजारों की संख्या में नर-नारी सम्मिलित हुए। केंद्रीय खाद्य मंत्री चौधरी श्री अजित सिंह ने जन्मजयंती महोत्सव का उद्‌घाटन दीप प्रज्ज्वलन करके किया पुनः पूज्य गणिनी माताजी द्वारा रचित समयसार टीका के उत्तरार्ध का विमोचन किया। इस शुभ अवसर पर श्री अजित सिंह जी ने **णमोकार महामंत्र बैंक** का भी उद्‌घाटन किया। डॉ. अनुपम जैन-इन्दौर को प्रथम "गणिनी आर्यिका ज्ञानमतीपुरस्कार" संस्थान की ओर से प्रदान किया गया, जिसमें एक लाख रुपया, रजत प्रशस्ति, शाल एवं श्रीफल भेंट किया गया। पुरस्कार सौजन्यकर्त्ता श्री अनिल कुमार जैन कमल मंदिर, प्रीत विहार- दिल्ली थे।

महोत्सव के मध्य सन् 1994 में अयोध्या में सम्पन्न महोत्सव संबंधी "अयोध्या स्मारिका" का विमोचन किया गया। शरीर स्वस्थता के लिए डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन भोपाल ने एक्यूप्रेशर चिकित्सा शिविर का आयोजन किया था। इस समारोह में 62 विद्वानों को सम्मानित किया गया। श्री मदनलाल जैन टिकैतनगर ने ग्रामीण

महिलाओं को 62 साड़ियां तथा श्री उमेशचंद जैन टिकैतनगर ने 62 कम्बल वितरित किये। चौधरी अजित सिंह जी ने श्रावकों के साथ स्वयं भी माताजी के चरण दूध से प्रक्षालित किये। इस प्रकार शरदपूर्णिमा का दिन विविध कार्यक्रमों से आलोकित करता हुआ माताजी के गुणगान के साथ पूर्ण हुआ। पुनः पूर्णिमा के चन्द्रमा ने समस्त पृथ्वी मंडल को अपनी शुभ एवं शीतल किरणों से आलोकित करते हुए रात्रि के 9:15 पर सन् 1934 में जगत जननी गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त किया। शरदपूर्णिमा धन्य हो गई।

शरद पूर्णिमा के 15 दिन पश्चात् चातुर्मास समापन की बेला आ गई। कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी की पिछली रात्रि में पूज्य माताजी ने ससंघ भक्तिपाठ करते हुए वर्षायोग की निष्ठापना की। अनंतर कमल मंदिर में भगवान महावीर की प्रतिमा के समक्ष अभिषेक पूजापूर्वक निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। शाम को दीपावली मनाई गई। मवाना में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में 26 अक्टूबर से 3 नवंबर तक इन्द्रध्वज विधान सम्पन्न हुआ। वहाँ 31 अक्टूबर को माताजी के सार्वजनिक सभा में केशलोंच हुए। मवाना प्रवासपर्यंत पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के प्रवचन हुए। 3 नवम्बर को माताजी का पुनः जम्बूद्वीप स्थल पर पदार्पण हुआ। 6-7 नवम्बर में कार्तिक मेला हुआ जिसमें प्रतिवर्ष की भांति 25 हजार जैन-जैनेतर नर-नारियों ने जम्बूद्वीप के दर्शन किये।

चातुर्मास के पश्चात्—25 नवम्बर 1995 को प्रातः काल पूज्य माताजी ने बिना किसी से विचार-विमर्श किये 27 नवम्बर को मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र (महाराष्ट्र) के लिए विहार की घोषणा कर दी, यह घोषणा सुनते ही संघ के सभी लोग आश्चर्य चकित हो गये। फिर भी सभी ने माताजी के मुखारविंद से निकले हुए शब्दों को शिरोधार्य करके संघ की ब्रह्मचारिणी बहनों ने, संघस्थ साधुओं ने तथा ब्र. रवीन्द्र कुमार ने विहार की तैयारी प्रारंभ कर दी। 27 नवंबर सोमवार को शुभ मुहूर्त में विहार हो गया। संघ में पूज्य गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी, पूज्य आर्यिका श्रीचंदनामती माताजी, मैं (क्षु. मोतीसागर) क्षु. श्री श्रद्धामती, कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार, ब्र. श्रीचंद जैन, कु. बीना, कु. आस्था, कु. सारिका, कु. चन्द्रिका, कु. इन्दु, कु. अलका थे।

मांगातुंगी के लिए माताजी के ससंघ विहार की सूचना प्राप्त होते ही न केवल महाराष्ट्र में अपितु रास्ते में आने वाले प्रदेशों के नगर-नगर, शहर-शहर में हर्ष की लहर दौड़ गई। मवाना, मेरठ, मोदीनगर, गाजियाबाद होते हुए संघ का 8 दिसम्बर 1995 को राजधानी दिल्ली में ऋषभविहार में मंगल पदार्पण हुआ। 9 दिसम्बर को प्रीतविहार में संघ की अगवानी समाज के महानुभावों ने की। पूज्य गणिनी माताजी, चंदनामती माताजी व मेरे प्रवचन हुए। 10 दिसम्बर को मध्यान्ह में संघ का आगमन

जैन बालाश्रम में हुआ। बालाश्रम के प्रांगण में साहू श्री अशोक कुमार जैन की अध्यक्षता में विशाल सभा हुई जिसमें साहू जी ने श्रीफल चढ़ाकर संघ के प्रति विनयभाव प्रकट किये। अनेक महानुभावों ने संघ के स्वागत में अपनी विनयांजलि प्रस्तुत की।

हस्तिनापुर से मांगीतुंगी पहुँचने तक का संपूर्ण भार वहन करने वाले लाला श्री महावीर प्रसाद जैन बंगाली स्वीट, साउथ एक्स., नई दिल्ली को संघपति घोषित करते हुए साहू अशोक जी ने उन्हें पगड़ी पहनाकर दिल्ली जैन समाज की ओर से स्वागत किया। पूज्य माताजी का 1982 के पश्चात् 13 वर्षों के बाद राजधानी में आगमन हुआ था। दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में धर्मामृत की वर्षा करते हुए 18 दिसम्बर को कुन्दकुन्दभारती में पदार्पण हुआ जहाँ ज्ञान एवं विद्या का अपूर्व मिलन हुआ। 20 वर्ष के बाद दो प्रभावक ज्ञानी साधुओं – गणिनी ज्ञानमती माताजी तथा आचार्यश्री विद्यानंद महाराज का मंगल मिलन हुआ। 19 दिसम्बर को प्रातःकालीन प्रवचन सभा में विचारों का आदान-प्रदान हुआ। कुंदकुंदभारती से प्रस्थान करते समय आचार्यश्री ने एक ''मंगल कलश'' भेंट करवाकर मांगीतुंगी यात्रा की मंगल कामना की। 21 दिसम्बर को महरोली स्थित संघपति लाला महावीर प्रसाद जी के फार्महाउस से गुड़गाँवा के लिए विहार हो गया।

30 दिसम्बर 1995 को संघ तिजारा पहुँचा। क्षेत्र कमेटी ने भावभीना स्वागत किया। 31 दिसम्बर रविवार को मांगीतुंगी ट्रस्ट कमेटी की मीटिंग हुई जिसमें दिल्ली, राजस्थान, उत्तरप्रदेश आदि से सैकड़ों महानुभावों ने सक्रिय सहयोग देने के भाव व्यक्त किये। मांगीतुंगी में होने वाली पंचकल्याणक प्रतिष्ठा समिति में कर्मयोगी ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन को अध्यक्ष तथा डॉ. पन्नालाल जैन पापड़ीवाल को महामंत्री पद पर मनोनीत किया गया। अन्य पदों पर भी कर्मठ कार्यकर्त्ताओं का चयन किया गया। प्रतिष्ठा में विशेष सहयोग के रूप में श्री पूनमचंद गजराज जैन गंगवाल ने मांगीतुंगी पंचकल्याणक सहित पूज्य माताजी के मांगीतुंगी प्रवासपर्यंत आने वाले समस्त श्रावकों के लिए प्रीतिभोज की सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। अन्य दानी महानुभावों ने भी दान की घोषणाएं की।

जैन बालाश्रम दरियागंज दिल्ली के जैन मंदिर में स्थित मूलनायक भगवान मुनिसुव्रतनाथ के चरणों के निकट से यात्रा प्रारंभ कर मांगीतुंगी स्थित भगवान मुनिसुव्रत के चरणों में समाप्त होगी। मांगीतुंगी यात्रा में प्रथम तीर्थ तिजारा के दर्शन हुए, माताजी ने जीवन में पहली बार तिजारा तीर्थ के दर्शन किये।

माताजी के मंगल सानिध्य में तिजारा तीर्थ पर सम्मेदशिखर की विशाल रचना के निर्माण हेतु भूमिपूजन विधिपूर्वक सम्पन्न हुई तथा यंत्र स्थापित किया गया।

2 जनवरी 1996 को तिजारा से मंगल विहार हो गया। राजस्थान के नगरों में

धर्मोपदेश देते हुए मांगीतुंगी से जनमानस को अवगत कराते हुए 18 जनवरी 1996 माघ कृ. 13 को पूज्य माताजी का अपनी क्षुल्लिका दीक्षाभूमि अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी में शुभागमन हुआ। क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री नरेश कुमार सेठी, महामन्त्री आदि ने ब्र. कमलाबाई आश्रम के समक्ष संघ का स्वागत किया। आदर्श महिला विद्यालय की हजारों बालिकाओं ने, विद्यालय की संचालिका ब्र. कमलाबाई ने शोभायात्रा में पधारकर वातावरण को खुशनुमा बना दिया। शांतिवीरनगर गुरुकुल के 80 बच्चे भी जुलूस में अपनी भक्ति प्रस्तुत कर रहे थे। 19 जनवरी माघ कृ. चतुर्दशी को मुख्य मंदिर में भगवान ऋषभदेव का निर्वाणलाडू धूमधाम से चढ़ाया गया। प्रवचन भी हुए। 21 जनवरी को शांतिवीर नगर में पूज्य माताजी की प्रेरणा से 31 फुट उत्तुंग भगवान शांतिनाथ की विशाल प्रतिमा का बृहत् स्तर पर पंचामृत अभिषेक सम्पन्न हुआ। माताजी की भावनानुसार शांतिवीर नगर में मंदार कल्पवृक्ष स्थापित करने की घोषणा की गई। 22 जनवरी को इंदौर से एक प्रतिनिधिमंडल पद्मश्री बाबूलालजी पाटौदी के नेतृत्व में गोम्मटगिरी पर दशाब्दि समारोह में उपस्थिती प्रदान करने हेतु माताजी से निवेदन करने महावीर जी आये। 11 मार्च को इन्दौर शहर में पदार्पण, 12-13 मार्च को कुंदकुंद ज्ञानपीठ में तथा 14 से 17 मार्च तक गोम्मटगिरी पर दशाब्दि समारोह में संघ के प्रवास का कार्यक्रम सुनिश्चित हुआ।

यात्रा के चरण आगे बढ़ते हुए 29 जनवरी को अतिशय क्षेत्र चमत्कारजी-सवाईमाधोराजपुर में संघ पहुँचा। 31 जनवरी को माताजी की भावनानुसार कैलाश पर्वत की संरचना के लिए शिलान्यास हुआ। 8 फरवरी को अतिशय क्षेत्र केशवराय पाटन, 10 से 13 फरवरी तक कोटा में प्रवास रहा। 13 फरवरी को दादाबाड़ी नशिया में तीन लोक रचना का शिलान्यास करवाकर अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी के लिए विहार हो गया। 18 फरवरी को चांदखेड़ी अतिशय क्षेत्र पर पदार्पण हुआ। 21 फरवरी को झालरापाटन पहुँचकर भगवान शांतिनाथ की विशाल प्रतिमा का अभिषेक ठाट-बाट से कराया। 26 फरवरी को संघ सुसनेर पहुँचा यहाँ मुख्य बाजार में प्रवचन सभा हुई। पूज्य माताजी के दर्शन तथा प्रवचन सुनकर श्री निर्मल कुमार जैन लुहाड़िया की सुपुत्री कु. प्रीती विरक्त होकर संघ के साथ हो गई। 3 से 5 मार्च तक भगवान महावीर की उपसर्गभूमि उज्जैन में प्रवास रहा। उज्जैन में उस दिव्यभूमि को तीर्थरूप में विकसित करने के लिए माताजी ने शिलान्यास करवाया। वहाँ भगवान महावीर की विशाल प्रतिमा जयसिंहपुरा में विराजमान की जाने वाली है।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 11 मार्च को इन्दौर शहर में 1008 महिलाओं ने सिर पर कलश रखकर विशाल शोभायात्रा के साथ अभूतपूर्व स्वागत किया। इन्दौर के इतिहास में ऐसे स्वागत का पहला अवसर था। 13 मार्च को कुंदकुंद ज्ञानपीठ परिसर

में महिलाओं की विशाल सभा में अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन का गठन पूज्य माताजी के प्रेरणा व सानिध्य में किया गया। 14 से 17 मार्च तक गोम्मटगिरी में माताजी के ससंघ सानिध्य में विविध कार्यक्रमों के साथ गोम्मटगिरी का दशाब्दि समारोह मनाया गया। इन्दौर में 13 दिन तक संघ का प्रवास रहा।

इन्दौर के अंतिम प्रवास के रूप में छावनी में रुककर विशाल सभा को संबोधित करते हुए 21 मार्च को सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट के लिए प्रस्थान किया। 26 मार्च को सिद्धवरकूट पहुँचकर दानवीर श्रेष्ठी संघपति श्री महावीर प्रसाद जी दिल्ली के करकमलों से पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में तेरह द्वीप रचना का शिलान्यास किया गया। शिलान्यास समारोह में नीमाड़ क्षेत्र के अनेक नगरों से सैकड़ों की संख्या में श्रावक पधारे थे।

मेरी (क्षु. मोतीसागर) जन्मभूमि सनावद में पूज्य माताजी का संघ सहित 28 मार्च चैत्र शुक्ला 9 (रामनवमी) को भारी उत्साहपूर्ण वातावरण में 29 वर्षों की चिर प्रतीक्षा के पश्चात् मंगल पदार्पण हुआ। दीक्षा के पश्चात् आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी का प्रथम बार सनावद में पधारना हुआ। 28,29,30 मार्च को दोनों माताजी व मेरे सार्वजनिक प्रवचन हुए। 30 मार्च को संघ में मेरे पास एक चर्चा चली। स्वयं बड़ी माताजी ने कहा कि तुम्हारी बहुत पहले इच्छा थी कि नगर के बाहर एक सुंदर प्राकृतिक सौंदर्य से युक्त धार्मिक स्थल बनाया जावे, इच्छा की पूर्ति अब कर लो। तभी नगर से 3 कि.मी. दूर श्री प्रकाशचंद जैन सुपुत्र श्री अमोलकचंद जैन सर्राफ ने अपनी जमीन उपरोक्त स्थल के लिए प्रदान करने की घोषणा की। उक्त स्थल का नाम गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने ''णमोकार धाम'' दिया। रात की रात में उक्त स्थल को साफ-सुथरा करवाकर प्रातः शिलान्यास के लिए तैयारी की गई। 31 मार्च रविवार को प्रातः सनावद तथा आसपास के नगरों से हजारों श्रावक-श्राविकाओं के साथ पूज्य माताजी संघ सहित णमोकार धाम स्थल पर पधारीं। अपूर्व उत्साहपूर्ण वातावरण में शिलान्यास विधि सम्पन्न हुई। आज का दिन सनावद नगर के लिए स्वर्णिम अक्षरों में लिखा गया। गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का नाम भी सनावद के इतिहास के साथ युगों-युगों के लिए जुड़ गया। प्रकाशचन्द जी की मातेश्वरी रूपाबाई जी का हार्दिक अभिनंदन रजत प्रशस्ति, स्मृतिचिन्ह व श्रीफल भेंट करके ब्र. रवीन्द्र जी ने किया।

31 मार्च की शाम को संघ का प्रस्थान पावागिर-ऊन की तरफ हो गया। चार दिन का प्रवास एक अमिट छाप छोड़ गया। निकटवर्ती नगर बेड़ियाँ में महावीर जयंती पर भगवान महावीर का संदेश देते हुए 6 अप्रैल को स्वर्णभद्र आदि चार मुनियों की निर्वाणभूमि पावागिर-ऊन में पूज्य माताजी का ससंघ पदार्पण हुआ। यहाँ बैसाख वदी दूज को गणिनी माताजी का 40 वाँ आर्यिका दीक्षा दिवस धूमधाम से मनाया गया।

पूज्य माताजी ने यहाँ से निर्वाण प्राप्त स्वर्णभद्र आदि 4 मुनियों के चरण स्थापित करने की प्रेरणा क्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों को प्रदान की। वे चरण अभी कुछ समय पूर्व वेदीप्रतिष्ठापूर्वक 18 जनवरी 2006 को स्थापित किये गये।

हस्तिनापुर से 27 नवम्बर 1995 को विहार करके कदम-कदम चलते हुए उ.प्र.,दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा महाराष्ट्र इन 6 प्रदेशों की 1620 कि.मी. की यात्रा 6 खण्ड विजय के समान करते हुए प्रतिदिन 15-20 कि.मी. की पदयात्रा करके पूरे 5 माह पश्चात् 27 अप्रैल 1996 को हर्षोल्लासपूर्वक मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर पदार्पण हुआ। न सर्दी देखी न गर्मी, चलते ही चले गये और अंततोगत्वा अपने चरम लक्ष्य पर सकुशल पहुंच ही गये। इस पर्वतीय यात्रा ने जन-जन में जागृति उत्पन्न कर दी। पूज्य माताजी ने अपनी गहरी सूझबूझ से अनेकों स्थानों पर नूतन योजनाएं भेंटस्वरूप प्रदान कीं। मांगीतुंगी क्षेत्र पर पहुँचने से पहले ही वहाँ बाधाएं दूर होना प्रारंभ हो गईं। सबसे बड़ी बाधा दूर हुई पानी की। क्षेत्र के निकट बोरिंग होते ही भरपूर पानी उपलब्ध हो गया। पानी की समस्या हल हो गई। देश के विभिन्न प्रदेशों में लू-लपट चल रही थी किन्तु मांगीतुंगी में शीतलता थी। समस्त कार्यकर्त्ता प्रतिष्ठा महोत्सव के कार्यों को मूर्तरूप प्रदान करने में जुटे थे। 55 वर्षों के बाद पंचकल्याणक प्रतिष्ठा की शुभ घड़ी आ गई। देश के विभिन्न भागों से भक्तों की टोलियाँ द्रुतगति से आना प्रारंभ हो गईं। मांगीतुंगी का स्वरूप ही बदल गया, जंगल में मंगल हो गया। मुनि श्री रयणसागर जी महाराज, गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी तथा आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी तीनों संघों का मंगल मिलन हुआ। सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठाचार्य ब्र. श्री सूरजमल बाबाजी तथा उनके समस्त सहयोगी विद्वान आ गये। प्रतिष्ठा के सौधर्म इन्द्र आदि समस्त पात्र आ गये तथा प्रतिष्ठा का शुभ दिन भी आ गया, 3 मई 1996 वैसाख शुक्ला पूर्णिमा को प्रातः काल की मंगल बेला में तीनों संघों के सानिध्य में झंडारोहण हुआ। 3 मई से ही पंचकल्याणक संबधी क्रियाएं विधि-विधान प्रारंभ हो गये। 19 से 23 मई तक चिरप्रतीक्षित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। प्रतिष्ठा महोत्सव में प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मनोहर जोशी तथा कई राजनेता आये। प्रतिष्ठा के मध्य भी माताजी द्वारा किये जा रहे जाप्य मंत्रों के प्रभाव से प्राकृतिक तथा मानवीय बाधाएं भी आते-आते टल गईं, मानों चमत्कार ही हुए। चारों तरफ ओलावृष्टि हो रही थी किन्तु मांगीतुंगी में निराबाध कार्यक्रम चल रहे थे। जिन लोगों के मिजाज किन्हीं कारणवश गरम हो रहे थे, उनके भी मस्तिष्क में शांति आ गई। प्रतिष्ठा निर्विघ्न एवं सानंद सम्पन्न हो गई। 23 मई ज्येष्ठ शुक्ला षष्ठी को भगवान मुनिसुव्रतनाथ की विशाल प्रतिमा का पंचामृत तथा 1008 कलशों से महामस्तकाभिषेक पूर्वक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। देखते ही देखते मांगीतुंगी से भक्तों का तेजी से वापसी गमन हो गया।

थकान दूर होते-होते वर्षायोग का समय नजदीक आ गया। इन्दौर की जैन समाज का चातुर्मास के लिए निवेदन तथा आग्रह चल रहा था। इधर महाराष्ट्रवासियों को तृप्ति नहीं हुई थी क्योंकि प्रतिष्ठा तक का सारा समय प्रतिष्ठा व्यवस्था में व्यतीत हो गया था अतः निवेदन के साथ सत्याग्रह करने की भी चर्चा सुनाई दे रही थी। 9 जून को प्रतिष्ठा महोत्सव के कार्यकर्त्ताओं का सम्मान समारोह चल रहा था। उस समय महाराष्ट्र वालों ने पुरजोर प्रयास किया। अंततोगत्वा वर्ष 1996 का चातुर्मास मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर करने की घोषणा कर दी। इस घोषणा से पूरे महाराष्ट्र में हर्ष की लहर दौड़ गई। भक्तों ने मिठाई बाँटी, घी के दीपक जलाए तथा मेघदेवता ने प्रसन्न होकर मूसलाधार वर्षा करके प्रसन्नता व्यक्त की। मांगीतुंगी में चातुर्मास करने की घोषणा के साथ स्वयं माताजी तथा संघ के समस्त साधुगण अपने-अपने लेखन-पठन-पाठन में संलग्न हो गये। देश के विभिन्न भागों से भक्तों के आने का सिलसिला चालू रहा। यात्रीगण क्षेत्र दर्शन के साथ-साथ संघ दर्शन का भी लाभ उठाने लगे।

6 जून 1996 को मांगीतुंगी में राजकीय आश्रमशाला में दोनों माताजी व मेरे प्रवचन हुए। आज ही 6 जून आषाढ़ कृ. पंचमी को प्राचीन मंदिर के निकट सहस्रकूट मंदिर की 1008 प्रतिमाओं को विराजमान करने के लिए 108 पंखुड़ी वाले कमल के लिए कमल मंदिर का शिलान्यास संघ सानिध्य में हुआ। शिलान्यास के पश्चात् मंदिर निर्माण की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई। 2 जुलाई को मांगीतुंगी से मालेगाँव के लिए विहार हुआ। 7 जुलाई को मालेगाँव प्रवेश, 9 से 12 जुलाई तक वहाँ ध्यान साधना एवं शिक्षण शिविर, अनंतर कवलाना, सोनज, टाकली, चिंचवाड़ होकर संघ चांदवड़ पहुँचा। चांदवड़ में 4 दिन संघ का प्रवास रहा, समाज ने खूब धर्म लाभ लिया। चांदवड़ से सटाणा, तहाराबाद में धर्म प्रवचनों से समाज ने लाभ लिया। 26 जुलाई को संघ का पुनः मांगीतुंगी में पदार्पण हो गया।

इकतालिसवाँ चातुर्मास (सन् 1996-मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र महा. में)

29 जुलाई 1996, आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को पूज्य ज्ञानमती माताजी ने संघ सहित चातुर्मास की स्थापना की। पूज्य आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी ने भी अपने संघ सहित चातुर्मास की स्थापना की। 29 जुलाई से 6 अगस्त तक जैन महिलामंडल मालेगाँव की ओर से ध्यान-साधना एवं शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। आगत समस्त यात्रियों, मालेगाँव तथा आसपास के जैन श्रावक-श्राविकाओं ने ज्ञानामृत का पान किया। चातुर्मास प्रारंभ होते ही वर्षा की झड़ी के साथ-साथ कार्यक्रमों की भी झड़ी लग गई और तो और पूज्य गणिनी माताजी के विराजने से यात्रियों के आगमन की भी झड़ी लग गई। गुरुपूर्णिमा, वीरशासन जयंती, भगवान पार्श्वनाथ निर्वाणोत्सव, रक्षाबंधन पर्व आदि मनाये गये। केवल कार्यक्रम ही नहीं होते रहे प्रत्युत् निर्माण कार्यों

की भी झड़ी लगी हुई थी। इन सबके अतिरिक्त पूज्य माताजी का लेखन कार्य निरंतर जारी था। आगामी कार्यक्रमों की भी योजना बनाई जा रही थी। दिन पर दिन बीतते गये और महापर्व दशलक्षण आ गया। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की पुण्यतिथी भादों शुक्ला दूज, 14 सितंबर 1996 को भक्तिपूर्वक मनाई गई। 17 से 27 सितम्बर तक दशलक्षण पर्व में अनेक नगरों से धर्मबंधु पधारे थे। सभी ने पूजा-पाठ के साथ साधुओं के दशधर्म तथा तत्त्वार्थसूत्र पर हुए प्रवचनों का भी भरपूर लाभ लिया। 12 अक्टूबर, आश्विन कृष्णा अमावस्या को पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के दीक्षा गुरू आचार्यश्रीवीरसागर महाराज की पुण्यतिथी मनाई गई।

माताजी का 63वाँ जन्मजयन्ती समारोह—पूज्य गणिनी माताजी के 63वें जन्मजयन्ती समारोह के शुभ अवसर पर 17 अक्टूबर से 27 अक्टूबर तक कल्पद्रुम महामंडल विधान का आयोजन किया गया। भक्तों ने भक्ति में निमग्न होकर विधान पूजन का आनंद प्राप्त किया। 22 अक्टूबर से 24 अक्टूबर तक नवनिर्मित कमलमंदिर में वेदी प्रतिष्ठा होकर कमल की 108 पंखुड़ियों पर सहस्रकूट की 1008 प्रतिमाएं विराजमान की गईं। 26 अक्टूबर, आसोज शुक्ला 15 (शरदपूर्णिमा) के दिन पूज्य माताजी का 63वाँ जन्म दिवस समारोह महाराष्ट्र की धरती को दूसरी बार प्राप्त हुआ। इससे पहले सन् 1966 में सोलापुर में आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज के सानिध्य में मनाने का सुयोग प्राप्त हुआ था। इस समारोह में दिल्ली से तो संघपति श्री महावीर प्रसाद जी पधारे ही, लाला प्रेमचंद-खारीबावली, श्रीकमलचंद जैन-खारीबावली, राजकुमार जैन वीरा विल्डर्स भी पधारे, देशभर से अनेक भक्त पधारे। सभी का आतिथ्य महाराष्ट्र वालों ने भरपूर किया। डॉ. पन्नालाल जैन पापड़ीवाल पैठण, आमदार (विधायक) श्री जयचंद जैन कासलीवाल, श्री हुकुमचंद गंगवाल, रमेशचंद शाह-मालेगाँव, माणिकचंद एस. पहाड़े-मालेगाँव, श्री शरद पहाड़े- श्रीरामपुर आदि सैकड़ों महाराष्ट्र के भक्तों ने मांगीतुंगी में डेरा डालकर संघ की खूब भक्ति की। भक्ति में सराबोर रहे।

पूज्य गणिनी माताजी द्वारा सिद्धक्षेत्र पर किया गया प्रथम चातुर्मास अभूतपूर्व उपलब्धियों से परिपूर्ण रहा। माताजी का इससे पहले तथा इसके बाद भी अभी तक किसी सिद्धक्षेत्र पर चातुर्मास का यह पहला ही अवसर था। क्षेत्र पर माताजी के विराजने से जो कार्य सदियों से नहीं हुए थे वे अतिअल्प समय में सम्पन्न हो गये। आने वाला प्रत्येक यात्री कह रहा था कि माताजी ने क्षेत्र का कायाकल्प कर दिया। श्री जयचंद जी कासलीवाल ने सरकार के सहयोग से पर्वत पर बिजली पहुँचा दी। धर्मशाला से पहाड़ तक पहुँचने के लिए पक्की सड़क तथा पुल का निर्माण करा दिया। समाज के सहयोग से धर्मशालाएं बन गईं। अनेक नवनिर्माणों से क्षेत्र की ख्याति दूर-

दूर तक फैल गई। यात्रियों की संख्या में भी भारी अभिवृद्धि हुई। माताजी के क्षेत्र पर पदार्पण के बाद से विहारपर्यंत कल्पद्रुम, सिद्धचक्र, इन्द्रध्वज आदि मिलाकर छोटे-बड़े 60 विधान सम्पन्न हुए।

मांगीतुंगी में ही बैठकर प्रयाग तीर्थ की योजना ने साकाररूप धारण किया। प्रयाग-इलाहाबाद में विशाल भूखंड लेकर उस पर सर्व सुविधायुक्त तीर्थ बनाने का निर्णय लिया गया। तीर्थ बनाने की घोषणा को सुनते ही दिल्ली के दानवीर श्रेष्ठी लाला प्रेमचंद प्रदीप कुमार जैन-खारी बावली, दिल्ली बोले-वटवृक्ष मंदिर मेरी तरफ से बना दीजिये, जिसमें तांबे के विशाल वटवृक्ष के नीचे भगवान ऋषभदेव की पिच्छी कमण्डलु सहित दीक्षामुद्रा वाली प्रतिमा रहेगी। लाला महावीर प्रसाद जी संघपति भला पीछे कब रहने वाले थे, कहने लगे- ''भगवान ऋषभदेव की 11 फुट पद्मासन प्रतिमा मेरी ओर से स्थापित करवा दीजिये।'' आज वह तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ इलाहाबाद शहर से 13 कि.मी. दूर (संगम से मात्र 5 कि.मी. की दूरी पर) इलाहाबाद-बनारस हाइवे पर अपनी अपूर्व छटा बिखेर रहा है। कम से कम एक बार तो आप भी जाकर अवश्य दर्शन करें, फिर तो वहाँ बार-बार जाने का आपका मन करेगा।

पूज्य माताजी का 63वाँ जन्म जयन्ती समारोह तथा मांगीतुंगी में वर्ष 1996 का चातुर्मास विश्व के इतिहास में अमर हो गया–चातुर्मास समापन से लगभग 1 माह पूर्व माताजी पर्वतराज पर स्थित सुधबुध की गुफा में ध्यान कर रही थीं तभी पर्वत के मध्य पूर्वाभिमुख चट्टान में विशालकाय 108 फुट की भगवान ऋषभदेव की मूर्ति बनाने के भाव जागृत हुए। उन्होंने यह भाव वहीं निकट में बैठी हुई आर्यिका श्री चंदनामती माताजी से कहे। यह बात सुनकर भला किसको हर्ष नहीं होगा! उनके पास ही मैं भी बैठा था, ब्र. रवीन्द्र कुमार भी बैठे थे। माताजी के भावों का सभी ने समादर किया, आज्ञा को शिरोधार्य किया और तीनों लोग जुट गए उसके बारे में रूपरेखा बनाने में। 25 अक्टूबर 1996, आसौज शु.15-शरदपूर्णिमा के शुभ दिन 108 फुट ऊँची प्रतिमा बनाने की घोषणा की गई। दान-दातारों ने बढ़-चढ़कर दान राशि की घोषणा प्रारंभ कर दी। इस महान दुरूह कार्य के लिए पूज्य गणिनी माताजी का नाम प्रेरणा तथा आशीर्वाद के रूप में, पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का नाम मार्गदर्शन के रूप में, मेरा (क्षुल्लक मोतीसागर का) नाम निर्देशन के रूप में, कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार का नाम मूर्ति निर्माण कमेटी के अध्यक्ष के रूप में, डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल-पैठण का नाम महामंत्री के रूप में घोषित किया गया। वर्तमान में मूर्ति निर्माण के लिए पहाड़ की छटाई का काम चल रहा है।

कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी 10 नवम्बर 1996 को वर्षायोग का समापन भक्तिपाठ के द्वारा किया गया। 15 नवम्बर 1996 को मांगीतुंगी से संघ का विहार गुजरात होकर

दिल्ली की तरफ हो गया। 8 अक्टूबर 1995 की शरदपूर्णिमा के दिन हस्तिनापुर से पूज्य माताजी ने षट्खंडागम की ''सिद्धांतचिंतामणि'' नाम से सरल संस्कृत में टीका लिखना प्रारंभ किया था, तब से उनकी कलम टीका लेखन के लिए सतत चल रही है। इस अंतराल में उनकी कई यात्राएं हो गईं, अनेक कार्य हो गये। टीका के दो भागों का प्रकाशन भी हो गया। अभी 15वीं पुस्तक की टीका का लेखनकार्य चल रहा है। मांगीतुंगी से विहार के पूर्व ही अहमदाबाद में 26 दिसम्बर से 5 जनवरी 1997 तक कल्पद्रुम महामंडल विधान तथा विविध संगोष्ठी सम्मेलन आदि की घोषणा हो गई थी।

चातुर्मास के पश्चात्–15 नवम्बर को मांगीतुंगी से विहार करके अनेक नगरों में ज्ञान की किरणें विकीर्ण करते हुए 15 दिसम्बर को पावागढ़ सिद्धक्षेत्र में माताजी का ससंघ पदार्पण हुआ। यहाँ तलहटी के मंदिर, निर्माणाधीन ध्यान मंदिर में चौबीस प्रतिमाओं से समन्वित ह्रीँ लाला प्रेमचंद जैन खारीबावली दिल्ली की तरफ सेविराजमान करने की स्वीकृती हुई थी, वह ह्रीँ वहां विराजमान हो गई है।

26 दिसम्बर 1996 को अहमदाबाद में भव्य शोभायात्रा के साथ पूज्य माताजी का ससंघ मंगल पदार्पण हुआ। शहर के मेयर श्री नंदलाल वागवा तथा पूर्व मुख्यमंत्री गुजरात प्रदेश श्री सुरेश मेहता ने भावभीना स्वागत किया। 27 दिसंम्बर से 4 जनवरी 1997 तक अनेक आकर्षक कार्यक्रमों के साथ कल्पद्रुम विधान सोला रोड दिगम्बर जैन मंदिर के सामने बने विशाल पंडाल में सम्पन्न हुआ, 4 जनवरी को गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री शंकरसिंह बाघेला ने पधारकर माताजी से आशीर्वाद प्राप्त किया। विधान के मध्य प्रतिदिन दोनों माताजी व मेरे प्रवचन हुए।

नववर्ष 1997 के प्रथम दिन पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने केशलोंच किये। 10 वर्ष पूर्व ही अहमदाबाद शहर में ब्र. माधुरी (आ. चदनामती माताजी) अपने ओजस्वी प्रवचनों से गुजरातवासियों को मंत्र मुग्ध कर गई थीं। 4 जनवरी को युवा परिषद का अधिवेशन भी हुआ। विधान के मध्य अनेक छोटे-बड़े राजनेता, विद्वान तथा सामाजिक कार्यकर्त्ता पधारे। श्री हीरालाल मेहता तथा विनोद भाई आदि ने अथक परिश्रम किया। 5 जनवरी को अहमदाबाद शहर से संघ का विहार हुआ। 7 जनवरी को प्रदेश की राजधानी गांधीनगर में संघ का पदार्पण हुआ, जहाँ प्रदेश के राज्यपाल श्री कृष्णपाल सिंह माताजी से आशीर्वाद लेने पधारे। राज्यपाल को लाने का श्रेय श्री कैलाशचंद जैन चौधरी सनावद को था। वे उनसे पूर्व से चिर- परिचित थे।

विहार के मध्य ईडर में भी पहाड़ी पर ह्रीँ विराजमान कराने की घोषणा माताजी ने की। 15 जनवरी 1997 को तारंगा सिद्धक्षेत्र पहुंचने पर 9 फुट पद्मासन प्रतिमा ग्रेनाइट पत्थर की विराजमान करने के लिए श्री महिपाल जैन मिल्टन ग्रुप अहमदाबाद वालों को माताजी ने प्रेरणा प्रदान की थी।वह प्रतिमा वहाँ वर्ष 2004 में विराजमान हो

चुकी हैं। गुजरात में ज्ञान की ज्योति का प्रकाश फैलाते हुए माताजी का संघ सहित **राजस्थान के खेरवाड़ा नगर** में 24 जनवरी को पदार्पण हुआ। मंदिर के निकट में वर्षों से खाली पड़ी पहाड़ी को कैलाश पर्वत नाम देते हुए उस पर ऋषभदेव प्रतिमा तथा 23 तीर्थंकरों के चरण स्थापना की घोषणा हुई तभी वहाँ शिलान्यास भी करा दिया। वहाँ अब उस पहाड़ी पर योजनानुसार सब बनकर तैयार होकर प्रतिष्ठा हो गई है। 24 जनवरी की रात्रि में आ. शांतिसागर छाणी की जन्मभूमि छाणी में रात्रि विश्राम किया। 25 जनवरी को ऋषभदेव केशरिया जी में पूज्य माताजी का प्रथमबार पधारना हुआ। समाज ने बहुत उत्साहपूर्वक भावभीना स्वागत किया। मुख्य मंदिर के सामने पहाड़ी पर अयोध्या नगरी की रचना की प्रेरणा माताजी ने दी। 26 जनवरी को विशाल सभा में योजना की घोषणा की गई तथा शाम को शिलान्यास करवाकर संघ का विहार सलुम्बर के लिए हो गया। 30-31 ता. को सलुम्बर संघ रहा, 2 फरवरी को देवपुरा होते हुए 5 फरवरी को उदयपुर में आचार्य श्री अभिनंदनसागर जी महाराज के संघ का मिलन हुआ। 8 फरवरी को आयड़, 10 को अणिंदा पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र, 16 फरवरी को चित्तौड़गढ़, 20 को भीलवाड़ा, 2 मार्च को मालपुरा तथा 3 मार्च लावा में संघ का प्रवास रहा। लगभग सभी स्थानों पर पूज्य माताजी ने चिंतन करके नूतन-आकर्षक निर्माणों की योजना भेंटस्वरूप प्रदान की। न केवल योजना दी अपितु उस योजना के लिए वहीं दातारों से राशि भी स्वीकृत हो गई।

दीक्षाभूमि माधोराजपुरा में माताजी का पदार्पण—41 वर्ष पूर्व सन् 1956 में बैसाख बदी दूज को इसी माधोराजपुरा में आ. श्री वीरसागर जी महाराज ने क्षुल्लिका वीरमती जी को आर्यिका दीक्षा प्रदानकर "आर्यिका ज्ञानमती" नाम प्रदान किया था। दीक्षा के बाद माताजी के पहली बार पदार्पण से माधोराजपुरा धन्य हो गया। तीन दिन तक महोत्सव जैसा वातावरण था । न केवल आसपास के अपितु दिल्ली के बड़े-बड़े श्रेष्ठी इस छोटीसी नगरी में पधारकर अपना धन्य भाग मान रहे थे। कह रहे थे कि इसी नगरी ने देश को "ज्ञानमती" जैसी महान विभूति प्रदान की। नगर के बाहर एक भूखण्ड पर दीक्षास्थली के रूप में तीर्थ जैसा बनाने की योजना का शिलान्यास किया गया। लाखों रुपयों के दान की तत्काल घोषणा हो गई। माधोराजपुरा वालों का हर्ष हृदय में समा नहीं रहा था। नगर के सभी जातियों के नर-नारी अतीव पुलकित हो रहेथे। 6 मार्च का दिन माधोराजपुरा के इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठ के रूप में अंकित हो गया। शिलान्यास 7 मार्च 1997 को हो गया।

9 मार्च को संघ का पदार्पण अतिशय क्षेत्र पदमपुरा में हुआ। क्षेत्र कमेटी अध्यक्ष भागचंदजी टोंग्या, महामंत्री श्री ज्ञानचंदजी झांझरी सहित समस्त आगत सदस्यों, यात्रियों तथा आसपास नगरों से पधारे श्रावकों ने भावभीना स्वागत किया। क्षेत्र की भारी उन्नति देखकर माताजी गद्‌गद हो गईं। 10 मार्च को भगवान पद्मप्रभु की 21 फुट खड्गासन प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक वृहद् रूप में कराया । अतिशयकारी भूगर्भ से निकली पद्मप्रभु की प्रतिमा तथा अन्य प्रतिमाओं का भी अभिषेक कराया, मंगल प्रवचन हुए।

खानिया जी की नशिया में सीढ़ी उतरते समय पूज्य माताजी का पैर अचानक मुड़ जाने से पैर में मोच आ गई फिर भी विहार चलता रहा। माताजी ने अपना पूरा जीवन शरीर बल से नहीं, आत्मबल से चलाया है, यही माताजी में विलक्षणता रही है। अब भी यही स्थिति है जयपुर से विहार कर 25 मार्च को रेवाड़ी के मॉडलटाउन में मंदिर निर्माण के लिए निश्चित भूखंड पर कैलाश पर्वत के आकार की वेदी बनाने के लिए माताजी ने वहाँ शिलान्यास करवाया। 25 मार्च को रेवाड़ी शहर में मंदिरों के सामने सार्वजनिक सभा में पूज्य माताजी का 44वाँ क्षुल्लिका दीक्षादिवस मनाया गया, उस दिन तिथी चैत्र कृष्णा एकम् थी। वहाँ से धारूहेड़ा नगर में पहुँचकर आहार के पश्चात् विहार हो गया। मांगीतुंगी जाते हुए तथा मांगीतुंगी से वापस आते हुए धारूहेड़ा के अल्प प्रवास में श्री देवेन्द्र कुमार जैन ने पद्मनंदीपंचविंशतिका ग्रंथ प्रकाशन की स्वीकृती प्रदान की थी। धारूहेड़ा से गुड़गांवा होकर 29 मार्च को दिल्ली की सीमा में संघ का मंगल प्रवेश हुआ।

30 मार्च 1997 को लालकिला मैदान दिल्ली में विशाल शोभायात्रा के साथ शुभागमन हुआ। दिल्ली प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री साहबसिंह वर्मा, सांसद श्री जयप्रकाश अग्रवाल, पूर्णिमा सेठी (विधायिका), विधायक श्री वासुदेव कप्तान तथा जैन समाज दिल्ली के भक्तों तथा कार्यकर्त्ताओं ने माताजी का ससंघ भावभीना स्वागत किया। संघ के साथ-साथ संघपति लाला महावीर प्रसाद जैन बंगाली स्वीट साउथ एक्स तथा सहसंघपति लाला प्रेमचंद जैन खारीबावली का भी गरमजोशी से स्वागत किया तथा आभार माना। दोनों महानुभावों ने संघ को निराबाध यात्रा पूर्ण कराई। कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र जी का भी स्वागत सम्मान किया, जिनके अथक परिश्रम से मांगीतुंगी की यात्रा सानंद एवं निर्विघ्न सम्पन्न हुई। मेरे व पूज्य श्री चंदनामती माताजी के प्रवचनों के अनंतर गणिनी माताजी के सबके लिए आशीर्वचन हुए।

दिल्ली पदार्पण के साथ 2 अप्रैल को भगवान ऋषभदेव जयंतीपूर्वक विभिन्न कालोनी में भ्रमण प्रारंभ हो गया तथा कार्यक्रमों की धूम मच गई। 2 अप्रैल 1997 को ऋषभदेव जयंती के उपलक्ष्य में लालमंदिर से रथयात्रा निकाली गई तथा 108 कलशों से मंदिर में अभिषेक हुआ। उसी समय अ.भा.दि. जैन महिला संगठन की दिल्ली प्रदेश की प्रथम इकाई के रूप में चांदनी चौक इकाई का गठन किया गया जिसकी अध्यक्ष श्रीमती आशा जैन को बनाया गया। इसके बाद बाहुबली एन्क्लेव, पार्श्वविहार, पटपड़गंज, प्रीतविहार, सूर्यनगर, ऋषभविहार, सूरजमलविहार में अप्रैल-मई में लगातार माताजी

के ससंघ सानिध्य में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम चलते रहे। सभी जगह महिला संगठन की इकाइयाँ गठित की गईं जो कि अब भी सक्रिय रूप में धार्मिक, सामाजिक कार्य कर रही हैं। जगह-जगह माताजी के सानिध्य में महावीर जयंती मनाई गई, विधान आदि हुए।

8 जून से 15 जून 1997 तक कमलमंदिर प्रीतविहार दिल्ली की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में संघ का सानिध्य प्राप्त हुआ। श्री अनिलकुमार जैन के डी-107 प्रीतविहार स्थित कोठी के प्रांगण में मांगीतुंगी जाते समय पूज्य माताजी ने एक छोटा सा कमलमंदिर बनाने की प्रेरणा देते हुए भूमिशुद्धि के रूप में यंत्र की स्थापना की थी वहाँ शीघ्र ही अति सुंदर कमल मंदिर निर्मित हो गया था उसमें भगवान ऋषभदेव की 25 इंच की अष्टधातु की प्रतिमा पंचकल्याणक प्रतिष्ठापूर्वक विराजमान होनी थी। श्री अनिलजी ने माताजी से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराने के लिए निवेदन किया। तदनुसार माताजी ने प्रीतविहार पधारकर 8 से 15 जून तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा अपने संघ के सानिध्य में सम्पन्न कराई। प्रतिष्ठा के मध्य अनेक कार्यक्रम बहुत ही प्रभावनापूर्वक सम्पन्न हुए। यह प्रतिष्ठा व्यक्तिगत थी फिर भी अनिल जी के निवेदन पर जैनसमाज प्रीतविहार तथा जैनसमाज निर्माणविहार का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

राजधानी के लाल मंदिर में चातुर्मास करने की घोषणा—प्राचीन अग्रवाल दि. जैन पंचायत दिल्ली के अध्यक्ष श्री चक्रेश जैन, श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन कम्मो जी आदि दिल्ली के अनेक प्रतिष्ठित बंधुओं ने 29 जून 1997 को शालीमारबाग की विशाल सभा में श्रीफल चढ़ाकर माताजी से लालमंदिर चांदनीचौक में चातुर्मास करने की प्रार्थना की। सभी के आग्रह को स्वीकार करके माताजी ने घोषणा कर दी कि वर्ष 1997 का चातुर्मास दि. जैन लालमंदिर चांदनीचौक दिल्ली में स्थापित होगा तथा संघ का प्रवास लाल मंदिर के निकट साइकिल मार्केट स्थित कम्मोजी की धर्मशाला में रहेगा। इस घोषणा से दिल्ली में सर्वत्र हर्ष की लहर दौड़ गई।

बयालिसवाँ चातुर्मास (सन् 1997-लालमंदिर, चांदनीचौक दिल्ली में)

19 जुलाई आषाढ़ शुक्ला 14 को श्री दि. जैन लालमंदिर चांदनीचौक में चातुर्मास की स्थापना पूज्य माताजी ने ससंघ की। सभा में दिल्ली की अनेक कॉलोनियों से भक्त पधारे थे। मेरे, पूज्य आर्यिका चंदनामती माताजी तथा गणिनी माताजी के चातुर्मास की महत्ता पर प्रवचन हुए। चातुर्मास काल में पूरी दिल्ली में भ्रमण के लिए खुला रखा गया। वर्षायोग स्थापना के अगले दिन से कार्यक्रमों की श्रृंखला प्रारंभ हो गई प्रतिवर्षानुसार आ. श्री वीरसागरजी महाराज की जन्मजयन्ती, वीरशासन जयन्ती, भगवान पार्श्वनाथ का निर्वाण कल्याणक, रक्षाबंधन पर्व आदि यथासमय मनाये गये। 4 सितंबर भादों सुदी दूज को पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में श्री खण्डेलवाल दि. जैन मंदिर

वेदवाड़ा में चा.च. आचार्यश्री शांतिसागर महाराज की 42वीं पुण्यतिथि मनाई गई। वेदवाड़ा में आचार्यश्री की पुण्यतिथि प्रतिवर्ष मनाई जाती है। यमुनापार दिल्ली की सादतपुर कालोनी में पूज्य गणिनी माताजी के ससंघ सानिध्य में दिगम्बर जैन मंदिर का शिलान्यास समारोह सम्पन्न हुआ जिसमें दिल्ली के गणमान्य महानुभावों तथा माताजी के भक्तों ने पधारकर मंदिर निर्माण के लिए सहयोग राशि घोषित की। शिलान्यास श्री राजकुमार जैन वीरा बिल्डर्स ने किया था। अब वहाँ मन्दिर का निर्माण हो चुका है।

दशलक्षण पर्व के प्रवचन परेड ग्राउंड में—पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में वर्ष 1997 का दशलक्षण पर्व विविध कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। आ.श्री चंदनामती माताजी व गणिनी माताजी के दशधर्म तथा तत्त्वार्थसूत्र पर प्रवचन प्रतिदिन लालकिले के सामने परेडग्राउंड (ऋषभदेव मैदान) में बने पंडाल में हुए। प्रतिदिन साहू अशोक कुमार जी भी प्रवचन सभा में पधारते थे। स्वास्थ्य खराब होने से मैं प्रवचन सभा में नहीं पहुँच सका । अंतिम दिन क्षमावणी पर्व पर विशेष प्रवचन हुए। तीर्थराज सम्मेदशिखर के विकास के लिए सहयोग की पुरजोर प्रेरणा प्रदान की गई। अनेक दानी महानुभावों ने भक्तिभाव से दान की घोषणाएं कीं। प्रतिदिन उसी सभा में उपाध्याय श्री गुप्तिसागर महाराज के भी प्रवचन होते थे।

चौबीस कल्पद्रुम विधानों का भव्य आयोजन—मांगीतुंगी से दिल्ली आने के रास्ते में ही माताजी ने संघ में आपस में विचार-विमर्श करना प्रारंभ कर दिया था कि इस बार दिल्ली में चातुर्मास हुआ तो कल्पद्रुम विधान का एक अति विशाल आयोजन करना है। चातुर्मास स्थापना के साथ ही यह निर्णय हुआ कि जैन महिलाश्रम के पास रिंगरोड पर शांतिवन के सामने बड़े मैदान में एक साथ 24 तीर्थंकरों के 24 समवसरण के अलग-अलग मंडल बनाकर कल्पद्रुम विधान का आयोजन 4 से 13 अक्टूबर तक किया जावे। 3 माह पूर्व से ही रूपरेखा बनकर उच्चस्तर पर प्रचार प्रारंभ हो गया। सर्वप्रथम प्रमुख चक्रवर्ती (भरत चक्रवर्ती) बनने का महान पुण्य तथा यश श्री राजकुमार जैन वीरा बिल्डर्स दिल्ली ने प्राप्त किया। अनंतर शेष चक्रवर्तियों का निर्णय भी होता गया। पूरी दिल्ली ही नहीं, पूरे देश में इस कार्यक्रम की चर्चा घर-घर में होने लग गई। कई लोग तो सोच-सोचकर हैरान थे कि इतने बड़े आयोजन की व्यवस्था कैसे होगी। सब कुछ हुआ, सबके सामने हुआ। समय आने तक 3 हजार स्त्री-पुरुषों के नाम विधान पूजन में भाग लेने के लिए आ गये। उसके बाद स्थानाभाव के कारण मना करना पड़ा। केवल चक्रवर्ती ही नहीं बने, महामंडलीक राजा, मंडलीक राजा तथा सामान्य राजा- रानी भी बने। एक-एक मंडल विधान के सामने 108-108 स्त्री-पुरुषों के बैठने की व्यवस्था की गई थी। आयोजन समिति की ओर से विधान पूजन में भाग लेने

वाले सभी स्त्री-पुरुषों के लिए पूजन-सामग्री, भोजन, धोती-दुपट्टा, साड़ी तथा कालोनी से आने-जाने हेतु बसों की व्यवस्था की गई थी।

सर्वप्रथम भरत चक्रवर्ती व उनकी पट्टरानी के रूप में श्री राजकुमार जैन वीरा बिल्डर्स एवं उनकी ध.प. श्रीमती आशा जैन का समिति की ओर से स्वर्ण मुकुट तथा हार पहनाकर स्वागत किया गया।

समारोह का झंडारोहण श्री वीरचंद बड़जात्या ने किया। चौबीस कल्पद्रुम विधान के 24 मण्डलों पर 24 समवसरणों से सजे विशाल पंडाल में समारोह का उद्घाटन महामहिम डॉ. शंकर दयाल शर्मा (पूर्व राष्ट्रपति भारत सरकार) के कर- कमलों से हुआ। समारोह सभा की अध्यक्षता साहू श्री रमेशचंद जैन ने की। घटयात्रापूर्वक 24 वेदियों तथा पंडाल की शुद्धि मंत्रोच्चारणपूर्वक की गई। केशरिया परिधानों से सुसज्जित 3000 स्त्री-पुरुषों तथा हजारों दर्शकों-भक्तों की भीड़ का एक अभूतपूर्व ही दृश्य था।

प्रातः जब पूजन करने के लिए भक्तगण आते थे, उससे पूर्व उनके बैठने के स्थान के सामने बेंच पर पूजन-सामग्री लगी हुई थालियों को देखकर लोगों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता था। इसके लिए पुजारियों की एक बड़ी टीम सरकस की तरह जुटी हुई थी। विधान पूजन के मध्य जब पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी एवं चंदनामती माताजी का उच्च स्वर में प्रवचन होता था तब सचमुच में समवसरण में दिव्यध्वनि जैसा आभास होने लगता था। 5 अक्टूबर को जब दिल्ली प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री साहिबसिंह वर्मा ने पधारकर उस दिव्य दृश्य को देखा तो भाषण में कहने लगे "आज मेरी आंखें धन्य हो गईं, मैंने आज तक ऐसा कोई धार्मिक आयोजन नहीं देखा" आयोजन एवं आयोजकों की खूब प्रशंसा की। समय-समय पर अहिंसा शाकाहार सम्मेलन, अ.भा.दि. जैन महिला संगठन का राष्ट्रीय अधिवेशन आदि भी कम प्रभावी नहीं थे। साहू अशोक कुमार जी तो उस विहंगम दृश्य को देखकर अति भावविह्वल हो गए। कहने लगे "माताजी! ऐसा विधान एक बार सम्मेदशिखर पर पधारकर करा दीजिये जिससे सम्मेदशिखर की सभी समस्याएं दूर हो जावें, क्षेत्र का कायाकल्प हो जावे"।

श्री कैलाशचंद जैन चौधरी सनावद के प्रयास से मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह जी पधारे। उन्होंने इस भव्य आयोजन से प्रभावित होकर विधान समिति की मांग पर म.प्र. की राजधानी भोपाल के एक उद्यान का नाम "भगवान ऋषभदेव उद्यान" कर देने की घोषणा कर दी। अब वहाँ उस उद्यान के नाम के साथ साथ भगवान ऋषभदेव की वाणी से संबंधित सूक्तियाँ भी शिलापट्टों पर लगा दी गई हैं। पूर्व न्यायाधीश श्री मिलापचंद जैन की उपस्थिती में यहीं पर पूज्य माताजी को

"गणिनीप्रमुख" की उपाधि से समस्त दिगम्बर जैन समाज की ओर से अलंकृत किया गया। दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर के प्रथम अध्यक्ष डॉ. कैलाशचंद जैन राजा टॉयज दिल्ली का रजत प्रशस्ति भेंट कर सम्मान किया गया। सन् 1972 में दिल्ली में इस संस्थान की स्थापना की गई थी तभी आपको प्रथम अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया था। आपने तबसे अब तक संस्थान एवं संघ की तन-मन और धन से खूब सेवा की। विधान में उल्लिखित विधि के अनुसार चारों प्रकार का दान प्रतिदिन बांटा गया। मुख्यमंत्री श्री साहिबसिंह वर्मा ने विधान के उपलक्ष्य में एक दिन दिल्ली के समस्त बूचड़खाने बंद रखने की घोषणा की थी।

1 करोड़ मंत्र जाप्य पूजा में बैठने वालों ने विधान की अवधि में किये थे 13 अक्टूबर को उसकी दशमांस आहुति के रूप में हवन कुंडों में पूर्णाहुति की गई। पूर्णाहुति के समय लगभग 50 हजार दर्शकों ने मंडल विधानों के दर्शन कर अपने को धन्य माना। हवन के पश्चात् विशाल शोभायात्रा निकाली गई। सायंकाल में उन सबका सम्मान किया गया जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष में इस महा अनुष्ठान में तन-मन-धन का सहयोग प्रदान किया। अंत में सभी ने मिलकर संघ के प्रति अपनी विनयभक्ति प्रकट करते हुए विधान समिति के कर्मठ अध्यक्ष कर्मयोगी बाल ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन का जोर-शोर से सम्मान किया।

यह चौबीस कल्पद्रुम विधान न केवल दिल्ली में अपितु पूरे देश की जैन समाज के दिल दिमाग पर अमिट छाप छोड़ गया। राजधानी के व्यस्त जीवन में भी इतनी बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने पूजा की, पूजा सुनी, पूजा देखी। विधान पूजन के दिनों में सुबह से शाम तक 16-16 घंटे तक कार्यक्रम हुए फिर भी किसी को थकावट या आकुलता नहीं हुई। मौसम भी सुहावना रहा। जिन्होंने साक्षात् उन विधानों के दर्शन किये वे उसे भूल नहीं सकते प्रत्युत् उस दृश्य को याद करके रोमांचित हो जाते हैं।

16 अक्टूबर को पूज्य माताजी का 64 वाँ जन्मजयंती समारोह जैन बालाश्रम दरियागंज में भव्यता के साथ मनाया गया। अनेक महानुभावों ने अपनी विनयांजलि प्रस्तुत की, पादप्रक्षाल किये, नूतन पिच्छी भेंट की, कमण्डलु तथा शास्त्र प्रदान किया तथा आरती उतारकर अपनी भक्ति प्रकट की। माताजी अपने प्रत्येक जन्मदिवस पर यह अवश्य बताती हैं कि यह शरदपूर्णिमा शरीर के जन्मदिन के साथ त्याग और वैराग्य का भी जन्मदिन है, सन् 1952 में शरदपूर्णिमा के दिन ही मैंने आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज से आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत लेकर सप्तम प्रतिमा धारण की थी। 18 अक्टूबर सन् 1987 को दिगम्बर जैन लाल मंदिर में श्री सुबोध कुमार जैन आरा (बिहार) ने आरा में 75 वर्ष पूर्व सन् 1921 में स्थापित किये गये जैन बाला विश्राम के अमृत महोत्सव का आयोजन रखा था उसमें पूज्य माताजी की ससंघ उपस्थिति रही,

उसमें माताजी ने अपने आशीर्वचनों में ब्र. चंदाबाई आरा का भी स्मरण किया। उनकी कर्मठता की प्रशंसा की।

31 अक्टूबर कार्तिक कृष्णा 14 की पिछली रात्रि में वर्षायोग की निष्ठापना हुई अनंतर लाल मंदिर में संघ के सानिध्य में निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। प्रवचन में पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी तथा गणिनी माताजी ने वीर निर्वाण संवत् पर प्रकाश डाला।

5 नवम्बर 1997 को दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए विहार करने से पूर्व दिगम्बर जैन लाल मंदिर में आयोजित सभा में दिल्लीवासियों तथा कर्मठ कार्यकर्त्ताओं को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए सदैव धर्मकार्यो में अग्रणी रहने की प्रेरणा प्रदान की। इसी श्रृंखला में पू. माताजी ने अपनी सुशिष्या आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के लिए "प्रज्ञाश्रमणी" उपाधि प्रदान की तथा मेरे लिए "धर्म दिवाकर" "क्षुल्लक रत्न" की उपाधि प्रदान की। पू. माताजी की त्रिवेणी की तीसरी धारा के रूप में कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के अग्रणी कर्मयोगी ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन के लिए भी उनके कार्यों की प्रशंसा करते हुए खूब आशीर्वाद प्रदान किया। माताजी का आशीर्वाद उपहार बन गया।

इसी शुभ अवसर पर विधान के चक्रवर्तियों, कर्मठ कार्यकर्त्ताओं का स्वागत किया गया। विशेषरूप से कर्मठ व्यक्तित्व के धनी श्री रमेशचंद जैन (पी.एस. जैन मोटर्स) का सम्मान किया गया जिन्होंने पूरे विधानपर्यंत विधान पूजन में भाग लेकर पुण्योपार्जन तो किया ही, साथ ही संघ एवं दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान तथा रवीन्द्रजी की कार्य प्रणाली को नजदीक से देखकर बहुत प्रभावित हुए। वे गुणग्राही थे, उनकी ध.प. सुशीला जी भी प्रबुद्ध महिला हैं, पूज्य माताजी के प्रति अनन्य भक्ति अब भी उनके हृदय में रहती है।

चातुर्मास के पश्चात्—5 नवम्बर 1997 को लालमंदिर की सभा में समस्त दिल्लीवासियों को अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए माताजी ने ससंघ हस्तिनापुर के लिए विहार कर दिया। 10 नवम्बर को कमलानगर मेरठ में प्रवास रहा, प्रवचन हुए। 11 नवम्बर को सदर में प्रवास रहा, ऋषभएकेडमी में दोनों माताजी व मेरे प्रवचन हुए जिसमें यात्रा के महत्वपूर्ण संस्मरण भी सुनाए।

दो वर्ष के पश्चात् हस्तिनापुर में माताजी का ससंघ मंगल पदार्पण—दो वर्ष पूर्व 27 नवंबर 1995 को जम्बूद्वीप हस्तिनापुर से मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के लिए ससंघ विहार हुआ था पुनः दो वर्ष बाद 14 नवम्बर 1997 को हस्तिनापुर पदार्पण हुआ। दो वर्षों में जो धर्म प्रभावना के कार्य हुए हैं वे भी चमत्कारिक रहे। उसका विस्तृत विवरण पहले सम्यग्ज्ञान आदि में प्रकाशित किया गया है। जहाँ जो कार्य माताजी के मुख से कराने के लिए निकला, वह वचनसिद्धि के रूप में तत्काल स्वीकृत हो गया। शुभागमन के शुभ

अवसर पर संघ के स्वागत के साथ-साथ संघपति लाला महावीर प्रसाद जी, श्री प्रेमचंदजी खारी बावली तथा चौबीस कल्पद्रुम विधान के प्रमुख "भरतचक्रवर्ती" श्री राजकुमार जैन वीरा बिल्डर्स का भी भावभीना स्वागत संस्थान की ओर से किया गया। संघ की सकुशल वापसी पर सभी ने हर्ष व्यक्त किया।

वार्षिक कार्तिक मेले के अवसर पर कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी 13 नवम्बर को जम्बूद्वीप स्थल से वार्षिक रथयात्रा निकाली गई 14 नवम्बर कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को 20-30 हजार जैन-अजैन नर-नारियों ने जम्बूद्वीप दर्शन के साथ-साथ पूज्य माताजी के ससंघ दर्शनों का लाभ भी प्राप्त किया। माघ कृष्णा चतुर्दशी 27 जनवरी 1998 को भगवान ऋषभदेव का निर्वाणकल्याणक निर्वाण लाडू चढ़ाकर मनाया गया। 14 दिसम्बर 1997 को पूज्य गणिनी माताजी ने धवला ग्रंथ की संस्कृत टीका स्याद्वाद चिंतामणि के दूसरे भाग को पूर्ण किया तदुपलक्ष में हस्त- लिखित टीका का जम्बूद्वीप परिसर में पालकी का जुलूस निकाला गया। 22 जनवरी 1998 माघ कृष्णा 9 को पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की 13वीं पुण्य तिथी मनाई गई। 1 फरवरी 1998 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्याय मूर्ति श्री मारकण्डे काटजू दर्शनार्थ पधारे। जम्बूद्वीप दर्शन के साथ पूज्य माताजी से भी आशीर्वाद प्राप्त किया। फाल्गुन कृष्णा एकादशी, 22 फरवरी 1998 को ससंघ सानिध्य में भगवान ऋषभदेव का केवलज्ञान कल्याणक उत्सव मनाया गया।

जम्बूद्वीप स्थल पर नवनिर्मित ॐ मंदिर में पंचपरमेष्ठी की प्रतिमाएं ॐ में विराजमान करने के लिए वेदी प्रतिष्ठा का कार्यक्रम 9 फरवरी को झंडारोहण-पूर्वक प्रारंभ हुआ। 11 फरवरी 1998 को प्रातः 10 बजे ॐ में पंचपरमेष्ठी की पांच प्रतिमाएं विराजमान की गईं अनंतर मंदिर के शिखर पर कलशारोहण तथा ध्वज स्थापना मंदिर निर्माता श्री प्रेमचंद प्रदीप कुमार जैन खारीबावली दिल्ली के हाथों से किया गया।

पुनः हस्तिनापुर से राजधानी दिल्ली के लिए विहार—भगवान ऋषभदेव के प्रचार-प्रसार के लिए राजधानी दिल्ली से 22 मार्च 1998 को पूरे देश में समवसरण रथ का भ्रमण कराने के लिए माताजी का ससंघ 4 मार्च 1998 को हस्तिनापुर से पुनः दिल्ली के लिए विहार हुआ। 12 मार्च को संघ का मंगल पदार्पण राजधानी दिल्ली के लालमंदिर में हुआ। 22 मार्च तक संघ कम्मोजी की धर्मशाला साइकिल मार्केट में विराजमान रहा। वहीं पर रथ प्रवर्तन संबंधी व्यापक तैयारियाँ चलती रहीं।

"समवसरण श्रीविहार रथ" का उद्घाटन—सांसद श्री वी. धनंजय कुमार जैन के करकमलों से विशाल जनसभा के मध्य "समवसरण श्रीविहार रथ" का उद्घाटन ऋषभदेव जयंती के शुभ दिन चैत्र कृ. 9 को लालकिला मैदान दिल्ली में किया गया।

सभा की अध्यक्षता साहू श्री रमेशचंद जैन (न.भा.टा.) ने की। सानिध्य प्रदान किया गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी, आर्यिका श्रीचंदनामती माताजी, मैंने, क्षु. श्रद्धामती जी ने, हजारों नर-नारी की सभा में उपस्थिती थी। उद्घाटन के पश्चात् बोली लेने वाले महानुभावों को रथ पर बैठाकर भव्य शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा की शोभा देखते ही बन रही थी। सैकड़ों इन्द्राणियां केशरिया परिधान में कलश लेकर, सैकड़ों बालक-बालिकाएं हाथ में मंत्र लिखित रंग-बिरंगी ध्वजा-पताकाएं लेकर, ऐरावतहाथी वाले रथ पर सर्वाण्हदेव धर्मचक्र लेकर, हाथी पर श्री, ह्री आदि 8 देवियाँ अष्टमंगल द्रव्य हाथ में लेकर ऐरावत हाथी के रथ पर बैठी थीं, अन्य राजा-महाराजा 32 बग्घियों पर बैठकर 32 हजार राजाओं का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। बैंड बाजे, झांकियाँ, हाथी-घोड़े, शहनाईवादक आदि शोभायात्रा की शोभा द्विगुणित कर रहे थे। चाँदनी चौक से खारीबावली होते हुए शोभायात्रा पहाड़ीधीरज पर समाप्त हुई। रास्ते में जगह-जगह भक्तों ने जलपान आदि की व्यवस्था कर रखी थी। सभी जातियों के महानुभाव समवसरण रथ का स्वागत कर रहे थे, नमन कर रहे थे। हेलीकॉप्टर से पुष्पवृष्टि हो रही थी। स्वयं माताजी के ससंघ शोभायात्रा में रहने से शोभायात्रा गरिमापूर्ण बन गई। मेघदेवता ने भी वर्षा की दो-चार बूँदें बरसा कर अपनी भक्ति प्रकट की। पहली शोभायात्रा प्रथम नंबर जैसी ही थी। माताजी स्वयं पहाड़ी धीरज पर ठहर गईं, रथ भी रात में वहीं खड़ा रहा। प्रातः पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री जगदीश टाइटलर ने पूज्य माताजी से आशीर्वाद लेकर समवसरण रथ का दर्शन कर स्वागत किया।

पहाड़ी धीरज के पश्चात् 1 अप्रैल से 4 अप्रैल तक दिल्ली की विभिन्न कालोनियों में प्रतिदिन रथ का प्रवर्तन चलता रहा।

प्रधानमंत्री द्वारा समवसरण श्रीविहार का भारत भ्रमण हेतु प्रवर्तन—चैत्र शुक्ला त्रयोदशी-9 अप्रैल 1998 महावीर जयंती के शुभ दिन प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने देश भ्रमण के लिए समवसरण रथ के प्रवर्तन का शुभारंभ किया।

महावीर जयंती के शुभदिन तालकटोरा स्टेडियम में भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी समवसरण रथ का देशव्यापी भ्रमण प्रारंभ करने के लिए पधारे। सर्वप्रथम माताजी से आशीर्वाद प्राप्त किया अनंतर विशाल जनसभा के मध्य पधारकर जनता का-जैन समाज का अभिवादन स्वीकार किया। सभा की अध्यक्षता पूर्व केन्द्रीय मंत्री तथा वर्तमान सांसद श्री धनंजय कुमार जैन ने की। प्रधानमंत्री जी, सभाध्यक्ष तथा अन्य अतिथियों का भावभीना स्वागत प्रवर्तन समिति की ओर से किया गया। मेरे, प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी तथा गणिनी माताजी के प्रवचन तथा आशीर्वचन हुए, कर्मयोगी ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन सहित अन्य वक्ताओं के

भाषण हुए। पूज्य माताजी ने अपने प्रवचन में कहा कि जिस देश का आश्रय लेकर साधुजन जो तपस्या करते हैं, उसका छठा भाग पुण्य राजा को स्वयमेव प्राप्त हो जाता है। आज महावीर जयन्ती के शुभ दिन जो इस समवसरण रथ का प्रवर्तन भारत भ्रमण के लिए हो रहा है, यह पूरे देश के शासकों तथा समस्त जनता के लिए मंगल तथा क्षेम को करने वाला होगा।

प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने अपने भाषण में कहा कि मेरा अहोभाग्य है कि भगवान ऋषभदेव के इस समवसरण रथ का प्रवर्तन करने के लिए मुझे यहाँ आमंत्रित किया है। पुनः मुस्कराते हुए अपनी विशिष्ट शैली में कहा कि माताजी की तपस्या के छठे भाग पुण्य से हमारा काम नहीं चलेगा और अधिक भाग पुण्य की हमें आवश्यकता है (उपस्थित सारे नर-नारी भी इस बात से हंस पड़े) उन्होंने कहा कि मैं यह आश्वासन देता हूँ कि विश्वबंधुत्व का पाठ पढ़ाने वाले इस रथ को सभी प्रदेशों में राजकीय सम्मान प्राप्त होगा। मैं आज मुख्य रूप से ज्ञानमती माताजी का आशीर्वाद लेने आया था, वह मुझे मिल गया।

स्टेडियम के बाहर प्रांगण में खड़े रथ पर उन्होंने स्वस्तिक बनाया, अर्घ तथा श्रीफल चढ़ाकर आरती उतारी तथा देशव्यापी प्रवर्तन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रदान की। पूर्ण निश्चिंतता से 2 घंटे तक कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सांसद श्री धनंजय कुमार जैन ने प्रधानमंत्री का आभार ज्ञापित किया।

30 अप्रैल तक माताजी का ससंघ दिल्ली में प्रवास रहा । रथ प्रवर्तन 2 मई तक दिल्ली की विभिन्न कालोनियों में होता रहा। कहीं-कहीं माताजी का ससंघ सानिध्य भी प्राप्त होता रहा। 3 मई को रथ का प्रवेश हरियाणा में हुआ।

19 अप्रैल 1998 को नजफगढ़ में पूज्य माताजी की प्रेरणा से उनके ससंघ सानिध्य में जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र निर्माण का शिलान्यास हुआ। 29 अप्रैल, वैशाख शुक्ला तीज के शुभ दिन प्रीतविहार की धर्मसभा में परम गुरुभक्त श्री राजेन्द्र प्रसाद जी (कम्मोजी) का दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर की ओर से रजत प्रशस्ति, शॉल, श्रीफल भेंट कर सम्मान किया गया। चंदनामती माताजी तथा गणिनी माताजी ने कम्मोजी की गुरुभक्ति का उल्लेख करते हुए उनके कार्यों की प्रशंसा की तथा उनके दीर्घ तथा स्वस्थ जीवन के लिए आशीर्वाद प्रदान किया।

राजधानी से पुनः हस्तिनापुर के लिए मंगल विहार—1 मई 1998 को प्रीतविहार से माताजी ने ससंघ हस्तिनापुर के लिए विहार किया। सूर्यनगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद, ऋषभांचल, मोदीनगर, मेरठ तथा मवाना में धर्मप्रभावना करते हुए 12 मई को जम्बूद्वीप स्थल, हस्तिनापुर में शुभागमन हुआ।

तियालिसवाँ चातुर्मास (1998, जम्बूद्वीप स्थल-हस्तिनापुर में)

वर्ष 1998 का चातुर्मास 8 जुलाई 1998, आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने ससंघ जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर में आगम की विधिपूर्वक, भक्तियों का पाठ करते हुए स्थापित किया।

जहाँ से रक्षाबंधन पर्व प्रारंभ हुआ, वहाँ प्रथम बार श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को जम्बूद्वीप स्थल पर विशिष्टरूप से यह पर्व मनाया गया। प्रातः अकंपनाचार्य आदि 700 मुनियों की पूजा, विष्णुकुमार मुनिराज की पूजा, भगवान श्रेयांसनाथ के निर्वाणकल्याणक के उपलक्ष्य में भगवान की पूजा करके निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। आहार के पश्चात् खीर का प्रसाद वितरित किया गया। मध्यान्ह में मैंने रक्षाबंधन पर्व की कथा पढ़ी। दोनों माताजी के पर्व की महत्ता पर प्रवचन हुए। अंत में सभी स्त्री-पुरुषों ने ध्वजदण्ड पर रक्षासूत्र बांधकर प्रतिज्ञा ली कि "हम अपने शरीर में प्राण रहते तक धर्म तथा धर्मायतनों की तन-मन-धन से रक्षा करेंगे पुनः सभी स्त्री-पुरुषों ने आपस में भी रक्षासूत्र बांधे।

भगवान ऋषभदेव के प्रथम आहार से पवित्र हस्तिनापुर की पावन धरा पर 4 से 6 अक्टूबर 1998 तक 'भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन' का अभूतपूर्व आयोजन तथा गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का 65वाँ जन्मजयंती समारोह—भगवान ऋषभदेव के प्रचार-प्रसार को ध्यान में रखते हुए पूज्य माताजी ने कई माह पहले से हस्तिनापुर में देश के संपूर्ण विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का सम्मेलन रखने का निर्णय किया था। तभी से विश्वविद्यालयों से पत्राचार प्रारंभ कर दिया गया था, इसके लिए विशेष परिश्रम किया गया। कार्यक्रम की महत्ता को समझाने/बताने के लिए साहित्य भेजा गया। देश के उच्च शिक्षाविदों के सम्मेलन का शुभ समय आ गया 4 से 6 अक्टूबर 1998 का। उक्त सम्मेलन दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर तथा चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। सानिध्य प्राप्त हुआ पूज्य गणिनी आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी, आर्यिका श्री अभयमती माताजी, प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, क्षुल्लिका शांतिमती जी, क्षुल्लिका श्रद्धामती जी। मैं भी कार्यक्रम में उपस्थित रहा। कार्यक्रम के सौजन्यकर्ता थे-श्री राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स', दिल्ली। कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र जी समस्त समारोह के प्रमुख कर्त्ता-धर्त्ता थे। उद्देश्य था यह बताने का कि भगवान महावीर जैनधर्म के संस्थापक नहीं हैं, वे तो जैनधर्म के चौबीसवें तीर्थंकर थे, उनसे पहले तेईस तीर्थंकर हो चुके हैं। उनमें सबसे पहले तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव थे।

कार्यक्रम में कई वर्तमान कुलपति, कुछ पूर्व कुलपति, प्रोफेसर तथा 100 से अधिक जैन विद्वान पधारे थे। 4 अक्टूबर के उद्घाटन सत्र में स्वागत भाषण किया

मेरठ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के. दुर्गाप्रसाद जी ने। प्रमुख अतिथि थे राजेश पायलट (पूर्व केन्द्रीय मंत्री), श्री धनंजय कुमार जैन (पूर्व केन्द्रीय मंत्री)। संचालन किया डॉ. अनुपम जैन-इंदौर ने। देश में जैन समाज के इतिहास में इस प्रकार का कुलपति सम्मेलन पहली बार था। अनेक सत्रों के माध्यम से सबने अच्छी तरह समझ लिया कि भगवान महावीर को जैनधर्म का संस्थापक मानना, लिखना अथवा बताना बड़ी भारी भूल है। इतिहास की पुस्तकों में इस भूल को दूर करना अति आवश्यक है। आगत कुलपतियों को जम्बूद्वीप स्थल का प्राकृतिक वातावरण बहुत ही सुहावना लगा। विभिन्न सत्रों में पूज्य गणिनी माताजी, आर्यिका श्री अभयमती माताजी, आर्यिका श्री चंदनामती माताजी तथा मेरे उद्बोधन हुए। सभी को जैनधर्म से भलीभांति परिचित कराया गया, साहित्य दिया गया। सबका यथोचित सम्मान किया गया।

5 अक्टूबर 1998, आसोज शुक्ला 15 (शरदपूर्णिमा) के दिन पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का 65वाँ जन्मजयंती समारोह आयोजित किया गया।

जन्मजयंती समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे-श्री धनराज यादव (सिंचाई राज्यमंत्री-उत्तरप्रदेश सरकार) तथा अध्यक्षता की-श्री कैलाशचंद जैन (पूर्व सचिव मुख्यमंत्री-उ.प्र.)। संघ के साधुओं, विद्वानों, भक्तों तथा कार्यकर्ताओं ने पूज्य माताजी के गुणानुवाद प्रस्तुत करते हुए विनयांजलि अर्पित की। माताजी की ज्ञान गरिमा से प्रभावित होकर कुलपति भी पीछे नहीं रहे। उन्होंने भी अपनी विनयांजलि भक्तिभावपूर्वक समर्पित की। सभी कुलपतियों तथा विद्वानों ने माताजी से पुनीत आशीर्वाद ग्रहण किया।

6 अक्टूबर को समापन सत्र में प्रो. डी.पी. तिवारी-मेरठ, मेजर प्रो. बलवीर सिंह भसीन-गया तथा डॉ. के. नलिन शास्त्री-बोधगया की त्रिसदस्यीय समिति द्वारा तैयार किया गया "जम्बूद्वीप घोषणा पत्र" सदन के सम्मुख डॉ. अनुपम जैन-इंदौर ने प्रस्तुत किया। जिसे सभी ने सर्वानुमति से स्वीकृत किया। यह समारोह अपना एक विशेष प्रभाव छोड़ गया। पूरे देश में इसकी सर्वत्र सराहना हुई तथा आगे भी ऐसे शिक्षाविदों के सम्मेलन की आवश्यकता महसूस की गई।

चातुर्मास के पश्चात्—कमलानगर-मेरठ के मंदिर में पूज्य माताजी की प्रेरणा से श्री प्रेमचंद जैन 'तेल वाले'-कमलानगर, मेरठ ने 24 तीर्थंकर तथा विद्यमान 20 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ विराजमान करने के लिए भव्यकमलों का निर्माण कराया। उन प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराने के लिए पूज्य माताजी ने आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, क्षुल्लक मोतीसागर जी तथा ब्र. बहनों सहित 10 नवम्बर 1998 को मेरठ के लिए मंगल विहार किया। 16 नवम्बर को कमलानगर में संघ का पदार्पण हुआ। 16 से 21 अक्टूबर तक कमलानगर में संघ का प्रवास रहा। 22 से 25 तक शास्त्रीनगर में संघ

के पधारने से ज्ञानामृत की वर्षा हुई। 26 नवम्बर को पुनः कमलानगर संघ आ गया। 27 नवम्बर को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का झण्डारोहण हुआ, जिसमें जैनसभा मेरठ के गणमान्य महानुभाव पधारे। 28 नवम्बर से 3 दिसम्बर तक यथाक्रम से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हुई। यह प्रतिष्ठा श्री प्रेमचंद जैन 'तेल वाले' की तरफ से आयोजित थी। प्रतिष्ठाचार्य वाणीभूषण पं. नरेश कुमार जैन-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर थे। प्रतिष्ठा के समापन पर समस्त सहयोगी कार्यकर्ताओं का प्रेमचंद जी ने सम्मान किया। जैन समाज मेरठ ने प्रेमचंद जी के समस्त परिवार का स्वागत सम्मान किया। पूज्य माताजी ने प्रेमचंद जी, उनकी ध.प. सब्जी देवी तथा प्रतिष्ठा समिति के प्रमुख पदाधिकारियों को आशीर्वादस्वरूप उपाधियाँ प्रदान की। 3 दिसम्बर को मोक्षकल्याणक के पश्चात् कमलानगर मंदिर में नवनिर्मित कमलों पर प्रतिमाएँ विराजमान की गईं। 9 दिसम्बर तक मेरठ की अन्य कॉलोनियों में प्रवचनों के माध्यम से धर्मामृत की वर्षा हुई। सर्वत्र संघ का भावभीना स्वागत किया गया।

निकटवर्ती हापुड़ शहर की जैन समाज के विशेष आग्रह से माताजी ने संघ सहित 9 दिसम्बर को हापुड़ की तरफ विहार किया। 12 दिसम्बर को हापुड़ शहर में मंगल पदार्पण के अवसर पर विशाल शोभायात्रापूर्वक नगर प्रवेश हुआ। जगह-जगह पादप्रक्षाल कर आरती उतारी गई, पुष्पवृष्टि की गई। 12 से 16 दिसम्बर तक प्रातः, मध्यान्ह तथा रात्रि में प्रवचनों के अतिरिक्त विविध कार्यक्रम हुए। भीषण सर्दी के बावजूद भी दिनभर मेला सा लगा रहता था। 17 दिसम्बर को पार्श्वनाथ मंदिर के शिखर पर विधिपूर्वक ध्वजारोहण हुआ। उसी दिन हापुड से विहार करके 23 दिसम्बर को संघ का सकुशल जम्बूद्वीप स्थल पर पदार्पण हुआ।

मेरठ प्रवास के मध्य 25 नवम्बर को चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ में पूज्य माताजी का ससंघ पदार्पण हुआ। विश्वविद्यालय के आडिटोरियम में एक संगोष्ठी हुई, जिसमें पूज्य माताजी का समसामयिक मंगल उद्बोधन हुआ। आर्यिका श्रीचंदनामती माताजी व मेरे प्रवचन हुए। संगोष्ठी में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. डी.पी. तिवारी भी पधारे। जम्बूद्वीप संस्थान के अध्यक्ष ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन ने मेरठ विश्वविद्यालय एवं जम्बूद्वीप संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में पूर्व में सम्पन्न संगोष्ठियों का उल्लेख अपने भाषण में किया।

ऋषभदेव श्रावक संस्कार शिविर का आयोजन—शास्त्रीनगर-मेरठ के श्रावक-श्राविकाओं ने शिविर में विशेष रूप से भाग लिया। 26 को 4 सत्रों तथा 27 को 3 सत्रों के माध्यम से अनेक विषयों का ज्ञान प्रवचनों तथा शिक्षण के माध्यम से गणिनी माताजी, पूज्य श्री अभयमती माताजी, आर्यिका श्री चंदनामती माताजी तथा मेरे द्वारा कराया गया, प्रश्नमंच भी हुए। श्रावकोचित क्रियाओं का ज्ञान भी कराया गया। 27 को

समापन सत्र में सभी को धार्मिक पुस्तकों के साथ प्रमाणपत्र दिये गये।

साहू श्री अशोक कुमार जैन का असामयिक निधन—जैन समाज ही नहीं अपितु समस्त भारत की प्रबुद्ध समाज को यह जानकर दुख हुआ कि जैन समाज के शीर्षस्थ नेता, भा.दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष, बेनेट कोलमेन कं. (टाइम्स ऑफ इण्डिया) के चेयरमैन साहू श्री अशोक कुमार जैन का निधन 4 फरवरी 1999 को अमेरिका में हो गया। वे 65 वर्ष के थे। पिछले एक वर्ष से वे हृदयरोग से पीड़ित चल रहे थे। वे सच्चे "तीर्थरक्षा शिरोमणि" थे। पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के पास भी कई बार आकर आपने मार्गदर्शन प्राप्त किया था। साहूजी के निधन के समाचार ज्ञात होने पर जम्बूद्वीप स्थल पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में तथा ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन करके उनके प्रति संस्थान के पदाधिकारियों ने श्रद्धांजलि समर्पित की। पूज्य गणिनी माताजी ने बताया कि वे सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र के साथ आत्मसात् हो गये थे। जैन साहित्य के प्रकाशन में भी उनका अमूल्य योगदान रहा। उन्होंने अपने पिता साहू शांतिप्रसाद जी तथा ताऊ श्रेयांसप्रसाद जी के पदचिन्हों पर चलकर जैन समाज की, जैन संस्कृति की चहुँमुखी उन्नति के अनेक प्रकार के कार्य किये। उनका निधन जैन समाज की अपूरणीय क्षति है।

माघ वदी नवमी को पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की 14वीं पुण्यतिथि मनाई गई। उनके गुणों का स्मरण करते हुए उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। माघ कृष्णा चतुर्दशी, 16 जनवरी 1999 को जम्बूद्वीप स्थल पर पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में भगवान ऋषभदेव का निर्वाणोत्सव मनाया गया, जिसमें धर्मसभा में पूज्य माताजी व अन्य साधुओं के प्रवचन हुए। भगवान के पूजा-अभिषेक के साथ निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। जम्बूद्वीप संस्थान के पदाधिकारियों के अतिरिक्त बड़े मंदिर की कमेटी के बाबू सुकुमालचंद जैन, जयप्रकाश जैन-वकील, जैन प्रकाश जैन, ऋतुराज जैन, प्रेमचंद जैन 'तेल वाले'-मेरठ आदि भी पधारे थे। अनेक वक्ताओं ने कहा कि पंथभेद को भुलाकर सामाजिक एकता की आवश्यकता है। हस्तिनापुर में भविष्य में होने वाले कार्यक्रम मिलकर मनाने की बात श्री जयप्रकाश जैन एडवोकेट ने कही।

जम्बूद्वीप स्थल पर नवीन विशाल भोजनालय का शिलान्यास 2 मार्च 1999 को अष्टान्हिका पर्व के समापन पर होली के दिन पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में अवध के प्रमुख दानी श्रेष्ठी नेमकुमार जैन-गनेशपुर (बाराबंकी-उ.प्र.) के सुपुत्र श्री अशोक कुमार जैन के करकमलों से किया गया। संस्थान की ओर से श्री अशोक जैन, उनकी ध.प. तथा उनके साथ पधारे श्री उमेश जैन-टिकैतनगर का स्वागत किया गया।

जम्बूद्वीप दर्शन के लिए देश-विदेश के यात्री तो हस्तिनापुर आते ही रहते हैं किन्तु जैनधर्म तथा दिगम्बर जैन साध्वियों की चर्या की शास्त्रीय जानकारी प्राप्त करने के लिए अमेरिका स्थित केलिफोर्निया की रिसर्च स्कॉलर (शोध छात्रा) मिस सेरीफोर 12 जनवरी 1999 को जम्बूद्वीप स्थल पर पधारीं। 12 दिन तक लगातार माताजी के पास बैठकर विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त किया, बहुत प्रसन्न रहीं। संस्थान की ओर से उनका स्वागत किया गया। उनका शोधपत्र शीघ्र ही प्रकाशित हुआ, जिसमें उन्होंने हस्तिनापुर प्रवास का तथा पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का अत्यंतश्रद्धापूर्वक उल्लेख किया।

18 अप्रैल 1999 अक्षयतृतीया पर्व पर प्रथम बार जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान ऋषभदेव के आहार का दृश्य प्रस्तुत किया गया। जम्बूद्वीप पर एक कक्ष में विराजमान भगवान ऋषभदेव की आहार मुद्रा वाली प्रतिमा के करपात्र में भक्तों ने इक्षुरस प्रदान किया। इक्षुरस का प्रसाद भी वितरित किया गया। भगवान ऋषभदेव का प्रथम आहार इसी हस्तिनापुर में राजा श्रेयांस के द्वारा इसी तीर्थ पर हुआ था। आहार के पश्चात् पंचाश्चर्य की वृष्टि की गई।

भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ का प्रवर्तन विगत 1 वर्ष से दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान में महती धर्मप्रभावना के साथ चल रहा था। प्रवर्तन का संचालन युवा कार्यकर्ता विजय कुमार जैन-कानपुर कर रहे हैं। राजस्थान प्रवर्तन का समापन 4 अप्रैल 1999 को अतिशय क्षेत्र ऋषभदेव-केशरिया जी में हुआ था। पहले सन् 1982 में प्रवर्तित जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ के राजस्थान प्रवर्तन के समापन का श्रेय भी इसी अतिशय क्षेत्र को प्राप्त हुआ। संयोग से यह तीर्थ भी ऋषभदेव के नाम से ही प्रसिद्ध है। राजस्थान प्रवर्तन में सर्वाधिक बोलियाँ आनंदपुरकालू के भक्तों ने ली। ज्ञानज्योति प्रवर्तन में भी राजस्थान में आनंदपुरकालू वालों की ही थी। राजस्थान के पश्चात् मध्यप्रदेश में समवसरण रथ का प्रवर्तन 5 अप्रैल 1999 को नीमच शहर से प्रारंभ हुआ।

हस्तिनापुर में जन्मे तथा सम्मेदशिखर से निर्वाणप्राप्त भगवान शांतिनाथ की जन्मजयंती तथा निर्वाणोत्सव ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी, 14 मई 1999 को मनाया गया। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी ज्येष्ठ वदी 14 को भगवान शांतिनाथ का निर्वाणोत्सव निर्वाणलाडू चढ़ाकर मनाया गया, रथयात्रा भी निकाली गई। विभिन्न नगरों से सैकड़ों की संख्या में नर-नारी पधारे थे।

हस्तिनापुर से प्रकाशित होने वाली हिन्दी मासिक पत्रिका "सम्यग्ज्ञान" के रूपहले 25 वर्ष पूर्ण हुए। जून 1999 का अंक सम्यग्ज्ञान रजत जयंती वर्ष समापन अंक के रूप में प्रकाशित किया गया था। जुलाई सन् 1974 में (भगवान महावीर 2500वें निर्वाणकल्याणक के अवसर पर) विशाल संघ के नायक आचार्यश्री धर्मसागर जी

महाराज के करकमलों से दि. जैन लाल मंदिर, चाँदनी चौक-दिल्ली में प्रवेशांक का विमोचन हुआ था, तब से नित्य नई साज-सज्जा के साथ पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की जादुई सशक्त लेखनी से प्रसूत चारों अनुयोगों के ज्ञानवर्धक लेख सतत प्रकाशित होते रहे। प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के लेख, कविताएँ भी प्रकाशित होती रही हैं। दीक्षापूर्व इस महान पत्रिका का संपादक होने का गौरव मुझे तथा ब्र.रवीन्द्र कुमार को प्राप्त होता रहा। दीक्षा के पश्चात् भी मुझे समय-समय पर लेख आदि देने का अवसर मिलता रहता है। अभी भी यह पत्रिका गौरव गरिमा के साथ प्रकाशित हो रही है। 32 वर्षों का एक लम्बा इतिहास इसके साथ जुड़ा हुआ है। अब भी इसके संपादक कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी हैं।

हस्तिनापुर से दिल्ली के लिए विहार–पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी, प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, क्षुल्लक मोतीसागर जी महाराज, क्षुल्लिका श्रद्धामती माताजी तथा संघस्थ 8 ब्र. बहनों ने 30 अप्रैल 1999 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर से राजधानी दिल्ली के लिए मंगल विहार किया। 13 मई को श्री ऋषभदेव दिगम्बर जैन कमल मंदिर-डी 107, प्रीतविहार, दिल्ली में संघ का मंगल पदार्पण हुआ। 14 मई 1999, ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी को पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी ने केशलोंच किये। इसी दिन भगवान शांतिनाथ की पूजा करके संघ के सानिध्य में भगवान शांतिनाथ के निर्वाणकल्याणक के उपलक्ष्य में निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। दिल्ली की अनेक कालोनियों से भक्तगण पधारे थे। इस अवसर पर दोनों माताजी के व मेरे प्रवचन हुए।

पूज्य गणिनी माताजी की प्रेरणा से गठित 'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव समिति' की एक प्रारंभिक बैठक पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में 23 मई 1999 को रखी गई जिसमें दिल्ली तथा देश के विभिन्न नगरों-शहरों से उच्चकोटि के जैन समाज के नेता व कार्यकर्ता उपस्थित हुए। विशिष्ट दानियों तथा समाजसेवियों का स्वागत किया गया। समिति को आर्थिक सहयोग प्रदान करने वाले लाला महावीर प्रसाद जी संघपति, कमलचंद जी खारीबावली, प्रेमचंद जी-खारीबावली तथा पन्नालाल सेठी-डीमापुर का भी विशेषरूप से स्वागत किया गया। मेरे मंगलाचरण के अनंतर अनेक वक्ताओं ने अपने विचार रखे। ब्र. रवीन्द्र कुमार ने समिति के पदाधिकारियों के नाम की घोषणा की। सभी ने पूर्णरूपेण सहयोग का आश्वासन प्रदान किया। पूज्य श्री चंदनामती माताजी व गणिनी माताजी ने ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव की महत्ता पर प्रकाश डाला। सभी को मिलकर महोत्सव को सफल बनाने के लिए प्रेरणा व आशीर्वाद प्रदान किये।

श्रुतपंचमी पर्व, सरस्वती आराधना तथा कमल मंदिर का प्रतिष्ठापना दिवस समारोह–पूज्य गणिनी माताजी की प्रेरणा से सन् 1997 में श्री अनिल कुमार जैन ने

अपनी कोठी डी-107 प्रीतविहार के प्रांगण में एक सुन्दर कमल मंदिर का निर्माण करके माताजी के ही सानिध्य में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराई थी, उसी का द्वितीय प्रतिष्ठापना समारोह तथा लघु पंचकल्याणक संघ सानिध्य में 18 से 23 जून तक सम्पन्न हुआ। 18 जून को श्रुतपंचमी पर्व के उपलक्ष्य में सरस्वती आराधना हुई। समाज ने प्रवचनों का लाभ भी लिया। इसी शुभ दिन पूज्य माताजी द्वारा रचित यागमण्डल विधान के प्रथम संस्करण का विमोचन श्री महावीर प्रसाद जैन-भोगल वालों ने किया। वर्ष 1999 का चातुर्मास राजाबाजार-कनॉट प्लेस में करने की घोषणा भी हुई। पूज्य माताजी के सानिध्य में दिगम्बर जैन मंदिर, मोरीगेट में वेदी प्रतिष्ठा एवं कलशारोहण का कार्यक्रम 26 से 28 जून तक सम्पन्न हुआ।

वर्ष 1999 का चातुर्मास करने के लिए माताजी का प्रीतविहार से कैलाशनगर व मोरीगेट होकर 30 जून को श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन मंदिर में मंगल पदार्पण हुआ। अग्रवाल दि. जैन मंदिर तथा खण्डेलवाल दि. जैन मंदिर राजाबाजार के पदाधिकारियों तथा दिल्ली की विभिन्न कालोनियों से पधारे महानुभावों ने संघ का भावभीना स्वागत किया। जैन सभा-नई दिल्ली तथा महिला संगठन-दिल्ली के पदाधिकारियों ने भी अपने विचार व्यक्त किये। पूज्य माताजी ने अपने आशीर्वचनों में समस्त दिल्लीवासियों को संघ से धर्मलाभ लेने की प्रेरणा प्रदान की।

13 जुलाई 1999 को श्री अग्रवाल दि. जैन मंदिर राजाबाजार कनॉट प्लेस में अ.भा.दि. जैन महिला संगठन, दिल्ली प्रदेश की समस्त पचास इकाईयों की एक संयुक्त बैठक पूज्य गणिनी माताजी के ससंघ सानिध्य में आशातीत सफलता के साथ सम्पन्न हुई। समस्त इकाईयों से लगभग 400 महिलाओं ने भाग लिया। बैठक की अध्यक्षता श्रीमती आशा जैन, चाँदनी चौक (अध्यक्ष-दिल्ली प्रदेश) ने की। समस्त इकाईयों ने अपनी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी तथा मैंने बैठक को सम्बोधित किया। 4 फरवरी 2000 से प्रारंभ होकर 1 वर्ष तक चलने वाले भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव से संबंधित विशिष्ट कार्यक्रमों से सबको परिचित कराया।

चौवालिसवाँ चातुर्मास (1999-राजाबाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली)

आगम की आज्ञानुसार आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी (27 जुलाई 1999) को मध्यान्ह में चातुर्मास स्थापना की सभा हुई। सभा की अध्यक्षता संघपति श्री महावीर प्रसाद जी ने की। श्री चक्रेश जैन (अध्यक्ष-अग्रवाल जैन पंचायत) जिनेन्द्रप्रसाद जैन ठेकेदार (महामंत्री-अग्रवाल दि. जैन मंदिर), महेन्द्र कुमार गोधा (अध्यक्ष-खण्डेलवाल दि. जैन मंदिर), दोनों मंदिरों की समितियों के पदाधिकारी, राजाबाजार के श्रावक-श्राविका, दिल्ली की

अनेक कालोनियों के भक्तगण, महिला संगठन की अनेक महिलाएँ बड़ी संख्या में उपस्थित हुए। सभी ने श्रीफल आदि चढ़ाकर पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से चातुर्मास राजाबाजार में स्थापित करने की प्रार्थना की। सभी की प्रार्थना को सुनने के पश्चात् आर्यिका श्री चंदनामती माताजी तथा मैंने चातुर्मास/वर्षायोग की महत्ता पर प्रकाश डाला। गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने वर्ष 1999 का चातुर्मास राजा बाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली में करने की घोषणा की, जिससे हर्ष की लहर दौड़ गई। मेरठ, मवाना, हापुड़, सरधना, लखनऊ, सलुम्बर (राज.) आदि से पधारे भक्तों ने भी दिल्ली वालों के साथ श्रीफल चढ़ाये। सभा के मध्य श्री कमलचंद जी-खारीबावली, दिल्ली ने ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव के फोल्डर का विमोचन किया। सामायिक के पश्चात् माताजी ने रात्रि में भक्तिपाठ करके विधिवत् चातुर्मास की स्थापना की।

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी गुरुपूर्णिमा के बाद श्रावण माह में वीरशासन जयंती, भगवान पार्श्वनाथ निर्वाणोत्सव तथा रक्षाबंधन पर्व मनाये गये। रक्षाबंधन के दिन विशेष कार्यक्रम हुए। प्रातः अकंपनाचार्य आदि सात सौ मुनियों तथा विष्णकुमार मुनिराज की पूजन हुई। मध्यान्ह में रक्षाबंधन की कथा मैंने पढ़ी। दोनों माताजी के प्रवचन हुए। उपस्थित भाई-बहनों ने जैन धर्म के ध्वजदण्ड पर रक्षासूत्र बांधे तथा एक-दूसरे के हाथों में राखियाँ बांधी। पूज्य माताजी ने सभी से प्रतिज्ञा कराई कि "तन-मन-धन से जिनधर्म तथा जिनधर्मायतनों की रक्षा करेंगे"। अंत में सभी को खीर का प्रसाद बांटा गया।

कारगिल में शहीद हुए सैनिकों की आत्मा की शांति के लिए पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में 13 से 28 जुलाई तक शांतिविधान अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन दिल्ली प्रदेश द्वारा किया गया। लगभग 500 महिलाओं ने पूजन-विधान करने का सौभाग्य प्राप्त किया। 20 से 29 जुलाई तक सिद्धचक्र मण्डल विधान पूज्य माताजी के सानिध्य में राजाबाजार में श्री सुरेशचंद जैन डिप्टीगंज-दिल्ली ने किया। भादों शुक्ला दूज, 11 सितम्बर 1999 को चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की 45वीं पुण्यतिथि संघ के सानिध्य में मनाई गई। आचार्यश्री के विषय में पूज्य गणिनी माताजी, आर्यिका श्री चंदनामती माताजी व मैंने विस्तृत जानकारी प्रदान की।

भगवान ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव के केन्द्रीय कार्यालय का उद्घाटन— 8 अगस्त 1999 को पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव के केन्द्रीय कार्यालय का उद्घाटन अग्रवाल दि. जैन मंदिर, राजाबाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली में श्री उम्मेदमल पाण्ड्या ने फीता काटकर किया। लालकिला मैदान, दिल्ली में 4 फरवरी 2000 को विशाल पैमाने पर निर्वाण लाडू चढ़ाये जाएंगे।

आर्यिका श्री चंदनामती माताजी व मैंने सभा को सम्बोधित किया। समितिके कार्याध्यक्ष ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन ने महोत्सव की व्यापक रूपरेखा बतलाई। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए श्री कमलचंद जी-खारीबावली को दिल्ली प्रदेश का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। अंत में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने सबको संगठित होकर कार्यक्रम को प्रभावीरूप में करने का आशीर्वाद प्रदान किया।

दशलक्षण पर्व में विविध आकर्षक कार्यक्रम–14 सितम्बर से 24 सितम्बर 1999 तक राजाबाजार मंदिर के बाहर प्रांगण में आयोजित धर्म सभा में प्रतिदिन प्रातः गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के भगवान ऋषभदेव के दशावतारों में से एक-एक अवतार पर प्रवचन हुए। प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के दशधर्मों पर क्रमशः ओजस्वी प्रवचन हुए। मैंने प्रतिदिन प्रारंभ में मंगलाचरण किया तथा अंत में प्रश्नमंच चलाया। मध्यान्ह में पं. बालमुकुंद जी शास्त्री-मुरैना ने तत्त्वार्थसूत्र पर प्रवचन किये। प्रतिदिन रात्रि में भगवान ऋषभदेव के पूर्व दशभवों पर आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा लिखित दशावतार नाटकों का मंचन किया गया। प्रातः से शाम तक दिल्ली की विभिन्न कालोनियों से श्रोताओं/दर्शकों का आवागमन रहा। क्षमावणी पर्व पर प्रातः जैन हैप्पी स्कूल में विशाल सभा का आयोजन रखा गया, जिसमें संघ की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। मध्यान्ह में खण्डेलवाल दि. जैन मंदिर के प्रांगण में 11 उपवास करने वाले दिल्ली की विभिन्न कालोनियों से पधारे महानुभावों का स्वागत संघ के सानिध्य में श्री विजय कुमार अजय कुमार जैन सरस्वती विहार तथा अनिल जैन (कमल मंदिर), प्रीतविहार की ओर से दीवाल घड़ी तथा रजत कटोरे भेंट करके किया गया। फूलों से सुसज्जित इन्द्रों का जुलूस निकाला गया, भगवान का अभिषेक हुआ, अनंतर फूलमाल की बोली लेने वालों को फूलमाल पहनाई गई। अंत में सभी के लिए प्रीतिभोज की व्यवस्था थी। दशलक्षण पर्व के समस्त कार्यक्रमों का संचालन कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन ने किया।

29 अगस्त से 7 सितम्बर तक अशोक विहार फेस-1 के दि. जैन मंदिर में पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान श्री राजेन्द्र कुमार जैन, चाँदी वाला परिवार की ओर से किया गया। प्रतिदिन विधान के मध्य प्रवचन हुए तथा ध्यान का अभ्यास कराया गया। रात्रि में नृत्य, भजन, प्रवचन तथा प्रश्नमंच आदि कार्यक्रम हुए। विधान में अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया।

पूज्य माताजी का 66वाँ जन्मजयंती समारोह–24 अक्टूबर 1999 शरदपूर्णिमा को जैन हैप्पी स्कूल राजाबाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली में पूज्य गणिनी आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का 66वाँ जन्मजयंती समारोह अत्यंत उत्साहपूर्ण वातावरण में मनाया गया। समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे थे-श्री वी. धनंजय कुमार

जैन (केन्द्रीय वित्तराज्य मंत्री-भारत सरकार), सांसद श्री ताराचंद पटेल-सनावद, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त श्री डी.टी.वार्डे जैन। समारोह का उद्घाटन सांसद श्री ताराचंद पटेल ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। अतिथियों का पुष्पहार, शॉल, श्रीफल से स्वागत किया गया। मेरे मंगलाचरण के पश्चात् अनेक महानुभावों तथा विद्वानों ने पूज्य माताजी की ज्ञानगरिमा, दृढ़ संकल्पशक्ति, दूरदर्शिता, जन्मभूमियों के विकास, निस्पृहता आदि गुणों पर प्रकाश डाला। पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने बताया कि पूज्य माताजी सन् 1993 से भगवान ऋषभदेव के प्रचार-प्रसार में हाथ धोकर पीछे पड़ी हैं ताकि दुनिया की यह भ्रांति दूर हो जावे कि भगवान महावीर जैनधर्म के संस्थापक हैं।

पूज्य माताजी प्रतिवर्ष अपने जन्मदिन पर कोई न कोई ग्रंथ पूर्ण कर भगवान जिनेन्द्र के चरणों में समर्पित करती हैं। इस वर्ष भगवान ऋषभदेव पर संस्कृत में 'ऋषभदेव चरितम्' हस्तलिखित (लगभग 200 पृष्ठों का) समर्पित किया, जिसका लोकार्पण श्री धनंजय कुमार जैन (वित्त राज्यमंत्री-भारत सरकार) ने किया। भगवान ऋषभदेव पर कुछ अन्य लेखकों द्वारा लिखी गई पुस्तकों तथा कुछ पत्र-पत्रिकाओं के भी विमोचन हुए। "भगवान ऋषभदेव प्रश्नावली प्रतियोगिता" का लकी ड्रा निकाला गया। विजेताओं को अच्छे पुरस्कार दिये गये। अनेक भक्तों ने पूज्य माताजी के 66वें जन्मदिवस पर विभिन्न प्रकार की 66-66 वस्तुएँ बांटी।

श्री धनंजय कुमार जैन (केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री) को उनकी धार्मिक क्रियाकलापों में विशेष अभिरुचि को देखकर दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर द्वारा "जैन रत्न" की उपाधि से सम्मानित करते हुए अंगवस्त्र, माला, श्रीफल के साथ 'रजत प्रशस्ति पत्र' प्रदान किया गया। णमोकार महामंत्र 25 हजार, 50 हजार अथवा सवा लाख लिखने वाले लेखकों को भी प्रमाणपत्र तथा पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

6 अक्टूबर 1998 को गठित "तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ" का अधिवेशन हुआ, जिसमें आगत 25 विद्वानों ने मिलकर कार्यकारिणी की बैठक में वरिष्ठ विद्वान पं. श्री शिवचरनलाल जैन-मैनपुरी को (प्रथम) अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया। अन्य पदाधिकारियों का भी चयन हुआ। रात्रि की सभा में अन्य अनेक महानुभावों ने विनयांजलि अर्पित की तथा भगवान ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करने का आश्वासन प्रदान किया। 24 सितम्बर 1999 को जैन हैप्पी स्कूल, नई दिल्ली में भारत स्काउट एवं गाइड के वार्षिक कार्यक्रम में पूज्य माताजी ने ससंघ पधारकर आशीर्वचनों में अनुशासनपूर्वक समाज सेवा एवं देशसेवा करने की प्रेरणा प्रदान की। इस अवसर पर दिल्ली प्रदेश के स्वास्थ्य एवं पर्यावरण मंत्री डॉ. ए.के. वालिया ने भी आशीर्वाद प्राप्त किया।

चातुर्मास के पश्चात्–कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी को वर्ष 1999 के चातुर्मास के

समापन की घोषणा राजाबाजार दि. जैन मंदिर में भक्तिपाठ करके माताजी ने की। प्रातः भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव के उपलक्ष्य में निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। शाम को दीपावली की पूजन हुई।

14 नवम्बर 1999 को दीनदयाल उपाध्याय मार्ग नई दिल्ली स्थित अणुव्रत भवन में तेरहपंथ धर्मसंघ के आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य श्री महाश्रमण के संघ सानिध्य में आयोजित "अहिंसा एवं शांति प्रयासों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" में आयोजनसमिति के विशेष निवेदन पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने संघ सहित पधारकर देश-विदेश से आये प्रतिनिधियों के समक्ष अपने उद्बोधन में कहा कि "जैनधर्म के पावन सिद्धान्तों का पालन करने से विश्व में शांति की स्थापना हो सकती है। इसके लिए सर्वप्रथम अहिंसा ही प्रमुख आधार है। आचार्य महाप्रज्ञ जी से ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव के विषय में माताजी ने विशेष चर्चा की। महाप्रज्ञजी ने माताजी से 1974 से परिचय के बारे में बताते हुए अपना साहित्य माताजी को भेंट किया।

धर्मपुरा (चाँदनी चौक) स्थित सतघरा दि. जैन मंदिर में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा— पूज्य गणिनी माताजी के ससंघ सानिध्य में सतघरा दि. जैन मंदिर में ह्रीँ की चौबीस प्रतिमाओं तथा भगवान बाहुबली की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 9 से 13 दिसम्बर 1999 तक सम्पन्न हुई। 5 दिसम्बर को झण्डारोहण के साथ विधि-विधान प्रारंभ हो गये थे। प्रतिदिन पूजा एवं कल्याणकों संबंधी क्रियाओं के साथ पूज्य दोनों माताजी व मेरे प्रवचन भी होते रहे। पंचकल्याणक के प्रतिष्ठाचार्य ब्र.श्री धर्मचंद्र शास्त्री तथा संयोजक श्रीमती कमला जैन (गोटे वाली) गली गुलियान तथा श्री धीरेन्द्र जैन थे।

1 जनवरी 2000 को प्रातःकालीन प्रवचन में पूज्य गणिनी माताजी ने भारतदेश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, समस्त शासकों, देश की समस्त जनता तथा उपस्थित समस्त नर-नारियों को सुख-समृद्धि का मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि नई सहस्राब्दि विश्व में खुशहाली प्रदान करे, धरती से आतंकवाद की समाप्ति हो, आपस में भाईचारे के संबंध स्थापित हों, यही मेरा संदेश तथा शुभकामना है।

नई सहस्राब्दि के प्रथम दिन लालकिला मैदान में अहिंसा महाकुंभ सम्पन्न— 1 जनवरी 2000 शनिवार के मध्यान्ह में कड़कड़ाती सर्दी में लाल किला मैदान दिल्ली में आयोजित विशाल अहिंसा महाकुंभ में विभिन्न धर्म तथा सम्प्रदाय के गुरुओं ने मिलकर सरकार से मांग की कि "अहिंसाप्रधान भारतदेश से मांसनिर्यात पर प्रतिबंध लगाया जावे तथा गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जावे एवं वर्ष 2000 को 'अहिंसा वर्ष' घोषित किया जावे। इस कार्यक्रम के प्रमुख सूत्रधार दिगम्बर जैन मुनि श्री तरुणसागर महाराज थे। कार्यक्रम में आचार्यश्री पुष्पदंतसागर जी महाराज सहित अनेक दिगम्बर मुनि, श्वेताम्बर साधु-साध्वी, हिन्दू धर्म के साधु-संत, धर्माचार्य आदि

भी पधारे थे। सभी ने सरकार से मांसनिर्यात रोकने की तथा बूचड़खानों, पोल्ट्री फार्मों की तेजी से बढ़ती संख्या पर पाबंदी लगाने की पुरजोर मांग की। इस आयोजन में अपने संघ सहित पधारकर पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने वक्तव्य में बताया कि भारतीय संस्कृति के आद्यप्रणेता भगवान ऋषभदेव ने अहिंसा तथा दया को धर्म का मूल बताया, जो कि आज भी प्रासंगिक है। दिल्ली प्रदेश की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने अपने भाषण में कहा कि जैनियों की इतनी बड़ी संख्या यह बता रही है कि वे अहिंसा को अपनाना चाहते हैं, अहिंसा से ही जीवन संतुलित रह सकता है। अंत में भारतीय जैन मिलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुरेश जैन रितुराज-मेरठ ने सरकार को दिये जाने वाले ज्ञापन का वाचन किया। जयकार तथा तालियों की जोरदार गड़गड़ाहट से उपस्थित जन-समूह ने दिये जाने वाले ज्ञापन का समर्थन किया।

बीसवीं सदी की विदाई तथा इक्कीसवीं सदी का स्वागत करने के लिए पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से उनके ससंघ सानिध्य में अ.भा.दि. जैन महिला संगठन, चाँदनी चौक इकाई द्वारा एक भक्ति का कार्यक्रम कम्मोजी कीधर्मशाला में आयोजित किया गया। 31 दिसम्बर 1999 की रात्रि में 9 से 12.30 तक कैलाशपर्वत की रचना बनाकर उसके समक्ष भक्तिसंगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। 1 जनवरी 2000 को प्रातः भक्तामर मंडल विधान-पूजन तथा 2 जनवरी 2000 को चन्द्रप्रभु- पार्श्वनाथ पूजन तथा नवग्रहशांति विधान हुआ। विधान पूजन के मध्य मेरे, प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी व गणिनी माताजी के मंगल प्रवचन हुए। माघ वदी 9 को पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की 15वीं पुण्यतिथि मनाई गई।

बहुत भारी प्रचार तथा तैयारियों के साथ आ गया भगवान ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव का समय— संघ तथा समाज ने पूज्य गणिनी माताजी के पुरजोर आह्वान तथा प्रेरणा से प्रेरित होकर कई महीनों से रात-दिन एक करके महोत्सव की तैयारी की। निर्वाण महोत्सव कार्यक्रम के 8 माह शेष रह गये थे। तैयारियाँ मंदगति से चल रही थीं, तब अगस्त 1999 में एक दिन माताजी ने रवीन्द्र कुमार की ओर देखते हुए कहा था कि "देखो रवीन्द्र! अब सब काम छोड़कर निर्वाण महोत्सव के काम में लग जाओ। यह कार्यक्रम हमारा ही नहीं है अपितु अपने परमपिता भगवान ऋषभदेव का मानकर इसमें जुट जाओ, बस मेरी यही आज्ञा है।" मात्र इतने आत्मीय शब्दों ने एक विद्युत शक्ति पैदा कर दी। लालकिला मैदान में जैनधर्म का ध्वज लहराने के लिए 5 सूत्रीय अद्भुत प्रारूप बनाया गया था—

1. कैलाशपर्वत बनाकर उस पर 72 रत्नप्रतिमाएँ विराजमान की जावें।
2. 72 रत्नप्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा उसी समय हो।
3. कैलाशपर्वत के समक्ष 1008 निर्वाणलाडू चढ़ाये जावें।

4. लालकिला मैदान में उस समय ऋषभदेव मेले का आयोजन किया जावे।

5. केन्द्र सरकार की भावनाओं को जोड़कर भगवान ऋषभदेव को मीडिया के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर पहुँचाया जावे इत्यादि।

प्रथमतः कार्य संचालन के लिए चातुर्मास में केन्द्रीय कार्यालय राजाबाजार कनॉट प्लेस में खोला गया पुनः 10 नवम्बर 1999 को संघ कम्मोजी की धर्मशाला चाँदनी चौक चला गया, तब वहाँ कैम्प कार्यालय प्रारंभ किया गया।

पूज्य माताजी जो कुछ भी सोचती हैं, वह उससे भी अच्छे रूप में होता है क्योंकि माताजी बहुत हाईफाई नहीं सोचतीं। 72 रत्नप्रतिमाएँ बनीं, फाइवर ग्लास का विशाल कैलाशपर्वत बना, पेंटिंग्स व झांकियाँ बनीं। लालकिला मैदान आरक्षित हुआ। प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने पधारने की स्वीकृति प्रदान की। 1008 लड्डू बने, लड्डू चढ़ाने के थाल बने। पोस्टर, पम्पलेट, फोल्डर, आमंत्रण कार्ड छपे। इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया से जोरदार प्रचार हुए। देश के सभी प्रदेशों से भक्तगण पधारे। 3 फरवरी 2000 की रात्रि में सबकुछ तैयार था लालकिला मैदान में। 4 फरवरी को उषाकाल की बेला में लालकिले पर देश की आन-बान-शान का प्रतीक तिरंगा लहराया और प्रारंभ हो गया निर्वाण महोत्सव भगवान की पालकी शोभायात्रा के साथ। जनमानस में अपार उत्साह था। लालकिला मैदान में वह होने जा रहा था, जो वहाँ पहले कभी नहीं हुआ था।

भगवान की पालकी लालकिला मैदान में पहुँचते ही कार्यक्रम का शुभारंभ पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में झण्डारोहण से हुआ, जिसका श्रेय श्री प्रेमचंद जैन 'तेल वाले'-मेरठ को प्राप्त हुआ। झण्डारोहण के बाद पालकी के साथ संघ मंच पर पहुँचा। पहुँचते ही कैलाशपर्वत पर प्रतिष्ठित प्रतिमाजी भगवान ऋषभदेव की तथा त्रिकाल चौबीसी की प्रतिष्ठेय 72 प्रतिमाएँ विराजमान की गईं। उद्घाटन समारोह के प्रमुख अतिथि प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा सभाध्यक्ष श्री धनंजय कुमार जैन (केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री) मंच पर पधारे। सर्वप्रथम मैंने मंगलाचरण करके समारोह की महिमा तथा भगवान ऋषभदेव के विषय में अवगत कराया। अतिथियों का स्वागत किया गया, माला मुकुट पहनाए गए। महोत्सव का उद्घाटन श्री वाजपेयी जी व श्री धनंजय कुमार जी ने दीप प्रज्ज्वलन करके किया। महोत्सव के कार्याध्यक्ष ब्र. रवीन्द्र जी ने महोत्सव का पूरा परिचय प्रदान किया। पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव अपने विस्मृत प्राचीन इतिहास को नये युग में स्मरण दिलाने वाला ऐतिहासिक स्वर्णिम महोत्सव है। पूज्य गणिनी माताजी द्वारा लिखित स्वाध्याय के लिए सर्वजनोपयोगी ग्रंथ "ज्ञानामृत" तथा सर्वोच्च जैन ग्रंथ षट्खण्डागम पर लिखी गईं संस्कृत टीका "सिद्धान्तचिंतामणि" ग्रंथ का विमोचन प्रधानमंत्री जी ने किया। आर्यिका श्री चंदनामती

माताजी द्वारा रचित भजनों की कैसेट "कैलाश पर्वत वंदना" का विमोचन भी श्री वाजपेयी जी ने किया। पूज्य गणिनी माताजी ने अपने मंगलमयी आशीर्वचनों में कहा कि "आप और हम सबके द्वारा की जा रही भगवान ऋषभदेव की भक्ति विश्व मेंशांति की स्थापना करेगी, पर्यावरण शुद्ध होगा, देश का वातावरण स्वस्थ/प्रशस्त होगा।

अंत में प्रधानमंत्री जी ने भक्तिपूर्वक अपने भाषण में अपनी विशिष्ट शैली में कहा कि "मैं पूज्य माताजी का आशीर्वाद लेने आया था, वह मुझे पर्याप्त मात्रा में मिल गया। अगले कार्यक्रम में आने तक यह मेरे काम आवेगा। इस अवसर पर दिया गया भाषण प्रधानमंत्री जी के चुने हुए भाषणों की पुस्तक में पूरा का पूरा छपा है। भाषणोपरांत अटल जी ने चांदी के थाल में सुंदर मोतीचूर का रखा निर्वाणलाडू श्री धनंजय जी के साथ कैलाशपर्वत के सामने भगवान ऋषभदेव के चरणों में चढ़ाया। अन्य इन्द्रों की तरह प्रधानमंत्री जी को वह रजतथाल भेंट-स्वरूप प्रदान कर दिया गया। लड्डू चढ़ाने से पहले प्रधानमंत्री जी ने अत्यंत आकर्षक एवं विशाल कैलाशपर्वत का अनावरण करके उसके प्रथमदर्शन मंत्रमुग्ध होकर किये। वे कुछ क्षणों तक पर्वत को निहारते ही रहे।

प्रधानमंत्री के प्रस्थान करते ही 4 घंटे से बंधकर बैठा विशाल जनसमूह निर्वाणलाडू चढ़ाने के लिए उमड़ पड़ा। श्रद्धाभक्ति से भरित भक्तों ने 1008 से अधिक लड्डू कुछ ही देर में चढ़ा दिये। प्रथम सिद्धिनिर्वाणलाडू चढ़ाने का सौभाग्य श्री पवन जैन, आनंद जैन, दीपक जैन तथा संजय जैन, जैन मार्बल-मेरठ वालों को प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् श्री राजकुमार जैन, महक वाले, पूसा रोड-दिल्ली को, जो कि इस पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के सौधर्म इन्द्र बने थे, उन्होंने एक बड़ा लड्डू सपरिवार चढ़ाकर अपना अहोभाग्य माना। भक्तिगंगा का वह दृश्य भी अपूर्व ही था। लड्डू चढ़ाकर प्रीतिभोज के पश्चात् पंचकल्याणक की पूर्व क्रियाएँ प्रारंभ हो गईं। सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी बने श्री राजकुमार जैन, महक वाले, पूसा रोड तथा श्रीमती मधु जैन। भगवान के माता-पिता बने-श्री महेशचंद जैन-कलकत्ता वाले तथा उनकी ध.प. श्रीमती रविकांता जैन। 6 फरवरी से 10 फरवरी तक क्रमशः एक-एक कल्याणक शास्त्रोक्त विधि से सम्पन्न हुए। प्रतिष्ठाचार्य थे पं. नरेश कुमार शास्त्री, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर तथा पं. अकलंक कुमार जैन-लखनऊ। भगवान को आहार कराने का पुण्य अवसर राजा श्रेयांस बनकर संघपति लाला महावीर प्रसाद जी, बंगाली स्वीट सेंटर, साउथ एक्स, दिल्ली को प्राप्त हुआ। 10 फरवरी को प्रातः मोक्षकल्याणक के पश्चात् 72 रत्नप्रतिमाओं का विशेष अभिषेक करने का पुण्य अवसर भक्तों को प्राप्त हुआ। अभिषेक के अंत में शांतिधारा करने का सौभाग्य मिला श्री राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स' को।

5 फरवरी को वृहद् जैन युवा सम्मेलन हुआ, जिसका आयोजन अ.भा.दि. जैन युवा परिषद द्वारा किया गया। सम्मेलन में अनेक शीर्षस्थ संस्थाओं के युवाओं ने भाग

लिया। सम्मेलन में विचार प्रस्तुत करने के लिए विषय रखा गया था ''वर्तमान परिप्रेक्ष्य में युवावर्ग की धर्म के प्रति आस्था एवं कर्तव्य''। संयोजक थे श्री बिजेन्द्र कुमार जैन, शाहदरा। सम्मेलन को दिल्ली जैन समाज के मंत्री श्री स्वदेशभूषण जैन ने भी सम्बोधित किया। मैंने तथा पूज्य श्री चंदनामती माताजी एवं गणिनी माताजी ने भगवान ऋषभदेव पर देश में सर्वत्र संगोष्ठियाँ रखने की प्रेरणा अपने प्रवचन में प्रदान कीं।

6 फरवरी को ऋषभदेव सर्वधर्म सभा का आयोजन था। सभा की अध्यक्षता पुरातत्त्वविद् श्री डॉ. मुनीशचंद जोशी ने की। मुख्य अतिथि थे श्री दिग्विजय सिंह जैन-इंदौर। अनेक धर्म के वक्ताओं ने भगवान ऋषभदेव तथा उनके जनोपयोगी-जीवनोपयोगी सिद्धान्तों की वर्तमान विश्व को आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. आचार्य प्रभाकर मिश्र का भी ओजस्वी भाषण हुआ। मेरे तथा प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के उद्‌बोधन के पश्चात् गणिनी ज्ञानमती माताजी के आशीर्वचन हुए। 7 फरवरी को रात्रि में सुप्रसिद्ध गीतकार श्री राजेन्द्र जैन-कलकत्ता का रंगारंग संगीत का कार्यक्रम हुआ।

7 फरवरी को मध्यान्ह में अ.भा.दि.जैन महिला संगठन का नैमित्तिक अधिवेशन हुआ। संगठन की महामंत्री श्रीमती सुमन जैन ने अब तक की प्रगति रिपोर्ट विस्तार से प्रस्तुत की, जिसे सुनकर उपस्थित महिलाओं ने करतल ध्वनि से हर्ष एवं गौरव व्यक्त किया। श्रीमती आशा जैन (अध्यक्ष-दिल्ली प्रदेश) ने भी दिल्ली की समस्त इकाईयों द्वारा प्रारंभ से अब तक किये गये कार्यों/कार्यक्रमों की जानकारी प्रस्तुत की। अनेक महिलाओं ने इस अवसर पर महिलाओं के कर्त्तव्यों पर प्रकाश डाला तथा संगठन के विकास के बारे में अपने अमूल्य सुझाव भी प्रस्तुत किये। सभी वक्ताओं ने भगवान ऋषभदेव से संबंधित कार्यक्रम पूरे वर्ष भर तक चलाने का आश्वासन दिया। मैंने उक्त अवसर पर अपने उद्‌बोधन में कहा कि युग की आदि से महिलाओं ने धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में न केवल बढ़-चढ़कर भाग लिया है अपितु दिशानिर्देश भी दिया है। आज भी नारीशक्ति को जागृत करने की आवश्यकता है। पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने कहा कि महिलाओं में शक्ति तो अपार है किन्तु उसे प्रगट करने से समाज सुसंस्कृत होगा। समाज में महिलाओं तथा पुरुषों की पचास-पचास प्रतिशत शक्ति काम करती है। गणिनी माताजी ने महिलाओं को संगठित होकर कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की। अंत में श्रीमती उषा पाटनी, इंदौर ने सभी का आभार प्रकट किया।

8 फरवरी की रात्रि में गिनीज बुक में अपना नाम लिखाने वाली देश-विदेश में अनेकों कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाली छोटी सी बालिका कु. तन्वी तनेजा ने भरतनाट्यम-नृत्य करके सबकी खूब वाहवाही लूटी। पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री राजनाथ सिंह तथा सांसद श्री राघव जैन (मध्यप्रदेश) ने पधारकर कैलाशपर्वत के दर्शन किये तथा पूज्य माताजी के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्तकर भगवान ऋषभदेव के इस महान कार्यक्रम की प्रशंसा की।

रात्रि में विशाल कवि सम्मेलन रखा गया था, जिसमें हरिओम पंवार, ओ.पी. जैन-हरिणावी, ओमप्रकाश आदित्य, हास्यकवि सुरेन्द्र शर्मा आदि ने अपनी कविताओं के माध्यम से भगवान ऋषभदेव के गुणगान किये। अन्य विषयों पर भी विभिन्न रसों में कविता पाठ करके जनता का प्रेम प्राप्त किया। 9 फरवरी की रात्रि में जैनसाहब म्यूजिकल ग्रुप दिल्ली द्वारा 'माँ पद्मावती जागरण' तथा सांस्कृतिक संध्या का कार्यक्रम रखा गया था। 10 फरवरी को प्रातः 10 बजे दिल्ली प्रदेश के उपराज्यपाल श्री विजय कपूर तथा प्रख्यात विधिवेत्ता श्री एल.एम. सिंघवी पधारे। सभा की अध्यक्षता श्री सिंघवी जी ने की। दोनों अतिथियों का स्वागत किया गया। मैंने उन्हें माताजी का चित्र तथा दोनों माताजी ने साहित्य प्रदान किया। श्री सिंघवी जी ने पूज्य माताजी के क्रियाकलापों की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा कहा कि मुझे पूज्य माताजी के दर्शन बहुत देर से हुए। बहुत पहले हो गये होते तो कुछ और ही बात होती। इस सभा के साथ ऋषभदेव महोत्सव का समापन हो गया।

अ.भा.दि. जैन युवा परिषद द्वारा इस राष्ट्रीय मंच पर कर्मठ 7 युवकों को 'युवारत्न' की उपाधि प्रदान की गई, वे युवा थे-1. श्री अरुण जैन-दरियागंज 2. श्री राकेश कुमार जैन-ऋषभ विहार 3. श्री राजकुमार जैन-महक वाले, पूसा रोड 4. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन-ऋषभ विहार 5. श्री अशोक कुमार जैन-गली गुलियान 6. श्री सुधीर जैन-अशोक विहार, फेस-1 7. श्री बिजेन्द्र कुमार जैन-शाहदरा।

महोत्सव के मध्य लालकिला मैदान में 40 से अधिक झाँकियाँ भगवान ऋषभदेव तथा अहिंसा के विषय में आकर्षण का केन्द्र रहीं। महिला संगठन इंदौर द्वारा अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी द्वारा चित्र प्रदर्शनी, पुस्तक प्रदर्शनी, लगभग 300 जैन पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी भी दर्शकों का मन मोहित कर रही थीं। लाखों दर्शकों ने लाभ लिया, व्यसन त्याग की प्रेरणा प्राप्त की, विदेशी पर्यटक भी मेले में देखे गये। महोत्सव में आगंतुक जैन बंधुओं के लिए भोजन की निःशुल्क सुन्दर व्यवस्था थी।

प्रिंट मीडिया तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने भी महोत्सव के खूब समाचार प्रकाशित किये। केवल दिल्ली ही नहीं अपितु राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश तथा बंगाल, महाराष्ट्र के अखबारों में भी प्रतिदिन ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव के समाचार मुख्यता से छपते रहे।

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी की सूझबूझ, कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी की कर्मठता, सैकड़ों कार्यकर्ताओं के परिश्रम तथा भक्तों के सहयोग से यह भी एक ऐतिहासिक कार्यक्रम बन गया। मुझे भी इस महोत्सव में कार्यों को करने/कराने में जो आनंद की अनुभूति हुई, वह अकथनीय है। कार्यक्रम की सफलता का सबसे बड़ा राज रहा-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का मंगल आशीर्वाद।

वेणूर में 37 फुट उत्तुंग भगवान बाहुबली का महामस्तकाभिषेक–केन्द्रीय मंत्री श्री धनंजय कुमार जैन की जन्मभूमि वेणूर (जि.-बैंगलोर) कर्नाटक में 46 वर्ष के पश्चात् भगवान बाहुबली की 37 फुट उत्तुंग प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक विशाल जनसमूह के मध्य 10 से 18 फरवरी 2000 तक किया गया। श्री धनंजय कुमार जैन तथा श्री सुरेन्द्र जी हेगड़े के विशेष आग्रह पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का आशीर्वाद लेकर कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन के नेतृत्व में 81 यात्रियों का समूह 16 फरवरी को सहारा इण्डिया के विमान से वेणूर गया तथा 20 फरवरी को विमान से ही सकुशल यात्रा कर वापस आ गया।18 फरवरी को 50 हजार स्त्री-पुरुष अभिषेक स्थल पर उपस्थित थे। इस महामस्तकाभिषेक की विशेषता यह रही कि रात्रि में 8 बजे से अभिषेक प्रारंभ होकर प्रातः 3 बजे तक अभिषेक चला। 1008 कलशों में प्रथम कलश संघपति लाला महावीर प्रसाद जैन बंगाली स्वीट, एक्स. दिल्ली को प्राप्त हुआ। दूध के अभिषेक का महान सौभाग्य श्री राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स'-दिल्ली ने प्राप्त किया। 16 से 20 फरवरी तक 81 महानुभावों ने आसपास के समस्त तीर्थों की भी यात्रा का पुण्य प्राप्त किया।

श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन मंदिर राजाबाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली के प्रांगण में भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव की यादगार को चिरस्थाई बनाने के लिए पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की मंगल प्रेरणा एवं उन्हीं के ससंघ सानिध्य में भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ का शिलान्यास 2 मार्च 2000 को स्व. श्री महावीर प्रसाद जैन ठेकेदार परिवार के सदस्यों–श्री महेन्द्र प्रसाद ठेकेदार, श्री जिनेन्द्र प्रसाद जैन ठेकेदार, श्री नरेन्द्र ठेकेदार, श्री रवीन्द्र ठेकेदार ने किया। शिलान्यास की विधि ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन ने कराई। कुछ ही माह में वह कीर्तिस्तंभ लाल पत्थर का बनकर तैयार हो गया तथा उसमें प्रतिमाएँ भी संघ के सानिध्य में ही विराजमान कर दी गईं।

पूज्य माताजी का दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए मंगल विहार–राजधानी दिल्ली से समस्त देश में भगवान ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव की धूम मचाते हुए पूज्य गणिनी माताजी ने 31 मार्च 2000 को श्री अग्रवाल दि. जैन मंदिर राजाबाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में प्रीतविहार, ऋषभविहार, शिवम् एन्क्लेव, दि. जैन मंदिर घंटाघर, गाजियाबाद, मोदीनगर, शांतिनगर, मेरठ, दि. जैन मंदिर ढोलकी मोहल्ला तथा मवाना में संघ के सानिध्य में ऋषभदेव संगोष्ठियों का आयोजन करते हुए 13 अप्रैल 2000 को संघ का जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर में मंगल पदार्पण हुआ।

तृतीय जम्बूद्वीप पंचवर्षीय महोत्सव तथा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा–सन् 1985 में जम्बूद्वीप पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के अवसर पर पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के

आदेशानुसार प्रति 5 वर्ष में होने वाले जम्बूद्वीप महोत्सव की श्रृँखला में तृतीय जम्बूद्वीप महोत्सव 16 से 23 अप्रैल तक स्वयं माताजी के ससंघ सानिध्य में आयोजित किया गया। इसी शुभ अवसर पर ऋषभदेव पंचकल्याणक प्रतिष्ठा भी आयोजित थी। महोत्सव के प्रमुख यजमान थे–श्री दीपक कुमार जैन सुपुत्र श्री विमलेश कुमार जैन, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली। 16 अप्रैल, चैत्र शुक्ला 13 को महावीर जयंती के शुभ दिन झण्डारोहण तथा भगवान महावीर के पंचामृत एवं 1008 कलशों से अभिषेक के द्वारा महोत्सव तथा पंचकल्याणक का शुभारंभ हुआ। 16 से 18 अप्रैल तक पंचकल्याणकसंबंधी पूर्व क्रियाएँ सम्पन्न हुईं। 19 से 23 अप्रैल तक क्रमशः पंचकल्याणक की विधि हुईं। पंचकल्याणक के समस्त कार्यक्रम ऋषभदेव मंडप में सम्पन्न हुए।

जम्बूद्वीप स्थल पर निर्मित होने वाले सहस्रकूट जिनालय का शिलान्यास महावीर जयंती 16 अप्रैल के शुभ दिन मंदिर निर्माता श्री महेशचंद जैन, मॉडल टाउन, दिल्ली के करकमलों से सम्पन्न हुआ। शिलान्यास के समय गणिनी माताजी ने ससंघ उपस्थित रहकर मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी बने गुलमोहर पार्क-दिल्ली निवासी श्री विमलेश कुमार जैन एवं उनकी ध.प. श्रीमती बाला जैन (दीपक जैन के माता-पिता), माता-पिता बने श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति एवं श्रीमती कुसुमलता जी, साउथ एक्स., दिल्ली, यज्ञनायक श्री अनिल जैन, कमल मंदिर-प्रीतविहार। धनकुबेर का सौभाग्य-प्रमुख यजमान श्री दीपक जैन को प्राप्त हुआ।

15 वर्षों के पश्चात् तीन मूर्ति मंदिर के ऊपर शिखर बनकर कलशारोहण हुआ–सन् 1985 में तीनमूर्ति मंदिर में प्रतिमाएँ विराजमान हो गई थीं किन्तु शिखर एवं कलशारोहण 15 वर्ष तक नहीं हो पाया। केन्द्रीय मंत्री श्री धनंजय कुमार की उपस्थिति में 23 अप्रैल को कलश निर्माता श्री नरेशचंद जैन-गांधीनगर,दिल्ली को सुयोग प्राप्त हुआ कलशारोहण तथा ध्वजारोहण का। समारोह में प्रमुख अतिथि के रूप में पधारे थे केन्द्रीय उद्योग मंत्री डॉ. रमन सिंह। उनका भावभीना स्वागत किया गया।

20 अप्रैल 2000 वैशाख कृष्णा दूज को पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का 45वाँ आर्यिका दीक्षा दिवस मनाया गया। विनयांजलि सभा की अध्यक्षता श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति ने की तथा मुख्य अतिथि थे श्री बाबूलाल पहाड़े-हैदराबाद। अनेक भक्तों ने अपनी विनयांजलि प्रस्तुत की। मैंने तथा पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने अपने उद्बोधन में माताजी द्वारा किये जा रहे महान कार्यों की महिमा बतलाई। पूज्य गणिनी माताजी ने अपने दीक्षाप्रदाता गुरु आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज का स्मरण करते हुए उनके द्वारा प्रदत्त शिक्षाओं का उल्लेख अपने आशीर्वचनों में किया। आगत भक्तों ने पूज्य माताजी के पादप्रक्षालन करके नूतन

पिच्छिका व शास्त्र भेंट किये। अंत में श्रावकों तथा संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनों ने माताजी की आरती उतारी।

ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ का शिलान्यास–21 अप्रैल 2000 को जम्बूद्वीप स्थल पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ के मंगल सानिध्य में भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ का शिलान्यास संघपति लाला महावीर प्रसाद जी बंगाली स्वीट, साउथ एक्स. नई दिल्ली के करकमलों से सम्पन्न हुआ। कीर्तिस्तंभ का निर्माण भी संघपति जी की ओर से हुआ। सभा की अध्यक्षता लाला प्रेमचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली ने की। मुख्य अतिथि के रूप में केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री श्री धनंजय कुमार जैन पधारे थे। मैंने जम्बूद्वीप रचना निर्माण तथा जम्बूद्वीप स्थल के विकास का गौरवपूर्ण इतिहास बताया। श्री धनंजय कुमार जी ने अपने भाषण में कहा कि मुझे इस स्थल पर तीसरी बार आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यहाँ आकर बड़ी शांति प्राप्त होती है। पूज्य माताजी ने जैन संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए बड़े-बड़े कार्य किये हैं तथा कर रही हैं। उन्होंने कहा कि मुझे माताजी की प्रेरणा से कई धार्मिक कार्यक्रमों में सम्मिलित होने का पुण्ययोग प्राप्त होता रहा है। श्री महावीर प्रसाद जी ने पूज्य माताजी की प्रेरणा से अन्यत्र भी कीर्तिस्तंभों का निर्माण कराया है। पूज्य गणिनी माताजी ने अपने आशीर्वचन में सभी को आशीर्वाद प्रदान करते हुए भगवान ऋषभदेव के प्रचार-प्रसार में सक्रिय योगदान के लिए प्रेरित किया।

23 अप्रैल को 7 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की धवल प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक हुआ। इस प्रतिमा का निर्माण संघपति श्री महावीर प्रसाद जी की ओर से हुआ है। जम्बूद्वीप महोत्सव के उपलक्ष्य में जम्बूद्वीप रचना के मध्य स्थित सुदर्शन मेरुपर्वत की पांडुक शिला पर समवसरण रथप्रवर्तन में बोली लेने वाले भाग्यशाली महानुभावों को अभिषेक करने का अवसर प्राप्त हुआ। महोत्सव के समापन के अवसर पर रथयात्रा निकाली गई।

सनावद में निर्माणाधीन णमोकारधाम स्थल पर भगवान ऋषभदेव चैत्यालय की स्थापना–सनावद (म.प्र.) में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में स्थापित णमोकार धाम स्थल पर 13 अप्रैल 2000 को वेदी शुद्धिपूर्वक एक कक्ष में भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा विराजमान की गई। कार्यक्रम में संघ से कु. चन्द्रिका बहन को भेजा गया था।

4 जून 2000-ज्येष्ठ शुक्ला दूज से 12 जून 2000 ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी तक पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में जम्बूद्वीप स्थल पर डॉ. पन्नालाल जैन पापड़ीवाल (पैठण) महा. एवं श्री प्रकाशचंद जैन-टिकैतनगर एवं श्री आनंद जैन, जैन मार्बल-मेरठ द्वारा इन्द्रध्वज मंडल विधान सोल्लास सम्पन्न किया गया। 6 जून 2000 ज्येष्ठ शुक्ला

पंचमी को पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में 'श्रुतपंचमी' पर्व विविध कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। जिनवाणी को ऐरावत हाथी पर विराजमान करके परिसर में शोभायात्रा निकाली गई। जिनवाणी की पूजा की गई। पूज्य माताजी ने 'श्रुतपंचमी' पर्व की महत्ता पर प्रकाश डाला।

मनीषी इतिहासकारों का सफल सम्मेलन–जैन तीर्थंकर परम्परा की समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए तथा इतिहास की पुस्तकों में जैनधर्म के विषय में लिखी गई भ्रामक बातों का निराकरण करने के लिए पूज्य गणिनी माताजी की प्रेरणा से जम्बूद्वीप स्थल पर देश के इतिहासकारों, पुरातत्त्वविदों तथा विद्वानों का एक सम्मेलन 11 जून 2000 को संघ के सानिध्य में रखा गया था। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'प्राचीन भारत' नामक इतिहास की पुस्तक में डॉ. आर.एस. शर्मा-पटना (बिहार) के जैनधर्मविषयक भ्रामक लेख पर विशेष चर्चा हुई। संगोष्ठी के संयोजक श्री खिल्लीमल जैन-अलवर (राज.) थे। संगोष्ठी में यह भी बताया गया कि प्रो.आर.एस. शर्मा ने पाठ संशोधित करके ऋषभदेव का नया पाठ जोड़ने की इच्छा व्यक्त की है। सम्मेलन में एन.सी.ई.आर.टी. के प्रतिनिधि के रूप में डॉ. प्रीतिश आचार्य (रीडर) विशेषरूप से पधारे थे। विद्वान वक्ताओं के अतिरिक्त मैंने, प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी व गणिनी माताजी ने सम्मेलन को सम्बोधित किया। समागत विद्वानों का संस्थान की ओर से भावभीना स्वागत किया गया।

हस्तिनापुर से विहार से पूर्व 20 जून को प्रातः श्री कमलचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली की ओर से निर्मित होने वाले कैलाशपर्वत के हाल का शिलान्यास श्री कमलचंद जी जैन सपरिवार ने किया।

दिल्ली के लिए मंगल विहार–20 जून 2000 को पूज्य माताजी ने हस्तिनापुर से दिल्ली के लिए ससंघ विहार कर दिया। संघ में पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, मैं, क्षुल्लिका श्री श्रद्धामती माताजी तथा 8 ब्रह्मचारिणी बहनें थीं। 10 जुलाई 2000 को कमल मंदिर, प्रीतविहार-दिल्ली में मंगल पदार्पण हुआ। श्री अनिल कुमार जैन तथा प्रीतविहार की दिगम्बर जैन समाज तथा दिल्ली की विभिन्न कॉलोनियों के भक्तों ने संघ का श्रद्धाभक्ति से स्वागत किया। पादप्रक्षाल तथा आरती करके पुष्पवृष्टि की। कमल मंदिर में विराजमान भगवान ऋषभदेव की अष्टधातु की अति मनोज्ञ प्रतिमा के दर्शन कर सबका मन प्रफुल्लित हो गया। श्री अनिल जी ने वर्ष 2000 का चातुर्मास कमल मंदिर में करने की प्रार्थना की, जिसे माताजी ने सहर्ष स्वीकार किया।

पैंतालिसवाँ चातुर्मास (सन् 2000-कमल मंदिर, प्रीतविहार-दिल्ली में)

20 जून 2000 को पूज्य ज्ञानमती माताजी ने ससंघ हस्तिनापुर से दिल्ली की ओर मंगल विहार किया। विहार के मध्य में आने वाले मेरठ व गाजियाबाद नगर में पूज्य माताजी का प्रवास रहा। भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष्य में 1008 संगोष्ठियों को करने की घोषणा हुई थी जिसमें से कुछ संगोष्ठियाँ मेरठ की कुछ कालोनियों में व गाजियाबाद में पूज्य माताजी के सानिध्य में हुईं।

15 जुलाई 2000 को पूज्य माताजी ने ससंघ कमल मंदिर प्रीतविहार-दिल्ली में इस सदी के अंतिम चातुर्मास की स्थापना की। आषाढ़ का महीना पर्व मास के रूप में प्रसिद्ध है क्योंकि इस माह में साधु-साध्वी स्थान-स्थान पर चातुर्मास की स्थापना करते हैं तथा वहाँ की जनता को धर्मलाभ प्राप्त होता है। पूज्य माताजी के इस वर्ष के चातुर्मास का लाभ प्रीतविहार जैन समाज को प्राप्त हुआ। चातुर्मास स्थापना की सभा का शुभारंभ मंगलाचरण द्वारा श्री महावीर प्रसाद जैन (संघपति), बंगाली स्वीट सेंटर ने किया। चातुर्मास की सभा प्रीतविहार के दिगम्बर जैन मंदिर में हुई। सभा में श्री चक्रेश जैन-दिल्ली, डॉ. अनुपम जैन-इंदौर तथा श्रीमती आशा जैन-अध्यक्षा अखिल भारतीय महिला संगठन दिल्ली ने अपने विचार प्रस्तुत किये। इसी अवसर पर पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा लिखित "ऋषभदेव दशावतार नाटक" और "संस्कृत साहित्य के विकास में गणिनी ज्ञानमती माताजी का योगदान" पुस्तक का भी विमोचन हुआ। मैंने चातुर्मास के मध्य होने वाले विभिन्न धार्मिक, शैक्षणिक कार्यक्रमों में समाज के सभी लोगों को भाग लेने की प्रेरणा दी। पूज्य चंदनामती माताजी ने कहा कि यह पूज्य माताजी का 48वाँ चातुर्मास है। जिस प्रकार आचार्य मानतुंग स्वामी ने 48 काव्य रचकर 48 ताले तोड़ दिये थे, उसी प्रकार से पूज्य माताजी का 48वाँ चातुर्मास भगवान ऋषभदेव की भक्ति में समर्पित होकर कर्मश्रृंखला को तोड़ने के साथ नूतन इतिहास बनाएगा। जैन समाज के नेता उम्मेदमल जी पाण्ड्या ने पूज्य माताजी से चातुर्मास में पूरी दिल्ली भ्रमण को खुला रखने की तथा भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव में अपना सानिध्य प्रदान करने की प्रार्थना की। पूज्य माताजी ने सभी को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। जैन समाज प्रीतविहार के अध्यक्ष श्री सागरचंद जैन तथा महामंत्री-श्री अतुल कुमार जैन का इस कार्यक्रम में पूरा सहयोग रहा। पूज्य माताजी ने कहा कि यह प्रथम अवसर है, जब किसी श्रावक के आग्रह पर मैंने किसी कालोनी में चातुर्मास स्थापना की स्वीकृति दी। श्री अनिल कुमार जैन कागजी का यह पुण्य है, जो उनके आग्रह को पूज्य माताजी ने स्वीकार किया, पर उनके निमित्त से संपूर्ण प्रीतविहार की जैन समाज ने 4 महीने तक धर्मामृत का पान कर अपने को धन्य माना।

अनिल कुमार जैन की भक्तिभावना—विरले ही ऐसे व्यक्ति होते हैं, जब उनके भाव अपने घर में चैत्यालय बनाने के होते हैं। पूज्य माताजी के मांगीतुंगी विहार के समय सन् 1995 में पूज्य माताजी के सानिध्य में अनिल जी ने अपने गृह चैत्यालय का शिलान्यास करवाया, जिसने एक विशाल कमल मंदिर का रूप ले लिया। कई दिनों से उनकी भावना थी कि एक बार पूज्य माताजी का चातुर्मास यहाँ हो। वही भावना फलीभूत हुई और वह अवसर भी आ गया। अनिल जी की उदार भावना देखिए, उन्होंने अपनी पूरी कोठी खाली कर पूरे संघ को उसमें ठहराया और स्वयं अपने परिवार के साथ फ्लैट में रहे। इस कार्य में उन्हें अपनी धर्मपत्नी श्रीमती अनिता जी का भी पूरा सहयोग मिला। तीनों बच्चों–पुत्र अतिशय और पुत्रियों अनामिका (अनु) और अंतिमा ने भी पूरे चातुर्मास में पूज्य माताजी के संघ की सेवा वैय्यावृत्ति की। पूरे परिवार ने हर्षपूर्वक संघ की भक्ति की और आगंतुक अतिथियों का भी खूब स्वागत सत्कार किया। अनिल जी ने सपरिवार पूरे समय आहारदान व गुरु सेवा कर असीम पुण्य अर्जित किया।

चातुर्मास के मध्य विभिन्न आयोजन—चातुर्मास के मध्य होने वाले प्रत्येक कार्यक्रमों में समाज के प्रत्येक व्यक्ति ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। भगवान पार्श्वनाथ निर्वाण दिवस, रक्षाबंधन पर्व, संगोष्ठियाँ, अनेक प्रतियोगिताएँ सम्पन्न हुईं। दशलक्षण पर्व में प्रतिदिन दि. जैन मंदिर में पूज्य माताजी के दशधर्मों पर मंगल प्रवचन हुए और रात्रि में भावान ऋषभदेव के दशावतार पर नाटक का मंचन और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।

कैलाश मानसरोवर यात्रा—पूज्य माताजी की मंगल प्रेरणा से प्रीतविहार जैन समाज की ओर से विकासमार्ग पर कॉफी होम के निकट 30 सितम्बर से 7 अक्टूबर तक विशाल मैदान में कैलाश पर्वत की रचना कर "कैलाश मानसरोवर यात्रा" का सुंदर आयोजन किया गया। जिसकी यात्रा कर दिल्ली तथा अनेक नगरों से पधारे जनसमूह ने साक्षात् कैलाशपर्वत की यात्रा का आनंद प्राप्त किया। आयोजन के मध्य में 1 अक्टूबर को पर्वत पर विराजमान भगवान ऋषभदेव एवं 72 रत्नप्रतिमाओं का मस्तकाभिषेक किया गया। 2 अक्टूबर को 48 भक्तामर महामण्डल विधानों को एक साथ 48 मंडल बनाकर सम्पन्न करने का अवसर भी प्राप्त हुआ। पूज्य माताजी के 48वें चातुर्मास के उपलक्ष्य में ये 48 विधान एक ही पाण्डाल में आयोजित होकर विशाल विश्वशांति यज्ञ का दृश्य उपस्थित कर रहे थे। इस समारोह का उद्घाटन दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित द्वारा किया गया।

पूज्य माताजी का 67वाँ जन्मजयंती समारोह—13 अक्टूबर 2000, आश्विन शुक्ला पूर्णिमा को प्रीतविहार दिल्ली में विशाल पाण्डाल बनाकर पूज्य माताजी का 67 वाँ जन्मदिवस समारोह मनाया गया। शरदपूर्णिमा की पावन बेला में सभी ने पूज्य

माताजी के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित की। इस अवसर पर 'दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर की ओर से कुछ पुरस्कार निम्न महानुभावों को प्रदान किये गये-'जम्बूद्वीप रिलीजियस एवार्ड'-मेरठ निवासी श्री कैलाशचंद जैन-इंजीनियर, 'गणिनी ब्राह्मी पुरस्कार'-श्रीमती आशा जैन (अध्यक्षा-दिल्ली प्रदेश महिला संगठन) को, 'आर्यिका रत्नमती पुरस्कार'-प्रो. टीकमचंद जैन, शाहदरा-दिल्ली को। धार्मिक क्षेत्र में अपनी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए इन्हें इन पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

षष्ठीपूर्ति समारोह—प्रारंभ से ही पूज्य माताजी ने अपने शिष्यों को हर क्षेत्र में आगे बढ़ाकर उनका उत्साहवर्धन किया है तथा उनको अपना वात्सल्य प्रदान किया है। सन् 1967 में मेरी जन्मनगरी सनावद (म.प्र.) में पूज्य माताजी का चातुर्मास हुआ, तभी माताजी के संबोधन से मैंने घर छोड़कर संघ में प्रवेश किया। संघ में रहकर अध्ययन किया तथा पूज्य माताजी की प्रेरणा से कराये गये प्रत्येक कार्य को पूर्ण मनोयोग से सम्पन्न करके पुण्यार्जन किया है। इतना लम्बा समय पूज्य माताजी के सानिध्य में रहकर व्यतीत हो गया।

26 सितम्बर 2000, आश्विन वदी 14 को मैंने (क्षुल्लक मोतीसागर) अपने जीवन के 60 वर्ष पूर्ण किये। उसी उपलक्ष्य में कमलमंदिर, प्रीतविहार में षष्ठिपूर्ति समारोह मनाया गया। अनेक लोगों ने 61-61 वस्तुएँ अपनी ओर से वितरित कीं। पूज्य माताजी ने मुझे तथा आगन्तुक जनों को अपना मंगल आशीर्वाद दिया तथा मुझे पूज्य माताजी ने नई पिच्छी प्रदान की। पूज्य माताजी ने मुझे संसाररूपी कुंए से निकालकर मोक्षमार्ग में लगाया है। इनके उपकारों को मैं कभी नहीं भूल सकता।

विश्वशांति शिखर सम्मेलन—संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा आयोजित विश्वशांति शिखर सम्मेलन में धर्माचार्य के रूप में कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन ने दिगम्बर जैन समाज का प्रतिनिधित्व किया। यह सम्मेलन युनाइटेड नेशन्स द्वारा न्यूयार्क (अमेरिका) में 28 से 31 अगस्त 2000 तक आयोजित था। संपूर्ण भारत से निमंत्रित 100 से भी अधिक सम्प्रदाय के धर्माचार्यों ने इसमें भाग लिया। दिगम्बर जैन धर्म का प्रतिनिधित्व करते हुए ब्र. रवीन्द्र जी ने पूज्य माताजी की आज्ञा से वहाँ जाकर विश्वभर में जैनधर्म के प्राचीन एवं अहिंसामयी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार इस माध्यम से किया।

शिलान्यास समारोह—प्रयाग-इलाहाबाद में ''तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ'' का शिलान्यास समारोह 4 अक्टूबर 2000 को सम्पन्न हुआ। जहाँ पूज्य माताजी की प्रेरणा से इलाहाबाद-बनारस हाइवे पर दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर द्वारा भूमि क्रय कर नूतन तीर्थ का निर्माण किया गया।

प्रीतविहार में सन् 2000 के ऐतिहासिक चातुर्मास का पूज्य माताजी ने दीपावली के दिन अपनी आगमोक्त विधि से निष्ठापन किया। इस चातुर्मास के मध्य भगवान

ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञानभूमि प्रयाग-इलाहाबाद में नूतन तीर्थ निर्माण की रूपरेखा बनी और अनेक कार्य सम्पन्न हुए। बीसवीं सदी का यह ऐतिहासिक चातुर्मास स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा।

मंगल विहार—नूतन तीर्थ 'तपस्थली' पर 4 से 8 फरवरी 2001 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं भगवान ऋषभदेव के 1008 महाकुंभों से मस्तकाभिषेक महोत्सव में अपना पावन सानिध्य प्रदान करने हेतु पूज्य गणिनी माताजी ने संघ सहित 1 नवम्बर 2000 को प्रातः कमलमंदिर प्रीतविहार-दिल्ली से प्रयाग की ओर मंगल विहार किया। विहार के मध्य में अनेक नगरों में पूज्य माताजी के आगमन पर संघ का भव्य स्वागत हुआ। पूज्य माताजी ने जन-जन को भगवान ऋषभदेव के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार कर जैनधर्म की प्राचीनता को सिद्ध करने की प्रेरणा दी। पूरे रास्ते महती धर्मप्रभावना हुई तथा सबने अपने नगर में पूज्य माताजी के चरण पड़ने पर अपने को धन्य माना।

नई सदी का नव उपहार-तीर्थ प्रयाग हुआ साकार—53 दिवसीय अपनी यात्रा के पश्चात् पूज्य माताजी ने प्रयाग में मंगल प्रवेश किया, वह दृश्य अनूठा था। 1 जनवरी 2001 की शुभबेला में पूज्य माताजी ने नवनिर्मित हो रहे तीर्थ ''तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली'' में जब प्रवेश किया, तो मात्र 1 महीने में कुछ कार्य ही हो पाया था परन्तु पूज्य माताजी के चरण पड़ते ही मात्र 2 माह के अल्पकाल में ही उस भूमि पर तीर्थ परिसर में निर्मित 51 फुट ऊँचे कैलाशपर्वत पर 14 फुट उत्तुंग पद्मासन भगवान ऋषभदेव की लालवर्णी प्रतिमा विराजमान हो गईं। पर्वत के दाहिनी ओर भगवान के दीक्षाकल्याणक के प्रतीक में 'दीक्षाकल्याणक तपोवन' मंदिर में विशाल धातु के वटवृक्ष के नीचे भगवान ऋषभदेव की 5 फुट खड्गासन प्रतिमा स्थापित की गईं तथा पर्वत के बाईं ओर ज्ञानकल्याणक के प्रतीक में 'समवसरण रचना' में चतुर्मुखी प्रतिमा विराजमान की गईं। इन सभी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा कर उन्हें जगत्पूज्य बनाने के लिए पूज्य माताजी की प्रेरणा से 4 से 8 फरवरी 2001 तक भगवान ऋषभदेव पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक का विराट आयोजन किया गया। भगवान ऋषभदेव की उत्तुंग प्रतिमा का 1008 महाकुंभों से विश्व में प्रसिद्ध कुंभनगरी में महामस्तकाभिषेक किया गया।

इसी कार्यक्रम के साथ 'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष' का समापन हुआ और भगवान महावीर 2600वां जन्मकल्याणक महोत्सव कार्यक्रम के शुभारंभ की घोषणा हुई।

विश्वशांति महावीर विधान—मंगल विहार के मध्य पूज्य माताजी ने भगवान महावीर के 2600वें जन्मजयंती समारोह के उपलक्ष्य में 2600 मंत्रों से समन्वित 'विश्वशांति महावीर विधान' नामक नूतन कृति की रचना की, जिसे भगवान ऋषभदेव

के चरणों में प्रयाग तीर्थ पर पूर्ण कर भगवान महावीर के प्रति भक्ति सुमन समर्पित किये। उस हस्तलिखित कृति का लोकार्पण मुख्य अतिथि श्री धनंजय जी द्वारा किया गया।

नवम धर्म संसद में पूज्य माताजी—स्वर्णिम इतिहास का निर्माण करते हुए प्रयाग के विश्वप्रसिद्ध 12 वर्षीय महाकुंभ मेले में प्रथम बार 'जैनधर्म' का प्रतिनिधित्व पूज्य माताजी एवं संघ ने किया। विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष श्री अशोक सिंघल एवं अन्य कार्यकर्ताओं के आग्रह पर पूज्य माताजी वहाँ पधारीं और त्रिदिवसीय आयोजन में 'भगवान ऋषभदेव सनातन संस्कृति संगम' मंडप में भगवान का अभिषेक, पूजन, विधान आदि कार्यक्रम हुए तथा भगवान ऋषभदेव के निर्वाणदिवस की पूर्व संध्या पर 21 जनवरी को इसी मण्डप में विशिष्ट अतिथियों के बीच 1008 निर्वाणलाडू चढ़ाये गये। नवम धर्मसंसद की सभा में पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी व पूज्य चंदनामती माताजी ने भगवान ऋषभदेव और उनके सर्वोदयी सिद्धान्तों को विश्वशांति के लिए महत्वपूर्ण बताया, जिसे वहाँ उपस्थित साधु-संतों ने व जनसमूह ने स्वीकार किया। भगवान ऋषभदेव के जयकारों से समस्त परिसर गुंजायमान हो गया।

पूज्य माताजी के सानिध्य में महावीर जयंती—प्रयागवासियों को पूज्य माताजी के सानिध्य में 2600वें जन्मजयंती समारोह को मनाने का अवसर प्राप्त हुआ। इस वर्ष को 'अहिंसावर्ष' के रूप में मनाये जाने की घोषणा हुई, जिसके अंतर्गत पूरे देश में वर्ष भर विभिन्न कार्यक्रम करने की पूज्य माताजी ने प्रेरणा दी। इस महोत्सव के मंगलाचरण रूप में पूज्य माताजी द्वारा रचित 'विश्वशांति महावीर विधान' का भव्य आयोजन 1 से 9 अप्रैल तक उन्हीं के ससंघ सानिध्य में किया गया। प्रथम बार इलाहाबाद के नवनिर्मित 'महावीर जयंती भवन' में सुमेरुपर्वत के आकर्षक मांडले से युक्त इस विधान में 2600 मंत्रों से समन्वित 2600 रत्न मांडले पर चढ़ाये गये। इस अद्भुत मण्डल विधान में अनेक धर्मनिष्ठ श्रद्धालुओं ने भाग लेकर पुण्यार्जन किया। महावीर जयंती के अवसर पर 6 अप्रैल को पूज्य माताजी के सानिध्य में अहिंसा रैलीरूप 2600 बच्चों का ध्वजा लेकर चलना, ऐरावत हाथी, रथ, इंद्राणियों की मंगल कलश यात्रा, भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ आदि का जुलूस बैंड-बाजे के साथ भव्यरूप में निकाला गया। जगह-जगह प्रसाद वितरण हुआ। धर्मसभा में नगर के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। पांडुकशिला पर 1008 कलशों से न्हवन शुरू हुआ तथा रात्रि में भी पालना झुलाना आदि अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।

कौशाम्बी का इतिहास जीवंत हुआ—पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से उनके मंगल सानिध्य में 2 से 7 मई 2001 तक भगवान पद्मप्रभु के गर्भ-जन्म-तप-ज्ञानकल्याणक से पवित्र कौशाम्बी-प्रभासगिरी तीर्थ पर सवा सात फुट उत्तुंग

भगवान पद्मप्रभ की लालवर्णी मनोहारी पद्मासन प्रतिमा एवं ढाई फुट ऊँची मूलनायक पद्मप्रभ भगवान की पद्मासन प्रतिमा तथा नवनिर्मित मानस्तंभ में विराजित होने वाली चतुर्मुखी प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

इस प्रतिष्ठा की ऐतिहासिक विशेषता यह रही कि 2565 वर्ष पूर्व के इतिहास को साकार करते हुए भगवान महावीर 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष के अंतर्गत पूज्य माताजी की प्रेरणा से महामुनि महावीर एवं उनको आहार प्रदान करते हुए महासती चंदना की प्रतिमा स्थापित की गई। जनसमूह के मध्य महामुनि महावीर को आहारदान देने का दृश्य दिखाया गया, जिसमें संघपति श्री महावीर प्रसाद जैन, बंगाली स्वीट्स दिल्ली ने इस प्रतिमा की स्थापना एवं प्रथम आहार देने का पुण्य प्राप्त किया।

मंगल विहार—भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि को 'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग' के भव्य निर्माण द्वारा वास्तविक तीर्थ का स्वरूप प्रदान कर पूज्य गणिनी माताजी ने ससंघ 22 अप्रैल 2001 को तपस्थली तीर्थ से राजधानी दिल्ली की ओर मंगल विहार किया।

अशोक विहार दिल्ली की जैन समाज के पदाधिकारी पूज्य माताजी के मंगल विहार के मध्य पधारे, उनके अतीव आग्रह पर पूज्य माताजी ने अशोक विहार फेज-1-दिल्ली में चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान कर दी।

छियालिसवाँ चातुर्मास (सन् 2001-अशोक विहार-फेस-1-दिल्ली में)

4 जुलाई को श्री दिगम्बर जैन मंदिर, अशोक विहार, फेज-1 में मध्यान्हकालीन सभा में पूज्य माताजी ने अपने चातुर्मास स्थापना की घोषणा की। भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री साहिब सिंह वर्मा मुख्य अतिथि तथा श्री दीपचंद बंधु (विधायक) विशिष्ट अतिथि रहे एवं सभा की अध्यक्षता साहू श्री रमेशचंद जैन ने की। रात्रि में पूज्य माताजी ने अपने संघस्थ साधुओं के साथ मंत्रोच्चार एवं भक्तिपाठपूर्वक चारों दिशाओं में पुष्प क्षेपण कर विधिपूर्वक चातुर्मास की स्थापना की।

15 जुलाई 2001 को अशोक विहार में दिल्ली जैन समाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं की मीटिंग में भगवान महावीर 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत होने वाले प्रथम महाआयोजन के रूप में होने वाले 'विश्वशांति महावीर विधान' की नवगठित समिति का अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन को मनोनीत किया गया। यह आयोजन 21 से 28 अक्टूबर 2001 तक होना निश्चित हुआ। एक ही पाण्डाल में 26 मण्डल बनाकर प्रत्येक मांडले पर 100 व्यक्तियों को 2600 मंत्रों के साथ रत्न चढ़ाकर भगवान महावीर की पूजन हेतु 'विश्वशांति महावीर विधान' के इस अपूर्व आयोजन का सुअवसर प्राप्त हो, ऐसी व्यवस्था की रूपरेखा बनी।

भक्ति महाकुंभ की शृँखला में प्रथम राष्ट्रीय आयोजन—दिल्ली के ऐतिहासिक फिरोजशाह कोटला मैदान के 'भगवान महावीर मंडप' में 21 से 28 अक्टूबर तक 'विश्वशांति महावीर विधान' का विराट आयोजन किया गया। 6 अप्रैल को आयोजित उस भव्य कार्यक्रम के पश्चात् पूज्य माताजी की प्रेरणा से राजधानी दिल्ली में 26 मण्डल बनाकर विश्वशांति की कामना से रत्नों द्वारा भगवान महावीर की आराधना करने वाला यह प्रथम राष्ट्रीय आयोजन था। उद्घाटन सभा की अध्यक्षता केन्द्रीय टेक्सटाइल राज्यमंत्री श्री वी. धनंजय कुमार जैन ने की तथा मुख्य अतिथि टाइम्स ग्रुप की अध्यक्षा श्रीमती इन्दु जैन थीं। इस अवसर पर 'कुण्डलपुर के राजकुमार भगवान महावीर' के चित्र का एवं नूतन कृति 'विश्वशांति महावीर विधान' का विमोचन दोनों महानुभावों ने किया। इस विधान के 26 मण्डलों में से प्रथम मण्डल में राजा सिद्धार्थ एवं रानी त्रिशला के रूप में श्रेष्ठी श्री कमलचंद जी जैन-खारीबावली, दिल्ली एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मैनासुन्दरी ने सपरिवार पूजन करने का सौभाग्य प्राप्त किया। इस विधान का मुख्य आकर्षण थे सुमेरु के आकार के बने प्रत्येक मण्डल पर चढ़ने वाले 2600-2600 रत्न, जिन्हें देखने के लिए देश के कोने-कोने से लोग आ रहे थे और पूज्य माताजी की प्रशंसा करते नहीं थकते थे। यह विधान रत्नों द्वारा पूजा के कारण समस्त विधानों से अलग ही सुशोभित हो रहा था। इस विधान की जाप्य में मंत्रित किये गये रत्नों को धनकुबेर श्रद्धालुओं में वितरित करता था, जिसे प्राप्त करने के लिए लोगों में होड़ लगी रहती थी, यह दृश्य भी अभूतपूर्व होता था। भगवान महावीर के जन्मकल्याणक के प्रतीक में प्रतिदिन रात्रि में पालना झुलाया जाता था एवं विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए। प्रतिदिन विधान के पश्चात् 2 घंटे तक "ॐ ह्रीं विश्वशांतिकराय श्री महावीरजिनेन्द्राय नमः" इस मंत्र का अखण्ड जाप्य होता था, जिसमें देश में व विश्व में शांति की कामना की जाती थी। पूर्णाहुति के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। 26 मण्डलों के भगवन्तों, सुमेरुपर्वत की 26 प्रतिकृतियों का महाभिषेक, शांतिधारा एवं मंगल आरती हुई।

'गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार' सम्मान—25 अक्टूबर को सायंकालीन सभा में जैन साहित्य में अपना विशेष योगदान प्रदान करने वाले पं. श्री शिवचरनलाल जैन-मैनपुरी को दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान का प्रमुख पुरस्कार श्री अनिल कुमार अतिशय कुमार जैन, कमल मंदिर-प्रीतविहार-दिल्ली के सौजन्य से 'गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

विभिन्न उपाधियों से माताजी का सम्मान—पूज्य माताजी को समय-समय पर आचार्यों, समाज, विश्वविद्यालय व गुरुओं के द्वारा अनेक उपाधियाँ प्रदान की गईं। उसी

शृँखला में महाराष्ट्र प्रांत के प्रतिनिधियों ने 'राष्ट्रगौरव', अवध प्रांत द्वारा 'धर्ममूर्ति' एवं दिल्ली के प्रतिनिधि मण्डल ने 'विश्वविभूति' की उपाधि से विभूषित कर अपने-अपने प्रांत का गौरव माना।

इस महाआयोजन के अवसर पर प्रथम मण्डल के प्रमुख भक्त राजा सिद्धार्थ श्री कमलचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली को पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं ससंघ सानिध्य में दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा 'दानवीर-समाजरत्न' की उपाधि से अलंकृत किया गया।

पावापुरी की रचना बनी—पूज्य माताजी की प्रेरणा से उनके ससंघ सानिध्य में राजधानी दिल्ली के कनॉट प्लेस-राजाबाजार स्थित श्री अग्रवाल दि. जैन मंदिर के प्रांगण में पावापुरी सिद्धक्षेत्र की स्थाई एवं विशाल रचना बनाकर "दीपावली" के शुभ दिन 15 नवम्बर को प्रातः 2600 निर्वाण लाडू चढ़ाने का भव्य आयोजन किया गया।

मौन यात्रा एवं सर्वधर्म सम्मेलन—भगवार महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव एवं दिल्ली प्रदेश समिति के तत्त्वावधान में भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव के उपलक्ष्य में तथा हिंसा एवं आतंकवाद के विरोध में एक विशाल जैन पदयात्रा विजय चौक से इण्डिया गेट तक 18 नवम्बर को आयोजित की गई, जिसमें हजारों स्कूली बच्चों ने तथा गणमान्य लोगों ने अपने हाथ में लिए बैनरों से अहिंसा एवं भाईचारे का संदेश दिया।

पदयात्रा के पश्चात् इण्डिया गेट पर आयोजित सभा में दिगम्बर जैन समाज की ओर से पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने अपना उद्बोधन दिया। यह प्रथम अवसर था, जब 'इण्डिया गेट' से जैन समाज द्वारा अहिंसा एवं शांति का संदेश प्रसारित किया गया।

भगवान महावीर दीक्षा कल्याणक दिवस—10 दिसम्बर 2001 को राजधानी दिल्ली के तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में जैन समाज के सभी संप्रदायों के 200 से भी अधिक साधु-साध्वियों के सानिध्य में 'जप तप महाकुंभ' के रूप में भगवान महावीर का दीक्षाकल्याणक महोत्सव एक विलक्षण रूप में सम्पन्न हुआ। जिसमें पूज्य माताजी ने भी अपना ससंघ सानिध्य प्रदान किया और उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित किया।

रजत जयंती समारोह—6 जनवरी 2002 को राजधानी दिल्ली के फिक्की ऑडिटोरियम में पूज्य माताजी एवं संघ के सानिध्य में अखिल भारतवर्षीय दि. जैन युवा परिषद का रजत जयंती समारोह-राष्ट्रीय युवा सम्मेलन का वृहद् आयोजन हुआ, जिसे दिल्ली प्रदेश शाखा ने आयोजित किया, जिसका मुख्य विषय था "भगवान महावीर 2600वें जन्मजयंती महोत्सव वर्ष में युवाओं की भूमिका"। समारोह के मुख्य

अतिथि थे प्रख्यात विधिवेत्ता एवं सांसद डॉ.एल.एम.सिंघवी एवं विशिष्ट अतिथि श्री डॉ. वाचस्पति उपाध्याय (कुलपति-डॉ. लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ) थे। समारोह की अध्यक्षता युवा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी ने की। समारोह में "कुण्डलपुर के राजकुमार भगवान महावीर" के चित्र का अनावरण किया गया। कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार ही भगवान महावीर की वास्तविक जन्मभूमि है और उसका विकास किया जाये। इस विषय पर सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया। समारोह में विभिन्न प्रांतों के पदाधिकारियों ने भाग लिया। पूज्य माताजी ने सभी युवाओं को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

तीर्थ विकास की ओर बढ़े कदम–भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार के विकास का संकल्प लेकर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का इण्डिया गेट दिल्ली से 20 फरवरी 2002 को मंगल विहार हुआ। यात्रा के संघपति बनने का सौभाग्य प्राप्त किया श्री महावीर प्रसाद जैन, बंगाली स्वीट सपरिवार एवं सहयोगी श्री प्रेमचंद जी जैन-खारीबावली-दिल्ली ने। पूज्य माताजी के हृदय में तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक भूमियों के विकास की भावना हर क्षण विद्यमान रहती है। जिन भगवान महावीर के शासनकाल में हम रह रहे हैं तथा जिनका 2600वाँ जन्मकल्याणक मनाया जा रहा है, उन भगवान की जन्मभूमि वीरान पड़ी हो, जहाँ कोई एक दीपक जलाने वाला न हो, ऐसी भूमि का विकास अवश्य होना चाहिए, इसी भावना को मन में लेकर पूज्य माताजी के चरण उस तीर्थ की ओर चल पड़े। पूज्य माताजी के इस संकल्प को पूर्ण करने के लिए सभी दिल्लीवासी और पूरा देश उनके पीछे चल पड़ा। जन-जन को एक नारा दिया गया–'तीरथ विकास क्रम जारी है अब कुण्डलपुर की बारी है।'

यात्रा के प्रथम पड़ाव के रूप में 'मथुरा' सिद्धक्षेत्र के दर्शन कर जंबूस्वामी के चरणों में अपने भक्ति सुमन अर्पित किये। उसके पश्चात् आगरा, फिरोजाबाद, एटा आदि महानगरों में भगवान महावीर जन्मभूमि के विकास की गूंज करते हुए संघ आगे बढ़ रहा था।

मांगीतुंगी में शिलापूजन समारोह–भगवान ऋषभदेव की परम्परा में अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष में 99 करोड़ महामुनियों की निर्वाणभूमि महाराष्ट्र प्रांत के मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के पर्वत की अखण्डशिला में भगवान ऋषभदेव 108 फुट विशालकाय मूर्ति निर्माण हेतु शिलापूजन समारोह 3 मार्च 2002 को श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, बंगाली स्वीट सेंटर, दिल्ली सपरिवार द्वारा सानंद सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दूर-दूर से हजारों श्रद्धालु भक्तों ने पधारकर अपना अहोभाग्य माना। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने सन् 1996 में मांगीतुंगी चातुर्मास के मध्य शरदपूर्णिमा के दिन इस प्रतिमा निर्माण की प्रेरणा प्रदान की थी, तब

से आज तक लगातार मूर्ति निर्माण कार्य जारी है।

कीर्तिस्तंभ का शिलान्यास–24 मार्च 2002, फाल्गुन शु. 10 को भगवान महावीर स्वामी की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ का शिलान्यास सानंद सम्पन्न हुआ। शिलान्यास 'समाजरत्न-दानवीर' श्री कमलचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली ने अपने परिवार सहित किया।

महिला सम्मेलन–31 मार्च 2001 को 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव के अंतर्गत पूज्य माताजी की प्रेरणा से अ.भा. दि. जैन महिला संगठन, दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में राष्ट्रीय प्रतिभाशाली महिला सम्मान, त्रिशला माता सम्मान समारोह एवं 5वाँ वार्षिकोत्सव फिक्की ऑडिटोरियम,नई दिल्ली में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

महावीर जयंती एवं दीक्षा दिवस–25 अप्रैल 2002 को फिरोजाबाद (उ.प्र.) में पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में महावीर जयंती कार्यक्रम की विशाल रथयात्रा निकाली गई, धर्मसभा हुई एवं रात्रि में 2600 दीपकों से भगवान की मंगल आरती की गई। राजधानी दिल्ली में भगवान महावीर जन्मकल्याणक वर्ष की समापन सभा सिरीफोर्ट ऑडिटोरियम नई दिल्ली में हुई। प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने समापन सभा में कहा कि इस समारोह का समापन न मानकर भगवान महावीर के सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार की शृँखला जारी रहनी चाहिए। पूज्य माताजी ने भी अपना मंगल आशीर्वाद नेताओं के लिए व जनता के लिए प्रेषित किया।

28 अप्रैल, वैशाख कृष्णा दूज को भारी भीड़ के मध्य माताजी का 47वाँ आर्यिका दीक्षा दिवस समारोह मनाया गया। इस अवसर पर सकल दिगम्बर जैन समाज फिरोजाबाद ने पूज्य माताजी को 'युगनायिका' की उपाधि से अलंकृत किया।

सैंतालिसवाँ चातुर्मास (2002, प्रयाग-इलाहाबाद में)

दिल्ली राजधानी से 20 फरवरी 2002 को कुण्डलपुर (नालंदा) तीर्थ के लिए मंगल विहार करते हुए पूज्य माताजी ससंघ 12 जून 2002 को प्रयाग तीर्थ पर पुनः पधारीं।

लोकार्पण एवं उद्घाटन–ऋषभदेव तपस्थली पर निर्मित अत्यंत सुंदर 51 फुट ऊँचे कैलाशपर्वत का निर्माण 1 वर्ष की अल्प अवधि में किया गया। फव्वारों एवं झरनों के प्राकृतिक सौंदर्य से समन्वित इस कैलाशपर्वत पर 72 जिनमंदिर स्थापित किये गये। इन 72 जिनमंदिरों में 24 जून, ज्येष्ठ शु. पूर्णिमा को पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में भूत, भविष्यत्, वर्तमानकाल की तीन चौबीसी की विधिपूर्वक प्रतिष्ठापना के साथ भव्य कैलाशपर्वत का उद्घाटन एवं लोकार्पण समारोह सम्पन्न किया गया। इस कैलाशपर्वत के निर्माण का सौजन्य प्रदान करने वाली स्व. श्रीमती सुलोचना जैन ध.प. श्री चेतनलाल जैन के सुपुत्र श्री सतेन्द्र कुमार जैन, प्रीतविहार-दिल्ली ने अपने परिवार

सहित इन प्रतिमाओं को विराजमान किया।

साथ ही श्री अनिल कुमार जैन, कमल मंदिर-प्रीतविहार के सौजन्य से निर्मित 31 फुट ऊँचे 'भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ' में भी 8 प्रतिमाएँ विराजमान की गईं।

वर्षायोग स्थापना—दिगम्बर जैन तीर्थ ऋषभदेव तपस्थली, प्रयाग पर तीर्थ की पावन प्रेरिका पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ की प्रथम बार वर्षायोग स्थापना 23 जुलाई आषाढ़ सुदी 14 को धर्मप्रभावनापूर्वक सम्पन्न हुई। इस अवसर पर दिल्ली, इलाहाबाद शहर एवं विविध प्रान्तों से आये भक्तों ने पूज्य माताजी को श्रीफल समर्पित कर चातुर्मास स्थापना हेतु निवेदन किया।

हस्तिनापुर तीर्थ पर पंचकल्याणक—भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ तीर्थंकरों की जन्मभूमि ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर में जम्बूद्वीपस्थल पर नवनिर्मित श्री सहस्रकूट जिनमंदिर का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद सम्पन्न हुआ। दिनाँक 11 जुलाई से 15 जुलाई 2002 तक होने वाले इस महोत्सव को कराने का श्रेय प्राप्त किया मंदिर निर्माता स्व. श्री मदनलाल जैन सर्राफ, मॉडल टाउन, दिल्ली के परिवार वालों ने। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से मेरे (क्षुल्लक मोतीसागर महाराज) सानिध्य में संपूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

शिलान्यास—15 अगस्त 2002 को श्रावणशुक्ला सप्तमी (14 अगस्त) भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। तत्पश्चात् तीर्थ पर श्री प्रकाशचंद जैन (इला.) एवं परिवार द्वारा 'महावीर प्रवचन हाल' का शिलान्यास किया गया। प्रवचन सभा एवं अन्य बड़े कार्यक्रमों हेतु शीघ्र ही इस हाल के निर्माण की घोषणा हुई।

त्रिदिवसीय भव्य कार्यक्रम—19 से 21 अक्टूबर तक ऋषभदेव समवसरण स्थापना, महामस्तकाभिषेक एवं कुण्डलपुर राष्ट्रीय महासम्मेलन का त्रिदिवसीय आयोजन किया गया। 19 अक्टूबर 2002 शनिवार को भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर राष्ट्रीय महासम्मेलन का उद्घाटन किया गया। प्रथम सत्र में दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान एवं द्वितीय सत्र में अ.भा.दि. जैन महिला संगठन एवं युवा परिषद का सम्मेलन हुआ। रात्रि में णमोकार महामंत्र लेखकों का पुरस्कार सम्मान रखा गया। 20 अक्टूबर को प्रातः कैलाश पर्वत पर विराजमान भगवान ऋषभदेव का महामस्तकाभिषेक हुआ। मध्यान्ह में महासम्मेलन के तृतीय सत्र में अ.भा.दि. जैन शास्त्री परिषद एवं तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ का अधिवेशन हुआ। पश्चात् सम्मान समारोह में भगवान ऋषभदेव पुरस्कार-डॉ. अनुपम जैन-इंदौर को (दि. जैन परिषद आगरा के सौजन्य से), जम्बूद्वीप पुरस्कार वर्ष 2001-पं. श्री धनराज जैन-अमीनगरसराय को तथा जंबूद्वीप पुरस्कार वर्ष 2002,

डॉ. श्री शेखरजैन, अहमदाबाद को प्रदान किया गया। ये दोनों पुरस्कार दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के द्वारा प्रतिवर्ष प्रदान किये जाते हैं। आर्यिका रत्नमती पुरस्कार-2001-श्रीमती अलका जैन ध.प. श्री नवीन जैन-पहाड़गंज-दिल्ली के सौजन्य से डॉ. नंदलाल जैन-रीवां (म.प्र.) को प्रदान किया गया।

रात्रि में पं. सुमेरचंद दिवाकर द्वारा लिखित 'महाश्रमण महावीर' ग्रंथ के पुनर्प्रकाशन का विमोचन एवं मरणोपरांत पं. जी का 'जिनशासन रत्न' की उपाधि से सम्मान किया गया।

21 अक्टूबर शरदपूर्णिमा को मध्यान्ह में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के आशीर्वाद एवं माननीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के करकमलों से प्रवर्तित भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार का भारतभ्रमण के पश्चात् भगवान ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ में नवनिर्मित 'समवसरण मंदिर' में उस ऐतिहासिक धातु से निर्मित समवसरण को स्थापित किया गया।

स्वर्णिम शरदपूर्णिमा—पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का 69वाँ जन्मदिवस एवं 51वाँ त्यागदिवस 'स्वणिम शरदपूर्णिमा' के रूप में प्रयाग तीर्थ पर 21 अक्टूबर को विविध आयोजनों के साथ मनाया गया। शरदपूर्णिमा पूज्य माताजी के जन्म के साथ-साथ उनका त्यागदिवस भी है क्योंकि इसी दिन सन् 1952 में उन्होंने गृहत्याग कर आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत धारण किया था। आज उस त्याग के 50 वर्ष पूर्ण हुए, जो हमारे लिए स्वर्णिम आभा को लिए हुए आया है। यह दिन अविस्मरणीय बनकर सदैव हमारे हृदय पटल पर अंकित रहेगा। अपनी त्याग साधना के 50 वर्ष पूर्ण कर रत्नत्रय की कुशलता के साथ आगे बढ़कर पूज्य माताजी ने जिन ऊँचाईयों तक स्वयं को पहुँचाया है, वह आने वाले युगों में स्वर्णिम इतिहास के रूप में याद किया जायेगा। पूज्य माताजी देश की ही नहीं, विश्व की अमूल्य धरोहर हैं। इन महान आत्मा के जन्म से यह शरदपूर्णिमा भी ज्ञानपूर्णिमा बन गई।

न्यायाधीश सम्मेलन—तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ पर एक नवीन इतिहास की रचना हुई, जब 3 नवम्बर 2002 को पूज्य गणिनी माताजी के ससंघ मंगल सानिध्य में न्यायालय नगरी, प्रयाग में भव्य न्यायाधीश सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीशों सहित प्रशासनिक विभाग, सरकारी स्वास्थ्य विभाग, शैक्षणिक क्षेत्र इत्यादि के विशिष्ट महानुभावों ने इस सम्मेलन में भाग लिया। सभी न्यायमूर्तिगणों ने अपने विचार रखे। पूज्य माताजी ने सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि आप जनता के साथ न्याय करने के साथ-साथ अपनी आत्मा के साथ भी न्याय करें, उसका चिंतन करें।

कुण्डलपुर के लिए बढ़े कदम—4 नवम्बर सन् 2002 का चातुर्मास दीक्षास्थली

प्रयाग तीर्थ पर सम्पन्न कर पूज्य माताजी के कदम पुनः अपने लक्ष्य की ओर बढ़ चले। 10 नवम्बर को पूज्य माताजी ने संघ सहित महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर के लिएमंगल विहार कर दिया।

वाराणसी, आरा, पटना में धर्मप्रभावना—कुण्डलपुर बिहार के मध्य प्रयाग के पश्चात् सर्वप्रथम वाराणसी (बनारस) में पूज्य माताजी का भव्य शोभायात्रा के साथ मंगल प्रवेश हुआ। यह भगवान सुपार्श्वनाथ एवं पार्श्वनाथ के जन्म से पवित्र नगरी है। यहाँ भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि भेलूपुर मंदिर में पूज्य माताजी ने दर्शन कर जन्मभूमि को नमन किया। भदैनी-वाराणसी में भगवान सुपार्श्वनाथ जी की जन्मभूमि की रज को सिर पर लगाकर माताजी आल्हादित हुईं। 10 दिवसीय प्रवास में विभिन्न कार्यक्रम हुए।

पूज्य माताजी के ससंघ आरानगर में मंगल पदार्पण करने पर आरा शहर कुण्डलपुर के और माताजी के जयकारों से गूंज उठा। बच्चे-बच्चे में उत्साह था। विशेष धर्मप्रभावना के साथ यहाँ के प्रत्येक जन-जन की भावनाएँ कुण्डलपुर के साथ जुड़ गईं। आरा जैन समाज ने पूज्य माताजी के ज्ञान की प्रशंसा करते हुए उन्हें "वाग्देवी" की उपाधि से अलंकृत कर अपने सौभाग्य की सराहना की।

कुण्डलपुर पहुँचने के कुछ ही दिन पूर्व का यह अंतिम नगर प्रवास था। जब माताजी बिहार प्रांत की राजधानी पटना पहुँचीं। 19 से 22 दिसम्बर के 4 दिवसीय प्रवास में ही पटनावासी ज्ञानामृत की वर्षा से सराबोर हुए। सुदर्शन स्वामी की निर्वाण स्थली गुलजारबाग के भी पूज्य माताजी ने दर्शन किये।

कुण्डलपुर प्रवेश—एक ऐतिहासिक यात्रा की सुखद पूर्णता होकर 29 दिसम्बर सन् 2002 को पूज्य गणिनी माताजी ने ससंघ अपूर्व उल्लास एवं हर्ष के साथ भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में मंगल प्रवेश किया। 20 फरवरी को राजधानी दिल्ली से विहार कर 1300 किमी. की पदयात्रा कर सकुशल अपनी संघ यात्रा की पूर्णता पर माताजी ने आंतरिक आल्हाद एवं प्रसन्नता का अनुभव किया। देश के विभिन्न प्रांतों से आये भक्तगणों ने विशाल जुलूस के साथ संघ की अगवानी की। स्थानीय ग्रामवासियों ने कहा कि पचास वर्षों के पश्चात् इस भूमि पर पुनः भगवान महावीर की जयकार गुंजायमान हो रही है। सभी ग्रामवासियों ने भी पूर्ण उत्साह से शोभायात्रा में भाग लिया। रात्रि में कुण्डलपुर प्रवेश की मंगल बेला में कुण्डलपुर स्थित प्राचीन मंदिर में भगवान महावीर के समक्ष 108 दीपक प्रज्वलित कर मंगल आरती की गई।

29 दिसम्बर को ही मंगल पदार्पण के दिन मुख्य मंदिर—भगवान महावीर मंदिर का शिलान्यास श्री ऋषभदास दीपक कुमार जैन-वाराणसी द्वारा पूज्य माताजी के सानिध्य में हो गया।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा—7 फरवरी को गर्भकल्याणक के दिन ही जयपुर से बनकर आई 11 फुट ऊँची खड्गासन भगवान महावीर की प्रतिमा 25 फुट की ऊँचाई पर निर्माणाधीन महावीर मंदिर में पूज्य माताजी के द्वारा किये गये अखण्ड मंत्रजाप्य के प्रभाव से विराजित हो गईं। श्वेत पाषाण की बेदाग इतनी आकर्षक प्रतिमा थी कि सभी की नजरें एकटक उसी को निहार रही थीं। पश्चात् मूर्ति पर गर्भकल्याणक के संस्कार किये गये। प्रतिष्ठा में सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य प्राप्त किया-श्री दीपक जैन-वाराणसी एवं शचि इन्द्राणी बनीं-श्रीमती सुभाषिनी जैन। माता-पिता श्री महावीर प्रसाद जी एवं श्रीमती कुसुमलता जैन दिल्ली तथा धनकुबेर-श्री कमल कुमार जैन-आरा एवं इन्द्राणी श्रीमती अनुपमा जैन थीं।

8 फरवरी को भगवान का जन्माभिषेक के पूर्व जन्मकल्याणक जुलूस निकाला गया तथा 1008 कलशों से पांडुकशिला पर जन्माभिषेक सम्पन्न हुआ।

9 फरवरी को दीक्षाकल्याणक के दिन दीक्षाविधि के संस्कार किये गये। इस दिन निर्माणाधीन नंद्यावर्त महल परिसर में नवनिर्मित 'नवग्रहशांति मंदिर' का शिलान्यास श्री ज्ञानचंद जैन-आरा निवासी ने सपरिवार किया। मध्यान्ह में राजसभा लगी, जिसमें रक्षामंत्री श्री जार्ज फर्नांडीज का मुख्य अतिथि के रूप में आगमन हुआ। उन्होंने पूज्य माताजी से मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

10 फरवरी को महामुनि महावीर की आहारचर्या, जो कि राजा कूल के महल में हुई थी, वह दृश्य दिखाया गया। मध्यान्ह में पूज्य माताजी की प्रेरणा से 'तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों का विकास' नाम से महाधिवेशन हुआ। महाधिवेशन की इस सभा में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय रेलमंत्री श्री नितीश कुमार पधारे। कमेटी के निवेदन पर उन्होंने अपने भाषण में घोषित किया कि जन्मभूमि कुण्डलपुर के नाम पर दीपनगर हाल्ट को पूर्ण स्टेशन बनाकर कुण्डलपुर स्टेशन कर दिया जायेगा।

11 फरवरी को नंद्यावर्त मंडप में तीर्थंकर महावीर महामुनि को महासती चंदना द्वारा कौशाम्बी में आहारदान दिया गया, इस दृश्य को दिखाया गया। मध्यान्ह में केवलज्ञान कल्याणक की क्रियाएँ हुईं। मध्यान्हकालीन सभा में पूज्य माताजी ने भगवान महावीर ज्योतिरथ के भारत भ्रमण हेतु प्रवर्तन की घोषणा की। बिहार के राज्यपाल डॉ. विनोदचंद पाण्डेय जी ने इस अवसर पर पधारकर माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया एवं 'भगवान महावीर ज्योति' रथ का उद्घाटन कर पुण्य अर्जित किया। राज्यपाल जी ने पूज्य गणिनी माताजी द्वारा रचित 'महावीर देशना ग्रंथ' का भी विमोचन किया।

12 फरवरी को पंचकल्याणक के अंतिम दिन प्रातःकाल भगवान का

निर्वाणकल्याणक हुआ। पूर्णाहुति हवन के साथ (तीन चौबीसी की 72 प्रतिमा सहित) लगभग 100 प्रतिष्ठित जिनप्रतिमाओं को वेदी में विराजमान किया गया। साथ ही प्राचीन मंदिर में निर्मित 'भगवान महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ' में भी सौजन्यकर्ता श्री कमलचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली के परिवार द्वारा 8 जिनप्रतिमाएँ विराजमान की गईं।

महाकुंभ मस्तकाभिषेक—12 फरवरी को मध्यान्ह में भगवान महावीर की 11 फुट ऊँची खड्गासन प्रतिमा का 1008 महाकुंभों से महामस्तकाभिषेक किया गया। इस मनोहारी दृश्य को देखकर प्रत्येक जनमानस ने अपने नेत्रों को धन्य किया। पंचामृत अभिषेक, घी, दूध, दही, केशर आदि जब भगवान पर हुआ, तो वातावरण भगवान के जयकारों से गूंज उठा।

सम्मेदशिखर के लिए मंगल विहार—कुण्डलपुर में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सानंद सम्पन्न कराकर 19 फरवरी 2003 को शाश्वत सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेदशिखर जी की वंदना की भावना लेकर पूज्य माताजी ने ससंघ मंगल विहार किया। मार्ग में भगवान्मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि एवं भगवान महावीर की देशनास्थली राजगृही में पूज्य माताजी ने 11 फुट खड्गासन भगवान मुनिसुव्रतनाथ की प्रतिमा, सिद्धक्षेत्र पावापुरी में 11 फुट उत्तुंग खड्गासन भगवान महावीर की मूर्ति एवं गुणावाँ सिद्धक्षेत्र पर 5 फुट ऊँची खड्गासन गौतम स्वामी की प्रतिमा विराजमान कराने की घोषणा की। इन तीर्थों के दर्शन करते हुए नवादा, झुमरीतलैया, सरिया आदि स्थानों पर धर्मप्रभावना करते हुए 12 मार्च 2003 को शाश्वत सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर में मंगल पदार्पण हुआ। 18 मार्च 2003 को क्षेत्र पर विशाल जनसमूह के मध्य दि. जैन बीसपंथी कोठी एवं दि. जैन समाज-मधुबन सम्मेदशिखर द्वारा आयोजित 'श्रावक महासम्मेलन' सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। सम्मेलन का विषय था–तीर्थ संरक्षण एवं विकास।

मंदिर शिलान्यास—श्री सम्मेदशिखर जी में पूज्य माताजी के सानिध्य में 26 मार्च 2003, चैत्र वदी नवमी को प्रथम बार भव्यतापूर्वक भगवान ऋषभदेव जयंती का आयोजन सम्पन्न हुआ। पंचामृत अभिषेक, 108 कलशों से अभिषेक एवं रथयात्रा निकाली गई। इस अवसर पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से श्री बाहुबली मंदिर के प्रांगण में नूतन 'भगवान ऋषभदेव मंदिर' के निर्माण हेतु डॉ. पन्नालाल जैन पापड़ीवाल-पैठण (महा.) ने सपरिवार शिलान्यास विधि सम्पन्न की।

महावीर जयंती का ऐतिहासिक सूत्रपात—हम सभी अपने-अपने नगरों में तो महावीर जयंती धूमधाम से मनाते हैं पर जन्मभूमि वीरान पड़ी रहती थी। पूज्य गणिनी माताजी ने 15 अप्रैल 2003, चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को भगवान महावीर जन्मजयंती महोत्सव को भगवान की वास्तविक जन्मभूमि कुण्डलपुर में मनाने की प्रेरणा दी। इस

ऐतिहासिक दिन को मनाने का पुनर्सूत्रपात इस भूमि पर हुआ। पूज्य माताजी के सानिध्य में नवनिर्मित नंद्यावर्त महल परिसर में प्रातः से ही कार्यक्रमों की धूम मच गई। प्रातः झण्डारोहण हुआ, प्रभातफेरी निकाली गई, मध्यान्ह में धर्मसभा हुई, रथयात्रा निकाली गई पश्चात् भगवान महावीर का पंचामृत अभिषेक सम्पन्न हुआ। रात्रि में भगवान का पालना झुलाया गया। इस उत्सव में आरा, पटना, गया, झुमरीतलैया आदि आसपास के नगरों से वे देश के विभिन्न स्थानों से महानुभावों ने पधारकर पुण्य अर्जित किया।

महावीर ज्योति रथ प्रवर्तन—12 फरवरी को उद्घाटन के पश्चात् 15 अप्रैल 2003 महावीर जयंती के शुभ दिन पूज्य माताजी के आशीर्वाद से 'महावीर ज्योति' रथ का प्रवर्तन किया गया जो देश के विभिन्न नगरों में पहुँचकर जन-जन को जैनागम के वास्तविक ज्ञान से परिचित करायेगा एवं भगवान महावीर की वास्तविक जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) से जन-जन की भावनाओं को जोड़ने वाला होगा।

जंबूद्वीप में पंचकल्याणक—12 से 16 मई (वैशाख शु. 11 से पूर्णिमा) तक जम्बूद्वीप- हस्तिनापुर में पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं मंगल आशीर्वाद से मेरे (क्षुल्लक मोतीसागर) सानिध्य में नवनिर्मित 'श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर जिनमंदिर' एवं 'भगवान ऋषभदेव मंदिर' की प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में भगवान ऋषभदेव पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। बीस तीर्थंकर मंदिर का निर्माण श्री प्रद्युम्न कुमार जैन 'छोटी सा.'-टिकैतनगर परिवार के सौजन्य से हुआ एवं भगवान ऋषभदेव मंदिर में मध्य में धातु की भगवान ऋषभदेव की एवं आजू-बाजू भगवान महावीर एवं पार्श्वनाथ की प्रतिमाएँ मॉडल टाउन, दिल्ली के महानुभावों द्वारा की गई।

राष्ट्रपति जी ने आशीर्वाद प्राप्त किया—भारत के प्रथम नागरिक राष्ट्रपति डॉ.ए.पी. जे. अब्दुल कलाम ने 30 मई 2003 को भगवान महावीर निर्वाणभूमि पावापुरी (नालंदा) बिहार में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी से विशेष मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

1 जून 2003 को राजगृही (भगवान मुनिसुव्रतनाथ जन्मभूमि) में लालमंदिर परिसर में पूज्य माताजी की मंगल प्रेरणा व सानिध्य में भगवान मुनिसुव्रतनाथजिनमंदिर का शिलान्यास संपूर्ण विधि-विधानपूर्वक सम्पन्न हुआ।

नंद्यावर्त महल परिसर में द्रुतगति से विभिन्न मंदिरों का निर्माण कार्य द्रुतगति से चल रहा था तथा पूज्य माताजी भी ससंघ वहाँ विराजकर अपनी आत्मसाधना में लगी थीं। भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दि. जैन समिति के विशेष निवेदन पर पूज्य माताजी ने अपना सन् 2003 का चातुर्मास कुण्डलपुर में करने की स्वीकृति प्रदान की, जिससे पदाधिकारियों में नवीन शक्ति का संचार हुआ।

अड़तालिसवाँ चातुर्मास (सन् 2003, कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में)

भगवान महावीर की जन्मभूमि पर सैकड़ों वर्षों के बाद पूज्य माताजी के रूप में प्रथम बार किन्हीं जैन साधु का चातुर्मास होने जा रहा था, यह एक ऐतिहासिक कड़ी है।

स्वर्णिम वर्षायोग—भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में होने वाला यह पावन वर्षायोग मात्र वर्षायोग ही नहीं है अपितु एक ऐतिहासिक चातुर्मास होने के साथ-साथ माताजी की आर्यिका दीक्षा का स्वर्णिम वर्षायोग है। जैनागम की उच्चकोटि की लेखिका एवं जन्मभूमि विकास की प्रेरणास्रोत पूज्य माताजी ने सन् 2003 में अपने 69 वर्ष के जीवन में 50 वर्ष दीक्षित अवस्था के व्यतीत किये तथा विभिन्न नगरों में व तीर्थों पर आपने चातुर्मास कर सर्वतोमुखी प्रभावना की। यह बिहार प्रांत का पुण्योदय ही कहा जायेगा कि उन्हें वर्षायोग के रूप में स्वर्णिम वर्षायोग का लाभ मिला। 12 जुलाई 2003 को पूज्य माताजी ने ससंघ कुण्डलपुर (नालंदा) 'नंद्यावर्त महल' परिसर में अपने इस स्वर्णिम वर्षायोग की स्थापना की। इस स्वर्णिम अवसर पर देश के विभिन्न नगरों से पधारे महानुभावों ने पूज्य माताजी का मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

श्री नवग्रहजिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा—कुण्डलपुर के नंद्यावर्त महल परिसर में निर्माणाधीन नूतन जिनालयों में ''नवग्रह शांति जिनमंदिर'' में विराजमान होने वाली प्रतिमाओं की चातुर्मास स्थापना के पूर्व 4 जुलाई से 9 जुलाई 2003 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। तीर्थ विकास की प्रेरणास्रोत पूज्य माताजी के पावन सानिध्य में श्री ज्ञानचंद जी जैन-आरा एवं समस्त परिवार ने इस महोत्सव को सम्पन्न कर प्रसन्नता का अनुभव किया।

वीर शासन जयंती—श्रावण कृ. एकम्, वीर शासन जयंती के उपलक्ष्य में भगवान महावीर की देशनास्थली राजगृही तीर्थ में त्रिदिवसीय आयोजन किया गया। 13 जुलाई को मध्यान्ह में माताजी द्वारा रचित भगवान महावीर समवसरण मण्डल विधान हुआ तथा रात्रि में ''धन्य हुआ विपुलाचल पर्वत'' नाटक (पूज्य चंदनामती माताजी द्वारा रचित) का सुंदर मंचन किया गया। 14 जुलाई को पर्व के दिन 'विपुलाचल पर्वत' पर विराजमान भगवान महावीर के समवसरण के प्रतीक- रूप (चतुर्मुख) चारों प्रतिमाओं का मस्तकाभिषेक किया गया। देश के कोने-कोने से पधारे श्रावकों ने उत्साहित होकर कार्यक्रम में भाग लिया। 15 जुलाई को रथयात्रा एवं जिनवाणी जुलूसपूर्वक कार्यक्रम का समापन हुआ।

दशलक्षण पर्व सम्पन्न—31 अगस्त से 9 सितम्बर तक कुण्डलपुर (नालंदा) में पूज्य माताजी के सानिध्य में 21वीं सदी में प्रथम बार दशलक्षण पर्व का भव्य आयोजन हुआ। महाराष्ट्र से पधारे 'गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल' द्वारा इस पावन पर्व पर 'कल्पद्रुम महामण्डल विधान' अत्यंत भक्तिपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। सभी भक्तों ने भक्तिगंगा में अवगाहन कर पुण्य अर्जित किया।

कुण्डलपुर महोत्सव—भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में 8 से 10 अक्टूबर 2003 तक प्रथम 'कुण्डलपुर महोत्सव' का विशाल ऐतिहासिक आयोजन पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की मंगल प्रेरणा एवं ससंघ सानिध्य में पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। 8 अक्टूबर को कुण्डलपुर दि. जैन समिति एवं पर्यटन विभाग-बिहार सरकार के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित इस महोत्सव का शुभारंभ नंद्यावर्त महल परिसर में बनाये 'सिद्धार्थ मण्डप' के समक्ष झण्डारोहणपूर्वक हुआ। उद्घाटन सभा में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे-पुरातत्व संग्रहालय, नालंदा के सहायक अधीक्षक-श्री अशोक कुमार पाण्डे। तत्पश्चात् तीर्थंकर ऋषभदेव विद्वत् महासंघ का एवं अ.भा.दि. जैन महिला संगठन का नैमित्तिक अधिवेशन हुआ। ऋषभदेशना संगठन के मुखपत्र की संपादिका श्रीमती सुमन जैन-इंदौर (केन्द्रीय महामंत्री) को दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर द्वारा ''आर्यिका रत्नमती पुरस्कार-2002'' से सम्मानित किया गया। अग्रिम तीन वर्षों के लिए महिला संगठन की नई केन्द्रीय कार्यकारिणी की घोषणा पूज्य क्षुल्लक मोतीसागर जी (मैंने) ने की। जिसमें अध्यक्षा-श्रीमती आशा जैन-दिल्ली एवं महामंत्री-श्रीमती सुमन जैन-इंदौर को मनोनीत किया गया। 9 अक्टूबर को प्रातः भगवान ऋषभदेव का मस्तकाभिषेक हुआ। 'भगवान महावीर समवसरण मण्डल विधान' का आयोजन कलकत्तावासियों ने किया। मध्यान्ह में दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान का नैमित्तिक अधिवेशन हुआ। डॉ. चिरंजीलाल जैन बगड़ा-कलकत्ता को जम्बूद्वीप पुरस्कार-2003 से सम्मानित किया गया। 'आर्यिका रत्नमती पुरस्कार-2003' श्री सुरेश जैन मारोरा-शिवपुरी (म.प्र.) को दिया गया। मुख्य अतिथि के रूप में सभा में केन्द्रीय लघु उद्योग मंत्री-श्री सी.पी. ठाकुर पधारे। इस अवसर पर पूज्य चंदनामती माताजी द्वारा रचित ''तीर्थंकर जन्मभूमि विधान' एवं 'गणिनी ज्ञानमती परिचय एव प्रश्नोत्तरी' पुस्तकों का विमोचन हुआ।

10 अक्टूबर शरदपूर्णिमा के दिन पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का 70वाँ जन्मजयंती समारोह मनाया गया। प्रातःकाल पूज्य चंदनामती माताजी द्वारा लिखित 'गणिनी ज्ञानमती महापूजा' सम्पन्न हुई जिसमें पूज्य माताजी के विविध गुणों का दिग्दर्शन कराने वाले 72 पद्यों के द्वारा उनके चरणों में अर्घ्य समर्पित किये गये। तत्पश्चात् मुख्य मंदिर में भगवान महावीर का मस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ। मध्यान्हकालीन सभा में मुख्य अतिथि के रूप में बिहार प्रदेश के राज्यपाल न्यायमूर्ति श्री एम.रामा. जोयिस पधारे। पूज्य माताजी की प्रेरणा से 'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष' (सन् 2000 से 2001) के अवसर पर भगवान ऋषभदेव के अहिंसामयी

सिद्धान्तों का व्यापक प्रचार-प्रसार करने हेतु घोषित संस्थान के सर्वोच्च पुरस्कार ''ऋषभदेव नेशनल एवार्ड'' से सांसद श्री वी. धनंजय कुमार जैन (पूर्व वित्त राज्यमंत्री) को राज्यपाल जी ने सम्मानित किया। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के नाम पर जैन समाज में यह सर्वोच्च प्रथम पुरस्कार है। इस अवसर पर पूज्य माताजी ने तीर्थंकर भगवन्तों की वर्तमान 16 जन्मभूमियों के संरक्षण एवं विकास हेतु ''भारतवर्षीय तीर्थंकर जन्मभूमि विकास समिति' के गठन की घोषणा की।

इस संपूर्ण कार्यक्रम में 'गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल' महाराष्ट्र ने आगंतुक बंधुओं के लिए प्रीतिभोज की सुंदर व्यवस्था की।

दीपावली पर्व (महावीर निर्वाणोत्सव)—भगवान महावीर निर्वाणभूमि-पावापुरी में दीपावली पर्व के अवसर पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में प्रथम बार 23 से 25 अक्टूबर 2003 तक त्रिदिवसीय भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव महती धर्मप्रभावनापूर्वक मनाया गया। कार्तिक कृष्णा अमावस्या 25 अक्टूबर को निर्वाणस्थली-जलमंदिर, पावापुर में प्रातःकाल भगवान महावीर की निर्वाण बेला में भारी भीड़ के मध्य पूज्य माताजी के मंगल सानिध्य में प्रथम सिद्धि निर्वाणलाडू चढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त किया-श्री कैलाशचंद जैन सर्राफ-लखनऊ एवं परिवार ने। अपने 51 वर्ष के दीक्षित जीवन में प्रथम बार भगवान की निर्वाणबेला में जलमंदिर में निर्वाणलाडू चढ़वाकर पूज्य माताजी एवं संघ को जिस हार्दिक आनंद की अनुभूति हुई, वह वचनातीत है। रिमझिम फुहारों के बीच हजारों श्रद्धालुओं ने निर्वाणलाडू चढ़ाकर अपने जीवन को धन्य किया।

संकल्पदीप प्रज्वलित हुआ—पौष कृष्णा ग्यारस, 19 दिसम्बर 2003 को तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के जन्म एवं दीक्षाकल्याणक के अवसर पर पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी की मंगल प्रेरणा एवं ससंघ सानिध्य में 'भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव' हेतु 'पार्श्वनाथ महोत्सव संकल्प ज्योति' अर्थात् अखण्ड संकल्पदीप का प्रज्ज्वलन भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) स्थित नंद्यावर्त महल परिसर के भगवान महावीर मंदिर में किया गया। दीप प्रज्वलन का सौभाग्य प्राप्त किया श्री आर.एस. तिवारी (आई.ए.एस.), सचिव पर्यटन विभाग, बिहार सरकार एवं डॉ. रवीन्द्र पंत (निदेशक-नव नालंदा महाविहार, नालंदा) ने। इसी संकल्प की परिपुष्टता के लिए पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि भेलूपुर (बनारस) में भी सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में संकल्पदीप जलाया गया। यह महोत्सव 6 जनवरी 2005 (भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक दिवस) से प्रारंभ होगा।

पावापुरी में पंचकल्याणक—24वें तीर्थंकर भगवान महावीर की निर्वाणभूमि

पावापुरी जी सिद्धक्षेत्र पर परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से उनके संघ सानिध्य में पाण्डुकशिला परिसर में भगवान महावीर की सवा ग्यारह फुट की खड्गासन प्रतिमा की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा मगसिर सुदी पंचमी, 28 नवम्बर 2003 से मगसिर सुदी दशमी, 3 दिसम्बर तक कमलाकार नूतन जिनमंदिर में सानंद सम्पन्न हुई। प्रतिष्ठा महोत्सव एवं प्रतिमास्थापना मंदिर निर्माता श्री सुभाषचंद जैन, ऋषभविहार-दिल्ली एवं श्री विजय कुमार जैन-दरियागंज-दिल्ली के सौजन्य से सम्पन्न हुई।

राजगृही में प्रतिष्ठा सम्पन्न—जिनशासन में बीसवें सूर्य तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि एवं महावीर स्वामी की प्रथम देशनास्थली राजगृही में पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में 3 से 8 दिसम्बर 2003 (मगसिर सुदी दशमी से पूर्णिमा तक) लाल मंदिर परिसर में निर्मित कमलाकार नूतन जिनमंदिर में विराजमान भगवान मुनिसुव्रतनाथ की साढ़े बारह फुट उत्तुंग मनोहारी खड्गासन प्रतिमा की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हुई। प्रतिमास्थापनकर्ता एवं मंदिर निर्माता श्री अनिल कुमार जैन (कमलमंदिर-प्रीतविहार) दिल्ली ने सौधर्म इन्द्र बनकर इस प्रतिष्ठा को सम्पन्न कर पुण्यार्जन किया।

वेदी प्रतिष्ठा एवं कलशारोहण—23 फरवरी 2004 फाल्गुन शुक्ला 3 को पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में नवनिर्मित नंद्यावर्त महल परिसर के मुख्य भगवान महावीर मंदिर, भगवान ऋषभदेव मंदिर एवं नवग्रहशांति मंदिर के उत्तुंग कलात्मक शिखरों पर कलशारोहण का भव्य कार्यक्रम निर्विघ्नता से सम्पन्न हुआ। 101 फुट उत्तुंग भगवान महावीर मंदिर एवं 61 फुट ऊँचे ऋषभदेव मंदिर पर श्री रिषभदास दीपक कुमार जैन, सपरिवार (बनारस) एवं 61 फुट उत्तुंग नवग्रहशांति जिनमंदिर पर श्री ज्ञानचंद जी जैन सपरिवार (आरा) द्वारा कलशारोहण किया गया।

कुण्डलपुर द्वार का शिलान्यास—24 फरवरी 2004 को बिहारशरीफ-राजगीर मुख्यमार्ग को भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) से जोड़ने वाले दीपनगर-कुण्डलपुर मार्ग पर 'भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर द्वार' का शिलान्यास पूज्य माताजी के सानिध्य में विधायक श्रवण कुमार जी, बिहार के पूर्व शिक्षा राज्यमंत्री श्री सुरेन्द्र कुमार तरुण एवं कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी ने किया।

महावीर जयंती—वर्ष 2003 की भांति इस वर्ष 3 अप्रैल 2004 को भी नंद्यावर्त-कुण्डलपुर में महावीर जयंती पूज्य माताजी के ही सानिध्य में धूमधाम से मनाई गई। महावीर जयंती के अवसर पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से अण्डा, माँस, मछली इत्यादिरूप मांसाहार का जीवन भर के लिए त्याग करने हेतु ग्रामवासियों से 'शाकाहार

संकल्प पत्र' भरवाए गए। 1000 से अधिक लोगों ने यह संकल्प पत्र भरकर जमा कराए। जिन्हें 'सम्मान पत्र' देकर सम्मानित किया गया।

भगवान शांतिनाथ पंचकल्याणक—भगवान महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) में नवनिर्मित नंद्यावर्त महल परिसर में पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में 28 जून से 2 जुलाई 2004 तक निर्माणाधीन भगवान महावीर के जन्ममहल नंद्यावर्त महल में भगवान शांतिनाथ चैत्यालय की भगवान शांतिनाथ, भगवान चन्द्रप्रभ एवं भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमाओं की लघु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा भक्तिभावपूर्वक सम्पन्न हुई। प्रतिमाओं को विराजमान करने एवं सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी बनने का सौभाग्य प्राप्त किया श्री कमल कुमार जैन एवं श्रीमती अनुपमा जैन-आरा ने। भगवान के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्री ऋषभदास जी जैन तथा उनकी ध.प. श्रीमती पार्वती जैन-बनारस ने प्राप्त किया। पूज्य माताजी ने भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) की कमेटी के आग्रह पर एक बार पुनः कुण्डलपुर में चातुर्मास करने की स्वीकृति प्रदान की।

उनंचासवाँ चातुर्मास (सन् 2004-कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार में)

1 जुलाई 2004 को पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने (ससंघ) नंद्यावर्त महल-कुण्डलपुर में द्वितीय बार चातुर्मास स्थापना सम्पन्न की।

2 जुलाई को नंद्यावर्त महल परिसर में नवनिर्मित त्रिकाल चौबीसी मंदिर की 2 मंजिलों पर क्रमशः भूतकाल व वर्तमानकालीन चौबीसी प्रतिमाओं को वेदी में विराजमान किया गया, जिनकी प्रतिष्ठा फरवरी 2003 में हुई थी।

विश्वशांति महावीर विधान—प्रतिवर्ष की भांति सन् 2004 में भी 'गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल' महाराष्ट्र के भक्तों ने पूज्य माताजी के सानिध्य में दशलक्षण पर्व के 10 दिन रहकर धर्मलाभ प्राप्त किया। पूज्य माताजी द्वारा रचित 'विश्वशांति महावीर विधान' का आयोजन कर सुमेरु पर्वत के आकार के मांडले पर 2600 रत्न चढ़ाये गए। संयोजक श्री कस्तूरचंद जी बड़जाते के साथ 100 से अधिक श्रद्धालुओं ने कुण्डलपुर आकर 10 दिनों तक पूजन, भक्ति कर पुण्यार्जन किया।

शिष्या का समाधिमरण—22 सितम्बर 2004 को दशलक्षण पर्व के मध्य में ही भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर स्थित नंद्यावर्त महल तीर्थ पर पूज्य माताजी की शिष्या संघस्थ पूज्य क्षुल्लिका श्री श्रद्धामती माताजी का णमोकार महामंत्र सुनते-सुनते शांतिपूर्वक समाधिमरण हुआ। वे लगभग 15 वर्षों से क्षुल्लिका के व्रतों का पालन करते हुए पूज्य माताजी के संघ में साधनारत थीं।

द्वितीय कुण्डलपुर महोत्सव—पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ

मंगल सानिध्य में द्वितीय कुण्डलपुर महोत्सव का त्रिदिवसीय भव्य आयोजन कुण्डलपुर (नालंदा) नंद्यावर्त परिसर में किया गया। 27 अक्टूबर से 29 अक्टूबर तक होने वाले इस आयोजन में प्रथम दिन 27 अक्टूबर को संघपति महावीर प्रसाद जी जैन, कमलचंद जी, खारीबावली-दिल्ली एवं कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी ने झण्डारोहण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया जिसमें मुख्य अतिथि ऊर्जा विधि एवं सूचना तथा जनसंपर्क मंत्री (बिहार सरकार) श्री श्याम रजक थे। पश्चात् मंच पर सभा में दीप प्रज्ज्वलन कर 'विश्वशांति के उपदेष्टा भगवान महावीर' विषय पर संगोष्ठी का शुभारंभ किया गया। मध्यान्ह में पूज्य माताजी द्वारा जैनधर्म के प्रथम सिद्धांतग्रंथ 'षट्खण्डागम' की 13 पुस्तकों पर लिखित संस्कृत टीका की हस्तलिखित प्रतियों की महार्चना की गई। तत्पश्चात् अ.भा.दि. जैन महिला संगठन का शपथ ग्रहण समारोह हुआ तथा 'प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज' पुस्तक का विमोचन हुआ।

इस महोत्सव में दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा क्रमशः निम्न पुरस्कार प्रदान किये गये। जंबूद्वीप पुरस्कार-2004 (पं. श्री सुधर्मचंद जी शास्त्री, तिवरी-जबलपुर, म.प्र.) को, आर्यिका रत्नमती पुरस्कार-श्रीमती प्रभा जैन-दिल्ली को (सौजन्य-श्री कोमलचंद जैन-महमूदाबाद), कुण्डलपुर पुरस्कार-प्रो. टीकमचंद जैन-दिल्ली (सौजन्य-श्री कमलचंद कैलाशचंद जैन, खारीबावली-दिल्ली) नंद्यावर्त पुरस्कार-2004-श्री विजय कुमार जैन, कानपुर (सौजन्य-श्री कृष्णकुमार कमल कुमार जैन द्वारा हरखेन कुमार जैन स्मृति न्यास, आरा की ओर से), श्री छोटेलाल जैन स्मृति पुरस्कार-2003-श्री राजेन्द्र जैन-मुम्बई को तथा सन् 2004 का पुरस्कार श्री उमेशचंद जैन-फिरोजाबाद को (सौजन्य श्री सुभाषचंद्र शुभचंद्र जैन-टिकैतनगर) प्रदान किये गये।

28 अक्टूबर, दूसरे दिन शरदपूर्णिमा को तीर्थसम्प्रेरिका पूज्य माताजी का 71वाँ जन्मजयंती समारोह मनाया गया। मध्यान्ह में विनयांजलि सभा हुई। मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री सुधीर नारायण जी (इलाहाबाद) थे। सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय रेल मंत्री श्री नितीश कुमार ने भी पधारकर पूज्य माताजी के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित की। इस अवसर पर प्रकाशित 'कुण्डलपुर अभिनंदन ग्रंथ' का एवं पूज्य माताजी की आत्मकथा 'मेरी स्मृतियाँ' का विमोचन दोनों महानुभावों ने किया। इस दिन पूज्य माताजी के करकमलों से तीर्थ परिसर के कार्यालय एवं मेनगेट का स्वस्तिक बनाकर उद्घाटन किया गया। 'भगवान महावीर ज्योति' रथ की रथयात्रा निकालकर रथप्रवर्तन का समापन भी किया गया। रात्रि कार्यक्रम में श्री रामगोपाल जैन-पटना (अध्यक्ष-बिहार राज्य दि. जैन न्यास बोर्ड) एवं श्री अजय जैन-पटना (मानद मंत्री-बिहार स्टेट दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी) को कमेटी द्वारा 'समाजरत्न' की उपाधि से विभूषित किया गया।

महोत्सव के तीसरे दिन 29 अक्टूबर को प्रातःकाल भगवान ऋषभदेव का मस्तकाभिषेक करके महाशांतिधारापूर्वक कार्यक्रम का समापन हुआ।

पावापुर में निर्वाणलाडू–भगवान महावीर निर्वाणभूमि पावापुर में लगातार दूसरे वर्ष भी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में जलमंदिर में अनेक भक्तों ने कार्तिक कृष्णा अमावस्या 12 नवम्बर को निर्वाणलाडू चढ़ाकर पुण्यार्जन किया। प्रथम निर्वाणलाडू चढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त किया-श्री महेशचंद अजय कुमार जैन-मुजफ्फरपुर (बिहार) ने। तत्पश्चात् पाण्डुकशिला मंदिर परिसर में नवनिर्मित भगवान महावीर मंदिर में पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में मंदिर निर्माता श्री विजय कुमार जैन, दरियागंज-दिल्ली ने कलशारोहण कार्यक्रम सम्पन्न किया तथा भगवान महावीर के समक्ष निर्वाणलाडू चढ़ाया। निर्वाणलाडू के बाद दिगम्बर जैन मंदिर परिसर में निर्मित मानस्तंभ में भगवान महावीर की 4 पद्मासन एवं 4 खड्गासन प्रतिमाएँ विराजमान की गईं। पावापुरी में त्रिदिवसीय कार्यक्रम के बाद पूज्य माताजी ने कुण्डलपुर में आकर संघस्थ साधुओं के साथ शास्त्रोक्तविधि से चातुर्मास समापन क्रिया सम्पन्न करके कुण्डलपुर (नालंदा) के द्वितीय ऐतिहासिक चातुर्मास का समापन किया।

जन्मभूमि से जन्मभूमि की ओर मंगल विहार–भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) का मात्र 22 माह के अल्पसमय में नंद्यावर्त महल तीर्थ के रूप में ऐतिहासिक भव्य नवविकास सम्पन्न करवाकर पूज्य माताजी का कुण्डलपुर से भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि-वाराणसी हेतु मंगल विहार 14 नवम्बर 2004 को हुआ।

कलशारोहण एवं प्रतिमा विराजमान कार्यक्रम–राजगृही तीर्थ पर नवनिर्मित भगवान मुनिसुव्रतनाथ मंदिर पर श्री अनिल कुमार जैन (कमलमंदिर) दिल्ली ने 15 नवम्बर को पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में कलशारोहण सम्पन्न किया।

16 नवम्बर को विपुलाचल पर्वत की तलहटी में नवनिर्मित मानस्तंभ में वेदी-शुद्धि की गईं, जो संघपति लाला महावीर प्रसाद जी-दिल्ली के सौजन्य से निर्मित किया गया है तथा मध्यान्ह में जवाहर नवोदय विद्यालय-राजगीर में पूज्य माताजी की प्रेरणा द्वारा श्री मनोज कुमार जैन-मेरठ के सौजन्य से विराजित भगवान महावीर की मनोहारी 5 फुट ऊँची पद्मासन लालवर्णी प्रतिमा का अनावरण पूज्य माताजी के सानिध्य में कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जी एवं विद्यालय के प्रधानाचार्य जी ने सैकड़ों बच्चों की उपस्थिति में किया।

17 नवम्बर को प्रातः भगवान महावीर की 4 प्रतिष्ठित प्रतिमाएँ मानस्तंभ में माताजी के ससंघ सानिध्य में विराजमान की गईं।

गुणावां जी सिद्धक्षेत्र में प्रथम गणधर श्री गौतम स्वामी की निर्वाणस्थली पर पूज्य

माताजी की प्रेरणा से दि. जैन मंदिर प्रांगण में संघपति श्री महावीर प्रसाद जी, दिल्ली एवं परिवार के सौजन्य से नवनिर्मित मंदिर में गौतम स्वामी की सफेद पाषाण की 5 फुट ऊँची खड्गासन प्रतिष्ठित प्रतिमा 19 नवम्बर 2004 को प्रातः विराजमान की गई एवं कलशारोहण कर सभी ने पुण्य प्राप्त किया।

बनारस में मंगल आगमन–भगवान महावीर जन्मभूमि (कुण्डलपुर-नालंदा) से 14 नवम्बर 2004 को मंगल विहार करके मध्य में अनेक जगहों पर धर्मप्रभावना करते हुए दिनाँक 23 दिसम्बर 2004 को पूज्य माताजी का ससंघ भगवान पार्श्वनाथ जन्मभूमि भेलूपुर दि. जैन मंदिर में गाजे-बाजे एवं जुलूस के साथ मंगल पदार्पण हुआ।

भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव–भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि वाराणसी में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की मंगल प्रेरणा एवं सानिध्य में 'भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव' का उद्घाटन 6 जनवरी 2005 को विशाल जनसमूह के बीच सम्पन्न हुआ। 6 जनवरी पौष कृष्णा ग्यारस को प्रातः झण्डारोहणपूर्वक समारोह का शुभारंभ किया गया। झण्डारोहणकर्ता थे-श्री धन्नालाल अजित कुमार जैन अजमेरा परिवार-धूलियान (पं. बंगाल)।

विशाल रथयात्रा–तदुपरांत जैन समाज काशी द्वारा प्रातः 8 बजे मैदागिन दि. जैन मंदिर से पार्श्वनाथ भगवान को चांदी की पालकी में विराजमान कर ऐतिहासिक विशाल शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें 11 प्रसिद्ध बैण्ड, अनेक बग्घियाँ, हाथी, घोड़े, चाँदी की चंवर गाड़ी, चांदी का गजरथ, धूपगाड़ी, झण्डी गाड़ी आदि शामिल थे। अनेक महिला-पुरुष इन्द्र-इन्द्राणी एवं राजाओं के रूप में हाथी एवं बग्घियों पर बैठे थे। 2 किमी. लंबी यह यात्रा शहर के मुख्यमार्गों से होते हुए बंगाली इंटर कालेज मैदान-भेलूपुर पहुँची, जहाँ माताजी के ससंघ सानिध्य में भगवान पार्श्वनाथ जन्माभिषेक किया गया।

मध्यान्ह में विशाल पंडाल में पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में सार्वजनिक धर्मसभा हुई। मुख्य अतिथि के रूप में उ.प्र.सरकार के लोक निर्माण विभाग एवं कृषि विदेश व्यापार मंत्री श्री शिवपाल सिंह यादव, समारोह अध्यक्ष के रूप में श्री माताप्रसाद पाण्डे (उ.प्र.विधानसभा अध्यक्ष) एवं विधान सभा उपाध्यक्ष आदि विशिष्ट अतिथि कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

जैन शब्दकोश का विमोचन–पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की मंगल प्रेरणा एवं प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के अथक परिश्रम से तैयार जैनागम के लगभग 15 हजार शब्दों की हिन्दी-अंग्रेजी व्याख्या से युक्त जैन समाज में प्रथम बार प्रकाशित 'भगवान महावीर हिन्दी-अंग्रेजी जैन शब्दकोश' का विमोचन भी

इस अवसर पर सारस्वत अतिथि श्री पी. रामचंद्रराव (कुलपति-बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय) द्वारा किया गया।

महल का अनावरण—मुख्य अतिथि श्री शिवपाल सिंह यादव एवं सभाध्यक्ष श्री माताप्रसाद पाण्डे ने पूज्य माताजी की प्रेरणा से निर्मित भगवान पार्श्वनाथ के धातु से बने नवखण्ड के महल का मंच पर फीता काटकर अनावरण किया। रत्नवृष्टि कर जन्मकल्याणक के रत्न भक्तों में वितरित किये गये।

कैसेट विमोचन—पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा रचित भगवान पार्श्वनाथ के नये-नये भजनों की ऑडियो कैसेट का विमोचन विधानसभाध्यक्ष ने किया।

7 जनवरी को श्री दिगम्बर जैन मंदिर भेलूपुर में विराजमान भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा का 1008 कलशों से मस्तकाभिषेक किया गया। मानस्तंभ में विराजमान प्रतिमाओं का भी भक्तों ने अभिषेक किया।

8 जनवरी को तृतीय दिवस 108 इंद्र-इंद्राणियों के साथ 'भगवान पार्श्वनाथ मण्डल विधान' के आयोजन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। भगवान की 1008 दीपकों से मंगल आरती की गई।

सारनाथ में फहरा जिनधर्म का ध्वज—11वें तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ की जन्मभूमि सिंहपुरी (सारनाथ) में पूज्य गणिनी माताजी के सानिध्य में 16 से 20 जनवरी 2005 (पौष शु. 7 से 11) तक दि. जैन समाज काशी द्वारा भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। जन्मभूमि सिंहपुरी में दिगम्बर जैन मंदिर के समक्ष विशाल मैदान में भगवान श्रेयांसनाथ की 11 फुट उत्तुंग, पद्मासन श्यामवर्णी प्रतिमा विराजमान की गई है। जिसकी पंचकल्याणक हेतु वाराणसी जैन समाज ने पूज्य माताजी से विशेष निवेदन किया। चिरप्रतीक्षित इस आयोजन में वाराणसी समाज का उत्साह विशेष दृष्टव्य था। विश्वभर में प्रसिद्ध सारनाथ में जैनधर्म की कीर्तिपताका फहराने का यह अद्भुत अवसर था।

जन्मभूमि टिकैतनगर (बाराबंकी) में अभूतपूर्व समारोह—20 जनवरी 2005 को सारनाथ से मंगल विहारकर तपस्थली (प्रयाग) तीर्थ के दर्शन करते हुए पूज्य माताजी का अल्पसमय में ही 4 फरवरी 2005 को अपनी जन्मभूमि टिकैतनगर में ससंघ विशाल जुलूस के साथ मंगल प्रवेश हुआ। यहाँ पर 6 से 14 फरवरी तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में सानिध्य प्रदान करने के लिए पूज्य माताजी का आगमन हुआ था।

5 फरवरी को प्रातः अभिषेक के पश्चात् प्रतिष्ठेय 24 तीर्थंकर प्रतिमाओं का मुखावलोकन पूज्य माताजी के सानिध्य में किया गया पुनः कार्यक्रम का झण्डारोहण हुआ।

चमत्कारिक घटना घटी—8 फरवरी को संध्याकाल में नवीन मंदिर में अभूतपूर्व उल्लास एवं हर्ष के वातावरण में 24 तीर्थंकरों की खड्गासन प्रतिमाएँ एवं सहस्रकूट चैत्यालय जैन समाज के सभी सदस्यों एवं भरतसेना के नवयुवकों ने नवीन मंदिर के हाल में अपने हाथों से लाकर विराजमान कर दीं। नूतन मंदिर में प्रतिमाओं को अचल वेदी में अचल करने के लिए 3 वर्ष के बालक से लेकर 90 वर्ष तक के वृद्ध ने कारसेवा कर रातोंरात प्रतिमाएँ यथास्थान विराजमान कर दीं।

प्रातः 9 फरवरी को 4.50 बजे भगवान महावीर की अवगाहनाप्रमाण खड्गासन मूलनायक प्रतिमा भी रातों-रात कमलाकार वेदी पर खड़ी हो गईं, जिससे नवीन मंदिर का सुंदर स्वरूप दिखने लगा तथा इसका नामकरण 'चमत्कारिक महावीर मंदिर' कर दिया गया। सभी ने पूरी रात भगवान एवं माताजी के जयकारों से सारा परिसर गुंजायमान कर दिया।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा—9 फरवरी से 14 फरवरी तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सानंद निर्विघ्न सम्पन्न हुई। जन्मकल्याणक के दिन आकाश से हवाई जहाज द्वारा पुष्पवृष्टि को देखकर सभी हर्ष से झूम उठे।

मुख्यमंत्री का आगमन—12 फरवरी सन् 2005 को उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री मुलायम सिंह जी यादव पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन जन्मभूमि टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र. में पधारे एवं पूज्य माताजी का मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्य माताजी की प्रेरणा से माननीय मुख्यमंत्री जी ने भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर 'पार्श्वनाथ वर्ष' का शुभारंभ किया।

ऋषभ जन्मभूमि अयोध्या में मंगल प्रवेश—11 वर्ष के पश्चात् 17 मार्च सन् 2005 को पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के अयोध्या तीर्थ पर मंगल प्रवेश करने पर अयोध्यावासियों एवं वहाँ के संत-महंतों ने हार्दिक स्वागत एवं सम्मान किया।

महाकुंभ मस्तकाभिषेक—भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि शाश्वत तीर्थ अयोध्या में 1 से 3 अप्रैल तक द्वितीय महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव का भव्य आयोजन पूज्य माताजी एवं संघ के मंगल सानिध्य में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

1 अप्रैल को झण्डारोहणपूर्वक कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। परिसर में निर्मित पंडाल में "भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव" सम्मेलन की शृँखला में तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ एवं अ.भा.दि. जैन महिला संगठन का राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ। रात्रि में अ.भा.दि. जैन युवा परिषद का राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ।

2 अप्रैल, चैत्र वदी अष्टमी को भगवान ऋषभदेव के जन्मकल्याणक की पूर्व बेला में विशाल रथयात्रा जुलूस निकाला गया। मध्यान्ह में भारतवर्षीय दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की आमसभा हुई, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री-

श्री श्रीप्रकाश जायसवाल एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में समाज कल्याण मंत्री (उ0प्र0सरकार) ने पधारकर कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलन किया। पूज्य माताजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि ''हमारे जितने भी तीर्थ हैं, वे हमारी संस्कृति की धरोहर हैं, हमारे प्राण हैं, सर्वस्व हैं, जिनका संरक्षण एवं संवर्धन तीर्थक्षेत्र कमेटी पर निर्भर है।''

3 अप्रैल, चैत्र वदी नवमी को भगवान ऋषभदेव जन्मकल्याणक के दिन 31 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की खड्गासन प्रतिमा के महाकुंभ मस्तकाभिषेक के अवसर पर अयोध्या में हजारों श्रद्धालु भक्तों की भीड़ अभिषेक करने व देखने के लिए उमड़ पड़ी। कार्यक्रम के प्रारंभ में मंगल कलश स्थापना श्री दीपक जैन एवं श्रीमती सुभाषिनी जैन-वाराणसी ने किया एवं दीप प्रज्ज्वलन श्री चिरंजीलाल एवं श्रीमती सुमतीबाई जैन कासलीवाल परिवार-पटना द्वारा हुआ। भगवान के मस्तक पर प्रथम सिद्धिकलश करने का सौभाग्य संघपति लाला महावीर प्रसाद जी दिल्ली के परिवार ने प्राप्त किया। रत्नकलश की श्रृँखला में प्रथम कलश श्री कैलाशचंद जैन सर्राफ (लखनऊ) एवं परिवार ने किया पुनः श्रद्धालुओं ने स्वर्ण कलश, रजत कलश, ज्ञान कलश, श्रद्धा कलश और भक्तिकलश से प्रभु का अभिषेक किया। उत्तुंग प्रतिमा के नीचे चरणों में खड़े होकर सभी भक्त अभिषेक की धारा से भीगकर भक्ति में थिरक रहे थे।

सीधा प्रसारण–महामस्तकाभिषेक में संपूर्ण कार्यक्रम का 4 घंटे तक सीधा प्रसारण आस्था चैनल के माध्यम से किया जा रहा था। समस्त कार्यक्रम में पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, मैंने (क्षुल्लक मोतीसागर) एवं ब्र. रवीन्द्र जी ने कामेंट्री कर देश-विदेश की जनता को अयोध्या एवं भगवान ऋषभदेव के सिद्धान्तों से परिचित कराया। पूज्य माताजी ने भी सभी के लिए अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। करोड़ों लोगों ने अपने घर बैठे ही प्रभु पर पड़ती इन अभिषेक की धाराओं को देखकर अपने नेत्रों को सफल किया एवं इस कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा कर अपने शुभकामना संदेश भेजे।

नागरिक अभिनंदन–अयोध्या से मंगल विहार कर पूज्य माताजी पुनः टिकैतनगर पधारीं एवं वहाँ पर 13 अप्रैल 2005 को नूतन महावीर मंदिर पर बने सुंदर कलात्मक शिखर पर ध्वजारोहण एवं कलशारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न कराया। टिकैतनगरवासियों ने पूज्य माताजी के जन्मभूमि में मंगल आगमन पर सामूहिकरूप में उनका नागरिक अभिनंदन समारोह आयोजित किया। नगर पंचायत की चेयरमैन-श्रीमती फूलमती गुप्ता के सुपुत्र ने पूज्य माताजी के चरणों में अभिनंदन पत्र समर्पित किया। टिकैतनगर समाज ने भी पूज्य माताजी को 'भारतभूषण' की उपाधि से अलंकृत कर अपने को गौरवान्वित अनुभव किया।

बिहार के मध्य में अतिशय क्षेत्र त्रिलोकपुर के दर्शन करते हुए तह. फतेहपुर (उ.प्र.) में संघ का आगमन हुआ, जहाँ 22 अप्रैल सन् 2005 को पूज्य माताजी के सानिध्य में धूमधाम से महावीरजयंती मनाई गई।

आर्यिका दीक्षा जयंती–26 अप्रैल 2005, वैशाख कृष्णा दूज को पूज्य माताजी का महमूदाबाद (सीतापुर) नगर में 50वाँ आर्यिका दीक्षा जयंती समारोह हर्षोल्लास से मनाया गया। यह नगर पूज्य माताजी की गृहस्थावस्था की ननिहाल है, जो उनकी जन्मदात्री माँ मोहिनी देवी (आर्यिका रत्नमती माताजी) की जन्मभूमि है।

केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र में भगवान पार्श्वनाथ मस्तकाभिषेक–सारे देश में विभिन्न आयोजनों के माध्यम से मनाये जा रहे भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव वर्ष 2005 के अंतर्गत भगवान पार्श्वनाथ की केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र में पूज्य माताजी एवं संघ के सानिध्य में 15 मई 2005 को पार्श्वनाथ महामस्तकाभिषेक महोत्सव एवं रथयात्रा का विशाल आयोजन किया गया। पूज्य माताजी की प्रेरणा से नवनिर्मित 11 शिखरों से युक्त भव्य तीस चौबीसी मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ की अवगाहना प्रमाण विशाल प्रतिमा का एवं मूल मंदिर में विराजमान तिखाल वाले बाबा का महाभिषेक कर भक्तों ने अपने को सौभाग्यशाली माना। 19 मई 2005 को दो दिवसीय मुरादाबाद प्रवास के मध्य माताजी की प्रेरणा से भगवान महावीर डेन्टल कॉलेज, मुरादाबाद में कीर्तिस्तंभ का शिलान्यास कालेज के प्रमुख सुरेशचंद जैन द्वारा किया गया।

बढ़ चले कदम भगवान शांतिनाथ की भूमि की ओर–पूज्य माताजी का ससंघ अयोध्या एवं अहिच्छत्र तीर्थों पर महामस्तकाभिषेक सम्पन्न कराने के बाद विभिन्न स्थानों पर धर्मप्रभावना करते हुए 25 मई 2005 को भगवान शांतिनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर में मंगल प्रवेश हुआ।

मार्ग में अत्यधिक गर्मी के कारण मुरादाबाद के बाद पूज्य माताजी को 20 मई से ज्वर आना प्रारंभ हो गया था किन्तु अस्वस्थ स्थिति में भी अपने आत्मबल द्वारा विहार करके पूज्य माताजी ने निश्चित तिथि में ही जंबूद्वीप-हस्तिनापुर में प्रवेश किया। लगातार 15-20 दिनों तक टाइफाइड बुखार के कारण शरीर में अत्यंत कमजोरी आ गई थी, फिर भी पूज्य माताजी अपनी प्रत्येक चर्या में सजग रहीं । हम और आप जैसे व्यक्ति तो थोड़ा सा ज्वर आने पर ही अपने कार्यों को सुचारूरूप से नहीं कर पाते हैं परन्तु पूज्य माताजी का आत्मबल उन्हें शक्ति प्रदान करता है।

जम्बूद्वीप में आने के पश्चात् 20 दिनों तक लगातार रहे टायफाइड बुखार के कारण गंभीररूप से अस्वस्थ होने के बाद अपनी आत्मशक्ति और देशभर में भक्तों द्वारा किये जा रहे धार्मिक अनुष्ठान आदि के मंगल प्रभाव से शनैः-शनैः स्वास्थ्य लाभ प्राप्त

करती रहीं। अपने प्रबल आत्मबल के कारण अस्वस्थ स्थिति में भी आर्यिकाचर्या का कठोरतापूर्वक परिपालन करते हुए पूज्य माताजी ने सभी की मंगलभावना केफलस्वरूप स्वाध्याय, मंदिर दर्शन एवं अपनी दिव्यवाणी से संबोधन देना प्रारंभ कर दिया। साहित्य लेखन एवं तीर्थ निर्माण के माध्यम से धर्म के संरक्षण में ऐतिहासिक कार्य करने वाली पूज्य माताजी के अस्वस्थ होने की खबर लगते ही जैन समाज एवं साधुवर्ग में गहरी चिंता व्याप्त हो गई और देश के विभिन्न अंचलों में पूज्य माताजी केस्वास्थ्यलाभ हेतु पूजा-पाठ, विधान, मंत्र-जाप्य आदि के कार्यक्रम नियमित रूप से भक्तों द्वारा किये जाने लगे। कई आचार्यसंघों से मुनि-आर्यिकाओं की शुभकामना तथा विभिन्न अंचलों की उत्कृष्ट गुरुभक्ति के फलस्वरूप चमत्कार जैसा हुआ और 5 जून को माताजी को मानो नवजीवन ही प्राप्त हो गया।

कल शाम से लेकर रात तक जिनके उठकर बैठने की आश हम सभी ने छोड़ दी थी, आज 5 जून को उन्हीं माताजी ने सभी आगन्तुक भक्तों को थोड़ी देर बैठकर मुस्कुराते हुए अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया और उनके सानिध्य में 101 फुट ऊँचे सुमेरुपर्वत की पाण्डुकशिला पर भगवान शांतिनाथ का पंचामृत अभिषेक होकर निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। 12 जून को श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर ज्येष्ठ जिनवर अभिषेक के बाद सरस्वती माता का पंचामृत अभिषेक किया गया। मध्यान्ह में भव्यता के साथ षट्खण्डागम ग्रंथ की एवं सरस्वती माता की महापूजा सम्पन्न हुई।

पचासवाँ चातुर्मास (सन् 2005-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर)

प्रतिवर्षानुसार सन् 2005 में 20 जुलाई, आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर में पूज्य माताजी ने संघ सहित चातुर्मास की स्थापना की। इस वर्ष पूर्व से ही विराजमान पूज्य आर्यिकारत्न श्री अभयमती माताजी और क्षुल्लिका शांतिमती माताजी ने भी पूज्य माताजी, पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, मेरे (क्षुल्लक मोतीसागर) साथ चातुर्मास स्थापना की। अब हम 5 साधु संघ में हो गये थे। चातुर्मास की धर्मसभा में दिल्ली, बिहार, अवध एवं आसपास के नगरों से भक्तों ने पधारकर पूज्य माताजी से चातुर्मास स्थापना के लिए निवेदन किया।

विदेशी शोधार्थी दर्शनार्थ पधारे–28 जुलाई 2005 को विदेशी शोधार्थियों के एक समूह ने जंबूद्वीप स्थल पर पधारकर जंबूद्वीप रचना एवं अन्य मंदिरों को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की और पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया। विभिन्न देशों से पधारे इन शोधार्थियों ने 2 माह तक जैन समाज द्वारा चलाये गये "इंटरनेशनल समर स्कूल फॉर जैन स्टडीज' में जैनधर्म का प्रशिक्षण प्राप्त किया। उसी शृँखला में जंबूद्वीप-

हस्तिनापुर में आकर जैन साधुओं के कठोर तप एवं दिगम्बर जैन साधु-साध्वियों की चर्या को समझने का प्रयास किया।

अष्टान्हिका पर्व में 14 जुलाई से 22 जुलाई 2005 तक सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा (गुरु पूर्णिमा) को पूज्य माताजी के सानिध्य में आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टाधीश एवं गणिनी ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षा गुरु आचार्यश्री वीरसागर महाराज की प्रतिमा के अभिषेक पूजन का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया और आचार्यश्री का 130वाँ जन्मदिवस भी हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। श्रावण कृष्णा एकम् 22 जुलाई 2005 को वीरशासन जयंती पर्व के शुभ दिवस प्रातः कमल मंदिर में भगवान महावीर स्वामी की अवगाहनाप्रमाण प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक किया गया तथा मध्यान्ह में समवसरण विधान का आयोजन सम्पन्न हुआ।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, 12 अगस्त को त्रिमूर्ति मंदिर में सम्मेदशिखर की कृत्रिम रचना के समक्ष भगवान पार्श्वनाथ का निर्वाणलाडू भक्तिभावपूर्वक चढ़ाया गया। भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत पूज्य माताजी की विशेष प्रेरणा पर देश के विविध अंचलों में व्यापकरूप से लाडू चढ़ाया गया। इसी प्रेरणा के प्रतिफलस्वरूप मोक्षसप्तमी पर सम्मेदशिखर जी में इस वर्ष अन्य वर्षों की अपेक्षा भारी भीड़ रही। माताजी के ही सानिध्य में रक्षाबंधन पर्व, श्रावण शुक्ला पूर्णिमा 19 अगस्त को रक्षाबंधन पर्व की उद्भवस्थली हस्तिनापुर में धर्म, संस्कृति, धर्मायतन, साधुगण एवं साधर्मी बंधुओं की रक्षार्थ संकल्पित कराते हुए मनाया गया।

21 अगस्त को श्री सम्मेदशिखर जी विकास समिति द्वारा जम्बूद्वीप में आयोजित साधारण सभा की बैठक एवं समाजरत्न स्व. श्री प्रकाशचंद जैन लुहाड़िया (सासनी) की दसवीं पुण्यतिथि पर विशाल सभा आयोजित की गई। 27 अगस्त को जैन मिलन मेरठ महान द्वारा आयोजित भारतीय जैन मिलन क्षेत्र संख्या 5 की द्वितीय कार्यकारिणी सभा एवं भारतीय जैन मिलन फाउण्डेशन की 2005-2006 सत्र की द्वितीय बैठक भारी भीड़ के बीच सम्पन्न हुई। 4 से 6 सितम्बर तक चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की 50वीं पुण्यतिथि त्रिदिवसीय कार्यक्रम सहित भावभीनी विनयांजलि अर्पित करते हुए मनाई गई। 8 सितम्बर से 18 सितम्बर तक दशलक्षण महापर्व पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में विशेष भक्तिभावपूर्वक सम्पन्न हुआ। स्व. श्री जम्मनलाल जी कासलीवाल एडवो. (औरंगाबाद-महा.) द्वारा संस्थापित गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल महाराष्ट्र द्वारा इस अवसर पर त्रैलोक्य महामण्डल विधान आयोजित किया गया। महाराष्ट्र भक्तमण्डल, आंध्रप्रदेश, दिल्ली, सुल्तानपुर इत्यादि के लगभग 200 श्रद्धालुओं

ने प्रतिदिन प्रातःकाल अभिषेक-पूजन, मध्यान्ह में तत्त्वार्थसूत्र-दशधर्म एवं भगवान पार्श्वनाथ भव संबंधी प्रवचन तथा सायंकाल आरती-प्रश्नमंच-विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेकर महान पुण्योपार्जन किया। विधान के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी थे-श्री कस्तूरचंद बड़जाते एवं श्रीमती पुष्पा बड़जाते-औरंगाबाद (महा.)। 15 सितम्बर 2005 को विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष-श्री अशोक सिंघल पूज्य माताजी का मंगल आशीर्वाद प्राप्त करने दशलक्षण पर्व के मध्य पधारे और परम प्रसन्नता का अनुभव किया।

जम्बूद्वीप महामहोत्सव-2005—प्रति पाँच वर्षों में होने वाले जंबूद्वीप महामहोत्सव 2005 का आयोजन 13 से 17 अक्टूबर तक पूज्य माताजी एवं संघ के सानिध्य में भव्यता से सम्पन्न हुआ। लंबे समय के इंतजार के बाद इस महोत्सव में विविध आयोजनों के माध्यम से प्रत्यक्ष एवं परोक्षरूप से लाखों भक्तों ने भक्ति गंगा में स्नान कर पुण्य का संपादन किया।

साहित्य संगोष्ठी—13 अक्टूबर को प्रातः झण्डारोहणपूर्वक आयोजन का शुभारंभ हुआ। लगातार पाँच दिनों तक चलने वाले इस महोत्सव में सर्वप्रथम 13 अक्टूबर से 15 अक्टूबर तक 'गणिनी ज्ञानमती संस्कृत एवं अध्यात्म साहित्य संगोष्ठी' का आयोजन हुआ। इलाहाबाद से पधारे न्यायमूर्ति माननीय श्री सुधीर नारायण जी (सदस्य-कावेरी जल विवाद न्याय प्राधिकरण) ने दीप प्रज्ज्वलन कर संगोष्ठी का उद्घाटन किया। संगोष्ठी में अनेक मूर्धन्य विद्वानों ने भाग लेकर पूज्य माताजी द्वारा रचित विभिन्न ग्रंथों पर अपने शोधात्मक आलेख प्रस्तुत किये। मैंने (क्षु. मोतीसागर जी) 'कल्पद्रुम विधान' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। विद्वानों द्वारा विभिन्न प्रश्न करने पर पूज्य माताजी ने उनके आगमसम्मत उत्तर देकर संतुष्ट किया। 15 अक्टूबर को 'श्री गिरनार जी सिद्धक्षेत्र' पर विशेष सत्र आयोजित किया गया। पूज्य माताजी ने आगंतुक सभी विद्वानों को तीनलोक का ध्यान कराया।

सुमेरु पर्वत पर मस्तकाभिषेक—16 अक्टूबर रविवार प्रातः 7 बजे से हस्तिनापुर में निर्मित सुमेरु पर्वत की पाण्डुक शिला पर भगवान शांतिनाथ के महामस्तकाभिषेक का कार्यक्रम शुरू हुआ। सर्वप्रथम जंबूद्वीप के सामने बने अखण्ड ध्वजदंड पर श्री धन्नालाल मोहनलाल अजित कुमार जैन अजमेरा -धूलियान (पं. बंगाल) द्वारा ध्वजारोहण किया गया। पश्चात् सौधर्म इन्द्र श्री सुनील कुमार जैन सर्राफ-मेरठ ने गाजे-बाजे से ऐरावत हाथी पर भगवान शांतिनाथ को लेकर जंबूद्वीप की परिक्रमा की और भगवान को पाण्डुकशिला पर विराजमान किया। महोत्सव का दीप प्रज्ज्वलन इंजी. सी.आर.पाटिल-पुणे द्वारा, मंगल कलश स्थापना-डॉ. प्रमोद कुमार जैन, आगरा द्वारा एवं रत्नवृष्टि श्री विजय जैन-दरियागंज, दिल्ली द्वारा की गई। भगवान शांतिनाथ

का पंचामृत अभिषेक हुआ। पश्चात् क्रम-क्रम से सभी इन्द्र-इन्द्राणियों ने जाकर 1008 कलशों से भगवान का अभिषेक किया। अनेक गणमान्य महानुभावों ने मस्तकाभिषेक में भाग लेकर पुण्य अर्जित किया।

अपरान्हकालीन धर्मसभा में उत्तरप्रदेश सरकार के पर्यटन मंत्री-माननीय श्री नवाब कोकब हमीद, सांसद श्रीमती अनुराधा चौधरी एवं उ.प्र. आयात-निर्यात निगम के अध्यक्ष-श्री मेराजुद्दीन आदि विशिष्ट महानुभावों ने पधारकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

शरदपूर्णिमा—17 अक्टूबर शरदपूर्णिमा को भक्तों ने पूज्य माताजी का 72वाँ जन्मजयंती समारोह मनाया। प्रातःकाल ही भक्तों ने आकर पूज्य माताजी का दूध, जल से पादप्रक्षालन किया। पूज्य माताजी की महापूजा, भक्ति, आरती की। पश्चात् भगवान शांतिनाथ की रथयात्रा एवं भगवान पार्श्वनाथ वर्ष के अन्तर्गत भगवान पार्श्वनाथ का ऐरावत हाथी पर जुलूस निकाला।

मध्यान्ह में जन्मजयंती की विनयांजलि सभा हुई। जिसमें केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री श्री श्रीप्रकाश जायसवाल ने मुख्य अतिथि के रूप में पधारकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया एवं अपनी विनयांजलि अर्पित की। 72 विद्युत्दीपों को जलाकर समारोह का उद्घाटन किया। अनेक भक्तों, विद्वानों एवं श्रेष्ठियों ने भी पूज्य माताजी के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित की। जन्मजयंती पर हर्ष व्यक्त करते हुए भरतसेना-टिकैतनगर के युवकों ने 1008 रंगबिरंगे गुब्बारे आकाश में छोड़कर सभी का मन मोह लिया। हेलीकॉप्टर द्वारा पुष्पवृष्टि भी की गई।

आस्था चैनल पर हुआ सजीव प्रसारण—आस्था चैनल पर लगातार दो दिनों तक करोड़ों भक्तों ने कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देखकर अपार पुण्य अर्जित किया एवं मोबाइल, एस.एम.एस. के द्वारा अपने बधाई, शुभकामना संदेश भेजे। 16 अक्टूबर को मस्तकाभिषेक का सीधा प्रसारण देखकर अनेक भक्तों ने फोन के माध्यम से घर बैठे कलश बुक करवाये और अप्रत्यक्ष रूप में मस्तकाभिषेक में भाग लेकर पुण्य प्राप्त किया। 17 अक्टूबर को भी पूज्य माताजी की जन्मजयंती का सीधा प्रसारण देखकर देश-विदेश के भक्तों ने पूज्य माताजी के दर्शनों का लाभ लिया।

शिलान्यास—जंबूद्वीप स्थल पर निर्माणाधीन 'तेरहद्वीप रचना मंदिर' में निर्मित होने वाली 'तेरहद्वीप रचना' का शिलान्यास शरदपूर्णिमा के दिन प्रातः श्री दीपक जैन-वाराणसी एवं डॉ. प्रमोद कुमार जैन-आगरा ने किया। इस रचना में मध्यलोक के 458 अकृत्रिम जिनबिंबों की लगभग 800 देवभवनों के मंदिरों की, ढाईद्वीप के 170 तीर्थंकरों के समवसरण आदि की कुल मिलाकर 2000 से अधिक प्रतिमाओं की स्थापना की जा रही है।

आगामी कार्यक्रमों की घोषणाएँ—'तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी' के अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन ने घोषणा की कि जन्मभूमि विकास की शृँखला में अब पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी का विकास किया जायेगा। वहाँ मंदिर बन रहा है, शीघ्र ही उसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न होगी।

पूज्य माताजी ने आगामी वर्ष 2006 को भगवान पार्श्वनाथ निर्वाणभूमि "सम्मेदशिखर वर्ष" के रूप में मनाने की प्रेरणा सारे समाज को प्रदान की। प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर 15 अप्रैल 2006 से अप्रैल 2007 तक 'गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती' वर्ष के रूप में मनाने हेतु घोषणा की।

पार्श्वनाथ वर्ष के अन्तर्गत आयोजित भगवान पार्श्वनाथ प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं को लकी ड्रा के माध्यम से सम्मानित किया गया।

संपूर्ण कार्यक्रम में पधारने वाले भक्तों के लिए पाँचों दिन प्रीतिभोज की व्यवस्था श्री प्रद्युम्न कुमार जैन (छोटी सा.) एवं पुत्रगण अमरचंद जैन, हेमचंद जैन, नेमचंद जैन-टिकैतनगर के सौजन्य से की गई।

पुरस्कार समर्पण किये गये—17 अक्टूबर शरदपूर्णिमा को मध्यान्हकालीन सभा में दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के सर्वोच्च सम्मान 'गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती पुरस्कार-2005' से तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ के अध्यक्ष डॉ. शेखरचंद्र जैन-अहमदाबाद' को देश-विदेश में जैनधर्म की व्यापक प्रभावना एवं संस्थान की गतिविधियों में दिये अपने सहयोग हेतु सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार श्री अनिल कुमार जैन, श्रीमती अनिता जैन एवं चि. अतिशय जैन (कमल मंदिर), प्रीतविहार-दिल्ली के सौजन्य से प्रदान किया जाता है।

अन्य पुरस्कार—जंबूद्वीप पुरस्कार-2005 श्री माणिकचंद जैन पाटनी (इंदौर) को, कुण्डलपुर पुरस्कार 2005-ब्र. श्री विद्युल्लता जी शहा (सोलापुर-महा.) को, नंद्यावर्त पुरस्कार-2005-श्री पवन कुमार जी पापड़ीवाल (वास्तुशास्त्री), औरंगाबाद (महा.) को, आर्यिका रत्नमती पुरस्कार-2005 श्रीमती सुलोचना जैन, मॉडल टाउन-दिल्ली को, श्री छोटेलाल जैन स्मृति पुरस्कार-2005 श्री उदयभान जैन 'युवारत्न'-जयपुर (राज.) को संस्थान की ओर से प्रदान किये गये।

चातुर्मास समापन—1 नवम्बर 2005 को कार्तिक कृष्णा अमावस्या को पूज्य माताजी के साथ हम सभी ने चातुर्मास निष्ठापन की क्रिया प्रातःकाल की। पश्चात् जंबूद्वीप स्थित कमल मंदिर में भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा के समक्ष आगंतुक यात्रियों व स्थानीय लोगों ने पूज्य माताजी के सानिध्य में निर्वाणलाडू चढ़ाया। शाम

को सरस्वती माता एवं केवलज्ञान लक्ष्मी, गौतम गणधर स्वामी की पूजा हुई। रात्रि में दीपमालिका से पूरा जंबूद्वीप परिसर जगमगा गया ।

काकंदी में शिलान्यास—तीर्थंकर जन्मभूमि विकास के क्रम में दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अंतर्गत गठित भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी के द्वारा 20 नवम्बर 2005 को गोरखपुर जिले में स्थित भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी (खुखुन्दू) में परमपूज्य गणिनीप्रमुखश्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा एवं मंगल आशीर्वाद से कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन के नेतृत्व में श्री राज्कुमार जैन-श्रीमती आशा जैन 'वीरा बिल्डर्स' सपरिवार-दिल्ली के सौजन्य से भगवान पुष्पदंतनाथ मंदिर के शिलान्यास का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। संघपति लाला महावीर प्रसाद जी जैन-दिल्ली ने नूतन मंदिर के सामने अपनी ओर से भगवान पुष्पदंतनाथ का कीर्तिस्तंभ बनाने की स्वीकृति प्रदान की। अनेक महानुभावों ने तीर्थ के संरक्षक पद हेतु 27000/-रु. की राशि देने की घोषणा की तथा लगभग 30-40 व्यक्तियों ने 2700/-रु. की राशि तीर्थ विकास हेतु देकर अपना नाम अंकित कराया।

सम्मेदशिखर में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा—शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर जी में मार्च सन् 2003 में पूज्य माताजी की प्रेरणा से उनके सानिध्य में भगवान ऋषभदेव जिनमंदिर का शिलान्यास हुआ था, जो बनकर पूर्णरूप से निर्मित हो गया। उस नवनिर्मित भगवान ऋषभदेव मंदिर की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं कलशारोहण का कार्यक्रम दि. 2 से 7 दिसम्बर 2005 (मगसिर शु. एकम् से मगसिर शु. सप्तमी) तक सम्पन्न हुआ। पूज्य माताजी की आज्ञा से मुझे (क्षु. मोतीसागर को) उस प्रतिष्ठा में सानिध्य प्रदान करने हेतु जाने का अवसर आया। इस मंदिर की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराने का श्रेय भी मंदिर निर्माता डॉ. पन्नालाल जी पापड़ीवाल एवं पुत्रगण संजय जैन, विजय जैन पापड़ीवाल-पैठण (महा.) परिवार को ही प्राप्त हुआ। मंदिर में भव्य 9 फुट पद्मासन लाल वर्ण की प्रतिमा विराजमान की गई है। शाश्वत सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर में भगवान ऋषभदेव के मंदिर का निर्माण होना हमारी जैनधर्म की प्राचीनता का दिग्दर्शन कराने हेतु एक सशक्त प्रमाण है कि भगवान पार्श्वनाथ से पूर्व भी 22 तीर्थंकर इस धरती पर अवतरित हो चुके हैं, जिनमें प्रथम आदिब्रह्मा ऋषभदेव भगवान हैं। ब्र. रवीन्द्र कुमार जी के निर्देशन में भव्य पंचकल्याणक सानंद सम्पन्न हुई, जिसमें महाराष्ट्र प्रान्त से भी लगभग 200 व्यक्तियों ने पधारकर धर्मलाभ लिया।

इस महोत्सव के मध्य दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर द्वारा तीर्थराज सम्मेदशिखर में जिनसंस्कृति का संरक्षण करने वाली समस्त दि. जैन संस्थाओं का प्रशस्तिपत्र, दुपट्टा, मोमेन्टो आदि के द्वारा स्वागत किया गया।

भगवान पार्श्वनाथ लघु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा—भगवान शांतिनाथ की जन्मभूमि

हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीस सहस्राब्दि महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत गणिनी ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में भगवान पार्श्वनाथ की लघु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा दिनाँक 11 से 15 दिसम्बर 2005 तक सम्पन्न हुई। इस पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का शुभारंभ 7 दिसम्बर को प्रातः 10.30 बजे झण्डारोहण के साथ हुआ। यह आयोजन श्री सुमतप्रसाद जैन (प्रीत विहार)-दिल्ली एवं श्री अनिल कुमार जैन (कमलमंदिर-प्रीत विहार)- दिल्ली के द्वारा किया गया। प्रतिष्ठा महोत्सव में भगवान के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान एवं मोक्षकल्याणक की समस्त क्रियाओं को पूर्ण विधि-विधानपूर्वक प्रतिष्ठाचार्य पं. अकलंक कुमार जैन ने सम्पन्न कराया।

धूमधाम से मनाया गया भगवान पार्श्वनाथ का जन्मकल्याणक—पौष वदी 11, 27 दिसम्बर 2005 को भगवान पार्श्वनाथ का 2882वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में ऐरावत हाथी पर भगवान के जन्मकल्याणक का जुलूस, त्रिमूर्ति मंदिर में विराजमान भगवान पार्श्वनाथ की सहस्रफणा वाली प्रतिमा का 1008 कलशों से महामस्तकाभिषेक एवं सुमेरुपर्वत पर 108 कलशों से अभिषेक इत्यादि विविध कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इस अवसर पर अ.भादि. जैन महिला संगठन-दिल्ली प्रदेश की विविध कॉलोनी की इकाईयों की मीटिंग भी सम्पन्न हुई।

इस अवसर पर भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि भेलूपुर-वाराणसी में पाम्परिक रथयात्रा निकाली गई। पूज्य माताजी ने अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान कर दो ब्र.बहनों को वाराणसी भेजा। ज्ञातव्य है कि 6 जनवरी 2005 को पूज्य माताजी ने वाराणसी में ही ''भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव वर्ष'' का उद्घाटन कराया था।

गिरनार सुरक्षा दिवस आयोजन—1 जनवरी 2006 को विभिन्न स्थानों पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से 'गिरनार सुरक्षा दिवस' मनाया गया। राजधानी दिल्ली में शाह ऑडिटोरियम में अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद-दिल्ली प्रदेश ने अपने 29वें स्थापना दिवस पर 'भगवान नेमिनाथ निर्वाणभूमि गिरनार सुरक्षादिवस एवं जनजागरण अभियान विषयक' भव्य राष्ट्रीय युवा सम्मेलन आयोजित किया। उक्त कार्यक्रम में उपाध्याय श्री नयनसागर जी ने ससंघ एवं पूज्य माताजी के संघ की ओर से मैंने (क्षुल्लक मोतीसागर) जाकर सानिध्य प्रदान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता युवा परिषद के केन्द्रीय अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी ने की।

21 जनवरी 2006, माघ कृ. नवमी को पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की 21वीं पुण्यतिथि के अवसर पर उनकी समाधिस्थल पर निर्मित चरणों का अभिषेक एवं पूजन हुई तथा श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

श्रवणबेलगोल में भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव—सुप्रसिद्ध तीर्थ श्रवणबेलगोला में 1025 वर्ष प्राचीन भगवान बाहुबली की 57 फुट ऊँची प्रतिमा का प्रत्येक 12 वर्षों में होने वाला महामस्तकाभिषेक इस बार फरवरी 2006 में अनेक पूज्य आचार्यों के संघ सानिध्य में आयोजित किया गया। इस संदर्भ में सम्यग्ज्ञान पत्रिका के जनवरी 2006 का अंक ''भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव'' के रूप में प्रकाशित किया गया।

इस अवसर पर लाखों की भीड़ वहाँ उपस्थित थी तथा संघ से भी पूज्य माताजी ने ब्र. रवीन्द्र कुमार जी एवं क्रम-क्रम से सभी संघस्थ ब्र. बहनों को भी वहाँ भेजा।

श्रवणबेलगोल तीर्थ एवं आस-पास के तीर्थों की लघुयात्रा करके सभी ने असीम प्रसन्नता का अनुभव किया।

24 फरवरी 2006, फाल्गुन कृ. 11 को पूज्य माताजी ने षट्खण्डागम ग्रंथराज की 14वीं पुस्तक की टीका लिखकर पूर्ण की, यह हम सभी के लिए बहुत ही हर्ष एवं गौरव की बात है।

भगवान ऋषभदेव जन्म एवं दीक्षा कल्याणक महोत्सव—चैत्र कृष्णा 9 को प्रतिवर्ष भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या में वार्षिक मेले का आयोजन होता है। इस वर्ष 24 मार्च 2006, चैत्र कृष्णा नवमी को भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती के अवसर पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से 22 से 24 मार्च तक त्रिदिवसीय कार्यक्रम आयोजित किए गए। जिनमें क्रमशः ऋषभदेव मण्डल विधान, भगवान बाहुबली विधान एवं विषापहार विधान के साथ ही 31 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक सम्पन्न हुआ तथा प्रतिदिन आरती, प्रवचन एवं प्रश्नमंच भी हुए।

पुनः भगवान ऋषभदेव की दीक्षाकल्याणक भूमि प्रयाग में भी प्रतिवर्ष की भांति वार्षिक मेले का आयोजन किया गया। जिसके अन्तर्गत 24 से 26 मार्च तक तीन दिन कार्यक्रम आयोजित हुए जिनमें इलाहाबाद की जैन समाज एवं आस-पास नगरों के लोगों ने पधारकर धर्मलाभ प्राप्त किया।

प्रयाग में भी प्रतिदिन मण्डल विधान, अभिषेक, पूजन, प्रवचन, प्रश्नमंच आदि विविध कार्यक्रम सम्पन्न हुए। प्रयाग के कार्यक्रम में सभी के भोजन की व्यवस्था श्री चेतनलाल सत्येन्द्र कुमार जैन-प्रीतविहार, दिल्ली के सौजन्य से की गई थी।

कुण्डलपुर महोत्सव-2006—कार्यक्रमों की श्रृंखला में भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में भी भगवान महावीर की जन्मजयंती के अवसर पर 11 से 13 अप्रैल – चैत्र शु. 11 से 13 तक विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें बिहार की जनता ने विशेषरूप से भाग लिया।

कार्यक्रम का झण्डारोहण श्री सुभाषचंद प्रदीप कुमार सेठी-अड़ंगाबाद (मुर्शिदाबाद

प. बंगाल) ने किया तथा सभी सांस्कृतिक कार्यक्रमों का सौजन्य प्रदान किया श्री ज्ञानचंद जैन-आरा ने।

आगन्तुक सभी बंधुओं के लिए प्रीतिभोज की व्यवस्था श्रीमती पुष्पाबाई ध.प. श्री सुवीरचंद कासलीवाल-दुमानी बाजार (वर्धमान) प. बंगाल की ओर से की गई।

गणिनी ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव – 14-15-16 अप्रैल 2006 को जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों की सम्पूर्ति पर उनका आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव आशातीत सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। अन्य कार्यक्रमों की अपेक्षा बिल्कुल अनोखे ढंग से मनाए गए इस महोत्सव में हजारों की संख्या में भक्तों ने पूज्य माताजी के श्रीचरणों में अपनी विनयांजलि समर्पित की तथा 16 अप्रैल को आस्था चैनल के माध्यम से कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देखकर लाखों लोगों ने अपने जीवन को धन्य माना।

यह प्रथम अवसर था कि जब वर्तमान में किसी साधु ने अपनी दीक्षा के पचास वर्ष पूर्ण किए हों। इस अवसर पर 45 शीर्षस्थ संस्थाओं के पदाधिकारियों ने पधारकर पूज्य माताजी को प्रशस्ति भेंट करके सम्मान किया तथा अनेक उपाधियाँ प्रदान करके अपना गौरव बढ़ाया। इस अवसर पर ''गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ'' का प्रकाशन करके संघ एवं समाज ने पूज्य माताजी के प्रति अपनी विनयांजलि समर्पित की।

महोत्सव सम्प्रेरिका पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने इस महोत्सव को पूरे वर्ष तक मनाने की घोषणा करते हुए इसे ''दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष'' के रूप में मनाने की प्रेरणा सभी को प्रदान की।

उद्घाटन के साथ ही विभिन्न स्थानों पर प्रतिमाह कोई न कोई कार्यक्रमों का आयोजन प्रारंभ हो गया। अनेक नगरों की समाजों ने अपने-अपने नगर में दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव से संबंधित कार्यक्रम का आयोजन करके अपनी गुरुभक्ति का परिचय प्रदान किया।

पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने सम्यग्ज्ञान पत्रिका एवं आस्था चैनल के माध्यम से प्रतिमाह प्रश्नोत्तर प्रतियोगिताएँ आयोजित कीं जिसमें भाग लेकर सैकड़ों विजेताओं ने घर बैठे (डाक द्वारा) अपने-अपने पुरस्कार प्राप्त करके परम प्रसन्नता का अनुभव किया।

उत्तर भारत में प्रथम बार भट्टारक सम्मेलन–इस दीक्षा स्वर्ण जयंती के शुभ अवसर पर 15 अप्रैल को भट्टारक सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें दक्षिण भारत के 14 मठों में 12 मठों के 12 भट्टारकों ने पधारकर पूज्य माताजी के चरणों में अपनी विनम्र विनयांजलि समर्पित की। इस सम्मेलन में आचार्य श्री बाहुबलीसागर जी

महाराज ने भी पधारकर अपना पावन सानिध्य प्रदान किया। पूज्य माताजी के कार्यकलापों की प्रशंसा करते हुए उन्होंने सभी को अपना आशीर्वाद प्रदान किया तथा पूज्य माताजी को नूतन पिच्छी भेंट करते हुए उन्हें ''ज्ञानचन्द्रिका'' की उपाधि से विभूषित किया। आगत सभी भट्टारकों ने भी पूज्य माताजी को ''ऐतिहासिक आर्यिका'' की उपाधि से विभूषित करते हुए गौरव का अनुभव किया।

अक्षयतृतीया पर्व–पिछले वर्षों की भांति इस वर्ष भी पूज्य माताजी की प्रेरणा से संघ सानिध्य में जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में विराजमान भगवान ऋषभदेव की आहारमुद्रा वाली प्रतिमा को इक्षुरस का आहार देकर अक्षयतृतीया पर्व मनाया गया तथा करोड़ों वर्ष पूर्व के उस दृश्य को याद किया गया। इस कार्यक्रम का विशेष प्रसारण आस्था चैनल में एक एपिसोड के रूप में दिखाया गया।

भगवान शांतिनाथ जन्म-तप एवं निर्वाणकल्याणक के अवसर पर 26 मई 2006 को संघ के सानिध्य में भगवान शांतिनाथ का पंचामृत अभिषेक, पूजा का कार्यक्रम हुआ। प्रातः ऐरावत हाथी के जुलूस के पश्चात् भगवान शांतिनाथ का सुमेरु पर्वत की पाण्डुकशिला पर जन्माभिषेक हुआ पुनः अष्टापद मंदिर में विराजमान कैलाशपर्वत के समक्ष सैकड़ों भक्तों ने निर्वाणलाडू चढ़ाकर पुण्य का अर्जन किया।

स्वर्ण जयंती महोत्सव की आशातीत सफलता के पश्चात् 1 जून 2006 को श्रुतपंचमी पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया।

इन्द्रध्वज मण्डल विधान सम्पन्न–भगवान शांति-कुंथु-अरहनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में इन्द्रध्वज मण्डल विधान का आयोजन भक्तिभावपूर्वक सानंद सम्पन्न हुआ। विधान का शुभारंभ दिनाँक 17 जून 2006 को झण्डारोहणपूर्वक हुआ। पश्चात् दिनाँक 26 जून को प्रातः हवनविधि के साथ विधान सानंद सम्पन्न हुआ। स्व. श्री प्रकाशचंद जैन एवं श्रीमती ज्ञानादेवी जैन-टिकैतनगर के सुपुत्र श्री वीरकुमार जैन लखनऊ निवासी एवं उनकी ध.प. श्रीमती विजया जैन ने सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। विधान में उनके परिवारजन श्रीमती माला जैन ध.प. श्रीअरिहंत जैन, ब्र. कु. इन्दू जैन, निकलंक जैन, कु. जागृति जैन एवं श्री दुर्लभ जैन-उज्जैन आदि ने भाग लेकर अपार पुण्य अर्जित किया। पं. श्री विजय कुमार जैन एवं विधानाचार्य पं. श्री प्रवीणचंद जैन शास्त्री ने समस्त क्रियाएं विधि-विधानपूर्वक सम्पन्न करवाईं।

लघु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सानंद सम्पन्न–परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर में भगवान आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव लघु रूप में सानंद सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम दिनाँक 23 जून 2006 को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का झण्डारोहण हुआ। पश्चात् दिनाँक 26 जून से प्रतिष्ठा महोत्सव

गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान एवं मोक्षकल्याणक की समस्त क्रियाविधियों के साथ प्रारंभ होकर दिनाँक 30 जून को भक्तिभावपूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रतिष्ठा महोत्सव में लगभग 140 प्रतिमाओं पर संस्कार कर उन्हें भगवानस्वरूप पूज्य बनाया गया। विशेषरूप से पंचपरमेष्ठी भगवान से युक्त ॐ की दो प्रतिमाओं एवं भगवान महावीर उपसर्ग विजय भूमि उज्जैनी नगरी में विराजमान होने वाली भगवान महावीर की मुनि अवस्था वाली सवा पाँच फुट ऊँची प्रतिमा की भी प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। पंचकल्याणक महोत्सव में सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी बनने का सौभाग्य श्रीमान अमरचंद जैन-टिकैतनगर सपत्नीक एवं भगवान के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमान प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा.-टिकैतनगर सपत्नीक ने प्राप्त किया। महोत्सव में श्री शुभचंद्र जैन एवं श्रीमती क्षमा जैन-टिकैतनगर, श्रीमती सुगंध बाला जैन-दिल्ली, श्री रिंशू जैन एवं श्रीमती शुभा जैन-लखनऊ, श्री हेमन्त जैन एवं श्रीमती अनीता जैन-टिकैतनगर, श्रीमती स्वर्णा जैन ध.प. श्री दीपेश जैन-महमूदाबाद आदि ने भाग लेकर पुण्य अर्जित किया। प्रतिष्ठाचार्य पं. नरेश कुमार जैन शास्त्री ने पंचकल्याणक की समस्त क्रियाएं विधिविधानपूर्वक सम्पन्न कराईं।

इक्यावनवाँ चातुर्मास (सन् 2006-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर)

पूज्य माताजी द्वारा अब तक किए गए चातुर्मासों की शृँखला में एक और कड़ी के रूप में इस वर्ष का यह चातुर्मास भी सम्मिलित हो गया।

संस्थान के पदाधिकारियों एवं आस-पास की समाज के विशेष आग्रह से पूज्य माताजी ने जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में 10 जुलाई 2006 को चातुर्मास की स्थापना की। इस अवसर पर वर्षायोग स्थापना समारोह की एक औपचारिक सभा हुई जिसमें दिल्ली, महाराष्ट्र, ग्वालियर, मेरठ आदि विभिन्न स्थानों से पधारे भक्तों ने पूज्य माताजी के श्रीचरणों में श्रीफल समर्पित किए। सभा के अंत में पूज्य माताजी का पाद प्रक्षाल, पिच्छी परिवर्तन एवं आरती हुई। स्थापना समारोह के मध्य गणिनी ज्ञानमती माताजी ने वर्षायोग का महत्व बताया तथा आर्यिका श्री चंदनामती माताजी एवं मेरे भी प्रवचन हुए।

चातुर्मास स्थापना के साथ ही परम्परागत रूप से कार्यक्रमों की शृँखला प्रारंभ हो गई। भगवान महावीर की प्रथम देशना के प्रतीक में वीरशासन जयंती पर्व मनाया गया, भगवान पार्श्वनाथ निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्रावण शुक्ला सप्तमी को निर्वाणलाडू चढ़ाया गया तथा श्रावण शु. पूर्णिमा को रक्षाबंधन का पर्व सामूहिक रूप में मनाया गया। आस-पास के नगरों से भी भक्तों ने आकर पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में इस पर्व को मनाते हुए धर्म एवं धर्मायतनों की रक्षा का संकल्प किया।

जम्बूद्वीप महामण्डल विधान का आयोजन—प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल-महाराष्ट्र द्वारा पूज्य माताजी के सानिध्य में दशलक्षण पर्व में विधान का आयोजन हुआ। यह उनका विशेष पुण्य ही रहा है कि जम्बूद्वीप स्थल पर उन्हें ''जम्बूद्वीप महामण्डल विधान'' करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सैकड़ों की संख्या में लोगों ने इस विधान में भाग लिया। विधान के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी थे-श्री राजकुमार जैन काला-अंबड़ एवं उनकी धर्मपत्नी सौ. शकुन्तला काला।

प्रतिदिन प्रातः से लेकर रात्रि तक सभी ने ध्यान, पूजन, तत्त्वार्थसूत्र वाचन, दशधर्म के प्रवचन, प्रश्नमंच आदि के द्वारा खूब ज्ञानलाभ प्राप्त किया तथा पुनः पुनः हस्तिनापुर तीर्थ दर्शन की इच्छा व्यक्त की।

इस पर्व के अन्त में भाद्रपद शु. पूर्णिमा को पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी की प्रेरणा से विशाल जनसमूह के मध्य ''अवध प्रान्तीय गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल'' का गठन किया गया जिसमें कैलाशचंद जैन सर्राफ-लखनऊ को अध्यक्ष, श्री महेन्द्र कुमार जैन, मोतीनगर-लखनऊ को कार्याध्यक्ष एवं रोहित कुमार जैन-इन्दिरानगर, लखनऊ को महामंत्री के रूप में घोषित किया गया तथा अन्य पदाधिकारियों का भी चयन किया गया।

शरदपूर्णिमा महोत्सव—पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के जन्मदिवस-शरदपूर्णिमा के अवसर पर 6-7-8 अक्टूबर को त्रिदिवसीय कार्यक्रम आयोजित किए गए।

8 अक्टूबर के कार्यक्रम का आस्था चैनल के माध्यम से सीधा प्रसारण देखकर लाखों लोगों ने इस आकर्षक कार्यक्रम की अनुमोदना की।

पुरस्कार प्रदान किए गए—सन् 1995 में प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी की प्रेरणा से संस्थान द्वारा 'गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती पुरस्कार'' की स्थापना की गई। श्री अनिल कुमार अतिशय कुमार जैन 'कमल मंदिर', प्रीतविहार-दिल्ली के अर्थ सौजन्य से स्थापित इस पंचवर्षीय पुरस्कार के अन्तर्गत चयनित विद्वान् को 1,00,000/-(एक लाख) रुपये की नगद राशि, शाल, श्रीफल एवं रजत प्रशस्ति से सम्मानित किया जाता है। यह पुरस्कार जैन साहित्य एवं संस्कृति के अध्ययन एवं अनुसंधान के क्षेत्र में विशिष्ट ख्याति अर्जित करने वाले विद्वान् अथवा समर्पित कार्यकर्ता को प्रदान किया जाता है जिसने दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की शैक्षणिक/अकादमिक गतिविधियों के संचालन में सक्रिय योगदान दिया हो।

वर्ष 1995 में यह पुरस्कार डॉ. अनुपम जैन-इंदौर को, सन् 2000 में पं. शिवचरणलाल जैन-मैनपुरी को, सन् 2005 में डॉ. शेखरचंद्र जैन-अहमदाबाद को प्रदान किया गया।

अभी तक यह पुरस्कार प्रति पाँच वर्ष में एक-एक विद्वान को प्रदान किया गया

किन्तु अप्रैल 2006 में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के अवसर पर संस्थान ने इस पंचवर्षीय पुरस्कार को वार्षिक पुरस्कार के रूप में घोषित किया।

अतः शरदपूर्णिमा-2006 के पावन अवसर पर 8 अक्टूबर को दिगम्बर जैन समाज के वरिष्ठतम विद्वान् प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन-फिरोजाबाद को यह संस्थान का सर्वोच्च पुरस्कार प्रदान किया गया।

अन्य पुरस्कार–इसके साथ ही प्रति वर्ष की भांति अन्य वार्षिक पुरस्कारों से भी अनेक कर्मठ कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया–**जम्बूद्वीप पुरस्कार 2006**–श्री डी.ए. जैन पाटिल-जयसिंहपुर (महा.), **कुण्डलपुर पुरस्कार 2006**–डॉ. भागचंद जैन 'भागेन्दु'-दमोह (म.प्र.), **नंद्यावर्त पुरस्कार 2006**–डॉ. सुशील जैन-मैनपुरी (उ.प्र.), **आर्यिका रत्नमती पुरस्कार 2006**–श्री शैलेष कापड़िया-सूरत (गुज.), **श्री छोटेलाल जैन स्मृति पुरस्कार 2006**–श्री दिलीप जैन-जयपुर (राज.)।

अयोध्या में भगवान ऋषभदेव मण्डल विधान–प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव एवं भगवान श्रीराम की जन्मभूमि शाश्वत तीर्थ अयोध्या में विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित धार्मिक अनुष्ठानों के अन्तर्गत पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से भगवान ऋषभदेव मण्डल विधान, णमोकार महामंत्र का पाठ एवं विश्वशांति महायज्ञ का आयोजन 12 से 16 अक्टूबर 2006 तक किया गया। यह आयोजन विश्व हिन्दू परिषद द्वारा निर्मित पाण्डाल में सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास समापन–विभिन्न धार्मिक कार्यकलापों की सम्पन्नता के साथ ही वर्ष 2006 के इस चातुर्मास की समापन बेला आ गई। 22 अक्टूबर, कार्तिक अमावस को भगवान महावीर स्वामी के निर्वाणोत्सव की पूर्व बेला में शास्त्रोक्तविधिपूर्वक पूज्य माताजी ने चातुर्मास समापन की क्रियाएँ सम्पन्न कीं पुनः सभी ने अभिषेकपूजन करके भक्तिभावपूर्वक भगवान महावीर के समक्ष निर्वाणलाडू चढ़ाया।

अगले दिन कार्तिक शु. 1 से वीर नि. सं. 2532 का समापन होकर 2533 का शुभारंभ हो गया। पूज्य माताजी ने इस नूतनवर्ष के प्रारंभ में सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

आर्यिका श्री ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ, माधोराजपुरा (राज.) में वेदी का शिलान्यास–सन् 1956 में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने राजस्थान की जिस माधोराजपुरा नगरी में आर्यिका दीक्षा धारण की थी वहाँ की भाक्तिक जनता ने पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी की प्रेरणा से वहाँ पर "आर्यिका श्री ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ" के नाम से एक विशाल तीर्थ बनाने का निर्णय लिया।

समाज ने प्रयास करके नवीन भूमि का क्रय करके उस तीर्थ का निर्माण प्रारंभ

किया पुनः 7 दिसम्बर को वहाँ भगवान पार्श्वनाथ की 15 फुट उत्तुंग प्रतिमा एवं 24 तीर्थंकरों की 24 प्रतिमाएँ विराजमान करने हेतु वेदी शिलान्यास विशेष सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। वहाँ के भक्तों के विशेष आग्रह से पूज्य माताजी की आज्ञा से मुझे इस शिलान्यास समारोह में सानिध्य प्रदान करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

अब शीघ्र ही यह तीर्थ आकर्षक रूप में देश के समक्ष प्रस्तुत होकर अनेकानेक भव्य प्राणियों को वैराग्य का संदेश प्रदान करेगा।

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में भगवान पार्श्वनाथ जन्मजयंती–भगवान शांति, कुंथु, अरहनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर में पावन तीर्थ जम्बूद्वीप पर जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के जन्मजयंती हर्षोल्लासपूर्वक भक्तों द्वारा मनाई गई। आज ही के दिन पौष कृ. एकादशी को 2882 वर्ष पूर्व भगवान पार्श्वनाथ ने उत्तरप्रदेश की वाराणसी नगरी में जन्म लिया था। चूँकि इसी दिन भगवान चन्द्रप्रभु भगवान का जन्म हुआ था अतः दोनों तीर्थंकर भगवन्तों के जन्म एवं दीक्षाकल्याणक अभिषेक, रथयात्रा आदि के साथ मनाये गये।

इस दिन प्रातःकाल 10 बजे भगवान पार्श्वनाथ एवं चन्द्रप्रभु को ऐरावत हाथी पर विराजमान कर रथयात्रा निकाली गई। रथयात्रा के पश्चात् दोनों भगवन्तों का सुमेरुपर्वत की पाण्डुकशिला पर 108 कलशों से जन्माभिषेक किया गया। मध्यान्ह काल में 1 बजे से भगवान पार्श्वनाथ का मण्डल विधान किया गया। इससे पूर्व जम्बूद्वीप के तीनमूर्ति मंदिर में विराजमान भगवान पार्श्वनाथ की विशाल प्रतिमा का पंचामृताभिषेक दूध, दही, केशर आदि से सम्पन्न हुआ। मण्डल विधान एवं अभिषेक आदि के मुख्य यजमान श्री विजय जैन-दरियागंज, दिल्ली सपरिवार थे।

विशेषरूप से इस अवसर पर श्रीमान विजय जैन एवं श्री नितिन जैन ने धातु से निर्मित भगवान पार्श्वनाथ के नवखण्ड के दिव्य महल की सुन्दर प्रतिकृतिरूप "सर्वार्थसिद्धि" महल का मंत्रोच्चार के साथ उद्घाटन किया। पश्चात् सभी भक्तों ने महल में विराजमान भगवान का पालना झुलाया। संध्याकाल में प्रश्नमंच प्रतियोगिता आयोजित की गई और विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये गये।

अहिच्छत्र में भगवान पार्श्वनाथ सहस्राब्दि महोत्सव का संकल्पदीप प्रज्वलित हुआ–भगवान पार्श्वनाथ की केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र में विराजमान तिखाल वाले बाबा की प्रतिमा के सहस्राब्दि महोत्सव का "संकल्पदीप" पार्श्वनाथ जन्मजयंती के शुभ अवसर पर पौष कृ. एकादशी, 16 दिसम्बर 2006 को धूमधाम के साथ प्रज्ज्वलित किया गया। आगामी दिसम्बर 2007 में अहिच्छत्र में गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ एवं क्षुल्लक श्री समर्पणसागर जी महाराज के सानिध्य में होने वाले भगवान पार्श्वनाथ अंतर्राष्ट्रीय महाकुंभ मस्तकाभिषेक का आयोजन किया जायेगा। संकल्पदीप

प्रज्वलित करने का सौभाग्य श्री महावीर प्रसाद जैन 'संघपति', बंगाली स्वीट्स, साउथ एक्स.-नई दिल्ली को प्राप्त हुआ तथा समारोह में कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन को आगामी सहस्राब्दि महोत्सव का राष्ट्रीय अध्यक्ष घोषित किया गया।

सहस्राब्दि महोत्सव के इस शुभ अवसर पर मैंने, अहिच्छत्र तीर्थ के विकास हेतु अग्रणी पूज्य क्षुल्लक श्री समर्पणसागर जी महाराज एवं कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन-हस्तिनापुर ने अपना सानिध्य प्रदान किया।

ध्यान साधना एवं ज्ञान ज्योति प्रशिक्षण शिविर—जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में शीतकालीन अवकाश दिनाँक 25 दिसम्बर 2006 से 1 जनवरी 2007 तक 7 दिवसीय ध्यान साधना एवं ज्ञान ज्योति प्रशिक्षण शिविर सानंद सम्पन्न हुआ। प्रशिक्षण शिविर में 50 से अधिक बच्चों और बड़े शिविरार्थियों ने भाग लिया। प्रतिदिन प्रातःकाल 7 बजे पूज्य माताजी द्वारा शिविरार्थियों को ॐ, ह्रीं, अर्हं, असि आ उसा, तीन लोक आदि का ध्यान करना सिखाया गया। मध्यान्हकाल में 2.30 बजे से 3.30 बजे तक प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा प्रतिदिन सभी को "द्रव्य संग्रह" पुस्तक का प्रशिक्षण दिया गया तथा संध्याकाल में पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज द्वारा सायं 6 से 7 बजे तक सभी को बाल-विकास का अध्यापन कराया गया। प्रतिदिन शिविरार्थियों ने भगवान की भक्तिभाव के साथ मंगल आरती की। समापन दिवस पर शिविर के संयोजक पण्डित नरेश कुमार जैन शास्त्री-हस्तिनापुर द्वारा सभी शिविरार्थियों को मनोकामना सिद्धि महावीर विधान कराया गया। अंत में सभी शिविरार्थियों के प्रमाणपत्र एवं प्रतीकचिन्ह भेंट किए गए और संयोजक पं. नरेश जी को भी प्रतीक चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया।

इस प्रकार मैंने यहाँ पूज्य माताजी के सन् 1953 से 2006 तक दीक्षित जीवन का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है। यह उनके स्वर्णिम व्यक्तिव की एक झलकमात्र है, जो आप सभी के लिए प्रेरणादायी है।

C C C

गणिनी ज्ञानमती माताजी की साहित्य साधना

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने दीक्षित जीवन में भगवान महावीर के शासन की प्रथम लेखिका साध्वी के रूप में साहित्य लेखन करके एक अद्भुत कीर्तिमान स्थापित किया है।

सर्वप्रथम इन्होंने संस्कृत व्याकरण के ज्ञान को प्राप्त करके अपने ज्ञान की नींव मजबूत की और सन् 1955 में भगवान के जिन सहस्रनाम मंत्र बनाकर अपनी लेखनी का शुभारंभ किया पुनः 10 वर्षों का दीक्षाकाल अध्ययन और अध्यापन में व्यतीत हुआ। उसके बाद सन् 1965 से लेखनी का पुनः शुभारंभ किया, जिसके द्वारा आज तक ढ़ाई सौ से अधिक ग्रंथों का सृजन समाज के समक्ष प्रस्तुत हुआ है।

यहाँ पर उन्हीं छोटे-बड़े ग्रंथों का संक्षिप्त विवरण चारों अनुयोगों के क्रमानुसार प्रस्तुत किया जा रहा है। आप इन्हें पढ़कर दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान से अपनी रुचि के अनुसार स्वाध्याय हेतु साहित्य प्राप्त करें और जो विद्वान् पूज्य माताजी के साहित्य पर शोध करना चाहें, वे भी त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित गणिनी ज्ञानमती प्राकृत शोधपीठ से संपर्क कर सकते हैं।

प्रथमानुयोग (उपन्यास/बाल साहित्य)

1. चौबीस तीर्थंकर—दिल्ली लाल मंदिर में भगवान महावीर स्वामी के 2500वें निर्वाण उत्सव पर वीर सं. 2500 सन् 1974 में यह पुस्तक लिखी। चौबीस तीर्थंकरों का अलग-अलग संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत पुस्तक में दिया गया है। प्रत्येक तीर्थंकरों की पूर्व पर्याय से आगमन, पाँच कल्याणकों के स्थान, तिथियाँ आदि दी गई हैं। तीर्थंकरों के जीवन की लगभग सभी प्रमुख घटनाएँ प्रत्येक परिचय में एक ही पुस्तक में माताजी ने संग्रहीत कर दी हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2505, सन् 1979 में, पृष्ठ संख्या 88 है।

2. भगवान महावीर कैसे बने—भगवान महावीर स्वामी की जीवनी-पुरुरवा भील से महावीर बनने तक का विवरण संक्षेप में बहुत ही सुगम शैली में दिया गया है। भगवान महावीर के पच्चीस सौवें निर्वाण महोत्सव के पावन अवसर पर वीर सं. 2500, सितम्बर 1974 में इस पुस्तक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन किया गया। पृष्ठ संख्या 40 है।

3. तीर्थंकर ऋषभदेव के दश अवतार—वीर सं. 2525 सन् 1999 में पूज्य माताजी ने यह पुस्तक लिखी, इसमें भगवान ऋषभदेव कैसे बने? उनके पूर्व के दश भवों का वर्णन किया है। राजा महाबल की पर्याय से उनके जीवन का उत्थान प्रारंभ हुआ पुनः ललितांग देव, राजा वज्रजंघ, भोगभूमि आर्य, श्रीधरदेव, सुविधि राजा,

अच्युतेन्द्र, वज्रनाभि चक्रवर्ती, सर्वार्थसिद्धि के अहमिन्द्र आदि भवों का वर्णनकर भगवान ऋषभदेव के पंचकल्याणक का वर्णन किया है। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2525, रक्षाबंधन पर्व-26 अगस्त 1999, पृ. सं. 72 है।

4. भगवान ऋषभदेव का समवसरण–वीर सं. 2523, सन् 1997 में इस पुस्तक को लिखा। इसमें पूज्य माताजी ने महापुराण, हरिवंशपुराण, तिलोयपण्णत्ति आदि ग्रंथों के आधार से भगवान ऋषभदेव के समवसरण का सुन्दर वर्णन किया है। माताजी ने समवसरण का वर्णन आगम से पढ़कर ही समवसरण का सुन्दर रथ बनवाकर उसका श्रीविहार भारतदेश में कराया। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2524, चैत्र शुक्ला तेरस, महावीर जयंती, 9 अपैल 1998, पृष्ठ सं. 44 है।

इस पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद डॉ. एस. बाया ने किया है। इसका प्रथम संस्करण वीर सं. 2525 सन् 1999 में छप चुका है।

5. मेरी स्मृतियाँ–राजधानी दिल्ली में वीर सं. 2508, सन् 1982 में इसे लिखना प्रारंभ किया। हस्तिनापुर में वीर सं. 2509, सन् 1983 में लिखकर पूर्ण किया। संघ के शिष्य-शिष्याओं तथा समाज के वरिष्ठ श्रेष्ठी, विद्वान् एवं कार्यकर्ताओं के विशेष आग्रह पर पूज्य माताजी ने अपने दीर्घ जीवन की आत्मकथा लिखी है। यह एक श्रमसाध्य कार्य था, भूली-बिसरी स्मृतियों को याद कर उन्हें लिपिबद्ध करना और वह भी पाठकों की दृष्टि से। इसे लिखते समय माताजी के मस्तिष्क पर बहुत जोर पड़ा। इस ग्रंथ में अपने बाल्यकाल सन् 1940 से सन् 2004 तक की घटनाओं को तो दर्शाया ही है, साथ ही देश-काल की परिस्थितियों पर भी दृष्टिपात किया है। यह केवल आत्मकथा का ग्रंथ ही नहीं है अपितु विगत 60-65 वर्षों का दिगम्बर जैन समाज का इतिहास है। इन विगत वर्षों में हुई विशेष घटनाओं को भी अपने अनुभवों के आधार पर अंकित किया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2516, अप्रैल 1990 में पुनः आगे की स्मृतियों सहित सन् 2004 में प्रकाशित हुआ है।

6. भगवान बाहुबली–भगवान बाहुबली सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक श्रवणबेलगोला के पावन प्रसंग पर भगवान बाहुबली की जीवन गाथा तथा 57 फुट ऊँची अति मनोज्ञ प्रतिमा का प्रत्यक्ष या परोक्ष दर्शन का आनन्द प्राप्त कराने के लिए यह पुस्तक तैयार की गई। इसमें 111 पद्यों में बाहुबली लावणी तथा गद्य में जीवन चरित्र दिया गया है। दोनों रचनाएँ पूज्य माताजी कृत हैं। बाहुबली लावणी का सृजन वीर सं. 2491, सन् 1965 में श्रवणबेलगोला में साक्षात् बाहुबली की प्रतिमा के समक्ष बैठकर माताजी ने किया था। वीर सं. 2507, सन् 1981 में इसी लावणी को संगीतबद्ध करके 7 सप्ताह तक आकाशवाणी दिल्ली से प्रसारित किया गया था, जिसका शीर्षक था "पाषाण बोलते हैं।" प्रथम संस्करण वीर सं. 2506, मार्च 1980, पृष्ठ संख्या 56 है।

7. भगवान वृषभदेव–जैन संस्कृति के प्रथम तीर्थंकर युग प्रवर्तक देवाधिदेव भगवान आदिनाथ का जीवन वृत्त-पाँचों कल्याणक तथा उनके पूर्व भव इस उपन्यास में दिये गये हैं। पुस्तक छोटी होते हुए भी सारगर्भित है। पूज्य माताजी की अपनी यह एक विशिष्ट शैली है कि पुस्तक छोटी हो या बड़ी, पूजाएं हों या स्वाध्याय के ग्रंथ, सभी में सुगमता से जैनधर्म के चारों अनुयोगों का समावेश कर देती हैं। माताजी द्वारा लिखी प्रत्येक पुस्तक को पढ़ने से जीवन जीने की कला प्राप्त होती है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, सन् 1981 में, पृष्ठ संख्या 70 है।

8. भगवान नेमिनाथ–इसमें हरिवंशपुराण के आधार से पूज्य माताजी ने भगवान नेमिनाथ का जीवन चरित्र उपन्यास शैली में प्रस्तुत किया है। पूज्य माताजी ने 'नेमि निर्माण काव्य' के आधार से भी भगवान नेमिनाथ के पूर्वभवों का वर्णन किया है। इसमें तीर्थंकरों की एक विशेषता बताई है कि उन्होंने पूर्व भवों में अनेकों व्रत किए। इसमें पूज्य माताजी ने 30-35 व्रतों को लिखा है। जैसे-सर्वतोभद्र, वसन्त भद्र, सिंह निष्क्रीडित, मेरुपंक्तिव्रत आदि। इसमें उत्तरपुराण और निर्वाणकाण्ड का भी आधार लिया है।

9. अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर–वीर सं. 2526 सन् 2001 में भगवान महावीर स्वामी के 2600वें जन्मजयंती वर्ष के अन्तर्गत यह पुस्तक लिखी। इसमें भगवान महावीर स्वामी का परिचय एवं उनके पंचकल्याणकों का वर्णन है। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2526, आश्विन शु. 5, 21 अक्टूबर 2001, पृष्ठ संख्या 16 है।

10. भगवान पार्श्वनाथ–भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में वीर सं. 2530 सन् 2004 में यह पुस्तक लिखकर तैयार की। इस पुस्तक में भगवान पार्श्वनाथ का परिचय एवं उनके दशभवों का वर्णन है। इसके साथ ही तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास की आवश्यकता, तीर्थंकर जन्मभूमि वंदना भी लिखी है। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2530, श्रावण शुक्ला सप्तमी सन् 2004, पृष्ठ संख्या 72 है।

11. भगवान महावीर–भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में वीर सं. 2003 में यह पुस्तक तैयार की । इसमें भगवान महावीर स्वामी का परिचय, जन्मभूमि कुण्डलपुर, भगवान महावीर के पाँचों कल्याणक एवं भगवान महावीर के पूर्व के 10 भवों का भी वर्णन है। इसके साथ ही भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर एक वास्तविक तथ्य आदि कई लेख एवं वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकरों की 16 जन्मभूमियों के नाम हैं। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2530, माघ शु. 11, 1 फरवरी 2004, पृष्ठ संख्या 154 है।

12. श्री ऋषभदेव जन्मभूमि अयोध्या–ऋषभ जन्मभूमि अयोध्या में वीर सं. 2519, सन् 1993 में पूज्य माताजी ने यह पुस्तक लिखी। वर्तमान में युग की आदि में

भगवान ऋषभदेव ने जन्म लेकर यहीं से धर्म की परम्परा को प्रवर्तित किया है। अतएव उनका परिचय देते हुए अन्य तीर्थंकरों का, भरत आदि चक्रवर्तियों का तथा श्रीरामचन्द्र आदि महापुरुषों का भी संक्षिप्त परिचय इस पुस्तक में दिया गया है। वर्तमान में जैन-जैनेतर लोग तथा अपने भारतवर्ष के ही नहीं विदेशों के लोग भी 'ऋषभ जन्मभूमि' के नाम से भी इस अयोध्या का महत्व समझें, इसी भावना से पूज्य माताजी ने यह 'श्री ऋषभ जन्मभूमि अयोध्या' पुस्तक लिखी है। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2519, आश्विन शु. 15, शरदपूर्णिमा, 30 अक्टूबर 1993, पृष्ठ संख्या 56 है।

13. जैनधर्म एवं भगवान ऋषभदेव–वीर सं. 2524, सन् 1998 में भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार के अवसर पर यह पुस्तक लिखी। इसमें तीर्थंकर ऋषभदेव के बारे में वर्णन है, जो करोड़ों वर्ष पूर्व के इतिहास का स्मरण कराता है। जैनधर्म के कर्मसिद्धान्त, सृष्टि रचना, तीर्थंकरों के पंचकल्याणक, जैनधर्म की उदारता आदि का भी संक्षिप्त वर्णन है तथा भगवान ऋषभदेव के पुत्र सम्राट् चक्रवर्ती भरत के नाम पर हमारे इस देश का 'भारत' नाम विभिन्न वेदपुराणों के माध्यम से सिद्ध किया है। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2525 वैशाख कृष्णा 2, 2 अप्रैल 1999 पृष्ठ संख्या 16 है। इस पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने किया है। जिसका प्रथम संस्करण वीर सं. 2526, 4 फरवरी 2000 में छप चुका है।

14. तीर्थंकर जीवन दर्शन–वीर सं. 2527, सन् 2001 भगवान महावीर स्वामी के 2600वें जन्मजयंती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत इस पुस्तक को लिखा। इस पुस्तक में चौबीस तीर्थंकरों के संक्षिप्त परिचय प्रदान किए हैं, जिसमें उनकी पंचकल्याणक तिथि, पंचकल्याणक स्थान के साथ-साथ तीर्थंकरों के माता-पिता, चिन्ह, वंश, देहवर्ण, आयु, अवगाहना आदि का वर्णन है। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2527, श्रावण शु. 15, रक्षाबंधन पर्व 4, अगस्त 2001, पृष्ठ सं. 32 है।

15. तीर्थंकर महावीर और धर्मतीर्थ–भगवान महावीर के पच्चीस सौंवे निर्वाण महोत्सव के पावन प्रसंग पर भगवान महावीर के जीवन चरित्र एवं जैनधर्म का जन-जन को परिचय प्रदान कराने के लिए यह छोटी सी पुस्तक लिखी थी। बड़ी संख्या में इसका प्रकाशन हुआ। प्रथम संस्करण वीर सं. 2500, सितम्बर 1974 में, पृष्ठ संख्या 16 है। इसका अंग्रेजी में ब्र. कु. स्वाति जैन ने अनुवाद किया है, जो कि छप चुका है।

16. प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज–बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के 131वें संयम वर्ष (2003-2004) के अवसर पर इस पुस्तक का प्रकाशन हुआ। इसमें आचार्यश्री के जीवन चरित्र का वर्णन है, जिन्होंने बीसवीं सदी में जन्म लेकर धरती पर लुप्तप्राय हो रही मुनिपरम्परा को पुनरुज्जीवित किया था तथा जिन्होंने वास्तव में शान्ति के सागर बनकर समस्त

प्राणियों को शान्ति का संदेश प्रदान किया था। प्रथम संस्करण-वीर सं. 2530, आषाढ़ कृष्णा षष्ठी, 7 जून 2004, पृष्ठ संख्या 80 है।

17. बाल विकास (भाग-1)–जैनधर्म का प्रारंभिक ज्ञान अर्जन करने के लिए इस सचित्र पुस्तक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2500, सन् 1974 में हुआ। पृ. संख्या 20 है। इसका अंग्रेजी अनुवाद श्री जिनेन्द्र प्रसाद जैन 'ठेकेदार'-दिल्ली ने किया है, जो कि छप चुका है।

18. बाल विकास (भाग-2)–इसके प्रथम भाग की शृँखला में और आगे का ज्ञान अर्जन कराने के लिए दूसरे भाग का प्रकाशन हुआ था। प्रथम संस्करण वीर सं. 2500, सन् 1974 है। पृष्ठ संख्या 36 है। इसका भी अंग्रेजी अनुवाद श्री जिनेन्द्र प्रसाद जैन ठेकेदार ने किया है, जो कि प्रकाशित हो चुका है।

19. बाल विकास (भाग-3)–इन दो भागों की शृँखला को आगे बढ़ाते हुए इसका तीसरा भाग प्रकाशित किया गया। प्रथम संस्करण वीर सं. 2501, सन् 1975, पृष्ठ संख्या 64 है।

20. बाल विकास (भाग-4)–ज्ञानार्जन की श्रेणी को आगे बढ़ाते हुए इस चौथे भाग का प्रकाशन किया गया। प्रथम संस्करण वीर सं. 2502, सन् 1976, पृष्ठ संख्या 80 है।

नोट–इन चार भागों को पढ़कर कोई भी विद्यार्थी/पाठक जैनधर्म के अच्छे ज्ञाता बन सकते हैं। बाल विकास के चारों भाग कन्नड़, मराठी, गुजराती, तमिल भाषा में भी छप चुके हैं।

21. जैन बाल भारती (भाग-1)–जैन परम्परा में सुप्रसिद्ध महापुरुषों की जीवनी से संबंधित 17 शिक्षास्पद कथानक इस पुस्तक में दिये गये हैं, जो कि रोचक व सुगम हैं। प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2508, जनवरी 1982 में, पृष्ठ संख्या 52 है।

22. जैन बाल भारती (भाग-2)–इस भाग में 14 कथानक हैं। प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2508, जनवरी 1982 में, पृष्ठ संख्या 56 है।

23. जैन बाल भारती (भाग-3)–इस भाग में 13 कथानक हैं। प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2508, जनवरी 1982 में, पृष्ठ संख्या 72 है।

24. नारी आलोक (भाग-1)–इस पुस्तक में प्रश्नोत्तर के माध्यम से अनेक विषयों का एवं इतिहासप्रसिद्ध महिलाओं एवं महापुरुषों के जीवन वृत्त का बोध कराया गया है। इसमें 25 लेख हैं, सभी लेख रोचक एवं प्रेरणास्पद हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2508, सन् 1982 में, पृष्ठ संख्या 86 है।

25. नारी आलोक (भाग-2)–प्रथम भाग की तरह दूसरे भाग में भी 24 लेख हैं, जिनमें भिन्न-भिन्न विषयों को सुगम भाषा में प्रश्नोत्तर के माध्यम से खोला गया है तथा

कुछ में कथाएँ भी दी गई हैं। लेख आबाल-गोपाल, स्त्री-पुरुष सभी के पढ़ने योग्य हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2508, सन् 1982 में, पृष्ठ संख्या 106 है।

26. भरत बाहुबली (चित्रकथा)–बालक-बालिकाओं को भगवान भरत- बाहुबली की जीवनी का सुगमता से परिचय कराने के लिए चित्रों के माध्यम से कथा लिखी, जो कि अति आधुनिक शैली में है। इसका प्रकाशन नवभारत टाइम्स से प्रकाशित होने वाले इन्द्रजाल कॉमिक्स की श्रृंखला नं 368 में वीर सं. 2507, फरवरी 1981 में भगवान बाहुबली सहस्राब्दि महोत्सव के पावन अवसर पर हिन्दी व अंग्रेजी में किया गया। इसका अंग्रेजी में अनुवाद शीना जैन ने किया है।

27. ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर–हस्तिनापुर में वीर सं. 2500 भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव पर ज्येष्ठ शु. दशमी, गुरुवार को यह कृति पूर्ण किया। हस्तिनापुर की ऐतिहासिक घटनाओं का इस पुस्तक में शास्त्रों के आधार से संक्षेप में उल्लेख किया है। इस तीर्थक्षेत्र पर वर्तमान में उपलब्ध मंदिरों का भी दिग्दर्शन कराया है। प्रथम संस्करण, वीर सं. 2500, शरदपूर्णिमा सन् 1974, पृष्ठ संख्या 60 है।

28. जम्बूद्वीप गाइड–इस लघु पुस्तिका में माताजी ने जम्बूद्वीप को जानने के लिए सरल भाषा में जम्बूद्वीप के चैत्यालय, नदी, पर्वत, क्षेत्र आदि का दिग्दर्शन कराया है। साथ ही जिस पावन भूमि पर भव्य जम्बूद्वीप रचना का निर्माण हुआ है, उसकी प्राचीन ऐतिहासिक घटनाओं का भी अतिसंक्षेप में वर्णन किया है। अंत में जम्बूद्वीप रचना से संबंधित कुछ भजन भी दिये हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, जनवरी 1981 में, पृष्ठ संख्या 24 है। इस पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद श्रीमती राजरानी जैन, मोरीगेट-दिल्ली ने किया है, जिसका प्रथम संस्करण वीर सं. 2509, 14 नवम्बर 1983 में छप चुका है।

29. संस्कार–वीर सं. 2501, सन् 1975 में यह उपन्यास माताजी ने लिखा। इसमें भगवान पार्श्वनाथ का मरुभूति की पर्याय से लेकर पार्श्वनाथ तक 10 भवों का कथानक के रूप में वर्णन है। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2507, सन् 1981, पृष्ठ संख्या 72 है।

30. आटे का मुर्गा–यशोधर चरित्र पर लिखा गया यह उपन्यास हिंसा के दुष्परिणाम को बताने वाला है। आटे का मुर्गा बनाकर उसकी बलि करना भी कितने महान् पापबंध का कारण बना! अति रोमांचक कथानक है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2510, सन् 1984 में, पृष्ठ संख्या 148 है।

31. जीवनदान–जीव दया पर लिखे गये इस उपन्यास में मृगसेन धीवर द्वारा ली गई छोटी सी प्रतिज्ञा उसे अगले भव में पाँच बार जीवन रक्षा में सहकारी होती है। इस घटना को बहुत ही सरल भाषा में प्रदर्शित किया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, सन् 1981 में, पृष्ठ 36 हैं। इस पुस्तक का श्रीमती राजरानी जैन, मोरीगेट-दिल्ली ने

अंग्रेजी अनुवाद किया है, जिसका प्रथम संस्करण वीर सं. 2510, 16 मार्च 1984 में छप चुका है।

32. उपकार–वीर सं. 2503, सन् 1977 में यह उपन्यास लिखा। जीवंधर कुमार के जीवन के उतार-चढ़ाव को दर्शाने वाला यह उपन्यास सुकृत की महिमा को प्रकट करता है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, सन् 1981, पृष्ठ संख्या 60 है।

33. परीक्षा–वीर सं. 2504, सन् 1979 में यह उपन्यास लिखा। पद्मपुराण के आधार से उपन्यास की शैली में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र जी एवं सीताजी का जीवनवृत्त इसमें है। पृष्ठ संख्या 160 है।

34. प्रतिज्ञा–हस्तिनापुर में वीर सं. 2503 सन् 1977 में "मनोवती की दर्शन कथा" के आधार पर लिखा हुआ यह रोमांचक उपन्यास है। पृष्ठ संख्या 128 है।

35. भक्ति–वीर सं. 2506, सन् 1980 में यह पुस्तक लिखी है। यह भी उपन्यास है, जिसमें सेठ सुदर्शन, महामुनि सुकुमाल, रक्षाबंधन एवं अंजन चोर की कथाएँ हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2510, सन् 1984 में, पृष्ठ संख्या 106 है।

36. प्रभावना–इस उपन्यास में अकलंक-निकलंक का जीवनवृत्त दिया गया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2506, सन् 1980 में, पृष्ठ संख्या 80 है।

37. योगचक्रेश्वर बाहुबली–वीर सं. 2505, सन् 1979 में यह पुस्तक लिखी। भगवान बाहुबली की जीवनी एवं श्रवणबेलगोला की प्रतिमा निर्माण का रोचक प्रसंग उपन्यास की शैली में निरूपित है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2506, सितम्बर 1980 में, पृष्ठ संख्या 126 है।

38. कामदेव बाहुबली–वीर सं. 2506, सन् 1980 में यह पुस्तक लिखी। भगवान बाहुबली, जिन्होंने जीतकर भी अस्थिर राज्य संपदा का त्याग कर इस भारत भूमि पर एक महान् परम्परा का बीजारोपण किया, जिसका भारत के शासक आज भी अनुकरण कर रहे हैं, उनका प्रेरणास्पद कथानक इस छोटे से उपन्यास में अवतरित किया है। यह उपन्यास हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड़ एवं मराठी भाषाओं में प्रकाशित किया गया वीर सं. 2507, सन् 1981 में भगवान बाहुबली सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक महोत्सव श्रवणबेलगोला के अवसर पर। प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, सन् 1981 में, पृष्ठ संख्या 40 है।

39. आदिब्रह्मा–वीर सं. 2507, सन् 1981 में यह पुस्तक लिखी। जैन संस्कृति के वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों में प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ का चरित्र संक्षेप में दिया गया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2510, सन् 1984 में, पृष्ठ संख्या 164 है।

40. पतिव्रता–उपन्यासों की श्रृंखला में यह भी अपना विशेष महत्त्व रखता है। अपने कोढ़ी पति कोटिभट श्रीपाल का एवं उसके सैकड़ों योद्धा साथियों का कुष्ठ रोग

दूर करने वाली शील शिरोमणि मैना सती को जैन समाज का ऐसा कौन व्यक्ति होगा, जो न जानता हो। जिसने सिद्धचक्र विधान रचाकर भगवत् भक्ति के प्रभाव से, अभिषेक का गंधोदक लगाकर महारोग को दूर किया। अतिरोमांचक कथानक है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2510, सन् 1984 में, पृष्ठ संख्या 92 है।

41. एकांकी प्रथम भाग—इसमें तीन कथानक लघु नाटिकाओं के रूप में प्रस्तुत किये गये हैं। (1) दृढ़सूर्य चोर एवं णमोकार महामंत्र का प्रभाव (2) अहिंसा की पूजा (यमपाल चांडाल की दृढ़ प्रतिज्ञा) (3) सती चंदना। प्रथम संस्करण वीर सं. 2509, अक्टूबर 1983 में, पृष्ठ 48 है।

42. एकांकी द्वितीय भाग—इसमें भी तीन कथानक लघु नाटिकाओं के रूप में प्रस्तुत किये गये हैं-(1) तीर्थंकर ऋषभदेव (2) अकाल मृत्यु विजय (पोदनपुर नरेश विजय महाराज) (3) प्रत्युपकार पूर्व भव में राजा मेघरथ के रूप में भगवान शांतिनाथ)। प्रथम संस्करण वीर सं. 2510, अक्टूबर 1984, पृष्ठ संख्या 64 है।

43. सती अंजना—जैन जगत में सती अंजना का नाम सुपरिचित है। इस उपन्यास में अंजना की जीवनी अति सुंदर एवं आकर्षक शैली में लिखी गई है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2514, सन् 1988 में, पृष्ठ संख्या 128 है।

44. जैन महाभारत—विश्व विख्यात कौरव-पाण्डवों की जीवनकथा जैन पाण्डव पुराण में विस्तार से दी गई है, उसी को संक्षिप्त, सरल एवं सुबोध शैली में इसउपन्यास में दिया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2515, 25 दिसम्बर 1989 में, पृष्ठ संख्या 80 है।

45. भरत का भारत—वीर सं. 2509 सन् 1983 में यह पुस्तक लिखी। भगवान आदिनाथ (ऋषभदेव) के ज्येष्ठ पुत्र भरत, जिनके नाम पर हमारे देश का नाम भारत पड़ा, जो कि इस युग के प्रथम चक्रवर्ती सम्राट हुए एवं अंत में दैगम्बरी दीक्षा धारण कर मोक्ष प्राप्त किया, उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं को दर्शाया गया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2518 अक्टूबर 1992 में, पृष्ठ संख्या 260 है।

46. रोहिणी नाटक—वीर सं. 2502, सन् 1976 में यह नाटक लिखा। महारानी रोहिणी जो कि महाराजा अशोक की पत्नी थी, जिसके पुण्य का इतना प्रबल उदय था कि उसे यह भी मालूम नहीं था कि रोना किसे कहते हैं? उसने ऐसे महान पुण्य का बंध रोहिणी व्रत करके किया था, उस व्रत की महिमा इस नाटक में दिखाई गई है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, सन् 1981, पृष्ठ 72 है।

47. बाहुबली नाटक—भगवान बाहुबली का जीवन चरित्र तथा उनकी प्रतिमाओं के निर्माण का इतिहास, विशेषकर कर्नाटक प्रदेश में श्रवणबेलगोला स्थित 57 फुट ऊँची प्रतिमा के निर्माण का इतिहास इस लघुकाय पुस्तक में नाटक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, सन् 1981 में पृष्ठ संख्या 72 है।

48. पुरुदेव नाटक—भगवान ऋषभदेव के परम पावन जीवनवृत्त को प्रदर्शित करने वाले इस नाटक का प्रकाशन भी महोत्सव के शुभ अवसर पर किया गया। प्रथम संस्करण वीर सं. 2510, सन् 1984 में, पृष्ठ संख्या 122 है।

अप्रकाशित ग्रंथ

49. ऐतिहासिक आर्यिकाएँ—इसमें आदिपुराण, पद्मपुराण आदि ग्रंथों के आधार से ब्राह्मी-सुन्दरी आदि लगभग 27 महान आर्यिकाओं का सुंदर वर्णन है।

50. रोहिणी कथा—'बृहत्कथाकोश' संस्कृत पुस्तक से इस कथा का हिन्दी अनुवाद है। यह अच्छी रोचक कथा है।

51. बोध कथाएँ—इसमें संक्षेप में कतिपय पौराणिक लघु कथाएँ दी गई हैं। कुछ संस्कृत में रचित लघु कथाएँ भी हैं।

52. समवसरण—तिलोयपण्णत्ति के आधार से तीर्थंकर भगवान के समवसरण का इसमें संक्षिप्त वर्णन है। आदिपुराण, हरिवंशपुराण आदि ग्रंथों के आधार भी लिए गए हैं।

53. तीर्थंकर महावीर की शासन परम्परा

54. प्राचीन दिगम्बर जैन साधु

55. प्राचीन आर्यिकाएं

C C C

करणानुयोग (सिद्धान्त ग्रंथ)

56. षट्खण्डागम (सिद्धान्तचिंतामणि टीका समन्वित) खण्ड 1, पुस्तक 1– हस्तिनापुर जम्बूद्वीप स्थल पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने पूज्यआर्यिका श्री चंदनामती माताजी की प्रार्थना से आश्विन शुक्ला पूर्णिमा वीर सं. 2521, 8 अक्टूबर 1995 को प्रातः 11 बजकर 25 मिनट पर मंगलाचरण लिखकर संस्कृत टीका लेखन का सूत्रपात किया।

आचार्य पुष्पदन्त भूतबलि द्वारा रचित इन षट्खण्डागम सूत्रों पर श्री वीरसेनाचार्य के पश्चात् किसी भी आरातीय आचार्य अथवा विद्वान ने लेखनी चलाने का उपक्रम नहीं किया था। वह उद्यम इस सदी की ऐतिहासिक नारी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने किया है। श्री पुष्पदंत भूतबलि आचार्य ने जिनागम को छह खण्डों में विभाजित करके 'षट्खण्डागम' यह सार्थक नाम देकर सिद्धान्त सूत्रों को लिपिबद्ध किया है।

छह खण्ड के नाम–1. जीवस्थान 2. क्षुद्रक बंध 3. बंधस्वामित्व विचय 4. वेदनाखण्ड 5. वर्गणाखण्ड 6. महाबंध।

वर्तमान में सोलह पुस्तकों में पाँच खण्ड माने गए हैं। उनके सूत्रों की गणना छह हजार आठ सौ इकतालीस है। (6841) छः पुस्तकों तक प्रथम खण्ड, सातवीं पुस्तक में द्वितीय खण्ड, आठवीं पुस्तक में तृतीय खण्ड, नवमी से बारहवीं पुस्तक तक चतुर्थ खण्ड, तेरहवीं पुस्तक से सोलहवीं तक पाँचवां खण्ड है।

प्रथम खण्ड में आठ अनुयोगद्वार एवं अंत में एक चूलिका अधिकार है, जिसके नव भेद हैं। आठ अनुयोग द्वार के नाम–1. सत्प्ररूपणा 2. द्रव्य प्रमाणानुगम 3. क्षेत्रानुगम 4. स्पर्शानुगम 5. कालानुगम 6. अन्तरानुगम 7. भावानुगम 8. अल्पबहुत्वानुगम है।

षट्खण्डागम की इस प्रथम खण्ड की प्रथम पुस्तक में सत्प्ररूपणा के एक सौ सतहत्तर (177) सूत्र छपे हैं, वे श्री पुष्पदन्ताचार्य द्वारा विरचित हैं। इन 177 सूत्र पर संस्कृत टीका पूज्य माताजी ने सरल भाषा में की है और इसका हिन्दी अनुवाद पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने किया है। इस प्रथम पुस्तक की टीका को पूज्य माताजी ने पिड़ावा (राज.) में फाल्गुन शुक्ला सप्तमी वीर सं. 2522, 25 फरवरी 1996 को लिखकर पूर्ण किया। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2524, आश्विन शुक्ला 15, शरदपूर्णिमा 5 अक्टूबर 1998, पृष्ठ संख्या 512 है।

57. षट्खण्डागमः (सिद्धान्तचिंतामणि टीका समन्वितः) प्रथम खण्ड-पुस्तक 2–पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने षट्खण्डागम की द्वितीय पुस्तक का लेखन कार्य मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की यात्रा के मध्य मध्यप्रदेश के उज्जैन शहर में वीर

सं. 2522, चैत्र कृष्णा एकम्, 6 मार्च 1996 को मंगलाचरण लिखकर उसकी टीका लिखना प्रारंभ किया। इसमें सत्प्ररूपणा के अन्तर्गत गुणस्थान, जीवसमास, पर्याप्ति और चौदह मार्गणाओं का विस्तार से वर्णन किया है। यह सत्प्ररुपणा का ही आलाप अधिकार है, इस पूरे ग्रंथ में एक भी सूत्र नहीं हैं। इसकी हिन्दी टीका प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा की गई है।

इस पुस्तक में गुणस्थान और मार्गणा इन दोनों महाधिकारों में मिलकर उसकी बीस प्ररूपणाओं के द्वारा ग्रंथ में पाँच सौ पैंतालिस (545) संदृष्टियाँ हैं।

हस्तिनापुर तीर्थ पर वीर निर्वाण संवत् 2525 की माघ शुक्ला पंचमी (बसंत पंचमी) सन् 1999 के दिन यह टीका पूर्ण हुई है। प्रकाशन–वीर सं. 2531, आश्विन शु. पूर्णिमा (शरदपूर्णिमा) 17 अक्टूबर 2005, पृष्ठ संख्या 382 है।

58. षट्खण्डागमः (सिद्धान्तचिंतामणि टीका समन्वितः) प्रथम खण्ड-पुस्तक 3– द्रव्यप्रमाणानुगम नामक प्रथम खण्ड की इस तृतीय पुस्तक में चौदह मार्गणाओं के अन्तर्गत जीवों की संख्या का विस्तृत वर्णन है।

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र में वीर नि.सं. 2522, वैशाख शु. 12, 30 अप्रैल 1996 को पूज्य माताजी ने इसकी संस्कृत टीका लिखना प्रारंभ किया तथा अपने हस्तलिखित 83 पृष्ठ में चौदह अधिकार एवं दो महाधिकारों के द्वारा चांदव (महा.) में द्वितीय आषाढ़ शुक्ला 3, 18 जुलाई 1996 को टीका पूर्ण किया।

पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा इसका हिन्दी अनुवाद पूर्ण हो चुका है।

59. त्रिलोक भास्कर–दिल्ली पहाड़ी धीरज पर वीर सं. 2498 (सन् 1972) के चातुर्मास में करणानुयोग से संबंधित ग्रंथ 'त्रिलोक भास्कर' लिखा। वैसे तो तीनलोक का विस्तृत वर्णन तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार, लोक विभाग आदि अनेक ग्रंथों में पूर्वाचार्यों ने किया है, किन्तु सुगमता की दृष्टि से पूज्य माताजी ने सरल हिन्दी में उन्हीं ग्रंथों का सार इसमें लिया है। यथास्थान चार्ट एवं चित्रों को देकर इसे विशेष रूपसे पठनीय बना दिया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2500 सन् 1974 में, पृष्ठ संख्या 280 है।

60. गोम्मटसार जीवकांडसार–आचार्य नेमिचंद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती विरचित गोम्मटसार जीवकांड ग्रंथ 734 प्राकृत गाथाओं में रचित है। अधिक दुरूह होने से इसे हृदयंगम करना जनसाधारण के बस की बात नहीं है। इस दृष्टि से माताजी ने 734 गाथाओं में से 149 गाथाएँ चयनकर इस साररूप पुस्तक का सृजन किया है। यह भी विद्यार्थियों के लिए एवं संक्षेप रुचि वालों के लिए अति उपयोगी है। प्रथम संस्करण वीर सं.2514, अक्टूबर 1988 में, पृष्ठ संख्या 158 है।

61. गोम्मटसार कर्मकाण्डसार–आचार्य नेमिचंद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती विरचित

गोम्मटसार कर्मकांड नामक ग्रंथ में नौ अध्यायों में 972 गाथाएँ प्राकृत में हैं। यह ग्रंथ भी उपर्युक्त की तरह सरलता से समझ में आ जावे, इसे दृष्टि में रखकर पूज्य माताजी ने पूरे ग्रंथ से 133 गाथाओं को साररूप छांटकर लघुकाय बना दिया है। परीक्षार्थियों के लिए विशेष उपयोगी है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2515, अक्टूबर 1989 में, पृष्ठ संख्या 112 है।

62. भावत्रिभंगी—दिल्ली-नजफगढ़ वीर. सं. 2599, सन् 1973 के चातुर्मास में भावत्रिभंगी ग्रंथ का अनुवाद किया। आचार्य श्रुतमुनि विरचित इस कृति में क्षायिक आदि 5 भावों में मार्गणाओं व गुणस्थानों को घटित किया है। इसमें 116 गाथाएँ हैं। पूज्य माताजी ने इसका अनुवाद करके सैद्धान्तिक चर्चाप्रेमियों के लिए इसे सुगम बना दिया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2514, नवम्बर 1988 में, पृष्ठ संख्या 80 है।

63. जैन भूगोल—इस छोटी सी पुस्तक में अनेकों ग्रंथों के साररूप में सरल भाषा में जम्बूद्वीप, नंदीश्वर द्वीप व तीनलोक का अति संक्षिप्त वर्णन किया है। इस पुस्तक को पढ़कर पृथ्वीमण्डल का सहज ज्ञान प्राप्त हो सकता है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2510, मार्च 1984 में, पृष्ठ संख्या 60 है। इस पुस्तक का डॉ. एस.एस. लिश्क-पटियाला (पंजाब) ने अंग्रेजी में अनुवाद किया है। जिसका प्रथम संस्करण वीर सं. 2511, सन् 1985 में छप चुका है।

64. चर्चा शतक—कविवर द्यानतरायजी ने इस कृति में तीनलोक, गुणस्थान, मार्गणा, जीवसमास, चार गति आदि विभिन्न विषयों पर 100 श्लोकों की रचना ढुंढारी भाषा में की है, जिनसे अनेक प्रकार की जानकारी प्राप्त होती है। श्लोकों का हिन्दी अर्थ भी दिया गया है। वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला से इसका प्रथम बार प्रकाशन हुआ है। चर्चाप्रेमियों के लिए यह अच्छा ग्रंथ है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2515, फरवरी 1989 में, पृष्ठ संख्या 146 है।

65. ज्ञानज्योति गाइड—4 जून 1982 को दिल्ली के लाल किला मैदान से तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के करकमलों से एवं पूज्य गणिनीआर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के आशीर्वाद से जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति प्रवर्तन का शुभारंभ हुआ था। संपूर्ण भारतवर्ष में 1045 दिनों तक भ्रमण हुआ। आवश्यकता को देखते हुए 1984 में इस ज्ञानज्योति गाइड पुस्तक का सृजन माताजी ने किया। इसको पढ़ने से हस्तिनापुर का इतिहास, जम्बूद्वीप रचना का परिचय तथा ज्योति रथ पर दिये गये चित्रों का परिचय प्राप्त होता है। हिन्दी के अतिरिक्त मराठी व असमिया भाषा में भी इसका प्रकाशन किया गया। प्रथम संस्करण वीर सं. 2510, सन् 1984 में, पृष्ठ संख्या 44 है।

66. हस्तिनापुर—वीर सं. 2509, सन् 1983 में यह पुस्तक लिखी। इसमें पूज्य माताजी ने हस्तिनापुर का प्राचीन इतिहास, भगवान ऋषभदेव का इक्षुरस आहार,

रक्षाबंधन पर्व, महाभारत युद्ध आदि बहुत से विषयों का वर्णन किया है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2510, ज्येष्ठ शुक्ला 9, सन् 1984, पृष्ठ संख्या 36 है।

67. जम्बूद्वीप—तीन लोक विषयक अनेक ग्रंथों में जम्बूद्वीप का विस्तृत विवेचन पढ़ने को मिलता है, उन ग्रंथों को पढ़कर, अच्छी तरह से मनन चिंतन, अध्ययन करके माताजी ने यह जम्बूद्वीप नाम की छोटी सी पुस्तक तैयार की है। "गागर में सागर" के समान जम्बूद्वीप विषयक पर्याप्त जानकारी इस पुस्तक से प्राप्त हो जावेगी। यथास्थान तत् संबंधि कुछ चित्र भी दिये गये हैं। प्रथम संस्करण वीर संवत् 2500, सन् 1974 में, पृष्ठ संख्या 80 है।

अप्रकाशित ग्रंथ

68. आस्रवत्रिभंगी—पाँच मिथ्यात्व आदि से आस्रव के 57 भेद हैं। इन्हें चौदह गुणस्थान और मार्गणाओं में घटाया है और चार्ट भी दिये गये हैं। यह श्री श्रुतमुनि की रचना है। माताजी ने सन् 1973 में इसका अनुवाद किया है।

69. जैन गणित—इसमें तिलोयपण्णत्ति आदि के आधार से जैनगणित का सुंदर विवेचन है।

70. त्रिलोक विज्ञान

71. आर्यखंड व्यवस्था एवं अलौकिक गणित

72. मानवलोक

73. गत्यागति एवं जीव के स्वतत्त्व

74. जैनदर्शन में निमित्त-उपादान

75. सम्यग्दर्शन

76. षट्खण्डागम सार

C C C

चरणानुयोग (पूजा/विधान साहित्य)

77. मूलाचार पूर्वार्ध—लेखन प्रारंभ वीर सं. 2503, सन् 1977, हस्तिनापुर प्राचीन मंदिर। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2510, सन् 1984, पृष्ठ संख्या 504 है।

78. मूलाचार उत्तरार्ध—लेखन समापन—वीर सं. 2504, वैशाख वदी तीज (अक्षय तृतीया), बुधवार सन् 1978, हस्तिनापुर। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2512, सन् 1986, पृष्ठ संख्या 410 है। इन दोनों ग्रंथों का प्रकाशन "भारतीय ज्ञानपीठ" संस्था से हुआ है।

आचार्यश्री कुन्दकुन्द स्वामी के द्वारा रचित दिगम्बर जैन साधु-साध्वियों की आचार संहिता को दर्शाने वाला यह मूलाचार ग्रंथ है। द्वादश अधिकारों में विभक्त प्राकृत भाषा की 1243 गाथाओं में निबद्ध 'मूलाचार' नामक ग्रंथराज दिगंबर आम्नाय में मुनिधर्म के प्रतिपादक शास्त्रों में प्रायः सर्वाधिक प्राचीन माना जाता है। इन अधिकारों के प्रतिपाद्य विषय हैं क्रमशः-मूलगुण, वृहत्प्रत्याख्यान, संक्षेप प्रत्याख्यान, समयाचार, पंचाचार, पिण्डशुद्धि, षडावश्यक, द्वादशानुप्रेक्षा, अनगार भावना, समयसार, शीलगुण प्रस्तार और पर्याप्ति। वस्तुतः प्रथम अधिकार में निर्देशित मुनिपद के अट्ठाईस मूलगुणों का विस्तार ही शेष अधिकारों में किया गया है। मूलाचार पूर्वार्ध और उत्तरार्ध दोनों की टीका का हिन्दी अनुवाद पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ने किया है। मूलाचार के दोनों भागों का प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ से हुआ है।

79. मुनिचर्या—हस्तिनापुर तीर्थ पर वीर सं. 2517, वैशाख कृष्णा द्वितीया सन् 1991 में यह ग्रंथ पूर्ण किया। मुनि-आर्यिकाओं की नित्य-नैमित्तिक क्रियाओं संबंधी अनेक ग्रंथों का प्रकाशन विभिन्न स्थानों से समय-समय पर हुआ है किन्तु वे भक्तियाँ आदि संस्कृत-प्राकृत में हैं, जिनका अर्थ बहुत कम त्यागीवर्ग समझ पाते थे। इस कमी की पूर्ति माताजी ने की। सभी भक्तियों का दैनिकद्ध व पाक्षिक प्रतिक्रमण पाठों का हिन्दी में पद्यानुवाद कर दिया है, उसी का यह प्रकाशन है। अब इन पाठों को पढ़ने वाले प्रत्येक साधु को यह सहजरूप में समझ में आ जावेगा कि वे क्या पढ़ रहे हैं। दिगम्बर मुनि-आर्यिकाओं के लिए यह ग्रंथ विशेष रूप से उपयोगी है। प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2517, अगस्त 1991 में, पृष्ठ संख्या 628 है।

80. आराधना (अपरनाम-श्रमणचर्या)—हस्तिनापुर में वीर सं. 2503, सन् 1977 में यह पुस्तक लिखी। इसमें दिगम्बर मुनि-आर्यिकाओं की दीक्षा से समाधिपर्यंत प्रतिदिन प्रातः से सायंकाल तक की जाने वाली चर्या एवं क्रियाओं को दर्शाया गया है। गणिनी माताजी ने अपने संस्कृत-व्याकरण छंद का पूर्णरूप से इसमें सदुपयोग किया है। संपूर्ण 451 संस्कृत श्लोक स्वयं माताजी द्वारा रचित हैं। प्रत्येक श्लोक का हिन्दी

में अर्थ तथा जगह-जगह भावार्थ भी उन्हीं का है। श्लोकों के शीर्षक भी दिये हैं। साधु-साध्वियों के लिए एवं उनकी चर्या को जानने वाले जिज्ञासु श्रावक-श्राविकाओं के लिए यह छोटा सा ग्रंथ अति उपयोगी है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2505, सन् 1979 में, पृष्ठ संख्या 144 है।

81. जिनस्तोत्र संग्रह—पूज्य गणिनी आर्यिका श्री की संस्कृत काव्यप्रतिभा का परिचायक यह अभूतपूर्व ग्रंथ है। इसमें उनके द्वारा रचित समस्त संस्कृत एवं हिन्दी स्तुतियों का समावेश है। ग्रंथ के चतुर्थखण्ड में एक "कल्याणकल्पतरु" नामक संस्कृत स्तोत्र है। छंदशास्त्र की दृष्टि से इस स्तोत्र का विद्वज्जगत् विशेष मूल्यांकन करेगा क्योंकि इस पूरे स्तोत्र में 144 छंदों का प्रयोग किया गया है। कुल छह खण्डों में निबद्ध यह ग्रंथ है, जिसमें द्वितीय खण्ड से चतुर्थखण्ड तक पूज्य माताजी द्वारा ही रचित स्तोत्र हैं तथा प्रथम, पंचम एवं छठे खण्डों में अन्य आचार्यों तथा विद्वानों द्वारा रचित संस्कृत-हिन्दी स्तोत्र हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2518, जून 1992, पृ. 532 हैं।

82. कल्याणकल्पतरु स्तोत्र (छन्दोमंजरी)—हस्तिनापुर प्राचीन मंदिर, वीर सं. 2501 (सन् 1975) में पूज्य माताजी ने सभी छंदों का प्रयोग भगवान की स्तुति करने हेतु एक 'कल्याण कल्पतरु स्तोत्र' की मौलिक रचना की। इस स्तोत्र में भगवान ऋषभदेव से लेकर महावीर स्वामी तक चौबीसों तीर्थंकरों की पृथक्-पृथक् स्तुतियाँ हैं। इनमें क्रम से एकाक्षरी से लेकर तीस अक्षरी छंद तक कुल एक सौ चवालिस (144) छंदों का प्रयोग किया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2518, 13 अगस्त 1992, पृष्ठ संख्या 162 है।

83. सामायिक एवं श्रावक प्रतिक्रमण—सामायिक पाठ अनेक प्रकार के प्रचलित हैं। इस पुस्तक में प्राचीन क्रियाकलाप ग्रंथ से प्राप्त सामायिक पाठ व उसका माताजी द्वारा अनुवादित हिन्दी पद्यानुवाद दिया गया है। साथ ही श्रावक प्रतिक्रमण व उसका हिन्दी पद्यानुवाद भी दिया गया है। हिन्दी पद्यानुवाद हो जाने से साधुवर्ग एवं श्रावकों के लिए सामायिक पाठ सुरुचिकर हो गया है। इसी प्रकार से श्रावकों के लिए प्रतिक्रमण पाठ भी अच्छी तरह से समझ में आ जायेगा। इसका प्रकाशन सन् 1991 में हुआ है।

84. आर्यिका—खतौली (मुजफ्फरनगर) में वीर सं. 2502, माघ शुक्ला तेरस, सन् 1976 में यह पुस्तक लिखी। प्रस्तुत पुस्तक के सृजन की एक विशेष स्मरणीय घटना रही। एन. शान्ता नामक एक फ्रांसीसी महिला जैनसाध्वी एवं क्रिश्चियन साध्वी पर शोध प्रबंध लिख रही थी। बहुत प्रयास के बाद भी उन्हें दिगम्बर साध्वियों के बारे में प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं हो पा रही थी। दैवयोग से उनकी भेंट बनारस में डॉ. गोकुलचंद जैन से हुई। उन्होंने इसके लिए पूज्य ज्ञानमती माताजी का नाम सुझाया। वे ढूँढ़कर माताजी के पास आईं और आर्यिका चर्या की जानकारी के लिए

अनेक प्रश्न किये। कुछ प्रश्नों के उत्तर माताजी ने तत्काल दिये एवं शेष प्रश्नों के समाधान रूप में "आर्यिका" नाम से यह पूरी पुस्तक ही तैयार कर दी। जब वे दूसरी बार आईं तो पुस्तक देखकर बहुत प्रसन्न हुईं। "एक पंथ दो काज" हो गये। एक बहुत बड़ी कमी की पूर्ति हुई। आर्यिकाओं की चर्या का ज्ञान कराने वाली एक प्रामाणिक पुस्तक तैयार हो गई। प्रथम संस्करण वीर सं. 2502, सन् 1976 में, पृष्ठ संख्या 80 है।

85. शिक्षण पद्धति—दिल्ली में वीर सं. 2505, सन् 1979 में यह पुस्तक लिखी। बालक-बालिकाओं तथा जैनधर्म का प्रारंभिक ज्ञान अर्जन करने वाले युवा एवं प्रौढ़ स्त्री-पुरुषों को किस प्रकार से शिक्षण देना चाहिए कि जिससे उनको समीचीन ज्ञान की प्राप्ति हो तथा वे जिनधर्म के दृढ़ श्रद्धानी बनें। इस पुस्तक में बालविकास चार भाग, छहढाला तथा द्रव्य संग्रह पुस्तकों को किस प्रकार से पढ़ना चाहिए, उसकी पद्धति शिक्षकों के लिए दी गई है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2505, सितम्बर 1979 में, पृष्ठ संख्या 32 है।

86. रत्नकरण्ड श्रावकाचार—दिल्ली में वीर सं. 2506, चैत्र कृष्णा नवमी, ऋषभजयंती, सन् 1980 में इसका पद्यानुवाद किया। तार्किक शिरोमणि आचार्य समंतभद्रकृत सर्व परिचित रत्नकरण्ड श्रावकाचार ग्रंथ के 150 श्लोकों का माताजी ने हिन्दी पद्यानुवाद किया है। इसमें हिन्दी पद्य तथा पद्यों के सामने संक्षेप में अर्थ दिया गया है। शिक्षण शिविरों तथा विद्यालयों के लिए विशेष उपयोगी है। रत्नकरण्ड पद्यावली के नाम से प्रथम संस्करण वीर सं. 2506, मई 1980 में, पृष्ठ संख्या 106 है।

87. सोलह भावना—जिनकी भावना भाने से तीर्थंकर प्रकृति का बंध हो जाता है, ऐसी सोलह भावनाओं का स्वरूप एवं एक-एक भावना संबंधी कथा इस पुस्तक में दी गई है। कथाएँ पुराणग्रंथों से माताजी ने स्वयं संकलित की हैं। स्वाध्याय के लिए तो उत्तम है ही, प्रवचनकार विद्वानों के लिए भी विशेषरूप से उपयोगी है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2511, फरवरी 1985 में, पृष्ठ संख्या 100 है।

88. जिनसहस्रनाम मंत्र—म्हसवड़ (जि. सोलापुर-महाराष्ट्र) के चातुर्मास में श्रावण शु. एकम् वीर सं. 2581, सन् 1955 के दिन जिनसहस्रनाम मंत्र लिखना प्रारंभ कर श्रावण शु. 3, वीर सं. 2581, सन् 1955 को ये 1008 मंत्र पूर्ण किए। पूज्य माताजी ने क्षुल्लिका दीक्षा लेने के दो वर्ष पश्चात् अपनी लेखनी से सर्वप्रथम भगवान् के 1008 नामों के मंत्र बनाये। जिसका प्रकाशन वीर सं. 2581, सन् 1955 में म्हसवड़ (सोलापुर) महा. से हुआ था। उसके बाद दूसरी बार मार्च सन् 1992 में उसका प्रकाशन हुआ है। इस पुस्तक में माताजी द्वारा रचित जिनसहस्रनाम पूजा तथा सरस्वती पूजा भी दी गई है। सहस्रनाम मंत्र नित्य पठनीय हैं। भगवान के नाम मंत्रों से प्रारंभ हुई लेखनी से अब तक 250 ग्रंथ लिखे जा चुके हैं। पृष्ठ सं. 48 है।

89. सामायिक—इस पुस्तक में सुप्रभात स्तोत्र, मंगल स्तुति, देववंदना विधि, सामायिक विधि, पूजामुख विधि, पूजा अन्त्य विधि, चतुर्दशी क्रिया विधि, अष्टमी क्रिया विधि, अष्टान्हिका आदि पर्वों में करने योग्य विधि, शांति भक्ति, श्री बाहुबली स्तोत्र, उषावंदना, जंबूद्वीप स्तुति, त्रैलोक्य चैत्य वंदना, श्री सम्मेदशिखर वंदना, उपसर्ग विजयी श्री पार्श्वनाथ स्तुति, श्री पार्श्वजिन स्तुति, समाधि भक्ति, श्री वीराष्टक स्तोत्र है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2498, आश्विन कृष्णा एकम् (क्षमावणी), सितम्बर 1972, पृष्ठ संख्या 58 है।

90. सामायिक पाठ (देववंदना)—सामायिक का दूसरा नाम देववंदना भी शास्त्रों में आया है। इस पुस्तक में शास्त्रोक्त विधि से सामायिक करने की प्रक्रिया दी गई है। माताजी ने हिन्दी पद्यानुवाद कर दिया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2514, अक्षय तृतीया सन् 1988 में, पृष्ठ संख्या 16 है।

91. कुन्दकुन्द का भक्तिराग—भक्तिमार्ग का प्रचार-प्रसार आज से नहीं, आचार्य कुन्दकुन्द के समय से था। वीतराग मार्ग का अनुसरण करते हुए स्वयं आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने भक्ति पाठों की रचना की। ये भक्तियाँ प्राकृत भाषा में रचित हैं। आर्यिका रत्नमती जी के विशेष आग्रह से पूज्य माताजी ने इनका हिन्दी पद्यानुवाद सन् 1972 में कर दिया था, किन्तु उनका प्रकाशन सन् 1985 में हो पाया।

इस पुस्तक में आचार्य पूज्यपादकृत संस्कृत भक्तियों का तथा गौतम गणधर रचित दो भक्तियों का हिन्दी पद्यानुवाद भी दिया गया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2511, वैशाख कृष्णा द्वितीया, अप्रैल 1985 में, पृष्ठ संख्या 152 है।

92. दशधर्म—उत्तम क्षमा आदि दश धर्मों के विवेचनरूप में छोटी-बड़ी अनेक पुस्तकों का प्रकाशन विभिन्न स्थानों से विभिन्न लेखकों के द्वारा हुआ है, किन्तु यह अपने प्रकार की एक अलग ही पुस्तक है। इसमें प्राकृत वाली दशधर्म की पूजा के एक-एक धर्म के अर्घ्य के श्लोकों को प्रारंभ में देकर उसका अर्थ, उस धर्म से संबंधित कथाएँ एवं उस धर्म का विवेचन दिया है। पुस्तक के अंत में माताजी द्वारा रचित दशधर्म की एक-एक हिन्दी कविता भी दी गई है। प्रवचनकर्ताओं के लिए यह पुस्तक विशेष उपयोगी है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2509, 21 अप्रैल 1983 में, पृष्ठ संख्या 110 है।

93. दिगम्बर मुनि—वैसे तो दिगम्बर मुनि-आर्यिकाओं की चर्यासंबंधी अनेक ग्रंथ लिखे गये हैं, जैसे-मूलाचार, अनगार-धर्मामृत इत्यादि, किन्तु ये ग्रंथ बड़े-बड़े हैं। सामान्यजन इन ग्रंथों को पढ़कर संक्षेप में मुनिचर्या की जानकारी प्राप्त नहीं कर पावेंगे। इसे लक्ष्य में रखकर माताजी ने उक्त ग्रंथों के सार से, न बहुत संक्षिप्त न अति विस्तृत अपितु मध्यम रूप में इस "दिगम्बर मुनि" नाम से ग्रंथ को लिखकर तैयार किया। जिन-जिन ग्रंथों से जिस विषय को इसमें लिया है, नीचे टिप्पणी मेंउन ग्रंथों का

नाम दे दिया है। समस्त विश्व के लोगों के लिए दिगम्बर मुनि आर्यिकाओं की दीक्षा से समाधिपर्यंत प्रतिदिन प्रातः से रात्रि तक की जाने वाली क्रियाओं का सरलता से बोध कराया गया है। स्वयं मुनि-आर्यिकाओं के लिए भी यह ग्रंथ अत्यंत उपयोगी है। पृष्ठ संख्या 332 है।

94. आत्मा की खोज–हस्तिनापुर तीर्थ पर वीर सं. 2501, श्रावण शुक्ला पूर्णिमा, गुरुवार, सन् 1975 को यह पुस्तक लिखी। चौबीस तीर्थंकरों की चौबीस स्तुतियों में तीर्थंकरों का पूरा परिचय आलंकारिक शैली में दिया गया है। पुस्तक के अंत में आत्म-पीयूष नाम से 45 पद्यों की एक भावपूर्ण स्तुति है, जिसमें शुद्धात्मा की भावना भाई गई है। नित्य पाठ करने योग्य है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2501, सन् 1975 में, पृष्ठ सं. 36 है।

95. धरती के देवता–देव स्वर्ग में भी रहते हैं व पृथ्वी पर भी, किन्तु यहाँ धरती के देवता का तात्पर्य है मानव शरीर को धारण करने वाले दिगम्बर मुनि। पूज्य माताजी ने अति संक्षेप में इस छोटी सी पुस्तक में यह बताया है कि दिगम्बर मुनि कैसे बनते हैं? प्रातः से रात्रि तक क्या करते हैं? किन महान् गुणों का पालन करते हैं? इत्यादि। अन्य धर्मावलम्बियों ने दिगम्बर मुनि अवस्था को सर्वश्रेष्ठ माना है, यह बताया गया है। यह पुस्तक जैन व जैनेतर सभी के लिए पठनीय है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2508, जून 1982 में, पृष्ठ संख्या 40 है।

96. इन्द्रध्वज विधान–खतौली (उ.प्र.) के चातुर्मास में श्रावण कृष्णा 1, वीर सं. 2503 से प्रारंभ कर वीर सं. 2502, कार्तिक कृ. अमावस्या, दीपावली पर्व सन् 1976 में पहली बार स्वतंत्ररूप से इसे हिन्दी भाषा में पूज्य माताजी द्वारा लिखा गया। तब सेसारे देश में इस विधान की धूम मची हुई है। इसमें मध्यलोक के 458 अकृत्रिम जिनचैत्यालयों की पूजा है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2504, अक्टूबर 1978 में, पृष्ठ संख्या 496 है।

97. कल्पद्रुम विधान–हस्तिनापुर में वीर सं. 2512, आषाढ़ शु.2, 7 जुलाई 1986 से प्रारंभ कर आश्विन शु. 15, वीर सं. 2512, सन् 1986 को पूर्ण किया। सन् 1986 में यह विधान पहली बार पूज्य माताजी की कलम से लिखा गया। इससे पहले इस नाम से कोई भी रचना देखने में नहीं आई। इसमें समवसरण की पूजा है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2513, 8 मार्च 1987 में, पृष्ठ संख्या 464 है।

98. सर्वतोभद्र विधान–हस्तिनापुर में वीर सं. 2512, आश्विन शु. 15, शरदपूर्णिमा 1986 को प्रारंभ कर माघ शु. 10, वीर सं. 2513, सन् 1987 में पूर्ण किया। इस विधान की रचना सर्वप्रथम पूज्य माताजी ने की। इसमें तीन लोक के समस्त अकृत्रिम जिनचैत्यालयों की 101 पूजाएँ हैं। अर्घ्य 2000 हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2514, सितम्बर 1988 में, पृष्ठ संख्या 870 है।

99. तीन लोक विधान–(मध्यम तीनलोक विधान) हस्तिनापुर में आश्विन शु. 15 से प्रारंभ कर पौष शु. 13, वीर सं. 2513, सन् 1987 में पूर्ण किया। इसमें तीन लोक संबंधी 64 पूजाएँ हैं। अर्घ्य 884 एवं पूर्णार्घ्य 140 हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2514, सितम्बर 1988 में, पृष्ठ 308 हैं।

100. त्रैलोक्य विधान (लघु तीनलोक विधान)–हस्तिनापुर में आश्विन शु. 15, वीर सं. 2512 से प्रारंभ कर पौष शु. 13, वीर सं. 2513, सन् 1987 को पूर्ण किया है। इस विधान में भी तीन लोक की समस्त अकृत्रिम जिनप्रतिमाओं की पूजा है। इसमें 567 अर्घ्य व 74 पूर्णार्घ्य हैं। यह लघु तीन लोक विधान है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2514, सन् 1988 में, पृष्ठ 308 हैं।

101. श्री सिद्धचक्र विधान–हस्तिनापुर जम्बूद्वीप पर वीर सं. 2518, आश्विन सुदी पूर्णिमा (शरदपूर्णिमा) 11 अक्टूबर सन् 1992 को यह विधान पूर्ण किया। सिद्धचक्र मण्डल विधानों के आयोजन की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। आज से लगभग 20-22 वर्ष पूर्व अष्टान्हिका पर्वों में यत्र-तत्र कविवर सन्तलाल जी द्वारा रचित सिद्धचक्र विधान होते रहते थे। जिनमें न तो किसी विद्वान विशेष की आवश्यकता होती थी और न ही संगीतकार बुलाए जाते थे। किन्तु जब से सन् 1976 में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने इन्द्रध्वज विधान की रचना कर दी, तब से समाज में मण्डल विधानों की नई लहर सी छा गई। काफी दिनों से अनेक श्रीमानों एवं धीमानों द्वारा पूज्य माताजी के पास एक विनय- विज्ञप्ति संदेश ला रही थी कि आप अपनी सरस, सरल एवं मधुर शैली में नवीन सिद्धचक्र विधान की रचना कर दीजिए। तब माताजी ने मात्र 3 माह 15 दिन की अल्पावधि में यह काव्यग्रंथ अपनी अलौकिक प्रतिभा से रच दिया। प्रथम संस्करण–सन् 1993 में, पृष्ठ संख्या 384 है।

102. नंदीश्वर विधान–पूज्य माताजी ने वीर सं. 2500, माघ शुक्ला दशमी, सन् 1974 में यह विधान रचकर पूर्ण किया। इस विधान में पाँच पूजाओं में संक्षेप में नंदीश्वर द्वीप के बावन जिनमंदिरों की पूजा की गई है। इस विधान को आष्टान्हिक पर्व के आठ दिनों तक प्रतिदिन करना चाहिए। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2521, आश्विन सुदी पूर्णिमा, सन् 1995, पृष्ठ संख्या 56 है।

103. विश्वशांति महावीर विधान–भगवान ऋषभदेव के तपकल्याणक एवं ज्ञानकल्याणक से पवित्र तीर्थ प्रयाग (इलाहाबाद) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ पर वीर सं. 2527, पौष सुदी षष्ठी, 1 जनवरी ईसवी सन् 2001 को यह विधान पूर्ण किया।

इस महावीर विधान को 2600वीं जन्मजयंती से जोड़ते हुए पूज्य माताजी ने इसमें महावीर स्वामी के गुण, नाम, विशेषण एवं उनके पुण्य आदि गुणों का बखान

करते हुए पूरे 2600 मंत्र लिखे हैं। भगवान महावीर के 2526वें निर्वाण दिवस के समापन एवं 2527वें वर्ष के प्रारंभ में कार्तिक कृष्णा अमावस दिनाँक 27-10-2000 मंगलवार को मंगलाचरणपूर्वक प्रारंभ किया। इस अतिशयकारी महाविधान का लेखन 1-1-2001, सोमवार, वीर निर्वाण संवत् 2527, पौष शुक्ला षष्ठी को पूर्ण हुआ। अर्थात् पूरे 66 दिन तक लिखी गई 135 पृष्ठों की यह कृति 67वें दिन स्वयं अपने करकमलों द्वारा पूज्य माताजी ने प्रभुचरणों में समर्पित कर असीम आल्हाद का अनुभव किया। प्रथम संस्करण–अप्रैल सन् 2001 में, पृष्ठ संख्या 300 है।

104. जम्बूद्वीप मण्डल विधान–हस्तिनापुर जम्बूद्वीप पर ज्येष्ठ सुदी पंचमी (श्रुत पंचमी) वीर सं. 2512, सन् 1986 में यह विधान पूर्ण किया। इस विधान में जम्बूद्वीप के अकृत्रिम व कृत्रिम चैत्यालयों की पूजाएँ हैं। इसका प्रथम संस्करण वीर सं. 2513, मार्च 1987 में प्रकाशित हुआ है। पृष्ठ संख्या 270 है।

105. श्री पंचकल्याणक विधान–सरधना (मेरठ) उ.प्र. के चातुर्मास में वीर सं. 2517, भादों वदी एकम् सन् 1991 को सोलहकारण पर्व में यह विधान लिखकर पूर्ण किया। इस पूजन विधान में कुल 6 पूजाएँ हैं और 120 अर्घ्य हैं, 5 पूर्णार्घ्य हैं एवं 6 जयमालाएँ हैं। इस विधान में पंचकल्याणक की तिथियाँ, नक्षत्र, योग, दीक्षा वन, दीक्षा वृक्ष, सह दीक्षित मुनि, दीक्षा के समय के उपवास, दीक्षा के समय की पालकी, वैराग्य के कारण आदि विषय उत्तरपुराण ग्रंथ के आधार से लिए गए हैं। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2519, माघ कृ. 14, सन् 1993, पृष्ठ 56 हैं।

106. चौंसठ ऋद्धि विधान–हस्तिनापुर तीर्थ पर वीर सं. 2519, पौष कृष्णा द्वितीया, सन् 1993 में यह विधान लिखकर पूर्ण किया। इस विधान में सर्वप्रथम गणधर और मुनिगण सहित चौबीस तीर्थंकरों की पूजा है। पुनः चौसठ ऋद्धि की समुच्चय पूजा है। अनंतर क्रम से आठों ऋद्धियों की आठ पूजाएँ हैं। इस प्रकार इस विधान में 10 पूजाएँ हैं। 24+64=88 अर्घ्य हैं, 9 पूर्णार्घ्य हैं और 10 जयमालाएँ हैं। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2521, आश्विन शुक्ला 15, 8 अक्टूबर 1995, पृष्ठ संख्या 64 है।

107. श्रुतस्कंध विधान–हस्तिनापुर में वीर सं. 2515, ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी 'श्रुतपंचमी' सन् 1986 में इस विधान को लिखकर पूर्ण किया। इस विधान में द्वादशांग जिनवाणी की पूजा के बाद आठ दल में द्वादशांग के 12 अर्घ्य, दृष्टिवाद के परिकर्म के 5 अर्घ्य, दृष्टिवाद भेदसूत्र का 1 अर्घ्य, पूर्वगत के 14 अर्घ्य, चूलिका के 5 अर्घ्य, अंगबाह्य के 14 भेद के 14 अर्घ्य, अनुयोग के 4 अर्घ्य एवं कतिपय ग्रंथों के 10 अर्घ्य हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर 12+5+1+14+5+14+ 4+10=65 अर्घ्य हैं, 2 पूर्णार्घ्य हैं और 1 जयमाला है। यह विधान श्रुतज्ञान को वृद्धिंगत करने वाला है। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2521, आश्विन शुक्ला 15, 8 अक्टूबर 1995, पृष्ठ संख्या 48 है।

108. पंचपरमेष्ठी विधान–हस्तिनापुर में वीर सं. 2503, सन् 1977 में आश्विन शुक्ला दशमी को यह विधान पूर्ण किया। पंचपरमेष्ठी जैनधर्म के मूल आधार हैं। प्रत्येक संज्ञी जीव (मनुष्य या तिर्यंच) इन्हीं का नाम जपकर, पूजा भक्ति करके अपने पापों का नाश करते हैं। इस विधान में भी पंचपरमेष्ठी के गुणों की आराधना की गई है। प्रथम संस्करण वीर संवत् 2508 में, मार्च 1982 में, पृष्ठ संख्या 68 है।

109. सहस्रनाम विधान–टिकैतनगर (बाराबंकी-उ.प्र.) में वीर सं. 2520, सन् 1994 के चातुर्मास में भाद्रपद कृ. 2 को यह विधान प्रारंभ कर आश्विन शु. 15, शरदपूर्णिमा वीर सं. 2520, सन् 1994 में पूर्ण किया। इसमें भगवान के 1008 मंत्रों की पूजा है। इसमें 11 पूजाएँ हैं, 1008 अर्घ्य एवं 12 जयमालाएँ हैं। इन मंत्रों की आराधना, उपासना, पूजा से मन की शुद्धि एवं स्मरणशक्ति बढ़ती है। प्रथम संस्करण–वीर नि. सं. 2521, वीर शासन जयंती, श्रावण कृ. एकम् 13 जुलाई 1995, पृष्ठ संख्या 160 है।

110. बीस तीर्थंकर विधान–हस्तिनापुर में कार्तिक कृष्णा एकम् से प्रारंभ कर कार्तिक कृष्णा सप्तमी वीर सं. 2503 सन् 1977 में यह विधान पूर्ण किया। तीस चौबीसी विधान के अंत में 245 पृष्ठ पर विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान (लघु) छपा हुआ है। यह विधान अभी अलग से छपने के लिए प्रकाशनाधीन है। पाँच महाविदेहों में 4-4 तीर्थंकर आज भी विहार कर रहे हैं। इस विधान में विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा एवं बीस तीर्थंकरों के अर्घ्य एवं 1 पूर्णार्घ्य और जयमाला है।

111. चौबीस तीर्थंकर विधान–वीर सं. 2519, मगसिर वदी तेरस, सन् 1993 में यह विधान पूर्ण किया। यह विधान अभी जम्बूद्वीप पूजांजलि में पृष्ठ 331 से पृष्ठ 452 तक छपा हुआ है। इसे पूज्य माताजी ने ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन के विशेष आग्रह से बनाया है। इसमें सर्वप्रथम मंगल स्तोत्र के बाद चौबीस तीर्थंकर समुच्चय पूजा, उसके बाद चौबीसों भगवान की पूजा, पंचकल्याणक के अर्घ्य एवं जयमालाएं हैं। अंत में बड़ी जयमाला एवं प्रशस्ति है।

112. यागमण्डल विधान–राजधानी दिल्ली-कनॉट प्लेस के चातुर्मास में वीर सं. 2525, फाल्गुन कृष्णा चौदस, सन् 1999 में यह विधान लिखकर पूर्ण किया। प्रतिष्ठातिलक नामक प्राचीन प्रतिष्ठा ग्रंथ में यह यागमण्डल विधान संस्कृत भाषा में निबद्ध है। श्री नेमिचन्द्रदेव द्वारा रचित उसी यागमण्डल पूजा-विधान का पूर्ण आधार लेकर ही पूज्य माताजी ने अत्यल्प समय में उसकी हिन्दी पद्य रचना प्राञ्जल भाषा में करके इसे सर्वजन सुलभ बना दिया है। इस विधान में कुल 9 पूजाएँ हैं तथा 210 अर्घ्य और 12 पूर्णार्घ्य हैं। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2525, श्रुतपंचमी 18 जून 1999, पृष्ठ सं. 168 है।

113. पंचमेरु विधान–हस्तिनापुर में वीर सं. 2503, माघ शु. सप्तमी, सन् 1977 में व्रत उद्यापन के निमित्त यह विधान रचा। अढ़ाई द्वीप में सुदर्शन मेरु आदि पाँचमेरु

अवस्थित हैं। प्रत्येक मेरु के चार-चार वन में 16-16 अकृत्रिम चैत्यालय हैं। इस प्रकार 80 चैत्यालयों में विराजमान अकृत्रिम जिनप्रतिमाओं की इसमें पूजा की गई है। आज इन पंचमेरुओं के साक्षात् दर्शन की शक्ति नहीं है अतः इनकी भक्तिभाव से पूजा करके साक्षात् दर्शनों का लाभ प्राप्त किया जा सकता है, इन्हीं भावों से माताजी ने इस विधान की रचना की है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2514, सन् 1988 में, पृष्ठ संख्या 64 है।

114. जम्बूद्वीप पूजांजलि—दिगम्बर जैन पूजा एवं नित्यपाठ विषयक गुटके व जिनवाणी संग्रह प्राचीन समय से हस्तलिखित व छपे हुए प्रकाशित होते रहे हैं। फिर भी भक्तों का वर्षों से आग्रह था कि माताजी की लिखी हुई पूजाओं का संग्रह जम्बूद्वीप संस्थान से प्रकाशित किया जावे। तदनुसार जम्बूद्वीप पूजांजलि नाम से प्राचीन एवं नवीन पूजाओं, स्तुति एवं स्तोत्रों का मिला-जुला प्रकाशन प्रथम संस्करण वीर सं. 2514, नवम्बर 1988 में प्रकाशित हुआ। पृष्ठ संख्या 540 है।

115. शांति विधान—दिल्ली-कूचासेठ में वीर संवत् 2506, वैशाख शुक्ला दशमी, सन् 1980 में यह विधान लिखा। सुख, शांति की प्राप्ति के लिए भगवान शांतिनाथ की पूजा है, इसमें 120 अर्घ्य हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2506, सन् 1980 में, पृष्ठ संख्या 48 है।

116. ऋषिमंडल विधान—दिल्ली-कूचा सेठ में वीर सं. 2506, चैत्र शुक्ला द्वितीया सन् 1980 में यह विधान लिखा। यह विधान दिगम्बर जैन समाज में चिरकाल से प्रसिद्ध है। सुख, शांति व समृद्धि के लिए इस विधान का पूजन व ऋषिमण्डल स्तोत्र का पाठ किया जाता है। माताजी ने विधान पूजन व स्तोत्र भी हिन्दी में बना दिया है, जिससे पढ़ने वालों को विशेष आनन्द प्राप्त होता है। प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2507, सन् 1981 में, पृष्ठ संख्या 52 है।

117. जम्बूद्वीप पूजन विधान—अकृत्रिम जिन चैत्यालयों की भक्ति से सराबोर होकर जम्बूद्वीप रचना निर्माण कराने की अतिउत्कट भावना से पूज्य माताजी ने हस्तिनापुर के प्राचीन शांतिनाथ जिनालय में भगवान के समक्ष बैठकर जीवन में पहली बार पूजन की रचना की। वीर सं. 2500, सन् 1974 में हस्तिनापुर में आषाढ़ शु. 1 को रात्रि में विधान बनाया। प्रातः आषाढ़ शु. 2 को जयमाला पूर्ण की। दो घंटे बाद ही जंबूद्वीप बनाने के लिए जगह (खेत) खरीदने हेतु बयाना दिया गया एवं आषाढ़ शु. 3 को सुमेरुपर्वत का शिलान्यास कराकर माताजी ने दिल्ली की ओर विहार कर दिया। इसके बाद तो माताजी ने अनेकों पूजाएँ व विधानों की रचना की। इस लघु विधान में जम्बूद्वीप के 78 अकृत्रिम जिनचैत्यालयों के अतिरिक्त जम्बूद्वीप में स्थित समस्त देव भवनों में विराजमान अकृत्रिम जिनप्रतिमाओं की भी पूजा दी गई है। प्रथम संस्कर वीर सं. 2500, सितम्बर 1974 में, पृष्ठ संख्या 64 है।

118. सुदर्शन मेरु पूजा—पूज्य माताजी द्वारा लिखित सुदर्शन मेरु पूजा एवं सुमेरु वंदना के अतिरिक्त अन्य लेखकों की कविताएँ व भजन भी इसमें दिये गये हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2506, सन् 1980 में, पृष्ठ संख्या 54 है।

119. श्री ऋषभदेव विधान—अयोध्या महातीर्थ में वीर सं. 2519, शरदपूर्णिमा के दिन सन् 1993 में यह ऋषभदेव विधान पूज्य माताजी ने लिखकर पूर्ण किया। इस विधान में पाँच वलय के माध्यम से अर्घ्यों का विभाजन किया है। प्रथम वलय में 46 गुणों में 46 अर्घ्य, द्वितीय में 18 दोषों से रहित अर्हन्त के 18 अर्घ्य, तृतीय में 48 प्रकार के संकटों के निवारण हेतु 48 अर्घ्य, चतुर्थ में भगवान के 84 गणधरों के 84 अर्घ्य तथा पंचम वलय में सिद्धपद के 8 गुणों के प्रतीक में 8 अर्घ्य हैं। इस प्रकार पूरे विधान में एक पूजा, 204 अर्घ्य तथा 5 पूर्णार्घ्य हैं। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2523, दशलक्षण पर्व सन् 1997, पृष्ठ संख्या 54 है।

120. श्री नेमिनाथ विधान—हस्तिनापुर में वीर सं. 2531, श्रावण शुक्ला षष्ठी तिथि में सन् 2005 में श्री नेमिनाथ विधान की रचना की। इस पूजा विधान में भगवान नेमिनाथ की पूजा के साथ 108 मंत्र के अर्घ्य हैं। भगवान नेमिनाथ निर्वाण भूमि गिरनार सुरक्षा दिवस के उपलक्ष्य में गिरनार पर्वत की रक्षा हेतु पूज्य माताजी ने यह विधान रचा है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2532, मगसिर कृष्णा दशमी-भगवान महावीर दीक्षा तिथि, 27 जनवरी 2005, पृष्ठ संख्या 64 है।

121. मनोकामनासिद्धि भगवान महावीर व्रत एवं महावीर पूजा—वीर सं. 2526, सन् 2000, भगवान महावीर स्वामी के 2600वें जन्मजयंती वर्ष में यह पुस्तक लिखी। इसमें भगवान महावीर स्वामी की पूजा एवं महावीर व्रत के 108 मंत्र हैं और महावीर स्वामी का परिचय है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2527, आश्विन शु. 5, 21 अक्टूबर 2001, पृष्ठ संख्या 24 है।

122. श्री वीरगुणसंपद् विधान—प्रयाग तीर्थ पर वीर सं. 2528, मगसिर शुक्ला पूर्णिमा, सन् 2002 भगवान महावीर स्वामी के 2600वें जन्मकल्याणक उत्सव पर इस विधान को लिखकर पूर्ण किया। यह विधान विश्वशांति महावीर विधान का लघुरूप है। इसमें महावीर स्वामी की पूजा एवं 1008 नाम मंत्र के अर्घ्य हैं। इस मण्डल विधान में दस कोठों में प्रत्येक कोठे में सौ-सौ अर्घ्य और अंतिम कोष्ठक में 108 अर्घ्य चढ़ाए जाते हैं। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2528, माघ कृ. 14, श्री ऋषभदेव निर्वाण दिवस, 10 फरवरी 2002, पृष्ठ संख्या 72 है।

123. महावीर समवसरण विधान—भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर में वीर सं. 2529, आषाढ़ सुदी छठ, सन् 2003 को 'वीरशासन जयंती' के निमित्त से पूज्य माताजी ने यह विधान लिखकर पूर्ण किया। 2003 में माताजी के सानिध्य में वीरशासन जयंती पर्व समारोह राजगृही में विपुलाचल पर्वत पर धूमधाम से मनाया गया था। इस विधान में भगवान महावीर के समवसरण की महिमा का सुन्दर वर्णन

किया है। इसमें एक पूजा एवं 121 अर्घ्य तथा 10 पूर्णार्घ्य हैं। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2529, शरदपूर्णिमा-10 अक्टूबर 2003, पृष्ठ संख्या 48 है।

124. जिनगुणसंपत्ति विधान–हस्तिनापुर में वीर नि.सं. 2503, वैशाख सुदी पूर्णिमा, सन् 1977 में यह जिनगुणसम्पत्ति विधान लिखकर पूर्ण किया। इस विधान में जिनगुणसंपद, सोलहकारण, पंचकल्याणक, अष्टमहाप्रातिहार्य, 10 जन्मातिशय, 10 केवलज्ञानातिशय, 14 सुदेवकृत अतिशय, इस प्रकार सात वलय में 63 महावैभवशली गुणों की अर्चा आराधना है। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2511, पौष शुक्ला पूर्णिमा, जनवरी 1985, पृष्ठ संख्या 48 है।

125. श्री पार्श्वनाथ विधान–भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर, नंद्यावर्त महल में चातुर्मास के मध्य वीर सं. 2529, श्रावण शुक्ला एकम्, सन् 2003 में श्री पार्श्वनाथ विधान पूर्ण हुआ। इसमें भगवान पार्श्वनाथ के 108 मंत्र के अर्घ्य हैं। भगवान पार्श्वनाथ का यह लघु विधान सभी के रोग-शोक, दुख, दारिद्र्य को हरने वाला है। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2529, पौष कृष्णा एकादशी, 19 दिसम्बर 2003, पृष्ठ संख्या 48 है।

126. तीस चौबीसी विधान–हस्तिनापुर में श्रावण शुक्ला 1, वीर सं. 2503, सन् 1977 में प्रारंभ कर कार्तिक कृ. अमावस्या, वीर सं. 2503, सन् 1977 में पूर्ण किया। इस विधान में पंचमेरुसंबंधि वर्तमान, भूत एवं भविष्यत्कालीन तीस चौबीसी के 720 तीर्थंकरों की पूजाएँ हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, जनवरी 1981 में, पृष्ठ संख्या 244 है।

127. आचार्य श्री शांतिसागर विधान–भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में वीर सं. 2530, आषाढ़ वदी छठ्ठ, 8 जून 2004 में यह विधान लिखा। 'गुरुणां गुरु' चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य हुए हैं। पूज्य माताजी ने इनके दर्शन किये। इनकसे अनुभव ज्ञान प्राप्त किया एवं कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्रपर इनकी सल्लेखना देखी है। इस विधान में 216 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य और 1 जयमाला है।

128. विषापहार विधान–जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर में वीर सं. 2532, माघ कृष्णा तृतीया, सन् 2006 को यह विधान लिखकर पूर्ण किया। श्री धनंजय कवि विरचित 'विषापहार स्तोत्र' पर यह विधान रचा है। इसमें विषापहार पूजा, 48 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य और एक जयमाला है। जिस विषापहार स्तोत्र की रचना से धनंजय कवि के पुत्र पर चढ़ा सर्प का विष उतर गया था, उस स्तोत्र पर रचित विधान को लगातार 40 दिन करने से रोग, शोक, दरिद्रता दूर होकर स्वस्थ शरीर की प्राप्ति होती है। प्रथम संस्करण वीर नि. सं. 2532, आषाढ़ शु. 15, 11 जुलाई 2006, पृष्ठ संख्या 48 है।

129. भगवान बाहुबली विधान–जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर पर वीर सं. 2532, माघ शु. 13, सन् 2006 में यह विधान पूर्ण किया। वीर सं. 2532, 8 फरवरी से 19 फरवरी 2006 तक श्रवणबेलगोल तीर्थ पर होने वाले भगवान बाहुबली के

महामस्तकाभिषेक के अवसर पर पूज्य माताजी ने यह विधान रचा। जिसे पूज्य माताजी के संघ की ब्रह्मचारिणी बहनों ने 21 फरवरी 2006 को श्रवणबेलगोला तीर्थ पर जाकर भगवान बाहुबली के सामने किया। इसमें श्री बाहुबली वंदना, श्री बाहुबली पूजा, 156 अर्घ्य, 4 पूर्णार्घ्य और 1 जयमाला है।

130. श्री सरस्वती विधान–वीर नि. सं. 2530, कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर में इस विधान को लिखकर पूर्ण किया। इसमें सरस्वती माता की पूजा, 108 मंत्रों के 108 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य और जयमाला है। सरस्वती स्तोत्र संस्कृत एवं हिन्दी में है। सरस्वती माता की आरती के साथ ही पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा रचित सरस्वती चालीसा भी है। इसका प्रथम संस्करण वीर नि. सं. 2533, पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के क्षुल्लिका दीक्षा दिवस के अवसर पर प्रकाशित हुआ। इसमें कुल 40 पृष्ठ हैं।

131. श्री समवसरण विधान–जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर में वीर सं. 2532, पौष शुक्ला चौदस, सन् 2006 को यह विधान लिखकर पूर्ण किया। इसमें 24 तीर्थंकरों के समवसरण की पूजा है। इसमें 14 पूजा, 760 अर्घ्य, 16 पूर्णार्घ्य, 14 जयमाला और 1 बड़ी जयमाला है। इसमें माताजी ने 23 प्रकार के छंदों का प्रयोग किया है। प्रथम संस्करण-वीर सं. 2532, चैत्र कृष्णा एकम्, 15 मार्च 2006, पृष्ठ संख्या 212 है।

132. गणधरवलय विधान–जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर में वीर संवत् 2519, पौष शुक्ला पूर्णिमा, सन् 1993 को माताजी ने यह विधान लिखकर पूर्ण किया। इस विधान में गणधरवलय के 48 मंत्रों के माध्यम से 48 ऋद्धियों को नमन किया है। इसे करने से रोग, शोक, दरिद्रता, मानसिक पीड़ा आदि सभी संकट दूर हो जाते हैं तथा दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य, सुकीर्ति, वैभव, संपत्ति आदि सभी मनोवाञ्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं। प्रथम संस्करण-वीर सं. 2525, शरदपूर्णिमा-24 अक्टूबर 1999, पृष्ठ संख्या 56 है।

133. आचार्य श्री वीरसागर विधान–हस्तिनापुर तीर्थ पर वीर सं. 2532, चैत्र शुक्ला एकम्, सन् 2006 में पूज्य माताजी ने यह विधान पूर्ण किया। इसमें 216 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य और एक जयमाला है। चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के ये पट्टशिष्य आचार्य हुए हैं एवं पूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षागुरु थे। उनकी भक्ति से प्रेरित होकर पूज्य माताजी ने यह विधान बनाया है। प्रथम संस्करण वीर नि. सं. 2532, 15 अप्रैल 2006, पृष्ठ संख्या 48 है।

134. अयोध्या तीर्थक्षेत्र पूजा–वीर सं. 2519, सन् 1993 में अयोध्या तीर्थ पर पूज्य माताजी ने यह पुस्तक लिखी। इसमें अयोध्या तीर्थक्षेत्र पूजा के साथ अयोध्या में जन्में भगवान ऋषभदेव, अजितनाथ, अभिनंदननाथ, सुमतिनाथ और अनन्तनाथ इन पाँच तीर्थंकरों की पूजा एवं उनकी स्तुति है। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2519, शरद

पूर्णिमा, 30 अक्टूबर 1993, पृष्ठ संख्या 62 है।

135. अहिच्छत्र पूजा संग्रह—भगवान महावीर के 2600वें जन्मजयंती महोत्सव वर्ष में इस पुस्तक का प्रकाशन हुआ। इस पुस्तक में मंगलाष्टक, पंचामृत अभिषेक पठ, तीस चौबीसी पूजन, बीस तीर्थंकर पूजा, श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ पूजा आदि अनेक विषय संग्रहीत हैं। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2528, अप्रैल 2002, पृष्ठ संख्या 168 है।

136. दशलक्षण धर्म पूजा—पूजा-विधान के क्षेत्र में माताजी ने अभूतपूर्व क्रांति उत्पन्न कर दी है। नित्य नियम पूजा में देव-शास्त्र-गुरु पूजा की जगह बहुतायत से अब माताजी द्वारा लिखी हुई नवदेवता पूजा नगर-नगर में होने लगी है। इसी श्रृँखला में पूज्य माताजी ने दशलक्षण धर्म की पूजा सरस छंदों में लिखी है। पुस्तक के अंत में आर्यिका श्री चंदनामती माताजी कृत चौबीस तीर्थंकर समन्वित "ह्रीं" की पूजा दी गई है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2516, भादों सुदी पंचमी, 25 अगस्त 1990, पृष्ठ संख्या 24 है।

137. दीपावली पूजन—कई वर्षों से जैन समाज में जैन पद्धति से दीपावली पूजन करने हेतु पुस्तक की आवश्यकता प्रतीत हो रही थी, जिसकी पूर्ति माताजी ने कर दी। प्रथम संस्करण वीर सं. 2517, नवम्बर 1991, पृष्ठ संख्या 40 है। इसका कन्नड़ में अनुवाद भी हुआ है, जो कि छप चुका है।

138. सम्मेदशिखर टोंक पूजन—पूज्य माताजी ने महान सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर की भक्ति से ओत-प्रोत होकर वहाँ की प्रत्येक टोंक के अर्घ्य चढ़ाने के लिए सुन्दर पद्य बनाए हैं। अर्घ्यों के पश्चात् बख्तावर कवि रचित प्रचलित पार्श्वनाथ पूजा एवं शांति विसर्जन पाठ दिया गया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2514, 1988 में, पृष्ठ संख्या 68 है।

139. मण्डल विधान प्रारंभ एवं हवन विधि—मंडल विधानों के प्रारंभ में सकलीकरण, मंडपप्रतिष्ठा, इन्द्रप्रतिष्ठा आदि कराने की विधि वैसे तो विस्तारपूर्वक प्रतिष्ठाग्रंथों में दी गई है किन्तु उतनी बड़ी विधि छोटे विधानों में करा पाना कठिन है तथा आज विधि विधान कराने वाले विद्वानों का संस्कृत भाषा का ज्ञान भी अल्प है अतः माताजी ने अधिकांश का हिन्दी पद्यानुवाद कर दिया है तथा क्रियाओं के कराने का संकेत भी हिन्दी में दे दिया है। जिससे कि कराने वाले तथा करने वाले उन क्रियाओं को अच्छी तरह से समझ जाते हैं। पुस्तक के अंत में हवन कराने की विधि व हवन कुंड बनाने के चित्र भी दिये हैं। इस प्रकार विधिविधान कराने की यह एक प्रामाणिक पुस्तक तैयार हो गई है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2514, जनवरी 1988 में, पृष्ठ संख्या 128 है।

140. हस्तिनापुर पूजा—हस्तिनापुर क्षेत्र की पूजन, आदिनाथ, भरत, बाहुबली पूजन तथा शांति, कुंथु, अरनाथ की पूजन दी गई हैं, ये सभी पूजाएँ माताजी द्वारा रचित हैं। पूजाओं को पढ़ने से तत् संबंधी पूर्ण परिचय प्राप्त हो जाता है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2511, 28 अप्रैल 1985 में, पृष्ठ संख्या 24 है।

141. जम्बूद्वीप पूजा एवं भक्ति—जम्बूद्वीप के कृत्रिम-अकृत्रिम जिनालयों की एक

पूजा तथा जिनालयों की एवं सुमेरु की भक्ति पूज्य माताजी द्वारा रचित है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2511, अप्रैल 1985 में, पृष्ठ संख्या 32 है।

142. श्री ऋषभदेव पूजा—वीर सं. 2526, सन् 2000, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत यह पुस्तक लिखी। इसमें नवदेवता पूजा, ऋषभदेव पूजा, कैलाशपर्वत की पूजा एवं निर्वाणकाण्ड है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2526, माघ कृ. 14, 4 फरवरी 2000, पृष्ठ संख्या 24 है।

143. बाहुबली स्तोत्र एवं पूजा—इसमें दिया गया 44 पद्यों में संस्कृत में रचित बाहुबली स्तोत्र माताजी ने वीर सं. 2491, सन् 1965 में श्रवणबेलगोला में लिखा था, तभी छप भी गया था। यह पुनर्मुद्रण है। अंत में बाहुबली की पूजा है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, सन् 1981 में, पृष्ठ संख्या 68 है।

144. बाहुबली पूजा—भगवान बाहुबली सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक के पावन प्रसंग पर इस छोटी सी पुस्तिका का प्रकाशन किया गया। इसमें भगवान बाहुबली की पूजन के अतिरिक्त बाहुबली अष्टक एवं कई आरतियाँ दी गई हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, सन् 1981 में, पृष्ठ संख्या 32 है।

145. अभिषेक एवं पूजा—इस पुस्तक में पूजामुख विधि, पूजा अन्त्यविधि प्रतिष्ठातिलक से लेकर माताजी ने उसका हिन्दी पद्यानुवाद किया है, पंचामृत अभिषेक पाठ हिन्दी पद्यानुवाद तथा माताजी द्वारा ही रचित कुछ पूजाएँ हैं, जो कि अच्छी लय में बनाई गई हैं, भावपूर्ण भी हैं। पृष्ठ संख्या 96 है।

146. तीर्थंकर त्रय पूजा—भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरनाथ की सामूहिक पूजा व अलग-अलग पूजा, भगवान बाहुबली की पूजा तथा हस्तिनापुर क्षेत्र का संक्षेप में प्राचीन-अर्वाचीन परिचय दिया है। सभी पूजाएँ माताजी द्वारा रचित हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, सन् 1981 में, पृष्ठ संख्या 40 है।

147. नित्य पूजा—इस पुस्तक में सर्वजनप्रिय नवदेवता पूजन, सिद्ध पूजा एवं बाहुबली पूजा तथा कुछ भजन व आरती हैं। तीनों पूजाएँ पूज्य माताजी द्वारा रचित हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2506, सन् 1980 में, पृष्ठ संख्या 28 है।

148. श्री जिनसहस्रनाम व्रत विधि व पूजा-(सन् 1955, म्हसवड़ चातुर्मास में रचित)—वीर सं. 2481, सन् 1955 में सर्वप्रथम म्हसवड़ चातुर्मास में भगवान के 1008 नाम मंत्रों को बनाकर माताजी ने लेखनी प्रारंभ की। म्हसवड़ चातुर्मास में छपी सबसे प्रथम पुस्तक है। इसमें जिनसहस्रनाम विधि, श्री जिनसहस्रनाम पूजा, संस्कृत में 1008 मंत्र एवं आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की यमसल्लेखना पर पूज्य माताजी द्वारा क्षुल्लिका वीरमती की अवस्था में प्रस्तुत की गई श्रद्धांजलि है। पृष्ठ संख्या 20 है।

149. व्रत विधि एवं पूजा–दिगम्बर जैन समाज में विधिपूर्वक व्रतों को करने की अतिप्राचीन परम्परा है। इस पुस्तक में णमोकार व्रत, जिनगुणसंपत्ति, रोहिणी, पंचपरमेष्ठी एवं सप्तपरमस्थान व्रतों में की जाने वाली पूजाएँ दी हैं, जो कि पूज्य माताजी द्वारा बनाई गई हैं। इन व्रतों की विधि, व्रतों से संबंधित जाप्य मंत्र तथा कुछ की संक्षिप्त कथा भी दी है। इनके अतिरिक्त वृहत्पल्य व्रत की विधि भी दी गई है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2503, सन् 1977 में, पृष्ठ संख्या 52 है।

150. व्रत विधि सुमनावलिः-(सन् 1966, सोलापुर चातुर्मास में प्रकाशित)– इसमें चक्रवाल व्रतविधि, वृहत्पल्य व्रत-विधि, मुष्टितंदुल व्रतविधि, नंदीश्वर पंक्ति व्रतविधि, मेरुपंक्ति व्रतविधि, कर्मनिर्जरा व्रतविधि, मंगल त्रयोदशी व्रतविधि एवं सप्तपरमस्थान व्रतविधि है। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2493, सन् 1966 में सोलापुर से प्रकाशित है। पृष्ठ संख्या 50 है।

151. जिनस्तवन माला–जयपुर (राज.) के चातुर्मास में वीर सं. 2495 सन् 1969 में यह पुस्तक रची। इसमें माताजी की रचित 9 स्तुतियों का संकलन है। पूज्य माताजी ने अपने जीवन में अनेक संस्कृत, हिन्दी स्तुतियों का सृजन किया है। माताजी ने प्रारंभ से ही भक्तिमार्ग को प्राथमिकता दी। भगवान जिनेन्द्र की भक्ति से बड़े से बड़े संकट दूर हो जाते हैं तथा सभी प्रकार से सुख, सम्पत्ति, संतति की प्राप्ति होती है। माताजी द्वारा रचित कुछ स्तुतियों को वीर सं. 2495, सन् 1969 में जयपुर चातुर्मास में इसके प्रथम संस्करण में प्रकाशित किया था। पृष्ठ संख्या 60 है।

152. श्री वीरजिन स्तुति–वीर सं. 2493, सन् 1967 में सोलापुर चातुर्मास के मध्य शरदपूर्णिमा के अवसर पर अपने जीवन के 36 वर्ष की पूर्णता पर पूज्य माताजी द्वारा 36 पद्यों में भगवान महावीर की गुणस्तुति रूप में लिखी गई भावांजलि, 28 पद्यों की जम्बूद्वीप स्तुति तथा 5 पद्यों की मंगल स्तुति इस लघुकाय पुस्तक में दी गई है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2500, विजयदशमी, अक्टूबर 1974, पृष्ठ संख्या 32 है। इस स्तुति के ऊपर आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने संस्कृत एवं हिन्दी टीका लिखी है, जो 'महावीर स्तोत्र' नाम से अक्टूबर 2003 में प्रकाशित हुई है।

153. बाहुबली स्तोत्र (कन्नड़ भाषा में)-(सोलापुर से प्रकाशित)–वीर सं. 2491, सन् 1965, श्रवणबेलगोला तीर्थ पर चातुर्मास के मध्य पूज्य माताजी ने कन्नड़ भाषा में बाहुबली स्तोत्र लिखा। इसमें बाहुबली स्तोत्र, चन्द्रप्रभ स्तुति, णमोकार मंत्र का महात्म्य, बारह भावना सभी कन्नड़ में अनुवादित हैं। प्रकाशन–वीर सं. 2491, सन् 1967, पृष्ठ संख्या 52 है।

154. बाहुबली स्तुति (कन्नड़ में)-(श्रवणबेलगोला से प्रकाशित)–वीर सं. 2491, सन् 1965, श्रवणबेलगोला तीर्थ पर पूज्य माताजी ने यह पुस्तक कन्नड़ में लिखी। इसमें बाहुबली स्तुति, भक्तामर स्तोत्र, जिनगुणसम्पत्ति व्रतकथा, बारहभावना, दशलक्षण, आकाशपंचमी, पुष्पांजलि, सुगंधदशमी, रत्नत्रय व्रत, णमोकार व्रत, लब्धि विधान व्रत आदि व्रतों की विधि और मंत्र, उद्यापन विधि है। प्रकाशन–वीर सं. 2491, सन् 1965, पृष्ठ संख्या 40 है।

155. प्रयाग तीर्थ वंदना–वीर सं. 2526, सन् 2000 में पूज्य माताजी ने यह पुस्तक लिखी। इसमें माताजी ने प्रयाग तीर्थ का परिचय, प्रयाग तीर्थ स्तुति एवं श्री ऋषभदेवजिन स्तोत्र दिया है। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2527, माघ कृष्णा 14, 23 जनवरी 2001, पृष्ठ संख्या 24 है।

156. भक्ति पल्लवी–(सन् 1967, सनावद चातुर्मास के मध्य प्रकाशित) इस पुस्तक में पात्रकेसरी स्तोत्र, सिद्धक्षेत्र वंदना, त्रिलोक चैत्यवंदना, सम्मेदशिखर वंदना और शांतिजिनस्तवन है। यह पुस्तक इंदौर से प्रकाशित है। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2493, 1 जुलाई 1967, पृष्ठ संख्या 40 है।

157. वन्दना सुमनावलिः-(सन् 1966 सोलापुर चातुर्मास में प्रकाशित)–इस पुस्तक में त्रैलोक्य चैत्यवंदना (संस्कृत) श्री सम्मेदशिखर वंदना (संस्कृत), सिद्धक्षेत्र वंदना, त्रैलोक्य चैत्यवंदना, श्री सम्मेदशिखर वंदना, कवलचांद्रायण व्रत-विधि, संस्कृत में चांद्रायण व्रतोद्यापन विधान है। प्रथम संस्करण–वीर सं. 2492, अक्टूबर 1966 में, पृष्ठ संख्या 38 है।

158. भक्ति कुसुमावली–वीर सं. 2491, सन् 1965 से 1967 के मध्य माताजी ने जो हिन्दी-संस्कृत की स्तुतियाँ बनाई थीं, उनमें से 6 स्तुतियाँ इसमें दी गई हैं, जो कि नित्य पाठ करने लायक हैं। प्रथम संस्करण "भक्ति सुमनावली" नाम की पुस्तक के रूप में सोलापुर (महा.) से वीर सं. 2491, सन् 1965 में प्रकाशित हुआ था। पृष्ठ संख्या 62 है।

159. भक्तिसुधा–लगभग 12 संस्कृत-हिन्दी स्तुतियों को इसमें पूज्य माताजी ने संकलित किया है। इसका प्रथम संस्करण वीर सं. 2497, सन् 1971 में प्रकाशित किया गया था। पुनः कतिपय परिवर्तन-परिवर्द्धन के साथ इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण मई 1992 में प्रकाशित हुआ है। पृष्ठ संख्या 40 है।

160. चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति–जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर में वीर संवत् 2501, श्रावण शुक्ला पूर्णिमा, गुरुवार, सन् 1975 में चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति की रचना पूर्ण की। शंभु छंद में रचित इन स्तुतियों में प्रत्येक तीर्थंकर के नाम, उनके चिन्ह, माता-पिता के नाम, जन्मनगरी और निर्वाणभूमि के नाम, पाँचों कल्याणक की तिथियाँ, शरीर की ऊँचाई, शरीर का वर्ण, आयु, वंश इत्यादि समस्त इतिहास भरा हुआ है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2525, श्रावण शुक्ला पूर्णिमा, 26 अगस्त, 1999, पृष्ठ संख्या 56 है।

161. प्रतिष्ठातिलक—श्री नेमिचन्द्र सैद्धान्तिकदेव द्वारा रचित (प्रतिष्ठा ग्रंथों में अति प्राचीन एवं आगम परम्परा द्वारा मान्यता प्राप्त) प्रतिष्ठातिलक नामक ग्रंथ का मराठी से हिन्दी में भावानुवाद पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने सन् 1992-93 में किया था किन्तु कारणवश उसका प्रकाशन 8 अक्टूबर 2006 में हुआ है। 480 पृष्ठ के इस ग्रंथ में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा की समस्त अन्तरिम विधि के साथ-साथ बाह्य प्रदर्शन के नाटक आदि भी सम्मिलित हैं तथा प्रतिष्ठा में प्रयुक्त होने वाले अनेकानेक यंत्रों को भी इसमें सम्मिलित किया गया है। प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर नि. सं.2532, 7 अक्टूबर 2006, शरदपूर्णिमा को हुआ।

अप्रकाशित ग्रंथ

162. पात्रकेसरी स्तोत्र—श्री पात्रकेसरी आचार्य ने 50 श्लोकों में अर्हंतदेव की स्तुति करते हुए अन्य सम्प्रदायों का निराकरण करके जैन सम्प्रदाय को सार्वभौम धर्म सिद्ध किया है। इस स्तुति का माताजी द्वारा रचित पद्यानुवाद स्तुति के भाव को अच्छा प्रस्फुटित कर रहा है।

163. मूलाचार का सार—मुनियों के आचार ग्रंथों में सर्वोपरि ग्रंथ मूलाचार का सार माताजी द्वारा लिखित है। इस पूरे ग्रंथ का सार लेकर नवनीतरूप में यह मूलाचार का सार बनाया है। इसको पढ़कर मूलाचार ग्रंथ का स्वाध्याय करने में बहुत ही सरलता रहेगी।

164. षट्आवश्यक क्रिया—इस पुस्तक में मूलाचार ग्रंथ के आधार से मुनि-आर्यिकाओं की छह आवश्यक क्रियाओं का बहुत ही सुन्दर विवेचन है।

165. नवदेवता विधान—ढाई द्वीप में एक सौ सत्तर कर्मभूमियाँ है, इनमें होने वाले अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य और चैत्यालय इन नवदेवताओं की इस विधान में छह पूजाएँ हैं।

166. आगम दर्पण—वर्तमान में दिगम्बर सम्प्रदाय में तेरहपंथ और बीसपंथ चल रहे हैं। इस छोटी सी पुस्तक में जैन शास्त्रों के आधार से पूजाविधि का वर्णन है, अतः इसका आगमदर्पण यह नाम सार्थक है।

167. गणधरवलय मंत्र (अर्थ सहित)—धवला पुस्तक नवमी के आधार से 'णमो जिणाणं' आदि गणधरवलय मंत्रों के अर्थ का सुंदर विवेचन है। कई एक प्रकरण बहुत महत्वपूर्ण हैं।

168. दिगम्बर जैनाचार्य—श्री गुणधर आचार्य, श्री धरसेनाचार्य आदि प्राचीन महान् ऐसे 14 आचार्यों का जीवनवृत्त वर्णित है।

169. सप्तपरमस्थान—महापुराण के आधार से सज्जाति, सद्गार्हस्थ आदि सात परमस्थानों का विवेचन है। एक-एक विषय को पुष्ट करने हेतु जयधवला आदि अन्य ग्रंथों के उद्धरण भी दिये गये हैं।

170. व्रतविधि एवं पूजा (भाग-2)—इसमें मुक्तावली आदि व्रतों की विधि एवं उन व्रत संबंधी पूजाएँ भी दी गई हैं। इसमें रोहिणी व्रत की विधि भी दी गई है।

171. गृहस्थ धर्म—इसमें वसुनन्दि श्रावकाचार आदि के आधार से गृहस्थ के धर्म-कर्त्तव्य का संक्षिप्त व सरल विवेचन है।

172. जैनदर्शन—इसमें जैनदर्शन के मूल ऐसे कर्म सिद्धान्त का संक्षिप्त व सरल विवेचन है।

173. दिव्यध्वनि—अरिहंत देव की दिव्यध्वनि कब, कैसे व कितनी भाषाओं में खिरती है? इसका सरल विवेचन है।

174. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

175. मध्यलोक विधान

176. तीन चौबीसी विधान

177. 720 तीर्थंकर विधान

178. कर्मदहन विधान

179. पुण्यास्रव विधान

180. भगवान बाहुबली विधान

181. णमोकार महामंत्र-एक अध्ययन

182. सम्यक्त्व-प्राभृतादिसार

183. सुदं मे आउस्संतो!

184. द्वादशांग श्रुतज्ञान का विषय

185. त्रैलोक्य जिनालय व्रत आदि संग्रह

186. पार्श्वनाथ व्रत

187. चारित्रलब्धि व्रत

188. तीस चौबीसी व्रत

189. पुण्यास्रव व्रत

190. चौंसठऋद्धि व्रत एवं गणधरवलय व्रत

191. तीन चौबीसी व्रत

192. पंचकल्याणक व्रत

193. पंचमकाल के अंत तक चतुर्विध संघ

194. जैन ग्रंथों के अध्ययन का क्रम

195. मुनि दीक्षा विधि

196. उपासक धर्म

द्रव्यानुयोग

197. अष्टसहस्री प्रथम भाग–जैन न्यायदर्शन का अतिप्राचीन ग्रंथ है। सर्वप्रथम उमास्वामी के मंगलाचरण पर टीकारूप में आचार्य समंतभद्र स्वामी ने 114 कारिकाएं लिखकर "आप्त मीमांसा" नाम से रचना की। इन्हीं कारिकाओं पर आचार्य अकलंकदेव ने अष्टशती नाम से टीका लिखी। पुनः कारिकाओं एवं अष्टशती को लेकर अब से 1200 वर्ष पूर्व आचार्य विद्यानंद स्वामी ने अष्टसहस्री नाम से आठ हजार श्लोक प्रमाण विस्तृत टीका का निर्माण किया तथा स्वयं आचार्य महोदय ने उसे कष्टसहस्री नाम दिया। इसमें विभिन्न एकांत मतों के पक्ष का अनेकांत शैली में खण्डन करके स्याद्वादमत की पुष्टि की गई है।

पूज्य माताजी ने इस ग्रंथ की हिन्दी टीका करके जन-जन के लिए इसे सुगम-सहस्री बना दिया। इस प्रथम भाग में 6 कारिकाओं की टीका हुई है। प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2500, सन् 1974 में। पृष्ठ संख्या 456, प्रथम संस्करण में अंत में 120 पृष्ठीय न्यायसार ग्रंथ को भी जोड़ दिया गया है। द्वितीय संस्करण का प्रकाशन मार्च 1989 में/पृष्ठ संख्या 444 है।

198. अष्टसहस्री द्वितीय भाग–पूर्ण अष्टसहस्री की टीका तो जनवरी सन् 1971 में ही माताजी ने लिखकर तैयार कर ली थी, किन्तु इस दूसरे भाग के प्रकाशन में अप्रत्याशित विलम्ब हो गया। इस द्वितीय भाग में कारिका 7 से 23 तक की टीका है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2515, मार्च 1989 में, पृष्ठ संख्या 424 है।

199. अष्टसहस्री तृतीय भाग–इसमें कारिका 24 से 114 की टीका हुई है। तीनों भागों में पूज्य माताजी ने जगह-जगह विशेषार्थ व भावार्थ तो दिये ही हैं, सारांशों के दे देने से परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों को अतीव सुगमता हो गई है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2516, मार्च 1990 में, पृष्ठ संख्या 608 है।

तीन भागों में प्रकाशित इस अष्टसहस्री की हिन्दी टीका का नाम स्याद्वाद चिन्तामणि टीका है। वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के प्रथम पुष्प के रूप में प्रकाशित इस ग्रंथ के हिन्दी अनुवाद सहित प्रथम भाग के विमोचन में राजधानी दिल्ली के अन्दर आचार्य श्री धर्मसागर महाराज, आचार्य श्री देशभूषण महाराज, उपाध्याय श्री विद्यानंद महाराज एवं चारों सम्प्रदाय के अनेक वरिष्ठ साधु-साध्वियों का सानिध्य रहा।

200. नियमसार प्राभृत–हस्तिनापुर में वीर सं. 2504, सन् 1978 में आचार्य श्री कुन्दकुन्द की नियमसार ग्रंथ की गाथाओं पर संस्कृत टीका लिखने का भाव बनाया और लगभग 62 ग्रंथों के उद्धरण आदि के साथ नय व्यवस्था द्वारा गुणस्थान आदि के प्रकरण को स्पष्ट करते हुए वीर सं. 2511, मगसिर वदी सप्तमी सन् 1985 में इस ग्रंथ पर 'स्याद्वाद चन्द्रिका' संस्कृत टीका लिखकर पूर्ण की। नियमसार की

आ. पद्मप्रभमलधारीदेव कृत टीका का हिन्दी करने के बाद माताजी के भाव नियमसार पर ही पुनः संस्कृत टीका लिखने के हुए। तदनुसार संस्कृत टीका लिखकर स्वयं ही माताजी ने उसकी हिन्दी टीका भी कर दी। हिन्दी टीका के साथ-साथ आवश्यकतानुसार भावार्थ-विशेषार्थ देकर विषय को अच्छी तरह से स्पष्ट कर दिया है। अध्यात्म को आत्मसात् करने के लिए यह नियमसार प्राभृत टीका अति उपयोगी है। प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2511, वैशाख शु. 8, 28 अप्रैल 1985 में, पृष्ठ संख्या 578 है।

201. नियमसार–हस्तिनापुर में वीर सं. 2502, चैत्र कृष्णा नवमी को इस ग्रंथ का अनुवाद पूर्ण किया। आचार्य कुन्दकुन्द के इस ग्रंथ की आचार्य पद्मप्रभमलधारीकृत प्रथम संस्कृत टीका की हिन्दी टीका पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी ने अतीव सुगम शैली में अथक परिश्रम करके की है। इसमें भावार्थ-विशेषार्थ भी दिये हैं। अनेक स्थलों पर गुणस्थानों का स्पष्टीकरण किया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2511, माघ शु. 13 फरवरी, 1985 में, पृष्ठ संख्या 582 है।

202. न्यायसार–दिल्ली-नजफगढ़, वीर सं. 2499 (सन् 1973) में मौलिक ग्रंथ 'न्यायसार' लिखा। जैन न्यायदर्शन में प्रवेश करने के लिए यह कुंजी के समान है। इसमें जैन न्यायदर्शन में प्रयुक्त होने वाले अनेक शब्दों की परिभाषाएँ दी गई हैं। अनन्तर अन्य दर्शनों की मान्यता को दर्शाते हुए वे असमीचीन क्यों हैं, उसे दिया गया है। न्याय की शैली में उनका खण्डन किया गया है। इस ग्रंथ के निर्माण में माताजी ने बहुत परिश्रमकिया है। प्रथम संस्करण वीर सं.2500, सितम्बर 1974 में, पृष्ठ संख्या 120 है।

203. कातंत्ररूपमाला–वीर सं. 2499, आश्विन शुक्लापूर्णिमा-शरद पूर्णिमा, सन् 1973, दिल्ली-नजफगढ़ में यह जैन व्याकरण पूर्ण की। श्री सर्ववर्म आचार्य प्रणीत यह कातंत्ररूपमाला नाम की व्याकरण दिगम्बर जैन परम्परा में संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए सबसे सरल व्याकरण है। इसमें कुल 1383 सूत्र हैं। आचार्य भावसेन त्रैविद्य ने इसकी टीका लिखी है। वीर सं. 2480, सन् 1954 में जयपुर में माताजी ने इस व्याकरण को मात्र 2 माह में कण्ठस्थ कर लिया था, यही व्याकरण माताजी के ज्ञानरूपी महल की नींव का प्रथम पत्थर है।

अनेक विद्यार्थियों की इस व्याकरण को पढ़ने की रुचि एवं आग्रह से माताजी ने वीर सं. 2499, सन् 1973 में इसके सूत्रों व टीका का हिन्दी अनुवाद किया। प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2513, मार्च 1987 में हुआ, पृष्ठ संख्या 452 है।

204. समयसार पूर्वार्द्ध–हस्तिनापुर में फाल्गुन सुदी ग्यारस, वीर सं. 2515, सन् 1989 में इसका अनुवाद पूर्ण किया। आचार्य कुन्दकुन्द कृत समयसार पर आचार्य अमृतचन्द्र एवं आचार्य जयसेन ने संस्कृत में विस्तृत टीकाएँ लिखी हैं। वर्तमान में जयपुर के विद्वान पं. जयचंद जी छाबड़ा ने आचार्य अमृतचन्द्रकृत टीका का ढुंढारी

भाषा में अनुवाद किया। आचार्य अमृतचन्द्र कृत टीका का नाम "आत्मख्याति" है। इसकी कई हिन्दी टीकाएँ प्रकाशित हुई हैं किन्तु आचार्य जयसेन कृत तात्पर्यवृत्ति टीका की हिन्दी स्व. आचार्य श्री ज्ञानसागर जी ने की है। अब तक दोनों आचार्यों की अलग-अलग टीकाएँ छपती रहीं। कुछ विद्वानों की यह धारणा बनी हुई है कि दोनों आचार्यों की टीका में मतभेद हैं किन्तु इस धारणा को दूर करने के लिए पूज्य माताजी ने दोनों आचार्यों की संस्कृत टीका व उन पर लिखी गई अपनी ज्ञान ज्योति नाम से हिन्दी टीका, ऐसी तीनों टीकाएँ एक साथ इस कृति में प्रकाशित की हैं।

समयसार पूर्वार्ध में पाँच अधिकार हैं–1. जीवाजीवाधिकार 2. कर्तृकर्म अधिकार 3. पुण्य पाप अधिकार 4. आश्रव अधिकार 5. संवर अधिकार।

आवश्यकतानुसार स्पष्टीकरण के लिए जगह-जगह भावार्थ-विशेषार्थ भी दिये गये हैं तथा प्रत्येक अधिकार के अंत में सारांश भी दिये हैं, जिनके कारण यह कृति अतिविशिष्ट बन गई है। समयसार पूर्वार्ध में आचार्य अमृतचन्द्र के अनुसार 192 गाथाओं की तथा आचार्य जयसेन के अनुसार 201 गाथाओं की टीका छपी है। शेष उत्तरार्ध में प्रकाशित हैं। दोनों आचार्यों की टीका का हिन्दी अनुवाद एक साथ पहली बार प्रकाशित हुआ है। प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2516, माघ शु. 5, 31 जनवरी 1990 में, पृष्ठ संख्या 660 है।

205. समयसार उत्तरार्द्ध–समयसार उत्तरार्ध में 4 अधिकार हैं–1. निर्जरा अधिकार 2. बंध अधिकार 3. मोक्षाधिकार 4. सर्वविशुद्ध ज्ञानाधिकार। उत्तरार्ध में आचार्य श्री अमृतचंद्र के अनुसार 193 गाथा से 415 गाथाओं की तथा आचार्य जयसेन के अनुसार 202 गाथा से 436 गाथाओं की टीका की है एवं एक साथ हिन्दी अनुवाद किया है। आत्मख्याति टीका में कलश काव्य का पद्यानुवाद एवं मूल गाथाओं का पद्यानुवाद आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने किया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2521,8 अक्टूबर 1995, शरदपूर्णिमा, हस्तिनापुर, पृष्ठ संख्या 656 है।

206. प्रवचन निर्देशिका–हस्तिनापुर में वीर सं. 2504, भादों शुक्ला चतुर्दशी, सन् 1978 में यह पुस्तक तैयार की। पूज्य माताजी के सानिध्य में हस्तिनापुर में वीर सं. 2504, सन् 1978 के अक्टूबर माह में शांतिवीर सिद्धांत संरक्षिणी सभा व दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में एक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया था। शिविरार्थियों को प्रवचनकला का शिक्षण देने के लिए माताजी ने शिविर से पूर्व यह पुस्तक मात्र दो माह में लिखकर तैयार कर दी। इसमें 65 ग्रंथों से संकलन है। प्रवचनकर्त्ताओं के अति उपयोगी है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2504, अक्टूबर 1978 में, पृष्ठ संख्या 228 है।

207. जैन भारती–हस्तिनापुर तीर्थ पर वीर नि. सं. 2501, माघ सुदी पंचमी,

रविवार सन् 1975 में जैन भारती ग्रंथ पूर्ण किया। पूज्य माताजी ने अपने दीक्षित जीवन में सैकड़ों ग्रंथों का अध्ययन, स्वाध्याय किया है, उनमें से साररूप यह ग्रंथ माताजी ने लिखा है। इसमें एक-एक अनुयोग के विषय प्रारंभ से अंत तक संक्षेप में दिये हैं। चार खण्डों में चार अनुयोगों को बहुत ही सुगम शैली में प्रतिपादित किया है। जैनधर्म का प्रारंभिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए जैन एवं जैनेतर सभी के लिए महत्वपूर्ण ग्रंथ है।

प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, सन् 1981 में, पृष्ठ संख्या 244 है।

इसका मराठी, गुजराती व अंग्रेजी भाषा में अनुवाद होकर प्रकाशन हो चुका है।

208. नियमसार पद्यावली–हस्तिनापुर में वीर सं. 2503, सन् 1977 में, आचार्य कुन्दकुन्दकृत आध्यात्मिक ग्रंथ नियमसार की 187 गाथाओं का हिन्दी पद्यानुवाद माताजी ने किया है। इसमें मूल गाथाएँ, पद्यानुवाद तथा गाथाओं के नीचे संक्षेप में अर्थ भी दिया है। अध्यात्म रस का आनन्द लेने के लिए पद्यानुवाद सुरुचिकर है। प्रत्येक अधिकार के अंत में सारांश भी दिये हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2506, अक्टूबर 1980 में, पृष्ठ संख्या 112 है।

209. ज्ञानामृत–हस्तिनापुर-जम्बूद्वीप स्थल पर आश्विन शुक्ला पूर्णिमा, वीर सं. 2514, सन् 1988 में इस ग्रंथ को लिखकर पूर्ण किया। अनेकों ग्रंथों का सार सरलता से इस ग्रंथ में दिया गया है। ग्रंथ का सम्पूर्ण विषय आचार्यप्रणीत शास्त्रों के आधार से लिया गया है। गूढ़ तत्त्वों को सरलता से समझने के लिए यह ग्रंथ अति उपयोगी है। नित्य स्वाध्याय के लिए अच्छा ग्रंथ है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2515, मई 1989 में, पृष्ठ संख्या 368 है।

210. आलाप पद्धति-(इंदौर से प्रकाशित)–सनावद (म.प्र.) वीर सं. 2493, सन् 1967 के चातुर्मास में आचार्य श्रीदेवसेनविरचित 'आलाप पद्धति' का माताजी ने हिन्दी अनुवाद किया है। इसमें नयों का बहुत सुन्दर एवं सरल ढंग से विवेचन किया है। प्रकाशन–वीर सं. 2494, 10 जनवरी 1968, पृष्ठ संख्या 48 है।

211. महावीर देशना–भगवान महावीर स्वामी के 2600वें जन्मजयंती वर्ष के अन्तर्गत पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने दिल्ली में वीर नि. संवत् 2527, नवम्बर 2001 में इस ग्रंथ को लिखा है। वीर सं. 2529, सन् 2003 में कुण्डलपुर के प्रथम पंचकल्याणक महोत्सव में ग्रंथ का विमोचन हुआ। इस ग्रंथ में 9 अधिकारों में भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर, गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान कल्याणक, भगवान महावीर का समवसरण, प्रथम दिव्यध्वनि, द्वादशांग, गौतम स्वामी परिचय, चौबीस तीर्थंकर, दिगम्बर जैन मुनिचर्या, मुनियों के भेद-प्रभेद, वर्षायोग, आर्यिका- चर्या, श्रावकचर्या, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म आदि का वर्णन है। प्रथम संस्करण–वीर सं.

2529, माघ शुक्ला 7, 8 फरवरी 2003, पृष्ठ संख्या 568 है।

212. द्रव्य संग्रह–वीर सं. 2502, वैशाख शुक्ला तृतीया–अक्षय तृतीया, सन् 1976 में इस ग्रंथ का गद्य, पद्य में अनुवाद किया। इसके मूलकर्त्ता आचार्यश्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती हैं। इसमें प्राकृत भाषा में रचित 58 श्लोक हैं। पूज्य माताजी ने प्राकृत श्लोकों का सरल हिन्दी में पद्यानुवाद तथा संक्षेप में प्रत्येक श्लोक का अर्थ व भावार्थ भी दिया है। परीक्षालयों के पाठ्यक्रमों में इसे रखा गया है। विद्यार्थियों के लिए सहज पठनीय व स्मरणीय है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2502, सन् 1976, पृष्ठ संख्या 44 है।

213. समाधितंत्र-इष्टोपदेश-वीर सं. 2502, ज्येष्ठ वदी सप्तमी, सन् 1976 में इस ग्रंथ का पद्यानुवाद किया। आचार्य पूज्यपादकृत इन दोनों ग्रंथों का इसमें मूल श्लोकों सहित पद्यानुवाद दिया गया है। समाधितंत्र में 105 श्लोक तथा इष्टोपदेश में 51 श्लोक हैं। प्रारंभ में अध्यात्म प्रवेश के लिए ये ग्रंथ अति सुगम हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2502, सन् 1976 में, पृष्ठ संख्या 40 है।

214. कुन्दकुन्द मणिमाला–वीर सं. 2514, सन् 1988 में यह पुस्तक लिखी। आचार्य श्रीकुन्दकुन्दकृत समयसार आदि 9 ग्रंथों में से भक्तिपरक एवं निश्चयव्यवहार समन्वयपरक 108 गाथाओं को लेकर उनका अर्थ एवं विशेषार्थ दिया गया है। पुस्तक के अंत में श्लोकों का हिन्दी पद्यानुवाद भी दिया गया है। प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2516, जनवरी 1990 में किया गया। पृष्ठ संख्या 150 है।

215. कुन्दकुन्द के भक्तिप्रसून–भक्तिमार्ग सुगम है, भक्तिपाठ से तन्मयता आती है। भक्तियों का पाठ सभी वर्ग के लिए लाभप्रद है। आचार्य कुन्दकुन्द द्विसहस्राब्दि महोत्सव के पावन प्रसंग पर उन्हीं की रचित भक्तियों का हिन्दी पद्यानुवाद सहित प्रकाशन करवाकर माताजी ने उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2515, अप्रैल 1989 में, पृष्ठ संख्या 48 है।

216. अनादि जैनधर्म–भगवान जिनेन्द्र के द्वारा प्रतिपादित धर्म को जैनधर्म कहते है। जैनधर्म प्राणीमात्र का धर्म है। इसे तो पशु-पक्षियों तक ने धारण किया है। संसार का प्रत्येक मनुष्य इसे धारण कर सकता है। इसलिए माताजी ने यह छोटी सी पुस्तक लिखी है। जैनधर्म का प्रारंभिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए बहुत अच्छी पुस्तक है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2510, जुलाई 1984 में, पृष्ठ संख्या 44 है। इसका अंग्रेजी में अनुवाद श्री रजनीश जैन, मॉडल बस्ती-दिल्ली ने किया है। इसका प्रथम संस्करण वीर सं. 2525 सन् 1999 में छप चुका है।

अप्रकाशित ग्रंथ

217. लघीयस्त्रयादि संग्रह–श्री अकलंकदेव ने इसमें प्रमाण, नय और प्रवचन इन तीन विषयों का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है। इसमें इन्हीं आचार्य देव की स्वोपज्ञविवृत्ति नाम से टीका का भी हिन्दी अनुवाद किया है। श्री अभयनंदिसूरि ने इस पर तात्पर्यवृत्ति टीका लिखी है। इन दोनों टीकाओं का उसमें अनुवाद है।

218. अष्टसहस्रीसार–अष्टसहस्री ग्रंथ के जो मुख्य-मुख्य विषय आये हैं, उनको साररूप में इसमें दिया गया है, ऐसे ये त्रेसठ सारांश हैं। जैसे-नैयायिक ने शब्द को आकाश का गुण अमूर्तिक माना है, जैनाचार्य ने इसका खंडन करके शब्द को पुद्गल की पर्याय होने से मूर्तिक सिद्ध किया है।

219. आप्तमीमांसा–इसमें श्रीसमंतभद्र स्वामी ने आप्त को न्याय की कसौटी पर कसकर सच्चे देव सिद्ध किया है। इसमें 114 कारिकाओं का अन्वयार्थ, पद्यानुवाद, अर्थ और भावार्थ भी दिया गया है।

220. भावसंग्रह–श्री वामदेव पंडित ने संस्कृत में इस ग्रंथ को रचा है। इसमें औपशमिक आदि पाँच प्रकार के भावों का चौदह गुणस्थानों में विवेचन है। विशेषकर पाँचवें गुणस्थान के वर्णन में श्रावकों की पूजा, दान आदि क्रियाओं का अच्छा विवेचन है। विधिपूर्वक देवपूजा को ही श्रावक की सामायिक क्रिया कहा है। इसका अनुवाद माताजी ने सन् 1973 में किया था। एक प्रकार से यह बहुत ही सुन्दर श्रावकाचार है।

221. नियमसार कलश–नियमसार श्री कुंदकुंददेवकृत है। इसकी टीका श्रीपद्मप्रभमलधारी देव नाम के आचार्य ने की है। इस टीका में बहुत ही सुंदर पद्य आये हैं। उन्हें लेकर 'नियमसार कलश' नाम देकर माताजी ने हिन्दी अर्थ किया है। सन् 1976 में यह अनुवाद हुआ है।

222. जैनेन्द्र प्रक्रिया पूर्वार्द्ध–श्री पूज्यपादस्वामीकृत 'जैनेन्द्र व्याकरण' के सूत्रों पर श्री गुणनंदि आचार्य ने 'जैनेन्द्र प्रक्रिया' नाम से टीका रची है। इसको संघ में माताजी ने मुनियों-आर्यिकाओं आदि को पढ़ाया था। सन् 1975 में हस्तिनापुर में माताजी ने इसका अनुवाद किया है।

223. द्रव्यसंग्रहसार–श्री नेमिचन्द्राचार्य रचित द्रव्यसंग्रह का माताजी ने पद्यानुवाद किया था, उनके साथ ही कुछ विशेष विस्तार करके यह 'द्रव्यसंग्रहसार' पुस्तक लिखी है।

224. तत्त्वार्थसूत्र एक अध्ययन–श्री उमास्वामी आचार्य द्वारा रचित तत्त्वार्थसूत्र पर यह विस्तृत विवेचन तत्त्वार्थवार्तिक ग्रंथ के आधार से है।

225. समयसार का सार–श्री कुंदकुंददेव विरचित समयसार का साररूप यह नवनीत माताजी द्वारा लिखा गया है। इसको पढ़कर यदि समयसार का स्वाध्याय

करेंगे, तो बहुत ही सुगमता रहेगी। अतः यह समयसार की कुंजी ही है।

226. ध्यान साधना–इसमें ज्ञानार्णव आदि ग्रंथों के आधार से पिण्डस्थ ध्यान का वर्णन है। पिण्डस्थ ध्यान की पार्थिवी आदि धारणाओं के एवं ह्रीँ के ध्यान हेतु चित्र भी दिये गये हैं।

227. अध्यात्मसार–परमात्मप्रकाश आदि ग्रंथों के आधार से इसमें आत्मा के शुद्ध स्वरूप का अच्छा विवेचन है, अतः इसका अध्यात्मसार यह नाम सार्थक है।

228.	**षट्खण्डागम सिद्धान्तचिंतामणिटीका समन्वित**				**–पुस्तक 4**
229.	″	″	″	″	**–पुस्तक 5**
230.	″	″	″	″	**–पुस्तक 6**
231.	″	″	″	″	**–पुस्तक 7**
232.	″	″	″	″	**–पुस्तक 8**
233.	″	″	″	″	**–पुस्तक 9**
234.	″	″	″	″	**–पुस्तक 10**
235.	″	″	″	″	**–पुस्तक 11**
236.	″	″	″	″	**–पुस्तक 12**
237.	″	″	″	″	**–पुस्तक 13**
238.	″	″	″	″	**–पुस्तक 14**
239.	″	″	″	″	**–पुस्तक 15**
240.	″	″	″	″	**–पुस्तक 16**

वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला हस्तिनापुर द्वारा प्रकाशित उपलब्ध पुस्तकों की सूची

1. बाल विकास–प्रथम भाग
2. बाल विकास–द्वितीय भाग
3. बाल विकास–तृतीय भाग
4. बाल विकास–चतुर्थ भाग
5. जैन बाल भारती–प्रथम भाग
6. ज्ञानमती काव्यांजली
7. द्रव्य संग्रह
8. अवध की अनमोल मणि
9. ऋषभ जन्मभूमि अयोध्या
10. अयोध्या तीर्थ क्षेत्र पूजा
11. भक्ति
12. आदि ब्रह्मा
13. पुरुदेव नाटक
14. भगवान वृषभदेव
15. जीवनदान
16. जैनधर्म
17. आटे का मुर्गा
18. अनादि जैनधर्म
19. सोलह भावना
20. दशधर्म
21. ध्यान साधना
22. जैन महाभारत
23. संस्कार
24. भरत का भारत
25. प्रयाग तीर्थ वंदना
26. प्रयाग तीर्थ पूजा
27. जम्बूद्वीप हस्तिनापुर परिचय
28. रत्नकरण्ड श्रावकाचार
29. जम्बूद्वीप पूजांजलि
30. सर्वतोभद्र विधान
31. इन्द्रध्वज विधान
32. कल्पद्रुम विधान
33. जम्बूद्वीप मण्डल विधान
34. त्रैलोक्य विधान
35. तीस चौबीसी विधान
36. धर्मचक्र विधान
37. सिद्धचक्र विधान
38. तीन लोक विधान
39. यागमण्डल विधान
40. सहस्रनाम मंत्र विधान
41. विश्वशांति महावीर विधान
42. नवग्रह शांति विधान
43. गणधर वलय विधान
44. भक्तामर मण्डल विधान
45. पंचकल्याणक विधान
46. मृत्युंजय विधान
47. नन्दीश्वर विधान
48. चौंसठ ऋद्धि विधान
49. ऋषिमण्डल विधान
50. शांतिनाथ विधान
51. पंचपरमेष्ठी विधान
52. जिनगुणसंपत्ति विधान
53. भगवान ऋषभदेव विधान
54. व्रत विधि एवं पूजा
55. जम्बूद्वीप भजन संग्रह-2
56. जम्बूद्वीप भजन संग्रह भाग-3
57. जैन भारती
58. षट्खण्डागम भाग-1

59. ज्ञानामृत
60. जैनधर्म प्रश्नोत्तर माला
61. आत्मानुशासन
62. मेरी स्मृतियाँ
63. आर्यिका ज्ञानमती अभिवंदन ग्रंथ
64. आचार्य वीरसागर स्मृतिग्रंथ
65. अंतर्राज्यीय चरित्र निर्माण
66. मुनिचर्या
67. प्रवचन निर्देशिका
68. कल्याण कल्पतरू स्त्रोत
69. ज्ञानज्योति की भारत यात्रा
70. प्रोसीडिंग सेमीनार
71. भावत्रिभंगी
72. सामायिक एवं श्रावक प्रतिक्रमण
73. भगवान ऋषभदेव पूजन एवं चालीसा
74. भगवान ऋषभदेव का समवसरण
75. जैन जोगरफी
76. सप्तव्यसन
77. समवसरण पूजन चालीसा
78. पद्मनंदिपंचविंशतिका
79. ज्ञानमती सचित्र ज्ञानांजलि
80. कुलपति सम्मेलन आख्या
81. त्रिलोक भास्कर
82. संपर्क
83. तीर्थंकर ऋषभदेव दशावतार नाटक
84. तीर्थंकर ऋषभदेव के दश अवतार
85. जैनधर्म में प्रचलित भ्रांतियां
86. जैनधर्म एवं भगवान ऋषभदेव (हिन्दी)
87. आरती संग्रह
88. जैनधर्म एवं भगवान ऋषभदेव (अंग्रेजी)
89. चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति
90. चालीसा संग्रह व रविव्रत पूजा
91. ऋषभदेव नृत्य नाटिका
92. कुन्दकुन्द मणिमाला
93. भगवान महावीर कैसे बने?
94. सामायिक विधि
95. तीर्थंकर महावीर और धर्मतीर्थ (हिन्दी)
96. तीर्थंकर महावीर और धर्मतीर्थ (अंग्रेजी)
97. तीर्थंकर जीवन दर्शन
98. महावीर भक्ति प्रसून
99. महासती चंदना (नाटक)
100. धन्य हुआ विपुलाचल पर्वत
101. माता त्रिशला के अनोखे सपने
102. महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (छोटी)
103. महावीर व्रत एवं पूजा
104. अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर
105. भगवान महावीर प्रश्नोत्तरमाला
106. महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (बड़ी)
107. चौबीस तीर्थंकर
108. सरस्वती महापूजा
109. वीरगुण संपद् विधान
110. महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर पूजा
111. महाश्रमण महावीर
112. कुण्डलपुर अभिनंदन ग्रंथ
113. भगवान महावीर जैन शब्दकोश
114. मनोकामना सिद्धि विधान
115. तीर्थंकर जन्मभूमि विधान
116. विचार मंजूषा
117. दीपावली पूजन
118. कुण्डलपुर भजन संग्रह
119. आचार्य शांतिसागर पूजन
120. भगवान पार्श्वनाथ
121. भगवान महावीर समवसरण विधान
122. महावीर स्त्रोत

123. भगवान महावीर देशना
124. भगवान महावीर
125. राजगृही तीर्थ परिचय एवं पूजा
126. वाराणसी तीर्थक्षेत्र परिचय
127. पावापुरी सिद्धक्षेत्र पूजा
128. तीनमूर्ति पूजा
129. नियमसार स्याद्वाद चन्द्रिकाः एक अनुशीलन
130. पार्श्वनाथ विधान
131. भगवान ऋषभदेव समवसरण भारत यात्रा
132. गणिनी ज्ञानमती महापूजा
133. ज्ञानमती परिचय प्रश्नोत्तरी
134. प्रथमाचार्य शांतिसागर जी महाराज
135. बाल विकास-1 (अंग्रेजी)
136. कुण्डलपुर तीर्थ पूजा
137. भगवान पार्श्वनाथ नाटक
138. भगवान पार्श्वनाथ प्रश्नोत्तरी
139. अहिच्छत्र पूजा-विधान
140. भगवान नेमिनाथ विधान
141. भगवान बाहुबली पूजा
142. काकन्दी तीर्थ पूजा
143. समवसरण विधान
144. भगवान महावीर की अमूल्य शिक्षाएं
145. Eternal Jainism
146. भगवान ऋषभदेव का समवसरण (अंग्रेजी)
147. जिनस्तोत्र संग्रह
148. गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ
149. गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ (लाइब्रेरी संस्करण)
150. चारित्रचन्द्रिका
151. चारित्रचन्द्रिका (लाइब्रेरी संस्करण)
152. आचार्य श्री शांतिसागर विधान
153. आचार्य श्री वीरसागर विधान
154. The Golden Personality of Ganini Gyanmati Mataji
155. सच्चा वैराग्य-बना इतिहास
156. षट्खण्डागम पूजा
157. विषापहार विधान
158. बाल विकास (भाग-2) अंग्रेजी
159. षट्खण्डागम भाग-2
160. स्वर्णिम व्यक्तित्व की धनी गणिनी ज्ञानमती माताजी
161. गणिनी ज्ञानमती : एक बेमिसाल व्यक्तित्व
162. पंचमेरु विधान
163. जैन भारती (मराठी)
164. श्रुतस्कंध विधान
165. श्री सरस्वती विधान
166. भगवान महावीर चालीसा
167. परीक्षा
168. प्रतिज्ञा

स्वर्णिम गाथा
श्री ज्ञानमती माताजी की

रचयित्री—ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की है यह स्वर्णिम गाथा।
हर भक्त हृदय का इनके चरणों, में झुक जाता है माथा।।
कब, कहाँ जन्म लेकर इनने, क्या-क्या उपकार किए जग पर?
हैं कौन पिता-माता इनके, सब सुनो ध्यान से हे प्रियवर!।।1।।

है शाश्वत तीर्थ अयोध्या जहाँ, प्रभु ऋषभदेव ने जन्म लिया।
बाहूबलि-भरत-राम ने भी, निज जन्म से जिसको धन्य किया।।
उस निकट टिकैतनगर नामक, है बसा एक छोटा सा गाँव।
जहँ त्याग, धर्म अरु भक्ती की, सबको मिलती रहती है छाँव।।2।।

यहाँ छोटेलाल नाम के इक, धर्मात्मा श्रेष्ठी रहते थे।
व्यापार के साथ ही पूजा, दान-क्रिया में तत्पर रहते थे।।
उनकी पत्नी मोहिनि देवी, इक धर्मपरायण नारी थीं।
वे अपने पितु से एक अनोखा, ग्रंथ दहेज में लाई थीं।।3।।

हर कार्य गृहस्थी का करके, मोहिनि स्वाध्याय भी करती थीं।
निज सरल प्रवृत्ती के द्वारा, सबको अनुरञ्जित करती थीं।।
कुछ समय बाद मोहिनि जी ने, इक कन्या को था जन्म दिया।
देखा सबने उस क्षण प्रसूति-गृह में था दिव्य प्रकाश हुआ।।4।।

दादी बोलीं—देखो! मेरे, घर में कोई देवी आई है।
इक पुण्यशालिनी कन्या मेरी, पोती बनकर आई है।।
नानी ने बड़े प्यार से उस, कन्या का मैना नाम रखा।
दादी बोलीं—कहिं मैना सम-उड़ जाए न' डर मुझको लगता।।5।।

जिस बात का डर था दादी को, आगे चलकर वह सत्य हुई।
मैना गृहपिंजड़े को तज करके, त्यागमार्ग पर चली गई।।
बचपन से ही शास्त्रों को पढ़कर, मैना को वैराग्य हुआ।
सम्यक्, मिथ्यात्व कर्म आदिक, बातों का उसको ज्ञान हुआ।।6।।

इक बार गाँव में चेचक की, बीमारी जोरों से फैली।
इस रोग के चंगुल में फंस गए थे, मैना के दो भाई भी।।
समझाया सबने-'चलो! शीतला माता की पूजा करने।
लेकिन मैना ने किसी तरह से, नहीं दिया माँ को जाने।।7।।

वह प्रतिदिन मंदिर से गंधोदक, लाती शीतल जिनवर का।
इससे ही होगा रोग ठीक, ऐसा उसको श्रद्धान जो था।।
आखिर उसकी श्रद्धा ने इक दिन, चमत्कार था दिखलाया।
जिनधर्म में अनुपम शक्ती है, इसका प्रत्यक्ष फल बतलाया।।8।।

दोनों भाई को स्वस्थ देख, सबने मिथ्यात्व का त्याग किया।
मैना के कारण अवध प्रान्त से, कई कुरीतियाँ हुईं विदा।।
जाने कब बचपन बीत गया, अब मैना ने यौवन पाया।
'बेटी तो पराया धन है' यह, विचार पितु के मन में आया।।9।।

इक दिन सुन्दर साड़ी-गहने, लेकर आए मैना के पास।
बोले-बेटी! इन्हें पहनकर, तुमको जाना है ससुराल।।
मैना ने सरल-सहज शब्दों में, अपना निर्णय सुना दिया।
बोलीं- निज मन में ही मैंने, व्रत ब्रह्मचर्य को ग्रहण किया।।10।।

नहिं ब्याह रचाना है मुझको तो, दीक्षा धारण करना है।
ब्राह्मी-चन्दनबाला सतियों के, पथ को सार्थक करना है।।
निर्णय सुनकर पितु-मात सभी, समझा-समझाकर हार गए।
आखिर सबने दृढ़ निश्चय के, आगे निज मस्तक झुका दिये।।11।।

आचार्य देशभूषण गुरुवर, जब आए बाराबंकी में।
मैना भी पहुँची वहँ अपने, अरमानों को पूरा करने।।
काफी संघर्षों बाद अन्त में, मैना की हो गई विजय।
जब माँ की आज्ञा से गुरुवर ने, ब्रह्मचर्य व्रत दिया उसे।।12।।

सप्तम प्रतिमा, गृहत्यागरूप, व्रत को भी अंगीकार किया।
अब विजयी होकर मैना ने, मानों नवजीवन प्राप्त किया।।
इस दुर्लभ व्रत को पाकर मैना, मगन हुई निज आतम में।
अब उनको तो सोते-जगते, बस दीक्षा की इच्छा मन में।।13।।

उनकी इस उत्कट इच्छा ने, साकार रूप अब धार लिया।
महावीर जी अतिशय तीरथ ने, जब अपना अतिशय दिखा दिया।।
आचार्य देशभूषण जी ने, दीक्षा क्षुल्लिका प्रदान किया।
देखी थी बहुत वीरता इनकी, अतः वीरमती नाम दिया।।14।।

उत्कृष्ट अवस्था श्रावक की, पा मैना बहुत प्रसन्न हुईं।
सर्वोच्च अवस्था पाने की, अब एकमात्र इच्छा उनकी।।
सौभाग्य मिला बीसवीं सदी के, प्रथम सूरि के दर्शन का।
आचार्य शांतिसागर जी के, दर्शन का उनके वंदन का।।15।।

आचार्य निकट जाकर श्रद्धा-भक्तीपूर्वक दर्शन करके।
कर जोड़ निवेदन किया-आर्यिका दीक्षा मुझे प्रदान करें।।
गुरुवर बोले-अब मैंने दीक्षा, देने का है त्याग किया।
मुनि वीरसागर जी को मैंने, निज पट्टाचार्य प्रदान किया।।16।।

तुम उनसे दीक्षा ग्रहण करो, ऐसा मेरा आदेश तुम्हें।
तुम जग में चमको सूर्य सदृश, ऐसा है आशीर्वाद तुम्हें।।
गुरु वचनामृत को पीकर वीर-मती को ऐसा भान हुआ।
उनके हर रोम-रोम में जैसे, दिव्यशक्ति का वास हुआ।।17।।

अब वीरमती जी पहुँच गईं, आचार्य वीरसागर के पास।
ये ही मुझको दीक्षा देंगे, ऐसा हुआ उन्हें विश्वास।।
गुरुवर के दर्शन करके उनसे, किया निवेदन दीक्षा का।
पूरे संघ ने सम्मान किया, उनकी इस अनुपम इच्छा का।।18।।

गुरुवर ने उनकी उत्कट इच्छा, देखी पुनः विचार किया।
जयपुर से माधोराजपुरा, नगरी के लिए विहार किया।।
वहाँ पर वैशाख वदी दुतिया का, शुभ मुहूर्त घोषित कीना।
तब निज सौभाग्य सराह रही थी, नगरी की भाक्तिक जनता।।19।।

था वीरमती को इंतजार, जिस घड़ी-दिवस का वर्षों से।
आखिर वह शुभ दिन भी आया, बहुतेक कष्ट-संघर्षों से।।
आचार्य वीरसागर जी ने, इनको आर्यिका बनाया था।
निज ज्ञान गुणों के द्वारा इनने, नाम 'ज्ञानमति' पाया था।।20।।

गुरुवर की एकमात्र शिक्षा, निज नाम का ध्यान सदा रखना।
उस शिक्षा को अपने जीवन में, आत्मसात् तुमने कीना।।
निज ज्ञान के बल पर दो सौ ग्रंथों, की रचना तुमने कीनी।
जिनमें हैं कई विधान तथा, कई संस्कृत की टीकाएँ भी।।21।।

है अष्टसहस्री ग्रंथ जिसे, सब कष्टसहस्री कहते थे।
हिन्दी अनुवाद किया उसका, तब विद्वत्जन अति विस्मित थे।।
बच्चों को होवे धर्मज्ञान, इस हेतू 'बालविकास' लिखे।
युवकों में धर्मरुची हेतू, तुमने अनेक उपन्यास लिखे।।22।।

नारी आलोक लिखा जिससे, नारी को मिली प्रेरणा है।
विद्वानों के स्वाध्याय हेतु, सिद्धान्तग्रंथ की रचना है।।
ऐसा लगता है वर्षों बाद, समाज भ्रमित हो जाएगी।
सबकी लेखिका एक ही हैं, शायद यह समझ न पाएगी।।23।।

साहित्य सृजन के साथ अनेकों, शिष्यों का भी किया सृजन।
उनको गृहबंधन से निकालकर, शिक्षाएँ भी दीं अनुपम।।
फिर प्रबल प्रेरणा देकर मुनि-आचार्य की पदवी दिलवाई।
जिनदीक्षा ही सर्वोत्तम है, यह बात सभी को समझाई।।24।।

चेतन तीर्थों के साथ अचेतन, तीर्थों का निर्माण किया।
तीर्थंकर जन्मभूमि से तीर्थोद्धार का क्रम प्रारंभ किया।।
सबसे पहले श्री शान्ति-कुंथु-अर, जन्मभूमि हस्तिनापुरी।
कई सुन्दर मंदिर बनने से, यह नगरी लगती स्वर्गपुरी।।25।।

है सुन्दर जम्बूद्वीप बना, उस मध्य सुमेरूपर्वत है।
हैं देवभवन-चैत्यालय, लवण-समुद्र भी अतिशय मनहर है।।
इक सुन्दर भव्य कमलमंदिर में, महावीर प्रभु राजित हैं।
ईशानकोण में बने ध्यान-मंदिर में ह्रीं विराजित हैं।।26।।

है तीनमूर्ति मंदिर व ॐ मंदिर अरु वासुपूज्य मंदिर।
है शान्तिनाथ मंदिर व बीस तीर्थंकर का सुन्दर मंदिर।।
इक सहस्रकूट मंदिर में एक हजार आठ प्रतिमाएँ हैं।
श्री ऋषभदेव मंदिर अरु कीर्ति-स्तंभ को शीश नमाएं हम।।27।।

अष्टापद मंदिर, तेरहद्वीप-जिनालय अतिशय सुखकारी।
सुन्दर-सुन्दर झांकियाँ यहाँ के, इतिहासों को दोहरातीं।।
है णमोकार का बैंक यहाँ, अरु झूले, रेल मनोरंजक।
ऐरावत हाथी आदि सभी हैं, तीर्थक्षेत्र के आकर्षण।।28।।

इस सुन्दर तीरथ के पीछे, संप्रेरणा प्राप्त हुई जिनकी।
अरु आशिर्वाद मिला जिनका, वो हैं गणिनी माँ ज्ञानमती।।
सन् उन्निस सौ बानवे में इक दिन, ध्यानमग्न माताजी ने।
साकेतपुरी के ऋषभदेव, प्रभु की प्रतिमा के दर्श किए।।29।।

प्रेरणा मिली इन ऋषभदेव का, महामस्तकाभिषेक हो।
तब नगरि अयोध्या 'ऋषभ जन्म-भूमी के नाम से प्रसिद्ध हो।।
फिर तो माँ ज्ञानमती जी चल दीं, शाश्वत तीर्थ अयोध्या को।
समझाया सबने लेकिन कोई, रोक नहीं पाया उनको।।30।।

वहाँ जाकर इक्किस फुट उत्तुंग, प्रतिमा के दर्श किए माँ ने।
फिर तो विकास जो शुरू हुआ, लखकर आश्चर्यचकित सब थे।।
हुआ महामस्तकाभिषेक प्रभु का, लाखों भक्त उपस्थित थे।
इस प्रथम सुनहरे अवसर को, पा करके सब जन प्रमुदित थे।।31।।

दो मंदिर नवनिर्माण हुए, जिनमें इक समवसरण मंदिर।
अरु दूजा तीन चौबीसी मंदिर, सुन्दर कमलों से शोभित।।
जहाँ काल अनन्तों से जन्में, चौबिस-चौबिस तीर्थंकर हैं।
अरु आगे भी जन्मेंगे इस, हेतू यह मंदिर निर्मित है।।32।।

कुछ कालदोष से इस युग में, बस पाँच जिनेश्वर ही जन्मे।
अरु अन्य उनीस जिनवरों ने, पन्द्रह नगरी को धन्य किये।।
दो मंदिर निर्मित हुए तथा, टोंकों के जीर्णोद्धार हुए।
इस तीरथ की सुन्दरता हेतू, कई अन्य भी कार्य हुए।।33।।

वहाँ का उद्यान जो राजकीय, वह ऋषभदेव से धन्य हुआ।
वहाँ ऋषभदेव पद्मासन प्रतिमा, का निर्माण तुरन्त हुआ।।
है फैजाबाद में अवध विश्वविद्यालय जिसका नाम बहुत।
वहाँ के कुलपति भी माताजी का, ज्ञान देख करके हर्षित।।34।।

डी.लिट्. की पदवी देकर उनने, निज गौरव में वृद्धी की।
इस अवध प्रान्त की मणि से गौरव-शाली विश्वविद्यालय भी।।
वहाँ ऋषभदेव की शोधपीठ का, शिलान्यास भी उस दिन था।
यह शोधपीठ भी माताजी की, प्रबल प्रेरणा का फल था।।35।।

कई निधियाँ देकर तीरथ को, माताजी ने कर दिया विहार।
फिर संघ सहित हस्तिनापुरी में, किया उन्होंने चातुर्मास।।
हुआ चातुर्मास समापन ज्यों ही, पुनः एक घोषणा हुई।
अब ज्ञानमती माताजी मांगीतुंगी तीरथ को चल दीं।।36।।

सब समझ गए यह सिद्धक्षेत्र, अब विश्व क्षितिज पर पहुँचेगा।
क्योंकी सबने हस्तिनापुरी, अरु तीर्थ अयोध्या देखा था।।
मांगीतुंगी तीरथ पर जब से, चरण पड़े माताजी के।
तब से वहँ पर अनेक अतिशय अरु, चमत्कार थे प्रगट हुए।।37।।

वहाँ वर्षों से अवरुद्ध प्रतिष्ठा, माताजी ने करवाई।
सबने इक स्वर से यही कहा, लगता है दिव्यशक्ति आई।।
इक सहस्र आठ प्रतिमाओं से युत, मंदिर का निर्माण हुआ।
जो 'सहस्रकूट कमलमंदिर' के, नाम से जग में ख्यात हुआ।।38।।

इन सबसे ज्यादा अतिशायी, प्रेरणा वहाँ जो दी तुमने।
वह है इक सौ अठ फुट प्रतिमा, प्रभु ऋषभदेव की वहाँ बने।।
तुंगी पर्वत पर पूर्वमुखी, प्रतिमा की बात को सुनते ही।
सम्पूर्ण देश के भक्तों ने, अर्थांजलि अपनी प्रस्तुत की।।39।।

उस प्रतिमा का निर्माणकार्य, वहाँ जोर-शोर से चालू है।
सबकी इच्छा है प्रतिमा लखकर, जीवन सफल बना लूँ मैं।।
इस सिद्धक्षेत्र को सजा-संवारकर, माताजी वहाँ से चल दीं।
तब लम्बी पदयात्रा करके, वे दिल्ली नगरी में पहुँचीं।।40।।

हुए छब्बिस कल्पद्रुम विधान, फिर समवसरण का श्रीविहार।
कुलपतियों का सम्मेलन अरु भी, कई हुए अतिशायी कार्य।।
अब इनकी दृष्टि गई जहँ पर, प्रभु ऋषभदेव ने दीक्षा ली।
अरु केवलज्ञान हुआ जहँ पर, वह है प्रयाग की शुभ धरती।।41।।

अब माताजी निज संघ सहित, तीरथ प्रयाग की ओर चलीं।
इस मध्य हुई जिन धर्मप्रभावना, गाँव, शहर, अरु नगर-गली।।
वहाँ पर विशाल कैलाशगिरी, जो अतिशय मनहर लगता है।
सबसे ऊपर वृषभेश्वर की, प्रतिमा से सुन्दर दिखता है।।42।।

इस पर्वत पर निर्मित बाहत्तर, चैत्यालय मन को मोहें।
ऊपर चढ़कर सचमुच की पर्वत-यात्रा का अनुभव होवे।।
इस पर्वत के आजू-बाजू में, दो जिनमंदिर निर्मित हैं।
जिनमें इक दीक्षा मंदिर है, अरु दूजा समवसरण का है।।43।।

श्री ऋषभदेव का कीर्तिस्तंभ भी, इस तीरथ पर निर्मित है।
अरु झूले, झरने, रेल आदि भी, तीरथ के आकर्षण हैं।।
आया शुभ समय वीरप्रभु के, छब्बिस सौवें जन्मोत्सव का।
दिल्ली में प्रधानमंत्री ने, उद्घाटन किया महोत्सव का।।44।।

तीरथ प्रयाग में माताजी ने, उत्सव खूब था करवाया।
नवरचित विश्वशांती विधान भी, भक्तों द्वारा करवाया।।
सामूहिक स्वर आया दिल्ली से, माताजी दिल्ली आवें।
छब्बिस सौवें जन्मोत्सव के, सुन्दर आयोजन करवावें।।45।।

सबका आग्रह स्वीकार किया, माताजी चलीं राजधानी।
वहाँ छब्बिस मण्डल एक साथ, करवाए सबको हुई खुशी।।
कई अन्य कार्य भी हुए तभी, माताजी ने चिन्तन कीना।
इस जन्मोत्सव पर वीर जन्म-भूमी को है विकसित करना।।46।।

हुआ दिल्ली के इण्डियागेट से, बीस फरवरी को विहार।
तब भारी जनसमूह ने की थी, कुण्डलपुर की जयजयकार।।
तीरथ प्रयाग में चातुर्मास, किया फिर कुण्डलपुर पहुँचीं।
जिस दिन था मंगलमय प्रवेश, वह पौष कृष्ण दशमी तिथि थी।।47।।

वहाँ बाइस महिनों के भीतर, जो अद्भुत नवनिर्माण हुआ।
सब जन आश्चर्यचकित थे आखिर, यह सब कैसे काम हुआ!
क्या स्वर्गलोक से देवों ने, आकर ये रचनाएँ की हैं?
या भूमी के अन्दर से ये, अनुपम रचनाएँ निकली हैं?।।48।।

वहाँ के प्राचीन जिनालय के, परिसर में कीर्तिस्तंभ बना।
अरू नूतन भूमी पर मंदिर, अरु नंद्यावर्त महल रचना।।
इक विश्वशांति महावीर जिनालय, इक सौ अठ फुट उन्नत है।
इसमें प्रभु वीर की खड्गासन-प्रतिमा बेदाग मनोहर हैं।।49।।

प्रभु ऋषभदेव का मंदिर है, अरु नवग्रहशांती जिनमंदिर।
है तीन मंजिला यहँ त्रिकाल-चौबीसी का सुन्दर मंदिर।।
इक सात खण्ड का महल प्रमुख, आकर्षण है इस तीरथ का।
इस नंद्यावर्त महल में चैत्यालय है शान्तिनाथ प्रभु का।।50।।

इन सब तीर्थों की प्रबल प्रेरिका, ज्ञानमती माँ को वन्दन।
उनके तप-त्याग-ज्ञान-चारित-चिन्तन, दृढ़ता को सदा नमन।।
इनका पावन सन्निध यह वसुधा, बहुत समय तक प्राप्त करे।
बस यही ''सारिका'' वीर प्रभू से, विनती दिन अरु रात करे।।51।।

C C C